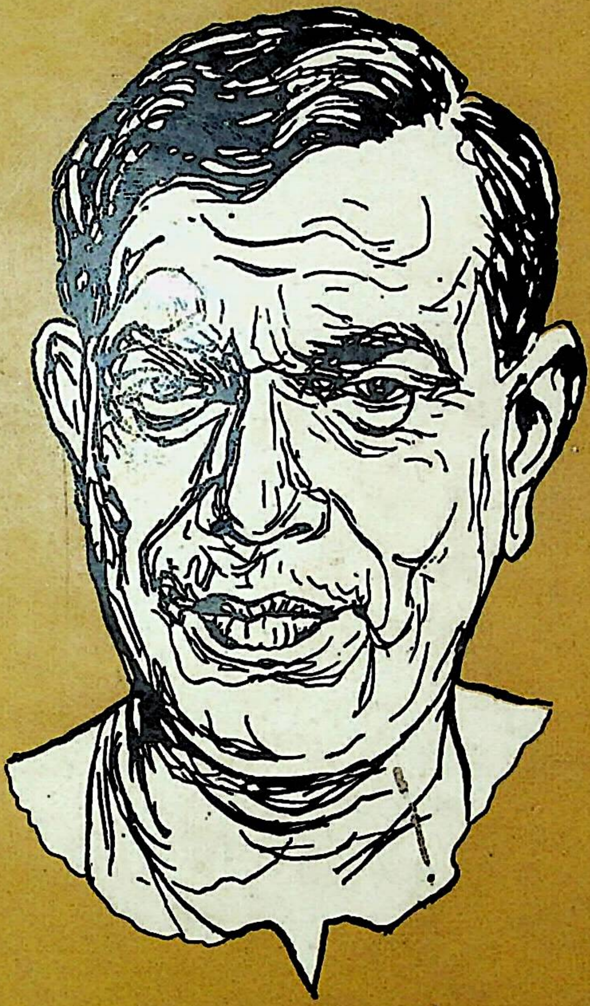
दिनकर के पत्र



सम्पादक :

कन्हैयालाल फूलफगर

श्री कन्हैयालाल फूलफगरजी ने 'दिनकर के पत्र' नामक अपूर्व शोध-संकलन, इतने परिश्रम और लगन से तैयार किया है कि कहना होगा कि हाल के वर्षों में किसी भी हिन्दी के श्रेष्ठ लेखक या कवि के पत्रों का ऐसा वृहद संग्रह मेरे देखने में नहीं आया। यह काम हिन्दी साहित्य को एक अमूल्य देन है। इसमें कविवर दिनकर के आदर्शवादी और व्यावहारिक दोनों मानसिक पक्षों की, अनेक भाव-अनुभावों के घात-प्रतिघात की अनोखी झलक मिलती है। ये पत्र अपने से बड़े चौवेजी जैसे या शिवपूजनजी जैसे बुज़ुर्गों के नाम भी हैं, और अपने सम-वयस्क, सहकारी-सहयोगी और अपने अनुजों के नाम स्नेह और वात्सल्यमय पत्र भी हैं। दिनकर की प्रतिभा प्रखर थी, ओजगुण उनकी वाणी और लेखनी का प्रधान स्वर था, परन्तु 'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि' उनका अन्तःकरण था। मैंने उन्हें दोनों रूपों में देखा है, दिल्ली में, निकट से—रुद्र और शान्त दोनों मुद्राओं में। वे कविता पढ़ते नहीं सिंह की तरह दहाड़ते थे, पर रमण महर्षि या रामकृष्ण परमहंस की बात करते समय उनकी आँखों में आँसू छल-छलाते हुए मैंने देखे हैं। ऐसे कवि के और भी कई पत्र होंगे जो अभी अप्रकाशित पड़े होंगे, किन्हीं मित्रों-कलत्रों के संग्रह में। अगले संस्करण तक वे भी प्रकाश में आजायें तो विविधवर्णी 'दिनकर' के सहस्र-कर साहित्याकाश को अनेक वर्षों तक न केवल आलोकित पर उज्ज्वल बनाते रहें। पथिकों को राह दिखाते रहें। 'मेरे नगपति, मेरे विशाल' के लेखक का व्यक्तित्व और भी भा-स्वर हो!

—डॉ० प्रभाकर माचवे

9·3

दिनकर के पत्र

सम्पादक :

कन्हैयालाल फूलफगर

भूमिका :

डॉ० शिवमंगलसिंह 'सुमन'

प्रकाशक :

दिनकर शोध संस्थान

८२/२ई, विधान सरणी

कलकत्ता-७०००४

प्रकाशक :
दिनकर शोध संस्थान
८२/२ई, विधान सरणी
कलकत्ता-७०००४

प्रथम संस्करण :
१९८१ ई०

मूल्य : चालीस रुपये

मुद्रक :
एसकेज
८, शोभाराम वैशाख स्ट्रीट
कलकत्ता-७०

DINKAR KE PATRA
Edited by Kanhaiyalal Fulfagar
Rs. 40/-
Published by
DINKAR SHODH SANSTHAN
82/2E, Bidhan Sarani, Calcutta-700004

दिनकर
के
प्रेमियों को



अगर मैं ठीक से मर नहीं सका (यानी मरने के बाद कुछ-कुछ जीवित रह गया) तो कोई-न-कोई कौतुकी प्रेमी मेरे कागजों के ढेर में घुसकर मेरे उस रूप को भी प्रकट कर सकता है, जिसे मैंने कम महत्त्व का समझा है।

—रामधारी सिंह दिनकर

अनुक्रम

परिशिष्ट

आमुख

दिनकर शोध संस्थान के संस्थापक श्री कन्हैयालाल फूलफगर ने इस पत्र-संग्रह की भूमिका लिखने-हेतु प्रेरित कर मुझ पर अपार उपकार किया है। इस आदेश ने अनायास ही मुझे पत्राचार-साहित्य के अगाध सिन्धु-तट पर ला खड़ा किया। मैंने स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी कि यह विधा इतनी व्यापक और मार्मिक है, सर्जन की प्रक्रिया में ऐसी उन्मुक्तता है, सहज सम्वेदनशीलता अन्यत्र दुर्लभ है। यह तो कविता की कविता है। दिनकरजी इसे कला के लिए कला का साक्षात् प्रमाण मानते थे। कहते हैं कि निबन्धों की शैली में लेखक के व्यक्तित्व का वैशिष्ट्य उजागर हो उठता है, परन्तु पत्र-लेखन में तो लेखक का स्वभाव, चिन्तन-मनन, उत्पीड़न, उल्लास, उन्माद और अन्तर्द्वन्द्व—सभी नितान्त सहजभाव से मुखर हो उठता है। चिट्ठी-पत्री शब्द में चित्त की वृत्ति की ही प्रतिध्वनि है। गोस्वामी तुलसीदास ने इसका मर्म पहचाना था। धनुर्भङ्ग के पश्चात् जनक के दूतों से राम-लक्ष्मण की चिट्ठी पाकर दशरथ के अनिर्वचनीय आनन्द की व्यंजना इसी की द्योतक है :

राम लखनु उर कर बर चीठी।
रहि गए कहत न खाटी मीठी।।

पत्र में अन्तर्निहित आलोड़न का अनुवाद नहीं किया जा सकता। 'बाँची बहुरि नरेस' में इसी मनोवैज्ञानिक सत्य की ओर संकेत है। 'कागज़ पै रख दिया है कलेजा निकाल के' इस विधा पर पूर्णतया घटित होता है। ऐसा वैविध्य अन्यत्र दुर्लभ है। ये प्रकाशन के लिए नहीं वरन् किसी स्नेही अथवा सुहृद के मानस को स्पर्श करने के लिए हैं, अथवा पढ़कर फाड़ देने के लिए हैं, यही भावना इनको प्रगाढ़ आत्मीयता प्रदान करती है। यही बात है कि वर्षों अथवा सदियों बाद भी इनमें ज्वलन्त अंगारों की ऊष्मा महसूसी जा सकती है। कवियों-कथाकारों, चित्रकारों-शिल्पियों, संगीतज्ञों-दार्शनिकों, राजनीतिज्ञों-व्यापारियों, देशभक्तों-शहीदों, सैनिकों-सेनापतियों, सम्राटों-फकीरों, प्रेमी-प्रेमिकाओं और साधु-सन्तों के उन्मथित ऐकान्तिक क्षणों के श्वास-निश्वास इनमें स्पंदित हो उठते हैं। तालस्ताय के जन्मस्थान यास्नाया पोल्याना में तालस्ताय को लिखे महात्मा गांधी के पत्रों को देखकर मैं

रोमाञ्चित हो उठा था। अपनी प्रेमिका जोज़ेफ़ीन को लिखे नेपोलियन के दहकते पत्रों को पढ़कर तुलसी की :

शूल कुलिश असि अँगवनि हारे।
ते रतिनाथ सुमन सर मारे।।

उक्ति साकार हो उठती है। महात्मा गाँधी और रोम्या रोलाँ का पत्राचार विश्व की सामूहिक संस्कृति का बहुमूल्य दस्तावेज़ माना जाता है, प्रेम और सौन्दर्य के सुकुमार कवि कीट्स के प्रेम-पत्र, अंग्रेज़ी-साहित्य की नवोन्मेषी निधि माने जाते हैं। आत्महत्या के पूर्व लिखे गए हेमिंग्वे और स्तीफन ज़्विग के पत्र दिल दहला देने वाले हैं। लेनिन और गोर्की के पत्र साहित्य में नवोन्मेषी सर्जना को नया आयाम प्रदान करते हैं।

भारतीय साहित्य में पत्र-लेखन की अपनी विशिष्ट परम्परा रही है। कालिदास ने 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' के तृतीय अंक में प्रेमविह्वला शकुन्तला द्वारा दुष्यन्त को पत्र लिखने का जो विवरण दिया है वह मार्मिक होने के साथ-साथ नैसर्गिक उपकरणों के मौलिक संयोजन का सुन्दर नमूना है, (जो सखी की सलाह से सुग्गे की छाती के समान कोमल कमलिनी के पत्तों पर नखों द्वारा उरेहा गया है।) इसी प्रकार 'मालविकाग्निमित्रम्' के पञ्चम अंक में पुष्यमित्र का अपने पुत्र अग्निमित्र को प्रेषित पत्र तत्कालीन पत्र-लेखन की शैली और उपचार का स्वरूप प्रस्तुत करता है। 'स्वस्ति यज्ञशरणात्सेनापतिः पुष्यमित्रो वैदिशस्थं पुत्रमायुष्मन्तमग्निमित्रं स्नेहात्परिष्वज्येदमनुदर्शयति विदितमस्तु।' पत्र के प्रसंग में कल्याण की कामना करते हुए पत्र द्वारा ही हृदय से लगाने की यह अभिव्यक्ति अभिजात-वर्ग के पारम्परिक पत्र-लेखन की रूढ़ियों की ओर इंगित करती है, अग्निमित्र भी पिता के पत्र को 'सोपचारं गृहीत्वा' शिष्टाचार के साथ (मस्तक में लगाकर) ग्रहण करता है। बाण की कादम्बरी में तारापीड द्वारा चन्द्रापीड़ को और शुकनाश द्वारा वैशम्पायन को लिखे गए पत्र अपनी आलंकारिक चिन्मयता में आज भी अनवद्य बने हुए हैं। विशाखदत्त-लिखित मुद्राराक्षस में चाणक्य जिस चतुरता से शकटदास से, बिना सरनामे का पत्र लिखवाकर, चन्द्रगुप्त को सम्बोधित राक्षस के पत्र के रूप में आरोपित कर देता है—वह कूटनीतिक कौशल का अद्भुत उदाहरण है।

अंग्रेज़ी साहित्य में महान पुरुषों के पत्र-संग्रह करने और प्रकाशित करने की विशिष्ट कला का विकास किया गया है। (भारतीय भाषाओं में बँगला

और उर्दू में इसकी शानदार परम्परा रही है। बंकिम, रवीन्द्र और शरद के पत्रों की अपनी-अपनी विशिष्ट भंगिमाएँ हैं। गुरुदेव के पत्रों का वैविध्य विश्व-साहित्य में विशेष चर्चित रहा है। जापानी कवि योन नागुची और अमरीकी लेखिका रौथवेन को लिखे उनके पत्र ऐतिहासिक दस्तावेज़ वन गए हैं। बँगलादेश की मुक्ति के प्रवाहक भारत-पाकिस्तान-युद्ध के दरमियान श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा अमेरिका के राष्ट्रपति निक्सन को लिखा गया पत्र, अपनी गरिमा और सूझ-बूझ में विश्व के राजनयिकों को चमत्कृत कर चुका है। उर्दू में ग़ालिब, आज़ाद, न्याज़, हाली, नज़ीर अहमद, सर सय्यद, अमीर मीनाई, अकबर इलाहाबादी, शिब्ली, अमज़द, हाशिमी, जोश मलीहाबादी आदि के पत्र अदब और इख़लाक के अंग बन गए हैं। इसके अतिरिक्त 'रुक्क़ात आलमगीर', मखातीव शिब्ली और ख्वाजा हसन निजामी लिखित 'अतालीक ख़तूत नवीसी' पुस्तकों का, पत्र-लेखन-कला की विस्तृत मीमांसा के साथ-साथ, प्रसिद्ध साहित्यिकों और कलाकारों के पत्रों के उद्धरण भी उपलब्ध होते हैं। ग़ालिब के पत्र तो विश्व-साहित्य की अमूल्य निधि माने जाते हैं। 'खुतूते ग़ालिब' का विश्व की वहुत सी भाषाओं में अनुवाद भी हो चुका है। उनके पत्रों की बेतकल्लुफ़ी, सादगी और जिद्दत प्रसिद्ध है। पत्रों के पढ़ने पर ऐसा अहसास होता है जैसे आमने-सामने बैठे गुफ़्तगू कर रहे हों। मिर्ज़ा हातिम अली वेग़ महर को सम्बोधित एक पत्र में उन्होंने लिखा है—"मिर्ज़ा साहब, मैंने वह अन्दाज़े तहरीर ईजाद किया है कि मरासले को मुकालमा वना दिया है।" अर्थात् मैंने लिखने का वह ढंग ईजाद किया है कि पत्राचार को पारस्परिक संवाद वना दिया है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में शिवाजी द्वारा जयपुर के महाराजा मिर्ज़ा जयसिंह को लिखा पत्र भी वहुचर्चित रहा है जिस पर महाकवि निराला ने एक कविता भी लिखी है। भारतेन्दु-युग में गद्य-साहित्य में नवजागरण के साथ-साथ पत्र-लेखन-कला में भी नया उन्मेष आया। भारतेन्दुजी स्वयं पत्र-लेखन में सिद्धहस्त थे। उनकी मण्डली के प्रमुख सदस्य प्रतापनारायण मिश्र और वालमुकुन्द गुप्त के पत्रों में उस काल की जिन्दादिली और उन्मुक्तता प्रतिविंवित है। प्रतापनारायण मिश्र तो व्यक्तिगत पत्रों का पुलिन्दा साथ लिये चलते थे और केवल चुने हुए पत्रों का ही जवाव देते थे। पूछने पर वड़े फक्कड़ी अन्दाज़ में जवाव देते थे :

"कौन सारैन की खैंच माँ परै"

अर्थात् कौन सालों के चक्कर में फँसे। भारतेन्दु-युग के बाद महावीरप्रसाद द्विवेदी, पं० श्रीधर पाठक और कविवर सत्यनारायण 'कविरत्न' के पत्रों का विशेष महत्त्व है। सत्यनारायणजी तो अधिकांश पत्र कविता में ही लिखते थे, जिनमें व्रजभाषा की माधुरी, चाशनी का काम करती थी। इस विधा के प्रति हमारी अक्षम्य उपेक्षा के बावजूद पं० पद्मसिंह शर्मा के पत्र, बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र, प्रसाद के नाम पत्र, चिट्ठी-पत्री के नाम से प्रेमचन्द के पत्र, जानकीवल्लभ शास्त्री को लिखित निराला के पत्र, बच्चन के नाम पन्त के सौ पत्र और निरंकार देव 'सेवक' को लिखे बच्चन के पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त पत्र-पत्रिकाओं और आलोचनात्मक पुस्तकों में महादेवीजी, नवीनजी, हजारीप्रसादजी और रामविलास शर्मा के कुछ महत्त्वपूर्ण पत्र प्रकाशित हो चुके हैं।' गांधीजी के पत्रों की तो अपनी अलग शैली ही है, उनकी विराटता के अनुरूप उनके पत्रों में सारा युग प्रति-बिम्बित है। इतने व्यस्त रहने पर भी वे प्रायः आत्मीयजनों को हाथ से ही पत्र लिखते थे। 'बञ्च ऑफ लेटर्स' में पण्डित जवाहरलाल नेहरू के चुम्बकीय व्यक्तित्व की झलक-मात्र है। उनके रोमैंटिक और ऐकांतिक व्यथा से उन्मथित पत्र अभी तक प्रकाश की प्रतीक्षा में हैं। पंडित नेहरू के पत्रों से अधिक उनको लिखे गए पत्रों की भावोन्मादी भंगिमा केवल पढ़ने ही नहीं, आत्मसात करने की चीज है। "पुत्री के नाम : पिता के पत्र" का अनुवाद तो हिन्दी में प्रेमचन्दजी ने ही किया था जो विश्व-इतिहास की झलक के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके हैं।

प्रेमचन्द के पत्र सादगी, चुनौती और सर्जन के प्रति समर्पण की जीवन्त कहानी है। इनमें समस्त युग का संघर्ष सजीव हो उठा है, अपने दुःख, दैन्य और आत्मोत्सर्ग के साथ। 'चिट्ठी-पत्री' में उनके उर्दू के पत्र ज्यों-के-त्यों प्रकाशित कर दिए गए हैं, केवल देवनागरी में लिप्यंतर के साथ। इसमें हिन्दी-उर्दू दोनों में उनका असाधारण अधिकार चमत्कृत कर देता है। मौलाना शिब्ली ने फिराक़ साहब से कहा था कि हिन्दुस्तान में सात करोड़ मुसलमान रहते हैं पर उनमें से एक भी प्रेमचन्द-जैसी भाषा नहीं लिख पाता। उनका बेलाग व्यक्तित्व इस बात की गवाही देता है कि वे भारत की सम्मानित संस्कृति के बेहतरीन नमूने थे। भाषा के लचीलेपन और क़िस्सागोई की दृष्टि से बनारसीदासजी के पत्रों का जवाब नहीं। ऐसे आत्मीयतापूर्ण मनोरंजक संस्मरण लिखनेवाला हिन्दी में दूसरा नहीं। बीच-बीच में फक्कड़ाना चौबेपन, अराजकता का बघार, उन्हें और भी चटपटा बना देता है। निराला के पत्रों में उनका विद्रोह और स्वाभिमान तथा पन्त के पत्रों में

उनका अनासक्त उत्सर्ग उद्भासित हो उठा है। ऐसे माहौल में दिनकर के पत्रों का प्रकाशन अपनी अलग अहमियत रखता है। संयोग से इसी बीच कुछ वर्ष पूर्व मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के पत्रों का संग्रह 'गुबारे खातिर' नाम से प्रकाशित हो गया, जिसके 'चाय खत्म हो गई' आदि पत्रों की, हिन्दी में भी बड़ी धूम रही। 'गुबारे खातिर' के परिवेश का परिचय कराते हुए मुहम्मद अजमल खाँ ने बड़ी संजीदगी से लिखा है कि "हज़रत मौलाना की ज़िन्दगी मुख़्तलिफ़ और मुतज़ाद हैसियतों में बँटी हुई है। वो एक ही ज़िन्दगी और एक ही वक़्त में मुसन्निफ़ भी हैं, मुक़र्रिर भी हैं, मुफ़क्किर भी हैं, फ़ल-सफ़ी भी हैं, अदीब भी हैं, मुदब्बिर भी हैं और साथ ही सियासी जद्द-व-जहद के मैंदान के सिपहसालार भी हैं। गोया उनकी एक ज़िन्दगी में बहुत-सी ज़िन्दगियाँ जमा हो गयी हैं। वे अपनी जात से इक अंजुमन हैं।" दिनकरजी के भी जीवन का कुछ ऐसा ही माहौल रहा है। वे कवि भी हैं, दार्शनिक भी हैं, वक्ता भी हैं, विचारक भी हैं और सिपाही भी हैं।

'दिनकर के पत्र' एक संघर्षरत, संवेदनशील युवक की कहानी कहते हैं जिसने संक्रमणकाल में घोर ग़रीबी से उठकर, सारे परिवार का बोझा ढोते हुए, भीतर से टूट जाने पर भी अंतिम साँस तक जूझने की बान नहीं छोड़ी। विदेह की मिट्टी की उपज होने के कारण उसने भोग में ही योग को छिपा रखा था—'ग्रोग भोग महँ राख्यो गोई'। शिवपूजन सहाय से सन् १९३४ में प्रथम परिचय के क्षण से, महाप्रयाण (२४ अप्रैल १९७४) की वेला तक, चालीस वर्षों का यह आयाम साहित्य और राजनीति के विभिन्न उल्लासों एवं अंतर्द्वन्द्वों को उद्घाटित करता है। शिवपूजन सहाय से सान्निध्य प्राप्त करने की चेष्टा, 'रेणुका' के प्रकाशन की योजना, माखनलालजी से उसकी भूमिका लिखाने की व्यग्रता, बेनीपुरी की आत्मीयता, बनारसीदास चतुर्वेदी के साहचर्य से विज्ञापन की सुकरता, प्रकाशन का क्रम बनाए रखने की तत्परता, सब-रजिस्ट्रारी की हिम्मत से जूझने की सन्नद्धता, नेशनल-वार-फ्रण्ट से दो बार इस्तीफा देने की आतुरता, अंग्रेजी-सरकार द्वारा ३ वर्ष में २२ बार ट्रान्सफर की जाने की यातना और सबसे अधिक पारिवारिक विघटन के कारण भीतर-ही-भीतर टूटने की प्रक्रिया—इस यात्रा की हर्ष-विषाद-मिश्रित दास्तान है। बनारसीदासजी को लिखे पत्रों से मालूम पड़ता है कि सन् १९६० से ही उनके टूटने का क्रम चालू हो गया था। अपने १-११-६० के पत्र में उन्होंने लिखा था—"कहाँ तक लिखूँ? जो कुछ लिखता हूँ उसमें वही उदासी उतर पड़ती है। क्या अपनी पीठ पर आप कोड़े लगाऊँ और जबरन अपने को उस ओर हाँकूँ जिधर 'कुरुक्षेत्र' और 'रश्मिरथी' के कँगूरे दिखाई देते

हैं ? लगता है संघर्ष करते-करते अब टूट रहा हूँ।" इस प्रकार लगभग १४ वर्ष, भीतर-ही-भीतर यह अन्तर्द्वन्द्व उन्हें मथता रहा। मधुमेह, रक्तचाप और सबसे अधिक उर्वशी को पूर्ण करने की चिन्ता, अपने ज्येष्ठ पुत्र रामसेवक की असाध्य बीमारी से घबराकर ८-२-६७ के पत्र में उन्होंने चतुर्वेदीजी को लिखा था—"पंडितजी, मैं बचपन में गाय-भैंस चराता था। बाधाओं को ठेल-ठाल कर मैंने थोड़ी उन्नति की। मगर अब उसकी भारी क़ीमत अदा कर रहा हूँ। सोचता हूँ यह किस पाप का दण्ड है। भाइयों ने मुझे १९३९ में बाँटकर अलग कर दिया, मगर बेटियाँ और बेटे मेरे माथे पर पटक दिए। मैंने भी शान्तभाव से उसे स्वीकार कर लिया। दो बेटियों और छह भतीजियों की शादी की। दो बेटों और दो भतीजों को ऊँची शिक्षा दिलवाई। सोच रहा हूँ बुढ़ापे में वह फ़जीहत हो रही है जो जवानी में नहीं हुई थी। घोर चिन्ता और घबराहट में समय बीत रहा है। आपके आशीर्वाद की बड़ी आवश्यकता है, अब तो 'निर्बल के बल राम' बोलने के सिवा और कोई सहारा नहीं।" अन्त में रामसेवक की असामयिक मृत्यु से तो वे टूट ही गए। शायद ही कोई ऐसा मित्र हो जिससे उन्होंने पुत्रियों-पौत्रियों की शादी का दुखड़ा न रोया हो। वे प्रायः कहा करते थे—"मेरा अवतार तो कन्यादान के लिए ही हुआ है।" श्रेयांसजी को लिखे पत्रों में भी उनकी अतल मूक करुणा परिलक्षित की जा सकती है।

स्वतंत्रता के प्रथम प्रभात में बालारुण के समान क्षितिज पर उभरने के साथ-साथ विषाद की बदली की एक हल्की-सी रेखा आजीवन उनके मानस में आती-जाती रही। लंगटसिंह कालिज की प्रोफ़ेसरी से लेकर, भागलपुर-विश्व-विद्यालय के कुलपति, राज्यसभा की सदस्यता और भारत-सरकार के हिन्दी-परामर्शदाता के रूप में उनका वर्चस्व दर्शनीय था। 'कुरुक्षेत्र', 'नीलकुसुम', 'रश्मिरथी', 'उर्वशी' और 'परशुराम की प्रतीक्षा', जैसे सर्जनात्मक ज्वार का अप्रतिहत आवेग, 'मिट्टी की ओर' और 'संस्कृति के चार अध्याय' के प्रकाश-स्तम्भों पर चिन्तन का नया उन्मेष, ज्योति और ज्वाला की नई कहानी कहता प्रतीत होता था। ऐसा कोई उच्च पुरस्कार नहीं जो उन्हें न प्राप्त हुआ हो। देव-पुरस्कार, साहित्य-अकादमी-पुरस्कार, ज्ञानपीठ-पुरस्कार आदि, उस प्रारम्भिक सर्जनोत्सव में बड़े-से-बड़ा पद-त्याग करने का उनमें हौसला था। लंगटसिंह कालिज की प्रोफ़ेसरी से वे थोड़े दिनों में ही घबरा गए थे। अपने १६-१२-५० के पत्र में उन्होंने चतुर्वेदीजी को लिखा था—"यहाँ रहते हुए आलोचनाएँ लिखी जा सकती हैं, कविताएँ नहीं।" इसी आवेश में भागलपुर-विश्वविद्यालय की वाइस-

चांसलरी को भी लात मार दी। मध्य-प्रदेश के दो मुख्य मन्त्रियों श्री द्वारकाप्रसाद मिश्र और श्री गोविन्दनारायण सिंह द्वारा जबलपुर और रीवाँ-विश्वविद्यालयों के कुलपतित्व के प्रस्ताव की ओर उन्होंने आँख उठाकर भी नहीं देखा। भारत-सरकार के हिन्दी-परामर्शदाता के पद से अवकाश प्राप्त करने के बाद, बिहार की ग्रन्थ-अकादमी की अध्यक्षता इसलिए स्वीकार नहीं की कि उससे, अस्वस्थता की दशा में 'सुधांशु'जी को आघात लगेगा। बाद में 'प्रभात'जी की आर्थिक परेशानियों से द्रवित होकर उन्हें उस पर आसीन कराने के लिए प्रयत्नशील रहे और ख़ुद फ़ाकेमस्त बने रहे। दूसरी ओर साहित्य-सर्जना के साथ-साथ, उसके प्रचार-प्रसार के प्रति भी उतने ही सतर्क रहते थे। नौकरियों से तो वे ऊब गए थे पर राज्य-सभा की सदस्यता के लिए बड़े व्यग्र थे। अपने १८-२-५२ के पत्र में उन्होंने चतुर्वेदीजी को लिखा था—"आप जो मेरी मुक्ति की बात सोचते हैं उसमें भी एक तत्त्व है और उसका समर्थन मैं यह कह कर कर सकता हूँ कि नौकरियों में अब मैं ठीक तरह से अमाता नहीं हूँ।" फिर इसी पत्र में विनम्र भाव से यह भी संकेत किया गया है—"अच्छा होता कि जवाहरलालजी और पूज्य राजेन्द्र बाबू मुझे साहित्य के लिए सुरक्षित जगहों में से, एक के लिए मनोनीत कर देते।" इस सिलसिले में उन्होंने चतुर्वेदीजी को दिल्ली जाकर नवीनजी, जवाहरलालजी और राजेन्द्रबाबू से मिलने का आग्रह भी किया। इस प्रकार की उनकी महत्त्वाकांक्षाओं से उनके अधिकांश सहयोगी परिचित थे। उनके सुहृद जानते हैं कि मन्त्री बनने की भी उनकी लालसा कम नहीं थी। 'लोकदेव नेहरू' का प्रकाशन उसी प्रयत्न की एक कड़ी थी। पर राष्ट्रभाषा हिन्दी की अवज्ञा वे कभी बर्दाश्त नहीं कर सकते थे जिसके परिणामस्वरूप तत्कालीन शिक्षा-मन्त्री, भीतर-ही-भीतर उनसे चिढ़ गए थे। अस्तु, जीवन के इन विरोधाभासों से टकराते हुए भी उन्होंने जोधा का बाना कभी नहीं छोड़ा और पारिवारिक तथा सामाजिक, दोनों क्षेत्रों में दोनों हाथों से वार झेलते रहे। हिन्दी-साहित्य के इतिहास की यह भी एक क्रूर ट्रैजेडी है कि साहित्य-क्षेत्र में बड़े-से-बड़ा पुरस्कार और अभूतपूर्व सम्मान प्राप्त करने पर भी उन्हें एक क्षण के लिए भी मानसिक शान्ति नसीब नहीं हुई।

दिनकर के पत्र प्रकाशित करने का यह अनुष्ठान इस दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण है कि इससे महाकवि के जीवन के अनेकों विलुप्त सूत्र उपलब्ध हो जाते हैं—जैसे अपने समकालीनों के प्रति सहज सौहार्द की भावना। बच्चन से प्रथम परिचय प्राप्त करने और प्रथम पत्र लिखने का ज़िक्र, नागार्जुन की प्रतिभा से अभिभूत होने और उनकी आर्थिक विपन्नता पर व्यथा, प्रसाद,

प्रेमचन्द, रामदास और काशीप्रसाद जायसवाल की मृत्यु का सदमा। राय कृष्णदास के प्रति श्रद्धाभाव होने पर भी एक व्यक्तिगत पत्र चुरा लेने पर सात्त्विक आक्रोश। बुद्ध, रमण महर्षि, नीत्शे, रिल्के और अस्तित्व-वादियों की मीमांसा, घर के बँटवारे का विवरण, स्वामी मुक्तानन्द और पांडिचेरी की माँ के प्रति अनन्य आस्था, कुरुक्षेत्र के अंग्रेजी, स्पेनिश, कन्नड़, तेलुगू आदि के अनुवाद की सूचना। विभिन्न रचनाओं की सर्जन-प्रक्रिया की झलक, मृत्यु से एक मास पूर्व बच्चनजी के नाम पत्र और मृत्यु से ठीक सात दिन पूर्व पोद्दार रामावतार अरुण को पत्र—"प्रार्थना करो कि अब भगवान मुझे उठा लें"—मृत्यु से केवल चार दिन पूर्व २१-४-७४ को पद्मा सचदेव के नाम लिखित अन्तिम पत्र, बुद्धदेव और सीता पर काव्य लिखने की उत्कण्ठा और अन्त में कल्कि-महाकाव्य पूर्ण करने का अनुष्ठान।

निश्चय ही दिनकर के पत्रों का यह संग्रह हिन्दी-साहित्य की बहुमूल्य थाती है, फिर भी प्रेमचन्द के पत्रों के समान ये अपने युग की गाथा कहते नहीं प्रतीत होते। राष्ट्रकवि का 'विरुद' धारण करने पर भी राष्ट्र के मरणान्तक संघर्षों और गांधीजी को गोली लगने-जैसी मार्मिक घटनाओं का इनमें जिक्र तक नहीं हैं। बेनीपुरी, महादेवीजी, जयप्रकाशजी आदि के पत्रों का उल्लेख भी नहीं है, बच्चनजी के नाम भी कुल एक पत्र है। शेली द्वारा बायरन को लिखे गए पत्रों में प्रेमोन्माद की जो ऊष्मा है—इनमें उनका स्पर्श तक नहीं यद्यपि मैं उनके कुछ ऐसे भावभीने सुकुमार प्रसंगों से परिचित हूँ। दिनकरजी के परम आत्मीय गंगाशरणसिंहजी, मथुरा बाबू आदि के अनमोल पत्रों का भी अभाव खटकता है। मैंने स्वयं बच्चनजी से जब पूछा कि आपने दिनकरजी की प्रगाढ़ आत्मीयता को अभी तक प्रच्छन्न क्यों रक्खा है तो उन्होंने मुस्कुरा कर कहा कि उनमें बहुत से पत्र अत्यन्त व्यक्तिगत हैं। श्री कन्हैयालाल फूलफगर के इस नैष्ठिक प्रयास ने युग के उत्सर्गशील चारण के प्रति जो जिज्ञासा जगा दी है, उसके लिए इसका दूसरा खण्ड प्रकाश में आना परमावश्यक है। हिन्दी-संसार ही नहीं, विश्व-साहित्य की संपन्नता के लिए ऐसे निर्व्याज रहस्यों का उद्घाटन अनिवार्य है।

उज्जैन :
२९ मार्च, १९८१

शिवमंगलसिंह सुमन

अपनी बात

प्राचीन काल से जो प्रदेश महावीर, गौतम बुद्ध, सम्राट अशोक एवं महाकवि अश्वघोष आदि साधकों की जन्म-भूमि के रूप में प्रसिद्ध है और जिसे आधुनिक युग में राष्ट्र पिता गांधी का कार्य-क्षेत्र तथा देश-रत्न राजेन्द्र बाबू एवं जयप्रकाश-जैसे लोक-नायक की जन्म-भूमि होने का गौरव प्राप्त है, उसी बिहार-प्रदेश के बेगूसराय जिले के सिमरिया गांव के एक मध्यमवर्गीय भूमिहार किसान-परिवार में बाबू रवि सिंह के घर २३ सितम्बर १९०८ ई० को एक बालक का जन्म होता है जिसका नाम रखा जाता है रामधारी। यही रामधारी आगे जाकर "दिनकर" नाम से पूरे विश्व में विख्यात हो जाता है। दिनकरजी ने अपने जीवन-काल में कुल ६० पुस्तकें लिखीं। ३३ तो काव्यकृतियां हैं और निबन्ध, कहानी, संस्मरण, दैनिकी, समीक्षा, यात्रा-विवरण, बाल-साहित्यादि विभिन्न विधाओं की २७ पुस्तकें लिखकर उन्होंने हिन्दी-साहित्य-भण्डार को समृद्ध किया। वैसे दिनकरजी मूलरूपेण कवि ही थे और कवि रूप में ही विश्व-विश्रुत बने। अपने जीवनकाल में मान, सम्मान, पैसा, पद, प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि सभी कुछ उन्हें प्राप्त हुए। वे अपने जीवन में ऊँचे-से-ऊँचे पदों पर अपनी प्रतिभा के बल बूते पर पहुँचे। देश-विदेश की अनेकों बार यात्राएँ भी कीं। शक्ल, सूरत, नाक, नक्शा, बोल-चाल का तौर-तरीक़ा, ठहाके और हँसी का आलम, हर किसी अजनबी को अपनी ओर खींच लेता था। किसी को बताने की जरूरत नहीं पड़ती थी कि यही दिनकरजी हैं। बड़े-से-बड़े राजनेता या साहित्यकार उनके सामने बौने लगते थे। महाप्राण निराला तो वैसे हिन्दी-साहित्य में अपवाद थे, किन्तु निराला के बाद इस प्रकार की प्रतिभा अन्यत्र दुर्लभ है। बक़ौल ग़ालिब :

बलाए जां है 'ग़ालिब' उसकी हर बात
इबारत क्या, इशारत क्या, अदा क्या

इस अदावाले शख्स रामधारी पर लाख रोकने, मना करने के बावजूद हमारी तबीयत आ ही जाती है। दिल्ली की एक विदुषी लेखिका ने, जो दिनकरजी के जीवन-काल में उनकी विशेष प्रशंसिका रह चुकी हैं, मुझे अपने पत्रों के माध्यम से बहुत कुछ समझाने का प्रयत्न किया कि "आप क्यों ज़मीन-आसमान को सिर पर उठाए हुए हैं, हिन्दी-साहित्य में और बहुत से महत्त्वपूर्ण कार्य किए जा सकते हैं। दिनकरजी ऐसे व्यक्ति नहीं थे कि

उनके पत्रों को प्रकाशित करवाया जाए।" वैसे दिनकरजी की तस्वीर को बिगाड़ने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी बाबू श्री भगवतीचरण वर्मा ने। उन्होंने अपनी ताजा पुस्तक—"अतीत के गर्त से" में ऐसी बेसिर-पैर की बातें लिखी हैं जो कोई भला आदमी तो नहीं लिख सकता। वैसे दिनकरजी के पक्ष-विपक्ष में बहुत कुछ लिखा गया है, कहा और सुना गया है। दिनकर ऐसे छुटभैया नहीं थे जिनको नज़र-अन्दाज़ किया जा सके। हाँ, एक बात मन को जरूर कचोटती और कुरेदती है कि अभी तक सरकारी स्तर पर दिनकरजी पर कोई ठोस काम नहीं हुआ। अभी-अभी कलकत्ता-विश्वविद्यालय में इकबाल-चेयर की स्थापना हुई है। इकबाल-चेयर बने, ग़ालिब और मजाज़-चेयर बने, हमें कोई एतराज नहीं। उर्दू फले-फूले, यह बात हम दिलोजाँ से चाहते हैं, लेकिन हिन्दी के बल-बूते पर सम्पूर्ण सुख-सुविधाओं का उपभोग करनेवाले उन विद्वानों से हम पूछना चाहते हैं कि उन्होंने हिन्दी के लिए, हिन्दी के साहित्यकारों के लिए और साहित्य के मूक साधकों के लिए क्या किया? इस बात का कोई माकूल उत्तर उनके पास है क्या?

तत्कालीन रेल-मंत्री श्री कमलापति त्रिपाठी एवं बिहार के मुख्यमंत्री डॉ० जगन्नाथ मिश्र को हमने लिखा था कि राष्ट्रकवि की स्मृति को चिरस्थायी रखने हेतु, सिमरिया स्टेशन का नाम 'दिनकर-नगर' कर दिया जाए। लेकिन हुआ वही जो होता आया है। अभी हाल ही में हमने भारत-सरकार के डाक और संचार मंत्री श्री सी० एम० स्टीफेन को लिखा कि एक डाक टिकट दिनकरजी का भी जारी कर दिया जाए क्योंकि भारत-सरकार तो हर किसी विशिष्ट व्यक्ति पर, हर किसी बहाने डाक टिकट जारी करती ही रहती है, फिर दिनकरजी तो हमारे राष्ट्र-कवि थे। इस पत्र का उनके विभाग द्वारा हमें नकारात्मक उत्तर मिला। यह कितनी शर्म की बात है। इस प्रकार मूल बात हमारी जहाँ-की-तहाँ, धरी-की-धरी रह गयी।

२३ सितम्बर १९७८ को नई दिल्ली में महाकवि दिनकरजी के ७१वें जन्म-दिन पर एक समारोह आयोजित किया गया था। उक्त समारोह में तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई, प्रतिरक्षा मंत्री श्री जगजीवनराम, जनता-पार्टी के अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर, सोवियत-संघ के सुप्रसिद्ध हिन्दी-विद्वान श्री प्यौत्र अलेक्सीविच बारान्निकोव शामिल हुए थे। श्री बारान्निकोव ने अत्यन्त मार्मिक शब्दों में भाव-विह्वल होकर कहा—"मैं दिनकरजी के साहित्य से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। भारतीय और रूसी साहित्यकारों के सहयोग से "दिनकर-स्मारक-संग्रहालय" की स्थापना होनी चाहिए।"

मार्च १९७९ को आकाशवाणी दिल्ली के समाचार-दर्शन से यह संवाद सुनने को मिला कि आगरा में भारत-सरकार के सहयोग से दिनकर-भवन की स्थापना की जा रही है। पूरी खोज-खबर करने पर हमें ज्ञात हुआ कि अभी तक तो कुछ नहीं हो रहा है। जनता-पार्टी की सरकार के समय ज्ञात हुआ कि पटना में किसी मंत्री के सहयोग से दिनकर-भवन हेतु भूमि-पूजन हुआ था। अखबारों में सूचनाएँ छप गयीं, चित्र खिंच गए, मंत्रीजी ने मालाएँ धारण कर लीं, भूमि-पूजन हो गया। भवन और स्मारक, मूर्ति और दिनकर जाए भाड़ में ! यही सब कुछ गोरख-धन्धा आज तक होता आया है साहित्यकारों के नाम पर हमारे देश में। दिनकरजी का रूप जो वर्तमान तक पाठकों के सामने आया है वह प्राणवान कवि, ओजस्वी वक्ता, प्रखर लेखक, मौलिक चिन्तक एवं सहृदय मित्र का है।

श्री जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी द्वारा दिनकर-व्याख्यान-माला का आयोजन दिल्ली में किया गया था और उनके द्वारा संपादित "साहित्य और समाज" पुस्तक का प्रकाशन राजपाल एण्ड संस, दिल्ली से हुआ था तथा डॉ० गोपालराय ने "राष्ट्रकवि दिनकर" नाम से जो पुस्तक प्रकाशित करवाई है—उसमें दिनकरजी के सम्पूर्ण साहित्य की समीक्षाएँ प्रकाशित हुई हैं। ये दोनों कार्य अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण एवं ठोस हुए थे। श्री शिवसागर मिश्र की सूचनानुसार उनकी संस्मरणात्मक पुस्तक 'दिनकर : एक सहज पुरुष' अप्रैल, १९८१ में प्रकाशित हो रही है। लेकिन दिनकर का एक रूप और भी था जो पाठकों के सामने आज तक नहीं आया। दिनकरजी इतने बड़े लेखक, कवि, चिन्तक, वक्ता होते हुए भी एक टूटे हुए इन्सान थे। वे टूट चुके थे, अपने भीतर से एकदम टूट चुके थे गृह-कलह के कारण। उन्होंने अपनी इस व्यथा-वेदना को न काव्य में प्रकट होने दिया, न लेखों या भाषणों में। इन सब व्यथाओं को प्रकट करने के लिए इन्सान को कुछ और चाहिए। ग़ालिब की जुबाँ में—

वक़द्रे शौक़ नहीं, ज़र्फ़े तंगनाए ग़ज़ल
कुछ और चाहिये वुसअत, मेरे बयां के लिये

दिनकरजी ने अपनी इस अन्दरूनी वेदना को, 'कुछ और' को अपने व्यक्तिगत पत्रों में प्रकट किया है। इन पत्रों के माध्यम से हमें पता चलता है कि दिनकरजी का जो बाह्य-रूप था, वह भीतरी रूप से एकदम भिन्न था। कितनी तरह की चिन्ताओं ने उन्हें घेर रखा था। किस-किस तरह के भोग, पद्मभूषण राष्ट्रकवि रामधारीसिंह 'दिनकर' को अपने परिवार के कारण,

अपने पुत्रों के कारण, घर-बार और प्रकाशन-संस्थान के कारण भोगने पड़े थे। पाठकों के सम्मुख दिनकरजी का यह अछूता रूप हम प्रथम बार प्रकट कर रहे हैं 'दिनकर के पत्र' पुस्तक के माध्यम से।

जहाँ तक पत्र-साहित्य का प्रश्न है, विदेशी भाषाओं का साहित्य बहुत ही समृद्ध कहा जा सकता है। अमेरिका के प्रसिद्ध लेखक एमर्सन के पत्रों का संकलन ३२ हजार पृष्ठों का, पांच खण्डों में उपलब्ध है।

हिन्दी में सर्व प्रथम १६१० ई० में श्री दयानन्द सरस्वती के पत्रों को, स्वामी श्रद्धानन्दजी ने प्रकाशित करवाया था। पं० जवाहरलाल नेहरू की पुस्तक "पिता के पत्र : पुत्री के नाम" भी काफी प्रसिद्ध हुई। अन्य राष्ट्रीय नेताओं के पत्रों की कुछ पुस्तकें मूल हिन्दी तथा अनुवाद रूप में प्रकाशित हुई हैं जिनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं :

'पत्रावली (सुभाषचन्द्र बोस), 'कुछ पुरानी चिट्ठियाँ' (वीर सावरकर), 'बन्दी की चेतना' (कमलापति त्रिपाठी), 'सरदार पटेल के पत्र' १० भाग, 'जमनालाल बजाज के पत्र, 'बापू की प्रेम-प्रसादी' ४ भागों में। प्रमुख साहित्यकारों से सम्बन्धित कुछ पुस्तकें ये हैं :—

(१) शरत-पत्रावली—सं० डॉ० महादेव शाहा (२) पद्मसिंह शर्मा के पत्र—सं० बनारसीदास चतुर्वेदी (३) द्विवेदी-पत्रावली—सं० बैजनाथ सिंह 'विनोद' (४) द्विवेदी-युग के साहित्यकारों के पत्र—सं० बैजनाथ सिंह 'विनोद' (५) साहित्यिकों के पत्र—सं० किशोरीदास वाजपेयी (६) आचार्य द्विवेदी और उनके संगी साथी—सं० किशोरीदास वाजपेयी (७) फाइल और प्रोफाइल—सं० पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' (८) चिट्ठी-पत्री : प्रेमचन्द—सं० अमृत राय (९) प्रसाद के नाम पत्र—सं० रत्नशंकर प्रसाद (१०) निराला के पत्र—सं० जानकी वल्लभ शास्त्री (११) बच्चन के पत्र—सं० निरंकारदेव 'सेवक' (१२) बच्चन : पत्रों में—सं० जीवनप्रकाश जोशी (१३) यशपाल के पत्र—सं० मधुरेश (१४) बच्चन के नाम पन्त के सौ पत्र—सं० बच्चन (१५) बच्चन के नाम पन्त के दो सौ पत्र—सं० बच्चन (१६) बाबू वृन्दावनदास के पत्र—सं० रमण शाण्डिल्य (१७) बनारसीदास चतुर्वेदी के पत्र—सं० वृन्दावनदास (१८) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र—सं० वृन्दावनदास (१९) मुक्तिबोध के पत्र—सं० नेमिचन्द्र जैन।

प्रसादजी ने अपने जीवन-काल में बहुत-से पत्र लिखे होंगे। काश ! उन्हें संकलित कर पाठकों के सामने लाया जाता। लेकिन वह कार्य आज तक हुआ नहीं। वैसे ही महाकवि निराला ने हजारों पत्र लिखे होंगे लेकिन 'निराला के पत्र' में केवल जानकीवल्लभ शास्त्री के नाम ही लिखे हुए पत्र प्रकाशित हुए हैं। इसी तरह से सुमित्रानन्दन पन्त ने बच्चनजी को,

बच्चनजी ने निरंकारदेव 'सेवक' तथा जीवनप्रकाश जोशी को और यशपालजी ने मधुरेशजी को जो पत्र लिखे हैं, वे ही पत्र इन पुस्तकों में प्रकाशित हुए हैं। प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', पंतजी और बच्चनजी ने हजारों पत्र अनेक विद्वानों को और अपने परिवार वालों को लिखे होंगे और वे पत्र हमारे हिन्दी-साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। उनके सम्पादन एवं प्रकाशन के लिए किसी ऐसे सिर-फिरे व्यक्ति या साहित्य-सेवी-संस्था की अपेक्षा है जो इस कार्य को कर सके। मैं जानता हूँ कि यह कार्य बहुत ही लगन, धैर्य और मेहनत का है। ऐसे कार्यों के सम्पादन में कठिनाइयाँ भी कम नहीं आतीं। फिर हमारे देश में सहयोगी वृत्ति के लोग भी तो नहीं के बराबर हैं। वस्तुतः हमें ज्ञात ही नहीं है कि इन कार्यों का क्या मूल्य है? मैं स्वयं इन कष्टों का भुक्तभोगी हूँ। हिन्दी पत्र साहित्य में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य हाल ही में सम्पन्न हुआ है। श्री कमल पुंजाणी एम.ए. जामनगर (गुजरात) द्वारा अप्रैल १९८० में अपना शोध-प्रबन्ध "हिन्दी का पत्र-साहित्य" महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा में प्रस्तुत किया गया है। मेरी जानकारी के अनुसार हिन्दी-पत्र-साहित्य में यह प्रथम शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत हुआ है जिसके लिए हिन्दी-जगत को श्री पुंजाणी का कृतज्ञ होना चाहिए।

दिनकरजी के स्वर्गवास को लगभग ७ वर्ष हो गए; तभी से मेरे मन में यह बात जमी हुई थी कि राष्ट्रकवि के पत्रों को शीघ्र-से-शीघ्र संकलित करके प्रकाश में लाया जाय। पिछले पाँच वर्षों से मैं निरन्तर इस कार्य में लगा हुआ हूँ। देश-विदेश के अनेक विद्वानों को, स्नेही-मित्रों को, परिवार के सदस्यों को, जो दिनकरजी से सम्बन्धित रहे हैं, मैंने हजारों पत्र लिखें हैं। स्वयं जाकर उनसे मिला हूँ, जी-तोड़ परिश्रम एवं प्रयास के द्वारा जान-पहचान के लोगों से सिफारिशी चिट्ठियाँ उन्हें लिखवायी हैं ताकि उन पर असर हो सके; तब कहीं जाकर मैं दिनकरजी के लगभग पाँच सौ पत्रों को बटोरने में सक्षम और सफल हो पाया हूँ और उसी का परिणाम है कि आज यह पुस्तक, मैं पाठकों के हाथों में सौंप रहा हूँ। लोगों ने मुझे सहयोग दिया, और दिल खोलकर दिया, नहीं दिया तो उन लोगों ने नहीं दिया जो दिनकरजी के जीवन-काल में उनके बहुत बड़े हितैषी या शुभ-चिन्तक बनते थे, हर वक्त उनके आगे-पीछे मँडराते रहते थे, अपनी शान-शौक़त बढ़ाने हेतु, अपना उल्लू सीधा करने के लिए जो उनका उपयोग करते रहते थे; जिन्होंने दिनकरजी की मृत्यु पर मगरमच्छी आँसू भी बहाए थे, जमीन-आसमान एक कर दिया था; या जो दिनकरजी के परम शुभ-चिन्तक होने का दावा करते थे या जिनके लिए दिनकरजी ने सम्पूर्ण सुख-सुविधाओं का त्याग किया था—उन लोगों से मुझे रञ्चमात्र भी सहयोग नहीं मिला।

सबसे पहले मैं आभार व्यक्त करूँगा जापान के प्रसिद्ध हिन्दी-विद्वान प्रोफेसर श्री के० दोइ के प्रति। जब मुझे ज्ञात हुआ कि १९५७ ई० में श्री दोइ, दिनकरजी की प्रसिद्ध पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' का जापानी-भाषा में अनुवाद करना चाहते थे और इसी कार्य को लेकर उनका दिनकरजी से पत्र-व्यवहार हुआ था, मैंने श्री दोई को पत्र लिखा कि मैं दिनकरजी के पत्रों को संग्रहीत कर रहा हूँ, आपके पास राष्ट्रकवि के जो पत्र हैं, मुझे अविलम्ब भिजवा दीजिये। तत्काल १५ दिनों के अन्दर ही श्री दोइ ने पत्रों को खोज कर, फोटो-स्टैट कॉपी करवा कर, जापान से भिजवा दिया। आदरणीय श्री दोइ के समक्ष उनके इस व्यवहार से मेरा मस्तक श्रद्धा से नत है।

इसके अतिरिक्त इस सन्दर्भ में पूज्य बनारसीदासजी चतुर्वेदी तथा श्रद्धेय किशोरीदासजी वाजपेयी का कृपा-भाजन मैं रहा हूँ। जब-तब उनका स्नेह और आशीर्वाद मुझे मिलता रहता है। चतुर्वेदीजी को, जब मैंने अपनी योजना के बारे में लिखा, तो उन्होंने मुझे बहुत ही प्रोत्साहित किया और लिखा कि मेरा सब तरह से आपको सहयोग प्राप्त होगा। दिनकरजी ने लगभग ४५ पत्र अपने जीवन में बनारसीदासजी को लिखे थे। बनारसीदासजी ने उक्त पत्रों को राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली में जमा करवा दिया था। (भारतवर्ष के हिन्दी-विद्वानों में बनारसीदासजी चतुर्वेदी ने जितने पत्र लिखे हैं, उतने किसी ने भी नहीं लिखे। उन्हें लोग 'पत्र-सम्राट' भी कहते हैं। एक-एक चिट को जुगाकर वे अत्यन्त सावधानी से रखते हैं। आज भी उनके पास पत्रों का विशाल भण्डार सुरक्षित है। चतुर्वेदीजी ने राष्ट्रीय अभिलेखागार को पत्र लिख दिया कि दिनकरजी के पत्रों की फोटो-स्टेट कॉपी श्री फूलफगर को दे दी जाय।) इस बीच ही मुझे श्री अनिलकुमार 'आंजनेय' तथा श्री कुलदीप नारायणजी 'झड़प' ने लिखा कि उनके पास उक्त ४५ पत्रों की टंकित प्रतियाँ थीं और उन्होंने श्रीरामरीझन 'रसूलपुरी' सम्पादक 'उत्तर बिहार' को भेजा था। किसी कारण वश ये पत्र 'उत्तर बिहार' पत्रिका में प्रकाशित नहीं हो सके। पटनो-यात्रा के दौरान मैं श्री रामरीझन 'रसूलपुरी' के निवास पर गया। वे लम्बे अर्से से बीमार चल रहे थे। मैंने जब अपना परिचय दिया तो वे बहुत ही आनन्दित हुए, कहने लगे कि ये पत्र आपको दिये बिना मर जाता तो मेरी आत्मा को शान्ति नहीं मिलती। उन्होंने कहा कि मैंने इन पत्रों को रजिस्टर्ड-डाक द्वारा आपको कलकत्ते 'मित्र-परिषद' के पते पर भेजा था, लेकिन वहाँ से रजिस्ट्री वापस लौटकर आ गई। बन्द रजिस्ट्री, उन्होंने मेरे हाथों में थमा दी। उन्हीं पत्रों के आधार पर बनारसीदासजी के नाम लिखे दिनकरजी के पत्र

यहाँ छपे हैं। काफी समय वाद मुझे राष्ट्रीय अभिलेखागार से उक्त पत्रों की फोटो स्टेट कॉपियाँ प्राप्त हुईं।

श्रद्धेय किशोरीदासजी वाजपेयी को कुछ लोग झगड़ालू तथा क्रोधी प्रकृति का व्यक्ति कहते हैं। लेकिन मुझे तो वे एकदम पवित्र, कोमल, शान्त स्वभाव के, अत्यन्त ही मधुर व्यक्ति लगे। आज भी मेरे संग्रह में, उनके द्वारा भेजी उनके ही द्वारा हस्ताक्षरित "आचार्य किशोरीदास वाजपेयी और हिन्दी-शब्द-शास्त्र" पुस्तक अनमोल थाती के रूप में सँजोकर रखी हुई है। पूज्य वाजपेयीजी के पास दिनकरजी के द्वारा लिखित कुछ पत्र थे, लेकिन उन पत्रों को उन्होंने हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग में जमा करवा दिया था। मैंने इन पत्रों के लिए हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग को लिखा, तो वहाँ से पत्र आया कि हम वाजपेयीजी की आज्ञा के विना इन पत्रों को नहीं दे सकते। आज्ञा हेतु मैंने वाजपेयीजी को पत्र दिया तो उन्होंने मुझ पर विशेष अनुकम्पा करते हुए तुरन्त सम्मेलन के नाम निम्नलिखित पत्र लिखा:

सहायक मंत्रीजी — १ सितम्वर ७९
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग — कनखल

प्रिय पाण्डेयजी,

संग्रहालय में सुरक्षित दिनकरजी के लिखे तीन पत्रों की प्रतिलिपि (प्रकाशनार्थ) करने के लिए अनुमति दे दें। वहुत अच्छे आदमी हैं।

यह अनुमति कलकत्ते के श्री कन्हैयालाल फूलफगर के लिए है। ऊपर के वाक्य में उनका नाम देना छूट गया।

आपका
किशोरीदास वाजपेयी

इस पत्र के वाद मुझे दिनकरजी के पत्रों की फोटो-स्टेट कॉपियाँ, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से प्राप्त हो गईं। ऐसे तपेत्तपाये साधक के चरणों में मैं अपना श्रद्धामय प्रणाम निवेदित करता हूँ।

दिनकरजी के प्रिय स्नेही, सुख-दुःख के साथी, भारतीय ज्ञान-पीठ के अध्यक्ष श्री श्रेयांसप्रसाद जैन ने मुझे, मुक्त-मन से उदारता के साथ सहयोग दिया है। दिनकरजी के दुर्लभ चित्र, कीमती पत्र, अंग्रेजी की पुस्तकें तथा अन्य सामग्री मुझे अविलम्ब भिजवा दी और यह भी लिखा कि इस सम्वन्ध में जव-जव आवश्यकता हो, मेरी मदद लीजिए, मुझे इससे प्रसन्नता होगी। आज के युग में साहूजी जैसे भले आदमी वहुत कम नजर आते हैं।

'अनुत्तर योगी' के प्रसिद्ध लेखक, संवेदनशील कवि बन्धुवर वीरेन्द्रकुमारजी जैन और डोगरी की प्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती पद्मा सचदेव, जो मेरी मुँह-बोली धर्म की बहन है, इन दोनों स्नेहियों ने मुझे बहुत ही महत्त्वपूर्ण पत्र भिजवाये हैं। पद्माजी ने तो बम्बई में घूम-घूम कर अन्य पत्र भी बटोर कर मुझे भेजे हैं। इनके प्रति आभार शब्दों में नहीं व्यक्त किया जा सकता।

इसी प्रकार दिनकरजी के परम मित्र आचार्य कपिलजी के पास दिनकरजी के अत्यन्त दुर्लभ पत्र सुरक्षित थे, जिसे उन्होंने मेरे चाहने पर मूल रूप में, रजिस्ट्री से भिजवा दिये।

डॉ० विवेकी रायजी ने, जब सुना कि मैं दिनकरजी के पत्र प्रकाशित कर रहा हूँ, तो सारे मूल पत्र भिजवा दिये।

डॉ० मंगल मूर्ति (जो स्व० आचार्य शिवपूजन सहायजी के सुयोग्य पुत्र हैं) के पास शिवजी के नाम लिखे दिनकरजी के ४७ पत्र सुरक्षित थे, उन्होंने उनकी टंकित प्रतियाँ मुझे भिजवा दीं।

श्रीलक्ष्मीनारायण शर्मा 'मुकुर', श्रीधर्मदेवराय, डॉ० महेश नारायण तथा हास्यरस के सुप्रसिद्ध कवि श्रीसुरेन्द्र शर्मा ने कहाँ-कहाँ से खोज-खोज कर मुझे दिनकरजी से सम्बन्धित अलभ्य सामग्रियाँ, प्रामाणिक सूचनाएँ, दुर्लभ-चित्र, अप्राप्य पुस्तकें भिजवाई हैं। शंकित बुद्धि इस बात को मानने के लिए तैयार ही नहीं होती कि आज के इस स्वार्थप्रधान युग में भी कोई, निःस्वार्थ इतना कुछ कर सकता है!

श्रीकामेश्वर शर्मा 'कमल', दिनकरजी के परम प्रिय साथी एवं बाल-सखा रहे हैं। जब उन्होंने सुना कि मैं दिनकरजी के पत्रों को प्रकाशित करवा रहा हूँ, तो उन्होंने मोकामा से चल कर, मेरे कलकत्ता-निवास पर पधार कर, मुझे कृतार्थ किया।

कमलजी ने कहा कि जब मैंने सुना कि आप दिनकरजी के पत्र प्रकाशित कर रहे हैं तो मैं अपने आप को रोक नहीं सका; मोकामा से आया हूँ आपसे मिलने हेतु। बात-चीत के बाद उन्होंने वह कीमती फाइल मेरे हाथ में थमा दी जिसमें दिनकरजी के मूल्यवान मूल पत्र सुरक्षित थे। कहने लगे कि इस फाइल को आप ही रखिये। कमलजी से बहुत से अछूते, अनसुने, अनजाने संस्मरण सुनने को मिले। कमलजी-जैसे मित्र, दिनकरजी के और भी होते तो आज कभी का ही "दिनकर-स्मृति-भवन" बन गया होता।

स्वर्गीय रायकृष्णदासजी से दिनकरजी के अत्यन्त आत्मीय सम्बन्ध रहे हैं। दोनों के मन में एक दूसरे के प्रति सदैव ही आदर-भाव बना रहा। 'भारत-कला-भवन, काशी' को मैंने लिखा कि आपके संग्रह में दिनकरजी के

जितने पत्र सुरक्षित हैं, उन पत्रों की मुझे तुरन्त फोटो-स्टेट कॉपी मेरे खर्चे पर भिजवा दी जाये। पत्राचार लम्बे अर्से तक चलता रहा लेकिन मुझे पत्र प्राप्त नहीं हुए। आखिर मैंने पूज्य सीतारामजी चतुर्वेदी एवं सुस्नेही बन्धुवर श्रीमुरारीलाल केड़िया को इस बारे में लिखा। आचार्य सीतारामजी ने कलाभवन वालों को पत्र दिया, तथा बन्धुवर केड़ियाजी के ६ माह के अथक प्रयत्नों के वाद, मुझे इस शर्त पर उक्त पत्र प्राप्त हुए कि इन पत्रों का कॉपी-राइट कलाभवन-काशी का रहेगा। इस विषय में मेरा निवेदन है कि 'दिनकर के पत्र' पुस्तक में रायकृष्णदासजी के नाम से २५ पत्र, डॉ० आनन्दकृष्ण के नाम से ५ पत्र, राष्ट्रकवि मैथिलीशरणजी गुप्त के नाम से एक पत्र और स्व० अशोकजी के नाम से एक पत्र प्रकाशित हुए हैं; उन पत्रों का कॉपी-राइट भारत-कलाभवन, काशी का रहेगा। वे जब चाहें तब इनका उपयोग कर सकते हैं, इस में सम्पादक एवं प्रकाशक को किसी भी प्रकार की आपत्ति कभी भी नहीं होगी। पूज्यवर सीतारामजी चतुर्वेदी तथा साहित्य-प्रेमी बन्धुवर मुरारीबाबू का आभार मैं किन शब्दों में व्यक्त करूँ?

दिल्ली-यात्रा

देश के जाने-माने साहित्यकारों, पत्रकारों एवं राजनेताओं का रेशमी नगर दिल्ली। इसी रेशमी नगर में दिनकरजी ने अपने जीवन के बीस वर्ष बिताए थे। १२ वर्ष राज्य-सभा में और ६ वर्ष भारत-सरकार के हिन्दी-सलाहकार के रूप में। पत्र-संग्रह हेतु मैंने दिल्ली में काफी दौड़ भाग की है, अनेकों 'भद्र पुरुषों' से मिला हूँ, बहुत से खट्टे-मीठे अनुभव मुझे हुए हैं। अप्रिय-प्रिय बहुत कुछ तो मैंने सुना है दिल्ली में अपने कानों से दिनकरजी के बारे में। 'कादम्बिनी' के संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी, 'सारिका' के संपादक श्री कन्हैयालाल नन्दन, सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', स्टार पाकेट बुक के मालिक दयानन्द वर्मा एवं इलाहाबाद के श्री ओंकार शरद से कुछ दुर्लभ चित्र दिनकरजी के मुझे प्राप्त हुए हैं। श्रीमती कमलारत्नम्, श्री शिवसागर मिश्र, श्री गोपालप्रसाद व्यास के पास दिनकरजी की बहुत कुछ सामग्री होते हुए भी प्रकाशनार्थ कुछ नहीं पा सका हूँ, लाख आरजू-मिन्नत के बावजूद।

श्रद्धेय जैनेन्द्रकुमारजी और पूज्य भवानीप्रसाद मिश्र का मेरे सिर पर वरद हस्त सदैव रहा। ये लोग मुझे अपने परिवार का ही एक सदस्य मानते हैं, और वैसा ही स्नेह मुझे लम्बे अर्से से मिलता रहा है इन युग-

विभूतियों से। जैनेन्द्रजी की कृपा से ही मुझे साहित्य-अकादमी, दिल्ली से कुछ सामग्री प्राप्त हुई है। भवानी भाई ने अस्वस्थ रहते हुए भी न जाने कितना कुछ किया है मेरे लिए। अनेक लोगों को सिफारिशी पत्र लिखे हैं, फोन किये हैं, भाग दौड़ की है। भवानी भाई के कारण ही मुझे बहुत से कीमती पत्र श्री रामानुज प्रसाद सिंह (दिनकरजी के भतीजे) से प्राप्त हुए हैं। यह मेरा परम सौभाग्य है कि मुझ जैसे अदने-से इन्सान पर जैनेन्द्रजी और भवानीभाई मेहरबान हैं।

श्रीमन्मथ नाथ गुप्त हिन्दी के जाने माने लेखक हैं। देश के स्वतन्त्रता-संग्राम में अपनी जिन्दगी वर्बाद कर दी काल-कोठरी में मन्मथ बाबू ने। इनके द्वारा दिनकरजी पर लिखी पुस्तक १९६० ई० में लोक-प्रिय हिन्दी-कवि-सिरीज में राज़ पाल एण्ड सन्स, दिल्ली से प्रकाशित हुई थी। उक्त पुस्तक इतनी लोकप्रिय हुई कि वर्त्तमान तक उसके आठ संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। मन्मथ बाबू ने बताया कि वे दिनकरजी पर एक पुस्तक और लिख रहे हैं, जिसका नाम होगा 'अपने समय का सूर्य', जो १९८१ में प्रकाशित हो जायेगी। मन्मथजी के पास बहुत से पत्र दिनकरजी के थे, लेकिन परेशानी थी फाइलों के उस विशाल अम्बार में से उन्हें ढूँढ़ निकालने की। मैंने जब उनसे विनम्र निवेदन किया कि अति शीघ्र पुस्तक प्रेस में जा रही है, बाद में प्राप्त होने पर वे पत्र मेरे कार्य नहीं आयेंगे। मन्मथ बाबू सारा कार्य छोड़ कर भिड़ गये पत्र खोजने में। रात को ९ बजे भवानी भाई के घर फोन की घण्टी बज उठी कि फूलफगरजी को भेज दीजिए, दिनकरजी के पत्र मिल गये हैं। २० जनवरी ८१ को उनका पत्र मुझे यथा समय प्राप्त हुआ, जिसमें लिखा हुआ था—"कुछ और खोजते-खोजते महाकवि दिनकर के लगभग २० पत्र और मिल गए हैं जिनमें कई महत्त्वपूर्ण भी हैं—क्या समय है ?" इन कीमती पत्रों को विलम्ब से प्राप्त होने के कारण परिशिष्ट में देना पड़ा है। कितने मिलनसार, हँसमुख, जिन्दादिल नेक इन्सान हैं आदरणीय मन्मथ बाबू। ऐसे तपस्वी, कर्मठ साधक को मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ।

भारतीय ज्ञानपीठ से दिनकरजी का अत्यन्त लगाव रहा है। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'उर्वशी' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार भी उन्हें दिया गया था। ज्ञानपीठ-कार्यालय से मुझे डॉ लक्ष्मीचन्द्र जी जैन और श्री जगदीशजी की कृपा से कुछ पत्र, दुर्लभ चित्र मिले व ज्ञानपीठ-पुरस्कार के समय दिनकरजी द्वारा दिया गया भाषण अपने कैसेट में भरने को प्राप्त हुआ। इस बार उन लोगों के सहयोग से मेरे मन पर बहुत ही अच्छी छाप अंकित हुई है और लक्ष्मीचन्द्रजी के प्रति आदर भाव में अधिक वृद्धि भी हुई है।

पटना-यात्रा

पत्र-संग्रह और दिनकरजी के परिवार से, स्वजन-स्नेही मित्रों से मिलने हेतु जुलाई १९८० को मैं पटना गया था। वहाँ पर प्रोफेसर रामखेलावन रायजी के साथ, दिनकरजी के एकमात्र जीवित पुत्र श्री केदारनाथ सिंह से उनकी पुस्तकों की दूकान पर मिला। मेरे मन में इच्छा थी कि दिनकरजी द्वारा निर्मित राजेन्द्रनगर वाला मकान स्वयं जाकर अपनी आँखों से देखूँ। केदारजी से, स्वयं के दिनकरजी से सम्बन्धों के आधार पर, मैंने ही पहल कर कह दिया कि आज रात मैं आपके घर भोजन करूँगा, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। रात को रामखेलावन बाबू के साथ उनके निवास पर मैं पहुँचा।

कितनी लगन और तबीयत से उक्त मकान को बनवाया था दिनकरजी ने। एक-एक ईंट अपने खून-पसीने की कमाई की रखी थी उस दो-महली शानदार कोठी को बनवाने में। लेकिन विधि का विधान, उस मकान में वे जीवन के अन्तिम वर्ष शान्ति से नहीं बिता पाये। मृत्यु के कुछ दिन पूर्व वे अपने पुराने आर्यकुमार रोड वाले मकान में चले गये, भारी मन से। मैं अवाक् रह गया यह देख कर कि मुझे पूरे मकान में दिनकरजी की एक भी वस्तु नजर नहीं आयी, यहाँ तक कि दीवार पर कहीं भी राष्ट्रकवि का कोई भी चित्र टँगा हुआ नहीं मिला। बातचीत से मुझे ऐसा लगा कि जैसे अपने पिता के प्रति केदारजी के मन में विशेष श्रद्धाभाव नहीं है। आज जिस सुख-सुविधा का उपभोग केदारभाई कर रहे हैं और जिस शानदार कोठी में वे रह रहे हैं तथा जिन पुस्तकों की रॉयल्टी उन्हें मिल रही है, क्या वह सारा-का-सारा उस अभागे पिता का नहीं है जिसके प्रति इतना उपेक्षा-भाव वहाँ मुझे दिखाई दिया? दिनकरजी के पत्रों से लगता है कि उन्हें अपने पुत्रों से विशेष सुख नहीं मिला। पहले स्वर्गीय पुत्र रामसेवक सिंह से अनबन चलती थी और उसके चलते उन्हें काफी मानसिक कष्ट भोगने पड़े थे। अब सुनने में आया है कि दिनकरजी द्वारा लिखित वसीयत को लेकर स्व० रामसेवक सिंह की पत्नी और केदारनाथ सिंह (देवर-भाभी) के बीच मुक़दमे-बाजी चल रही है। दिनकरजी का बहुत-सा कीमती सामान, अप्रकाशित मूल्यवान सामग्री, ज्ञानपीठ-पुरस्कार की एक लाख रुपयों की राशि, सब कुछ अधर में लटका हुआ पड़ा है। राष्ट्रकवि को, न तो जीते जी सुख और चैन मिला और न मरने के बाद उनकी आत्मा को शान्ति मिल रही है। ईश्वर सद्बुद्धि दे उनके परिवारवालों को कि अब तो वे दिनकरजी की आत्मा को शान्ति मिलने दें।

दूसरे दिन रामखेलावन बाबू के साथ दिनकरजी के स्वर्गीय पुत्र रामसेवक सिंह की बेवा पत्नी और पौत्र अरविन्दकुमार से मिलने उनके निवास, आर्यकुमार रोड पर भी गया। यह मकान भी दिनकरजी ने ही बनवाया था। वर्त्तमान में इसका नाम 'दिनकर-भवन' है। बँटवारे में आर्यकुमार रोड वाला मकान, बड़े पुत्र रामसेवक के हिस्से में, और राजेन्द्र नगर वाला मकान, छोटे पुत्र केदारनाथ सिंह के हिस्से में आया। आर्यकुमार रोड वाले मकान में नीचे का हिस्सा किराए पर उठाया हुआ है, ऊपर स्वर्गीय रामसेवकजी का परिवार रहता है। दिनकरजी की पतोहू और पौत्र को रामखेलावनजी ने जब मेरा परिचय दिया तो वे लोग बड़ी ही आत्मीयता से मुझसे मिले। दिनकर जी के मन में वर्षों तक जो पीड़ा पल रही थी, वह कितनी सच निकली—यह बात साफ जाहिर हो रही थी उनकी पतोहू को देखकर। रामसेवक सिंह को चार पुत्रियाँ थीं। दो का विवाह (कल्याणी और पूर्णिमा) दिनकरजी अपने हाथों कर गए थे। दो बच्चियाँ रीता और पद्मा अविवाहित हैं। दिनकरजी ने जैसे कभी कहा था "भूमिहारों में तो लोग लड़कियों के विवाह में कपड़े तक उतरवा लेते हैं"। ईश्वर से कामना है कि शीघ्रातिशीघ्र इन बच्चियों के हाथ पीले हो जायें। अरविन्द, दिनकरजी का पौत्र जो अभी पढ़ रहा है, मुझे काफ़ी समझदार और होनहार लगा। उसके मन में अपने बाबा के प्रति अपार श्रद्धाभाव है। मुझे ऐसा लगता है कि यह बच्चा आगे जाकर निश्चय ही अपने बाबा का नाम रौशन करेगा। मुझे उससे बहुत-से चित्र, पत्र, एवं पुस्तकें प्राप्त हुईं। उक्त मकान को देखकर ऐसा लगा कि दिनकरजी की आत्मा वास्तव में यहीं निवास करती है। राष्ट्रकवि की सारी पुस्तकें तरतीबवार आलमारियों में रखी हुई थीं। पद्म-भूषण व अन्य मिले हुए खिताब एवं चित्र दीवार पर जगह-जगह टँगे हुए थे। देखकर तबीयत हरी हो गई। मैंने जब यह जानना चाहा कि दिनकरजी की कीमती पुस्तकों की पांडुलिपियाँ कहाँ हैं, मैं उन्हें देखना चाहता हूँ। लेकिन इस बात का कोई माकूल उत्तर मुझे नहीं मिला। मैं यह नहीं जान पाया कि ये सारी चीजें परिवार के किस सदस्य के पास हैं? मेरी इच्छा थी कि जिस प्रकार जयशंकर प्रसाद की अमर कृति कामायनी, कवि की लिपि में ही प्रकाशित हुई है, वैसे ही राष्ट्रकवि दिनकरजी की अमूल्य कृति उर्वशी को भी उनकी ही हस्त-लिपि में प्रकाशित किया जाय। दोनों परिवारों से मेरा आग्रह है कि वे दिनकरजी की सारी पाण्डुलिपियाँ राष्ट्रीय-अभिलेखागार, नई दिल्ली या किसी सर्वमान्य संस्था को प्रदान कर दें।

जब तक मैं पटने में रहा अरविन्द मेरे साथ रहा, मेरे साथ आया-गया और मन से पूर्ण सहयोग मुझे दिया। मेरी यह ईश्वर से प्रार्थना है कि

वे उसे योग्य बाबा का सुयोग्य पौत्र बनाएँ। पटना-यात्रा में प्रोफेसर रामखेलावन राय तथा श्री शंकरदयाल सिंह नहीं जुटते तो यह यात्रा अधूरी ही रह जाती। रामखेलावनजी ने अथक प्रयत्न से मुझे हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान स्वर्गीय डॉ० लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु' के नाम दिनकरजी द्वारा लिखित १४ पत्र सुधांशुजी के पुत्र प्रो०पद्मनारायणसिंह से दिलवाए। ऐसे ही दिनकरजी के प्रिय मित्र स्वर्गीय ब्रजकिशोर नारायण को लिखे २७ अनमोल पत्र, ब्रजकिशोर बाबू की पत्नी से श्री शंकरदयाल सिंह ने दिलवाए। शंकर बाबू ने मुझे दिनकरजी के अनेकानेक मित्रों से भी मिलवाया और बहुत-सी सामग्री दिलवाई। राष्ट्रकवि के अनेकों मित्रों से मुझे ज्ञात हुआ कि उनके पास बहुत से कीमती पत्र थे जो १९७५ की भीषण पटना-बाढ़ में नष्ट हो गए। प्रसिद्ध चित्रकार श्री उपेन्द्र महारथीजी ने कहा—"कितने पत्र, कितने चित्र दिनकरजी के मेरे पास थे, सब बाढ़ में नष्ट हो गए। केवल दो पोस्टकार्ड बचे हैं, वे भी पानी में भीगे हुए हैं।" उन्होंने वे दोनों पोस्टकार्ड सहर्ष मुझे दे दिए। उपेन्द्र महारथी का ११ फरवरी १९८१ ई० को पटना में स्वर्गवास हो गया। पटने से जितनी मूल्यवान सामग्री मैं जुटा पाया हूँ, उसका सारा श्रेय प्रो० रामखेलावन राय, शंकर दयाल सिंह और अरविन्द को है। पटना-प्रवास में श्री सोहनलाल चैनरूप घोड़ावत का स्नेह-सहयोग मुझे प्राप्त हुआ।

जब मैंने सुना कि गंगाबाबू पटना में हैं और इधर वे काफी अस्वस्थ चल रहे हैं, तब मैं अरविन्द के साथ गंगाबाबू से मिलने उनके राजेन्द्र नगर स्थित मकान पर गया। उन दिनों वे काफी अस्वस्थ थे, कितने किस्से-कहानियाँ-संस्मरण याद हैं गंगाबाबू को दिनकरजी के; अच्छा हो कि किसी प्रकार उन्हें कैसेट में भर लिया जाये, अन्यथा ये सारे अनजाने संस्मरण कभी चले जायेंगे उन्हीं के साथ। देश का दुर्भाग्य है कि सारे साधनों के बावजूद भी वर्त्तमान में महाकवि निराला की आवाज उपलब्ध नहीं है—काश! वह पौरुषमयी आवाज हमें आज सुनने को मिलती।

गंगाबाबू हमें सुना रहे थे—"दिनकरजी ने मृत्यु से पूर्व किस प्रकार तिरुपति के मन्दिर में उत्साह के साथ 'कृष्ण का विराट रूप' कविता का पाठ किया था। कितनी बुलन्द आवाज थी उस दिन उनकी! कैसा तेजोमय चेहरा था उस दिन उनका! इतना अपूर्व तेज मैंने कभी भी पिछले ४० वर्षों में उनके चेहरे पर नहीं देखा था। ऐसा लग रहा था कि जैसे साक्षात् भगवान ही उनके मुख से बोल रहे हैं। दूसरे दिन कैसे रात्रि-समय उनके सीने में दर्द उठा, किस प्रकार उन्हें अर्ध रात्रि में, ड्राइवर न होने के कारण, स्वयं श्री रामनाथ गोयनका गाड़ी चला कर नर्सिंग होम ले गये, किस प्रकार उनका

'राम-राम' कहते शरीर शान्त हुआ और किस प्रकार डैथ-सर्टीफिकेट हासिल किया गया।"—गंगाबाबू पूरी दास्तान सुना रहे थे। मेरी और अरविन्द की आँखों में अश्रुओं की झड़ी लगी हुई थी। २५ अप्रैल को वायुयान द्वारा तावूत में बन्द कर राष्ट्रकवि का पार्थिव शरीर अन्तिम क्रिया के लिए पटना भेजा गया था, और साथ में उनका सारा सामान भी भेजा गया था। मैंने पटना में सुना कि उक्त सामान के साथ दिनकरजी की वह डायरी भी थी जिसे महाकवि रोज रात को लिखा करते थे। उक्त डायरी को गंगाबाबू ने पूर्ण सावधानी के साथ वायुयान में सामान के साथ भिजवाया था। श्री गंगाशरण सिंह देश के जाने-माने सम्माननीय व्यक्ति हैं और दिनकर जी से उनका पिछले ४०-४५ वर्षों तक अत्यन्त आत्मीय सम्बन्ध रहा है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अपनी ४-१०-१९७३ की वसीयत में लिखा है—"मेरी सारी पाण्डुलिपियों, पुरस्कारों, पत्र-संग्रहों, तमगों और मेरे सम्बन्ध की रक्षणीय वस्तुओं का रक्षण कैसे हो, इसका जिम्मा मैं तीन मित्रों पर डालता हूँ।" उनमें से एक हैं बाबू गंगाशरण सिंह।

स्वर्गीय प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री और मरहूम राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद की डायरियों के गुम होने की बात तो कुछ समझ में आती है लेकिन किसी कवि की डायरी को भी कोई उड़ा दे, उसके पीछे क्या राज छिपा हुआ है, हमारी समझ में कुछ नहीं आया। हमारे देखते-ही-देखते महाकवि की कितनी मूल्यवान सामग्रियाँ नष्ट हो गई ? बाबू गंगाशरण सिंह बता रहे थे कि उनके पास दिनकरजी के पत्र बराबर आते रहते थे, वे उनका उत्तर देते और फाड़ देते थे। अपनी इस बुरी आदत के कारण उन्होंने कहा—"मैंने कितने मूल्यवान पत्र जयप्रकाश बाबू के, दिनकरजी के तथा अन्य नेताओं के फाड़ डाले। काश ! आज वे पत्र मेरे पास होते।"

इसी प्रकार दिनकरजी के स्नेही मित्र, 'ज्योत्स्ना' पटना के सम्पादक श्री शिवेन्दनारायण ने मुझे लिखा—"मेरे पास दिनकरजी के बहुत पत्र थे, लेकिन दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि उन सारे कीमती पत्रों को दीमक ने नष्ट कर दिया।" पूज्यवर सीतारामजी चतुर्वेदी ने मुझे लिखा—"मेरे पास कितने दुर्लभ कीमती पत्र दिनकरजी के थे किन्तु उन्हें खानचन्द नाम का व्यक्ति यह कह कर ले गया कि मैं दिनकरजी पर शोध-कार्य कर रहा हूँ। आज तक न तो वे पत्र ही लौट कर आये और न ही खानचन्द का कुछ अता-पता लग रहा है। उसने अपना निवास, शेखावाटी (राजस्थान) बताया था।" मद्रास-यात्रा के दौरान मुझे श्रीमती उमादेवी भुवालका ने बताया—"हमारे परिवार से दिनकरजी का बहुत पुराना सम्बन्ध रहा है। हमारे पास राष्ट्रकवि के तकरीबन १००-१५० पत्र थे। दिनकरजी की मृत्यु के सवाद के कुछ दिन बाद, हमने उन सब पत्रों को नष्ट कर दिया।" केवल ३ पत्र श्रीमती उमादेवी के पास बचे थे जिन्हें उन्होंने बन्धुवर शोभाकान्तजी की मार्फत मुझे मद्रास से भिजवाये हैं।

दिनकरजी के बहुत से कीमती पत्र स्व० रामवृक्ष बेनीपुरी के नाम लिखे हुए थे, उन पत्रों को हासिल करने का मैंने बहुत प्रयत्न किया। बेनीपुरीजी के पुत्र श्री महेन्द्र बेनीपुरी को भी इस बारे में लिखा। वैसे ही बहुत से मूल्यवान पत्र दिनकरजी ने अपने जीवन-काल में स्व० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन',

स्व० माखनलाल चतुर्वेदी, स्व० नलिनविलोचन शर्मा, स्व० जनार्दनप्रसाद झा 'द्विज', स्व० फणीश्वरनाथ रेणु, स्व० सुमित्रानन्दन पंत, श्रीमती महादेवी वर्मा, डॉ० हरिवंशराय 'वच्चन', श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', श्री रामनाथ गोयनका और डॉ० चरतराम को लिखे हैं। उक्त व्यक्ति या इनके परिवारजनों के पास दिनकरजी के कुछ-न-कुछ पत्र, चित्र या अन्य साहित्यिक सामग्री सुरक्षित होगी ही—इन सब जानेमाने प्रवुद्ध लोगों से और इनके परिवार के सदस्यों से, सभी संभव प्रयत्न मैंने किये हैं, लेकिन अत्यन्त खेद के साथ मुझे यह कहना पड़ रहा है कि तमाम प्रयत्नों और सिफारिशों के वावजूद मैं कुछ भी हासिल करने में सफल नहीं हो सका हूँ।

दिनकरजी के पत्रों को संग्रहीत और प्रकाशित करने की अपनी योजना को, जब मैंने 'धर्मयुग', 'राष्ट्रभाषा संदेश' तथा देश की अन्य जानीमानी पत्र-पत्रिकाओं में, सूचना हेतु प्रकाशित किया तब कुछ लोगों ने महाकवि दिनकरजी के नाम से नकली वना कर कुछ पत्र मुझे भिजवा दिये। उन पत्रों की प्रामाणिकता पर जव सन्देह हुआ तव उक्त पत्रों की फोटो स्टेट कॉपी या मूल पत्र दिखाने को कहा गया तो वे लोग इधर-उधर वगलें झाँकने लगे। 'दिनकर के पत्र' पुस्तक में जितने पत्र प्रकाशित हुए हैं उनमें अधिकांश की फोटो-स्टेट कापियाँ या मूल पत्र मेरे संग्रह में सुरक्षित हैं।

पुस्तक को तैयार करने में मुझे महत्त्वपूर्ण सहयोग और मार्गदर्शन मिला है सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ० प्रभाकर माचवे जी का। मैं उनके पास अनेकों वार गया हूँ—अनेक शब्दों की जानकारी हेतु, अनेकों वातों को समझने हेतु, अनेकों प्रकार का राय-मशविरा करने हेतु; हर वार ही आदरणीय माचवेजी ने स्नेही मन से मुक्त सहयोग दिया है। कलकत्ते में लम्वे अर्से से एक अभाव खटक रहा था। स्व० ललिताप्रसाद सुकुल और स्व० परमानन्दजी शर्मा के वाद इस अखाड़िया नगरी में एक सुलझा हुआ उच्चकोटि का विद्वान आया तो सही जिससे हर संभव सहयोग प्राप्त किया जा सकता है।

जानेमाने गीतकार श्री छविनाथ मिश्र, सरिता के सुप्रसिद्ध लेखक व मेरे आत्मीय स्नेही वन्धुवर सखा वोरड़, एशियाटिक सोसायटी के राजस्थानी स्कॉलर श्री अम्वू शर्मा तथा मुद्रक श्री शिवकुमार नोपानी का सहयोग मुझे नहीं प्राप्त होता तो मैं यह पुस्तक कलकत्ते में छपवाने की वात सोच ही नहीं सकता था। इन चारों महानुभावों ने पूर्ण मन से अपना ही कार्य समझ कर मुझे सव तरह का सहयोग और श्रम प्रदान किया है। मैं इनका आभार तहे-दिल से स्वीकार करता हूँ।

पुस्तक की भूमिका लिखी है देश के जानेमाने कवि, दिनकर जी के दिली-दोस्त, विक्रम-विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने। सुमनजी ने दिनकरजी के अपने सारे कीमती पत्र भी मुझे पुस्तक में प्रकाशित करने हेतु प्रेषित किये हैं। दिनकरजी के स्वर्गवास के वाद मुझे एक उन-जैसा स्नेही विद्वान मिला, यह ईश्वर की मुझ पर विशेष अनुकम्पा है।

वन्धुवर श्री श्रीचन्द नाहटा का सहयोग मुझे प्राप्त नहीं हुआ होता तो मैं इस मानसिक परेशानी में इस पुस्तक को इतनी शीघ्र प्रकाशित करने की कल्पना ही नहीं कर सकता था। वैसे इस कार्य में मैं पिछले ५-६ वर्षों से लगा हुआ हूँ लेकिन कोई हँसी-तमाशा नहीं है मुझ जैसे व्यक्ति

के लिए इस प्रकार के कार्य अपने बलबूते पर कर लेना। वैश्य-परिवार में पैदा होकर साहित्य का कार्य करना कितना कष्टप्रद है, इसे वे ही जानते हैं जिन्होंने इस समाज में जन्म लिया है। दो वर्ष पूर्व (१९७९ में) जब मेरे द्वारा सम्पादित 'दिनकर-स्मृति-ग्रन्थ' का प्रकाशन हुआ था, तब कितनी चें चें-पें पें की थी कुछ जरूरत से ज्यादा 'बुद्धिमान' लोगों ने। मुझ-जैसे व्यक्ति का, पूर्ण आत्म-सम्मान और स्वाभिमान की सुरक्षा करते हुए, कितना कठिन है इस दमघोंटू कलकत्ता नगरी में जीना और कुछ-न-कुछ साहित्यिक कार्य करते रहना। इन सब बातों के दरमियान मुझे कभी कलकत्ता के किसी प्रोफेसर का कोप-भाजन बनना पड़ा है तो कभी किसी सेठ की अकृपा का पात्र। ऐसे हालात में, आड़े वक्त में मेरे काम आये हैं बन्धुवर श्री श्रीचन्दजी नाहटा और श्री अभय सिंह सुराना। साहित्यिक कार्यों के लिए ये लोग मुझे प्रोत्साहित करते रहते हैं।

पत्रों के प्रकाशन की विधि में हमने तिथि को आधार माना है, और उसी क्रम से पत्रों को प्रकाशित किया है। पुस्तक का कार्य प्रारम्भ करते समय सबसे पहले की तिथि का पत्र हमें स्व० शिवपूजनजी के नाम का प्राप्त हुआ, और उसी क्रम के आधार पर पुस्तक तैयार की गई है। पुस्तक छपने के बाद पूज्य बनारसीदासजी चतुर्वेदी से, दिनकरजी का दिनांक १६-४-३४ का पत्र प्राप्त हुआ। यह पत्र हमें पहले प्राप्त हो जाता तो पुस्तक का प्रारम्भ इसी पत्र से होता, क्योंकि तिथि-क्रम में यह पत्र सबसे पहले का पड़ता है। बाध्य होकर विलम्ब से प्राप्त होने के कारण पूज्य बनारसीदासजी चतुर्वेदी, शिवपूजनजी सहाय और मन्मथनाथ जी गुप्त के कुछ पत्रों को परिशिष्ट में प्रकाशित करना पड़ा है। दिनकरजी ने अपने पत्र जिस रूप में लिखे थे, बिल्कुल उसी रूप में—बिना किसी काट-छाँट, संशोधन-परिवर्त्तन के उन्हें यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

हिन्दी-पत्र-साहित्य में, हिन्दी-साहित्यकारों की वर्त्तमान तक प्रकाशित पुस्तकों में, 'दिनकर के पत्र' पुस्तक सर्वश्रेष्ठ बनी है—यह दावा तो मेरा नहीं है लेकिन पूर्ण निष्ठा के साथ लम्बे समय तक श्रम करके इस पुस्तक को तैयार किया है और इस निर्णय का अधिकार भी अपने सुधी पाठकों पर ही छोड़ता हूँ कि पुस्तक श्रेष्ठ बनी या नहीं ?

जिन-जिन विद्वानों के पत्र इस पुस्तक में प्रकाशित हुए हैं उन सभी के प्रति मैं अत्यन्त विनम्र भाव से अपना आभार प्रकट करता हूँ। इन लोगों का स्नेह और सहयोग मुझे प्राप्त नहीं हुआ होता तो आज यह पुस्तक पाठकों के हाथों तक पहुँचा पाने में मैं सक्षम नहीं हो पाता।

८२/२ई, विधान सरणी,
कलकत्ता-४
दिनकर पुण्य तिथि
२४ अप्रैल, १९८१ ई०

कन्हैयालाल फूलफगर



राष्ट्रकवि रामधारीसिंह दिनकर के साथ कन्हैयालाल फूलफगर (सम्पादक)

ARYAKUMAR ROAD
PATNA-4
(BIHAR; INDIA)
22 10 57

प्रियवर श्री दोरू साहब,

आपका पोस्ट कार्ड मिला। आप ने यह नहीं लिखा कि मैंने जो यह बताया कि संस्कृति के चार अध्याय का अनुवाद तीन जिल्दों में निकालिये, वह प्रस्ताव आपको पसन्द आया या नहीं। नेहरूजी ने अंग्रेजी में जो भूमिका लिखी थी, उसकी एक प्रति मैं इस पत्र के साथ भेज रहा हूं।

चीन के लिए मैं २५ अक्तूबर को कलकत्ते से उड़ूंगा और २७-२८ तक पीकिंग पहुंच जाऊंगा। चीन में मैं १५ नवंबर तक रहना चाहता हूं। उसके बाद हांग-कांग और बैंकाक हो कर भारत लौट आऊंगा। Foreign Exchange की कठिनाई के कारण अब जापान नहीं जा सकूंगा। शेष कुशल है।

आपका
रामधारी सिंह दिनकर

संसद-सदस्य.
(राज्य-सभा)

164/8

मास्टर्स स्ट्रीट, अप्रैल-8
20. 9. 60.

My dear Kripalaniji,

The details are sent herewith —

Yours sincerely
RD

SANSKRITI KE CHAR ADHYAY

Language, Hindi. Originally published in 1956

Author — Ramdhari Sinha Dinkar (Born 1908 at village SIMARIA, Dist. MONGHYR (मुंगेर) Bihar)

Poet and Essayist, author of about 30 books in Hindi

WAS awarded PADMABHUSHAN in 1959

Received twice the DWIVEDI GOLD Medal of the Nagari pracharini Sabha, Kashi

was also awarded prizes by the Govt. of India, the Bihar Rashtra Bhasha parishad, and the SAHITYAKAR SAMSAD Allahabad for distinguished work in poetry. Member Parliament since 1952



पर, इसे नहीं रोने का भी अवकाश मिला,
सारा जीवन कट गया आग सुलगाने में।
आखिर, वह भी सो गया जिन्दगी ने जिसको,
था लगा रखा सोतों को छेड़ जगाने में।

दिनकर

दिनकर के पत्र

[३]

पो० ऑ० दलसिंगसराय
२६-३-३५

भाई शिवपूजन जी,

जय शिव !

आपका कार्ड आज मिला। किस्मत को देखिये कहाँ टूटी है जा कमन्द, दो हाथ सिर्फ जब के लबे बाम रह गया। नीचे पं० नन्दकिशोर तिवारी जी की एक चिट्ठी का उद्धरण दे रहा हूँ जो अभी-अभी मिली है।

"....आपको एक अत्यन्त आवश्यक कार्य के लिए कष्ट दे रहा हूँ। आप अपनी पहली किताब धनराज को दे दीजिये, चाहे जैसे भी हो। उसके लिये जो कुछ पुरस्कार संभव है आपको मिल जायगा। मैं जानता हूँ उसे आपने लहेरियासराय वालों को दे दी है। वे लोग भी मेरे मित्र हैं। भाई रामलोचन शरण जी और शिवपूजन मेरे अपने लोगों में हैं। फिर भी धनराज की आवश्यकता भाई रामलोचनशरण जी से अधिक है। इसी विचार से यह लिख रहा हूँ।"

लौटती डाक से आप उत्तर दें। धनराज यहाँ बैठे हैं जब यह पत्र लिख रहा हूँ। धनराज की इच्छा न थी कि मैं आपको उनके स्वार्थ के लिए लिखूँ।... यदि आवश्यकता समझें तो भाई रामलोचन शरण जी को यह पत्र दिखा दें। और उन्हें मेरी ओर से आग्रह करेंगे। उन्हें तथा शिवपूजन को मेरा आशीष कह देंगे।

मैंने उत्तर में लिखा है—कि उसकी छपाई के सम्बन्ध में लहेरियासराय वाले बहुत कुछ कर चुके हैं। कागज आ चुका है। हेड और टेल पीस बन चुके हैं। तिरंगे चित्र भी बन रहे हैं। "...इसलिए मैंने अब हस्तक्षेप करना उचित नहीं समझा था। किन्तु, आप के इस फरमान के खिलाफ जाने की हिम्मत मुझ में नहीं है। मुझे मालूम है कि शिवपूजन जी आप पर बड़ी भक्ति और प्रेम रखते हैं। मैं सारी की सारी बातें शिवपूजन जी को लिख रहा हूँ।"

मैं सोचता हूँ अब क्या होगा। पं० धनराज शर्मा मेरे अनन्य मित्रों में से हैं। वे फार्म खोल रहे हैं। तिवारी जी की इज्जत कौन नहीं करेगा ? एक तरफ ये आते हैं। दूसरी तरफ शिवपूजन जी हैं जिनकी देख-रेख में पुस्तक अत्यन्त सुन्दर और शुद्ध छपेगी। मैं कुछ कह नहीं सकता। आप अगर मेरी परिस्थिति में होते तो क्या करते। उत्तर एकदम गुप्त रहेगा।

आपका
रामधारी

पुनश्च :—

मैं शनिश्चर को दरभंगा आ जाता किन्तु उस रोज शायद मुझे पटने जाना है। आपका उत्तर मुझे शनिश्चर तक मिल जाना चाहिए। किसी भी प्रकार का उत्तर जरूर दें। फिर पीछे सोचूँगा। आप यह विचार छोड़ दें कि आप की बातों की कीमत वही होगी जो मास्टर साहब के किसी और आदमी की। मेरे हक में क्या अच्छा होगा ?

रामधारी

[४]

दलसिंगसराय
१४-५-३५

श्रद्धेय भाई शिवपूजन जी,

प्रणाम !

आप की चिट्ठी मिली। मैंने तो आप से पुरस्कार के Rate के बारे में साफ साफ कह दिया था। आप ने जो कुछ लिखा मुझे निराशा हुई। खैर, जाने दीजिये। मैंने दूसरी तरह से काम चला लिया। अब बात रही प्रकाशन की। पुस्तक लहेरियासराय में प्रकाशित होगी ही। अब जब तक पुस्तक के प्रकाशन के बाद की परिस्थिति नहीं देख लूँगा, लेन देन की बात नहीं करूँगा। यह लेन-देन का बखेड़ा बड़ा बुरा है। मैं कुछ नहीं लेना ही अच्छा समझता हूँ।

मास्टर साहब ने कुछ लिखने को कहा था। वह जा रहा है। आशा है पसन्द आयेगा। जुबिली अंक के लिए बधाई। एक आदमी उड़ा ले गए हैं। मिलने पर पढ़ूँगा और पढ़ने पर लिखूँगा।

आशा है आप सपरिवार प्रसन्न हैं। देखें आपकी दाल मुझे कब बुलाती है।

आपका भाई
रामधारी

[५]

२५-५-३५

भाई शिवपूजन जी,

प्रणाम !

सम्मेलन की चर्चा मिलने पर छान-बीन की। उस का विवरण मास्टर साहब को लिख रहा हूँ। मैं बड़ी कोशिश में हूँ कि कब समय मिले कि जुबिली अंक की चिन्ता करूँ। मुझे एक दिन भी आराम नहीं रह रहा है। आपके सामने लज्जित हूँ।

मैं मास्टर साहब को लिख रहा हूँ कि मुझे १०० रु० की तत्काल आवश्यकता है। एक छोटा-सा दालान दे रहा हूँ उसका काम धनाभाव के कारण रुकना चाहता है। अगर इस अवसर पर मास्टर साहब मेरे प्रस्ताव पर शीघ्रतापूर्वक विचार करते तो बड़ी कृपा होती।

आपका भाई
रामधारी

[६]

मुँगेर
२८-८-३५

भैय्या जी,

जयशंकर !

आज मेरे ट्रांसफर का आर्डर आया है। मैं दरभंगा जिलान्तर्गत दलसिंगसराय के ऑफिस का चार्ज १ मार्च को लेता हूँ। कृपया उत्तर उसी पते पर दें। अगर आप समझें कि चिट्ठी मुझे इसी महीने के अन्त तक मिल जायगी तो आप सिमरिया घाट के पते पर उत्तर दें।

आशा है आप सकुशल हैं।

आपका भाई
दिनकर

[७]

२६-९-३५

भाई शिवपूजन जी,

नमस्कार !

मैं पटने से २२ को चला आया। तब तक भूमिका आधी भर लिखी गई थी। उद्धरणों के लिये रेणुका का गवेषणात्मक पाठ हो रहा था। माखनलाल जी ने कहा कि मैं इसे पूरी लिख चुकने पर यहाँ से जाऊँगा। मुझे तो जल्दी थी, बेनीपुरी से कह दिया था कि ज्योंही भूमिका तैयार हो, दरभंगे रवाना कर दो। आशा है भूमिका अब तक आप को मिल गई होगी। अगर नहीं तो दो एक दिनों में अवश्य मिल जायगी।

आप अपने हाथ के सारे काम खत्म कर दें। दो रंगी छपाई ३० तक तो जरूर खत्म कर दीजिये। कारण मैं पहली अक्टूबर को आप से मिलता हूँ और चाहता हूँ कि उस रोज मुझे कम-से-कम दस प्रतियाँ तो जरूर मिल जानी चाहिए।

एक मुख्य बात और। उस रोज लाइन ब्लाक्स के नमूने देखते हुए मुझे परदेशी कविता का हेड पीस कुछ पसन्द नहीं आया। उसमें शायद एक साधु का चित्र है जो दुनिया वालों की ओर से भागा जा रहा है। यह तो बिल्कुल prosaic idea है। उसे, अगर वह यही हो जो याद है, हटा देंगे। उसकी जगह और कोई ब्लाक छाप दें। चुनाव आपकी रुचि पर है। नया बनवाने की जरूरत नहीं। बने हुए में से ही कोई फिट कर जायगा।

आशा है आप प्रसन्न हैं। रेणुका की एक कॉपी जल्दी ही बनारसी दास जी को मिलनी चाहिए। नेपाली जी की रागिनी जगदीश ने छापी है और उसका कहना है कि जब तक रेणुका प्रकाशित होगी तब तक रागिनी का दूसरा संस्करण होगा। इस का भी हमें ध्यान है न ?

३० होकर मेरा कोर्ट १२ दिनों के लिए बन्द हो जायगा।

आपका
रामधारी

[८]

पो० ऑ० सहरसा
२१-६-३७

प्रिय भाई जी,

बन्दे !

आपका उत्तर मिला। सुलतानगंज में त्रिवेदी जी से मालूम हुआ था कि बेचारे आनन्द पर फिर से शीतला का प्रकोप हुआ है। उसके बाद आप ने भी लिखा। भगवान की इच्छा कि आप जैसे सरल जीव भी विपत्ति से नहीं बचते। सुना था कि जिसे एक बार शीतला हो जाती है दूसरी बार उसे नहीं हो सकती। क्या आनन्द के सिवा और किसी बच्चे को बीमारी हुई थी? विनोदन अच्छी रही तो? स्पष्ट लिखेंगे। अब वे लोग कैसे हैं। सिद्धि घर गए हुए हैं यह भी रामगोविन्द जी से मालूम हुआ था।

मुंगेर D. B. के Education Clerk से कल भेंट हुई। उसने मुझसे कहा कि ६० प्रतियाँ रेणुका की जिले के स्कूलों में खरीदी गई हैं। D. B. ने सभी का बिल भी चुका दिया। किन्तु सारी पुस्तकें पुस्तक भण्डार से एक बार ही नहीं खरीदी गईं। उन लोगों ने हर स्कूल में रेणुका को compulsory बना दिया। स्कूल के अध्यापकों को जहाँ जहाँ सुविधा हुई वहाँ वहाँ से पुस्तकें खरीद कर बिल D. B. को भेज दिया। आपको स्मरण होगा, मैंने पर साल आपको या मैनेजर साहब को लिखा था कि भण्डार अपने एजण्टों के द्वारा स्कूलों को पुस्तकें सप्लाई कर दे तो समय पर बिल भेज कर भण्डार थोक रुपये पा जायगा। मगर भण्डार ने मेरी बातों पर ध्यान नहीं दिया।

भागलपुर D. B. के Special Officer से मिला। रेणुका की प्रति भेंट की। उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकृति दे दी है। भण्डार को चाहिए कि एक दरखास्त formally भेज दे जिसमें इस बात का जिक्र रहे कि रेणुका की कापियाँ स्कूल में इनाम देने तथा पुस्तकालय सजाने के लिए मुंगेर और मुजफ्फरपुर D. B. ने खरीदी है। यह भी लिख दिया जायगा कि author आपसे मिल कर बात कर चुके हैं जो शायद आपको याद होगा और उन्हीं के instance से यह प्रार्थना पत्र आपकी सेवा में जा रहा है। पत्र अंग्रेजी में तो जायगा ही, application जाने की सूचना मुझे मिलनी चाहिए। तब मैं उन से फिर मिल कर direct purchase करने कहूँगा।

'दीगर हाल' यह है कि 'रसवन्ती' को युगान्तर मन्दिर ।प्रकाशित कर रहा है। आज से मैं उसकी प्रेस कॉपी तैयार करने में लग जाऊँगा। आशा है एक सप्ताह में कापी तैयार हो जायगी। भादो तक पुस्तक आउट हो जायगी। आप महारथी भाई से मेरी ओर से अनुरोध करेंगे कि रसवन्ती के नामानुकूल एक दुरंगा चित्र बना देने की कृपा और शीघ्रता करें जो टाइटिल पेज पर दिया जायगा। चित्र में क्या भाव होना चाहिए इसके लिए आप दोनों महारथियों की रुचि ही श्रेष्ठ होगी। सुधांशु जी ने कहा कि एक सुन्दरी हाथों में पात्र लेकर किसी वृक्ष या लता के नीचे खड़ी हो। वृक्ष से कुछ बूँदें टपक कर पृथ्वी पर भी गिर रही हों। किन्तु मेरे विचार से इसमें हालावाद की बू आती है। आप विचार करेंगे। मेरी रसवन्ती शराब नहीं पीती। वह तो मुक्त कुन्तला चिरविरहिणी नायिका-सी है जो वृक्षों, दूर्वों, तलहट्टी, नदी के किनारे और खंडहरों में कुछ खोजती-सी फिरती है। शीर्षक कविता में मैंने कहा है :—'पन्थ में दूर्वा से सज तुम्हें, पिन्हाया गंगा का जलहार। शीश पर हिम किरीट रख किया, देश की मिट्टी से शृंगार। विमूर्च्छित हुई तपोवन बीच, कराया निर्झर का जल पान। बोधि तरु की छाया में बाँह, हुई शुचि बन कर तव उपधान।' आप विशाल भारत के अप्रैल वाले अंक में उसे पढ़ लीजिएगा और चित्र शीघ्र बनवा दीजिएगा। पूरा रंग नहीं रहे। दोनों रंग रेखाओं में ही भरे जाँय। रेखा चित्र अधिक गंभीर होगा। शेष कुशल है।

आशा है आप महारथी जी तथा दत्त जी मेरी याद करते होंगे। और जो suggestion देने हों शीघ्र देंगे। मैं तो निरा अनभिज्ञ हूँ।

बालक यहीं भेजिए।

आपका विनीत भाई
दिनकर

[९]

सासाराम
१५-८-३८

प्रिय भाई जी,

जय शंकर !

जहाँ तक संभव था संशोधन कर दिया गया। हिमालय पर नश्तर लगाते समय 'डस रहे चतुर्दिक विविध व्याल' से अच्छी पंक्ति मिली ही

नहीं। पुस्तक और लिस्ट दोनों को मिला कर पढ़िये और अपनी रुचि के अनुसार सारी गलतियाँ सुधार लीजिए। तू और तुम का बेतुका मेल खटकता था इसलिए उसे दूर कर दिया है। अब शायद व्याकरण की भद्दी भूलें नहीं रह गई हैं: आप कम से कम ३ घण्टे संशोधन में लगाने की कृपा करें।

छपाई के विषय में आप और महारथी जी हैं ही, मुझे कुछ करना नहीं रह जाता। तो भी आवरण पर का चित्र कुछ स्थूल है। उजले या हलके रंग के आवरण (कागज) पर रेखा चित्र रहता तो अधिक सुन्दर होता। क्या इसका आकार छोटा नहीं किया जा सकता? दाम दो रुपये रख रहे हैं तो पृष्ठ संख्या कम-से-कम १५० होनी चाहिए और कागज भी ऐसा होना चाहिए कि २ रु० के लायक हो, आकार भी भारी भरकम हो: छपाई को घनी रखना अच्छा नहीं लगता। उसे अधिक पतली कर दीजियेगा।

एक पन्ने में १२-१५ पंक्तियाँ। वैभव की समाधि कविता की छपाई पर एतराज था कि पद आमने - सामने पढ़े जाँय या ऊपर नीचे। इसका कुछ उपाय होना चाहिए।

मैंने चार नई कविताएँ जो १९३५ में लिखी गई थीं और जिनका रंग रूप रेणुका से मिलता जुलता था इसबार मिला दी हैं। श्रान्त-गीत हलका-सा लगा अतएव उसे हटा दिया। धूल के हीरे कोई ८०-८५ हो गए। उन्हें स्वतन्त्र पुस्तक के रूप में छपाना चाहता हूँ। अतएव रेणुका में रखना अच्छा नहीं लगा। एक ही कविता दो पुस्तकों में रखने से दोनों हलकी लगेंगी।

भूमिका कुछ भद्दी-सी ही रही। मैंने कुछ अंश काट दिया है। उसे न छापिये। अगर यह अनाधिकार चेष्टा सावित हो तो लिखेंगे।

कविताओं का क्रम नये ढंग से सजाया गया है।

चार नई कविताएँ जोड़ने के लिए प्रकाशक का वक्तव्य देना होगा। शेष बातें आप देख ही लेंगे। बालक वाली कविता में सत्येन्द्र दत्त का नाम न देने से भी काम चल जायगा। लेकिन देने से कोई क्षति नहीं सिर्फ अनुवाद का प्रचार होगा।

रेणुका का नया संस्करण कब तक निकाल देने की आपको आशा है।

आपका
दिनकर

[१०]

सीतामढ़ी (कोर्ट)
२२-४-३९

बन्धुवर,

प्रणाम !

आपका पत्र मिला। रेणुका के प्रथम संस्करण में कुछ न लिखा तो अब भी नहीं लिखूँगा। कृपा करके आप ही अपने नाम से अथवा प्रकाशक की ओर से कुछ लिख दीजिए। आपके नाम से रहे तो अपना अहो भाग्य समझूँगा। आशा है मेरी प्रार्थना अस्वीकृत नहीं होगी।

प्रेम का सौदा वैभव की समाधि से ठीक पहले रखिये। यदि मेरे विलम्ब के कारण पहले ही छाप चुके हों तो भी ठीक है।

रसवन्ती के लिये एकाध कविता और सूझ गई है। उसे लिख लेने दीजिये। बेनीपुरी उसे भी छापना चाहता है। लेकिन कई कारणों से मैं उसे पुस्तक भण्डार में ही छपाने के पक्ष में हूँ। शीघ्र ही आपसे मिलने को लहेरियासराय आऊँगा। उसी समय शायद कापी भी साथ लाऊँगा।

विशेषांक कब निकल रहा है? क्या अगले सप्ताह तक समय रहेगा?

इधर बड़ा व्यस्त रहा: घर पर छोटे बच्चे की हालत अब-तब की हो रही थी। अब अच्छा है: यहाँ आने पर भी अभी तक अव्यवस्था ही है। दो चार दिनों में निश्चिन्त हो सकने की आशा करता हूँ। सीतामढ़ी अच्छी जगह मालूम पड़ती है। जलवायु की काफी तारीफ सुन रहा हूँ।

उत्तर देने की कृपा करें।

आपका
रामधारी

[११]

स्थान सीतामढ़ी (कोर्ट)

प्रिय भाई शिवपूजन जी,

प्रणाम !

क्षमा-प्रार्थना के लिए यह पत्र लिखना था लेकिन काफी देर हो गई। मैं साहित्य गोष्ठी में शामिल नहीं हो सका इसका कारण यह था कि मैं

जिस ट्रेन से चलना चाहता था वह छूट गई। लाचारी टिकट को Invalid करके via मुजफ्फरपुर लौटना पड़ा। यात्रा ऐसी बुरी थी कि समस्तीपुर में किसी सज्जन के असबाव के साथ मेरा सूटकेस भी उतर गया। मुजफ्फरपुर से फोन करवा कर पता लगा। २९ को आठ वजे ऑफिस पहुँचा। फिर उसी दिन शाम को सूटकेस लाने समस्तीपुर चला गया। सभी सामान मिल गये सिवा एक फाउन्टेनपेन के जो शायद Staff में से किसी ने निकाल ली। आशा है मेरी विवशता के लिए क्षमा करेंगे।

उसी दिन घर जाकर मैंने समयोचित प्रवन्ध कर लिया। अव इस कोशिश में हूँ कि पुस्तक लेकर शीघ्र ही आ जाऊँ। क्या करूँ? यहाँ भी काम बढ़ा हुआ है। रोज समय बचाना चाहता हूँ पर किसी रोज बचा नहीं सकता। इसी कारण थोड़ा-सा काम वाकी वच रहा है। अव सीजन खत्म होने लगा है और मैं आशा करता हूँ कि इस महीने में ही मैं कापी लेकर हाजिर हो जाऊँगा।

द्विवेदी अंक के लिए वहुत-वहुत वधाइयाँ। वालक ने इस मामले में अपना बढ़िया रेकार्ड वना लिया है। मुझे वह अंक वहुत उपयोगी जँचा। फिर से वधाई स्वीकार कीजिए।

आशा है, आप प्रसन्न हैं।

आपका
दिनकर

[१२]

सीतामढ़ी (कोर्ट)
११-९-३९

मान्यवर बन्धु,

सादर नमस्कार !

आशा है रेणुका का छपना खत्म हो गया होगा। यह भी आशा करता हूँ कि रसवन्ती और द्वन्द्व गीत में हाथ लग रहा होगा। रसवन्ती तो ओवरड्यू है। अगर वह अक्तूबर तक नहीं निकली तो फिर १९४० के अक्तूबर में ही निकल सकेगी। अतएव आपको उसके लिये शीघ्रता करने की याद दिलाता हूँ।

द्वन्द्व गीत, सारी पुस्तक Italics में छपना चाहिए। कामायनी की तरह उसको Arrange करना होगा। कृपया इसे ध्यान में रखेंगे।

उत्तर दीजिये।

द्वन्द्व गीत के दोनों बाकी पद जा रहे हैं। पुस्तक में जहाँ द्वन्द्व की जगह द्वन्द रह गया हो उसे सुधार देंगे।

आपका
दिनकर

[१३]

सीतामढ़ी कोर्ट
२३ - ९ - ३९

मान्यवर शिवपूजन जी,

जय शंकर !

किस्मत को देखिये कहाँ टूटी है जा कमन्द। दो हाथ सिर्फ जब के लवे बाम रह गया।

शनिश्चर की छुट्टी का आर्डर कल तक को, मेरी आशा के अनुसार ही आ गया था। आज चार बजे से चलने की मैं तैयारी भी कर चुका था लेकिन अचानक कलक्टर का तार आया कि कल कोर्ट बन्द नहीं रहेंगे। लाचारी है कि वादा के मुताबिक आ नहीं सकता।

द्वन्द गीत और रसवन्ती की कापियाँ बिलकुल तैयार हो चुकी हैं। आज उन्हें भी लेकर आता। अब अगले रविवार अथवा शनिवार की शाम को आ सकता हूँ। मेरे आने के बारे में श्रद्धेय मास्टर साहब को सूचना दे देने की कृपा करेंगे। मेरे लिये तो प्रबन्ध पहले से ही किया कराया रक्खा हुआ होगा। उसकी याद क्यों दिलाऊँ ?

रविवार को बनारस जा रहा हूँ। बुध की रात या बृहस्पति के प्रातः लौटूँगा। लौटने पर डेरे में आपके पत्र की प्रतीक्षा करूँगा। सो जान रखें।

द्वन्द या द्वन्द्व ? शुद्ध रूप तो द्वन्द्व ही है। तो क्या द्वन्द्व गीत ही ठीक होगा ? द्वन्द गीत के लिये कोई उपाय नहीं हो सकता ? द्वन्द्व की अपेक्षा द्वन्द सरल और कुछ मधुर भी मालूम पड़ता है और मुझे इस अशुद्ध रूप से कुछ मोह सा हो गया है। क्या इसे छोड़ कर शुद्ध द्वन्द्व को ही ग्रहण करना होगा ?

आपका
दिनकर

[१४]

पो० ऑ० सीतामढ़ी (कोर्ट)
७-१०-३६

मान्यवर,

प्रणाम !

आगामी १३ नवम्बर को समस्तीपुर के छात्र परिषद् का उत्सव होनेवाला है: उस अवसर पर आपको वहाँ चलना पड़ेगा। इसकी सूचना अभी से दे देता हूँ: एक दिन का समय लगेगा। दरभंगे से समस्तीपुर आना जाना तो कोई बात ही नहीं है।

सुना है रेणुका छप कर तैयार है। शायद कवर अभी तक नहीं आया है। मैं १६ की रात में काशी जाना चाहता हूँ। अगर सम्भव हो तो चार कापियाँ—जैसी भी अवस्था में—मेरे पास भिजवा दें। गुप्त जी आदि दो तीन कवियों को Present कर दूँगा।

रसवन्ती और द्वन्द्व गीत का क्या हुआ ? वे पुस्तकें छपेंगी या नहीं ? श्रद्धेय मास्टर साहब से निवेदन कर के लिखेंगे कि जिस रकम के लिए पूजा के अवसर पर आना ठीक हुआ था उसके लिए मैं कब आऊँ। क्या किसी भी दिन ६ बजे शाम को पहुँचने से काम चल जायगा ?

उत्तर दीजियेगा।

आपका
दिनकर

[१५]

पटना
८-२-४१ (नौ बजे रात)

मान्यवर,

मैं निश्चिन्त था कि छपरा जाना है, इसलिए लखनऊ नहीं जाऊँगा। कल शाम को मालूम हुआ कि आपने सभा स्थगित कर दी। आज शाम को आपकी चिट्ठी मिली जिससे मालूम हुआ कि लखनऊ की बाधा से ही आपको उत्सव रोकना पड़ा है। लिहाजा, लाचार होकर अभी लखनऊ प्रस्थान कर रहा हूँ। शायद, कल दोपहर तक पहुँच जाऊँगा और उनकी एकाध सभा में सम्मिलित हो सकूँगां।

रुपये नहीं मिले हैं। शायद जयनाथ जी के पास हों। ईश्वरेच्छा गरीयसी। क्या जाने, मेरा छपरा जाना भगवान को क्यों पसन्द नहीं है।

आपका
दिनकर

[१६]

पटना
२६-२-४१

मान्यवर,

हिमालय के लिए मैंने एक लेख तैयार किया है, 'पाकिस्तान के पीछे साहित्य का हाथ'। लेख अच्छा उतरा है। क्या उसे छपरा भेज दूँ ?

टेढ़े-मेढ़े रास्ते की विस्तृत आलोचना आज दे दी है। वह आठवें अंक में चली जायगी।

और जो आज्ञा हो, लिखी जाय।

विनीत
दिनकर

[१७]

सीतामढ़ी कोर्ट
१५-१०-४१

प्रिय शिवपूजन जी,

प्रणाम !

आपको विस्मय होगा कि मैंने कविता क्यों नहीं भेजी। बात यह हुई कि जिस दिन ऑफिस खुला उसी दिन I. R. O. पहुँच गए और प्रायः तीन दिनों तक मुआयना के सिलसिले में यहीं डटे रहे। उनके बाद ही कलक्टर साहब का आगमन हुआ और वे अब तक यहीं हैं। मेरे लिए वातावरण अच्छा नहीं रहा। फिर, बहुत लिख चुकने के कारण ऐतिहासिक कविताएँ लिखने में अब कठिनाई भी होती है। जैसी कुछ बन पड़ी सामने हैं। मैं इतना कहूँगा कि यह छन्द अब छूने लायक नहीं रहा। शेष ठीक है। आज यह विचार हुआ था कि इस कविता को निचोड़ कर दूसरे छन्द में कलिंग विजय पर कुछ लिखूँ। लेकिन देर हो रही है इसलिए उस विचार को छोड़ता हूँ।

पत्र लिखिए कि यह ठीक उतरी है या नहीं। शनिवार की शाम को बाहर निकल जाऊँगा। अतएव उत्तर पहले ही आना चाहिए।

आपका
दिनकर

[१८]

सीतामढ़ी कोर्ट
७-२-४२

प्रिय शिवपूजन जी,

प्रणाम !

पत्र मिला। धन्यवाद। ८ मार्च तो होली की छुट्टियों के बाद ही पड़ता है। क्या १५ मार्च वाला रविवार नहीं रख सकते? अभी तक मैं समझता हूँ कि उस दिन फुर्सत रहेगी और मुझे छपरे आने में कोई खास असुविधा नहीं होगी। १९ फरवरी को श्रद्धेय मास्टर साहब के यहाँ हमलोग मिलेंगे ही। उस समय भी कुछ बात करने का समय मिल जायगा। शेष कुशल है।

आपका
दिनकर

[१९]

सीतामढ़ी कोर्ट
१०-३-४२

प्रिय शिवपूजन जी,

सप्रेम वन्दे !

२२ के लिए मैं आपको वचन दे चुका हूँ और उस पर पूर्ण रूप से दृढ़ हूँ। उसी दिन मधुवनी में प्रदर्शनी के सिलसिले में एक कवि सम्मेलन हो रहा है जिसके संयोजक महारथी जी और जगन्नाथ बाबू हैं। इधर हाल में मैं दरभंगे गया था तो उन लोगों से बातें हुईं। फिर मिश्र जी का पत्र भी आया है। लेकिन दरभंगे में मुझे यह याद नहीं रहा कि २२ को मुझे छपरे जाना है।

मैंने सारी परिस्थिति मिश्र जी को लिख दी है। यह भी लिख दिया है कि यह हालत मैं शिवपूजन जी को भी लिख रहा हूँ। शायद वे लोग आपसे अनुरोध करेंगे। लेकिन आन्तरिक इच्छा से मैं प्रदर्शनी में भाग लेना नहीं चाहता हूँ।

अगर २२ को आना हुआ तो क्या मैं लिखित भाषण लाऊँगा। लिखेंगे।

आपका
दिनकर

[२०]

सीतामढ़ी
१४-३-४२

प्रिय भाई जी,

सप्रेम वन्दे !

आज शाम को मुजफ्फरपुर जा रहा हूँ। सोमवार को भागलपुर जाऊँगा। आप लिखें कि २२ को आपकी सभा होती है या नहीं। मैं संभवतः रविवार की दोपहर को पहुँचूँगा। उधर से Express से चलूँगा। मुजफ्फरपुर के पहले Return ticket तो मिलेगी नहीं क्योंकि इधर से रेलवे और उधर से लारी से आना होगा।

उत्तर देंगे।

आपका
दिनकर

[२१]

नरकटियागंज
८-९-४३

प्रिय शिव जी,

प्रणाम !

आज मैं चार्ज दे रहा हूँ। कल भोर की गाड़ी से घर जाऊँगा और अगले सोमवार को पटने। मुझे कुछ भी नहीं मालूम है कि मैं किन शर्तों पर क्या करने जा रहा हूँ। कभी कभी मन उदास हो जाता है। द्विज जी ने सारा दायित्व भाग्य पर छोड़ा था सो ही ठीक है। पटने पहुँच कर दिनचर्या लिखा करूँगा।

अभिभाषण प्रायः तैयार है। घर से भेज कर पटने जाऊँगा। आपको सोमवार मंगल तक मिल जायगा।

आपका
दिनकर

[२२]

पटना
१-४-४४

मान्यवर शिव जी,

प्रणाम !

लज्जित हूँ कि कल आ नहीं सकूँगा। बैंक और ख़ज़ाने की गड़बड़ी के कारण ऑफिस की विल रुकी हुई हैं। ३ तारीख की सुबह को हाजिर नहीं रहा तो सब भूखों मरेंगे। ४ की सुबह में मुझे बाहर जाना है।

हाथ जोड़कर माफी माँगता हूँ।

आपका
दिनकर

[२३]

पटना
१२-७-४४

मान्यवर शिव जी,

प्रणाम !

आपका एक पत्र मिला था। लेकिन उसके वाद कोई आदमी मुझसे मिलने नहीं आया। इसी बीच में मेरे बड़े भाई साहब के एक मात्र पुत्र की बाँह बुरी तरह से टूट गई। कल उसे अस्पताल से घर लाया हूँ। अभी भी उसका जीवन संकट से खाली नहीं है और हमलोग भय और आशंका से बहुत ही विचलित हैं। ऐसी अवस्था में श्री रामसेवक जी (मेरे बड़े लड़के जो इस पत्र के साथ आपसे मिलने जा रहे हैं) भी संकट में जा फंसे हैं। इन्हें मुनमुन दादा से मिला दीजिए और इन्हें शीघ्र लौटा भी दीजिए। कोई दूसरा आदमी available नहीं है इसलिए इन्हें ही भेज रहा हूँ। आशा है आप या मुनमुन दादा अन्यथा नहीं मानेंगे। इन्हें अत्यधिक सहायता की जरूरत है। अगर आपके मोर्चे पर ये दस गज भी नहीं बढ़ सके तो सिर्फ इसी कारण से परेशान होंगे। जैसा उचित समझिए कीजिए। मुझे सिर्फ सूचना देनी थी सो दे दी।

प्रणाम।

आपका
दिनकर

[२४]

कनूलाल रोड, मीठापुर पटना
२५-८-४६

मान्यवर शिव जी,

प्रणाम !

कल प्रेस ने लिख भेजा है कि 'मिट्टी की ओर' की छपाई खत्म हो गई। आगे जो कुछ मैटर देना है वह तुरन्त दे दीजिए।

अतएव प्रार्थना है कि एक पन्ने का आशीर्वाद लौटती डाक से भेज देने की कृपा करें। आप वाली कापी में शायद चार लेख नहीं हैं— मैथिलीशरण, माखनलाल, सियाराम शरण वाला और तुम घर कब आओगे कवि। मगर आप इन्हें देख चुके हैं। इसलिए इनके बिना भी भूमिका लिख दे सकते हैं।

आपका
दिनकर

[२५]

पटना
२०-१-४७

मान्यवर,

पत्र मिला। मुझे तो आना ही चाहिए। आगे भगवदिच्छा।

जगन्नाथ मिश्र जी ने एक आलोचना भेजी है वह मैंने बेनीपुरी जी को भेज दी है। कह भी दिया है कि वह इस अंक में चली जायगी।

टिप्पणियाँ भी कल दे रहा हूँ।

प्रणाम।

आपका
दिनकर

[२६]

हिमालय, पटना
५-३-४७

मान्यवर,

प्रणाम !

जैसा कि मैंने आप से निवेदन किया था, १५·१६ को कटरा में एक सांस्कृतिक सभा हो रही है जिसमें हमलोग—बेनीपुरी और मैं जायेंगे। अतएव, राजेन्द्र पुस्तकालय का उत्सव २३ रविवार को रखा जाय।

आपका
दिनकर

[२७]

अगस्त
१९४७

मान्यवर,

प्रणाम !

राँगेय राघव जी की कविताएँ इसी पत्र के साथ जा रही हैं। १५ अगस्त की तैयारी में व्यस्त हो जाने के कारण अन्य कविताएँ (शायद दो तीन हैं) नहीं देख सका हूँ। देखने पर उन्हें भी भेज दूँगा।

परिस्थिति बदल गई है और मुझे ऐसा भ्रम हो रहा है कि हिमालय को मेरे पूर्ववत् सहयोग की शायद, आवश्यकता नहीं होगी। अतएव, जो सेवायें मुझसे ली जाती थीं, उनके लिए कोई और प्रबन्ध कर लिया जाय।

आशा है आप प्रसन्न हैं। प्रणाम।

विनीत
दिनकर

पटना
२५-८-१९४७

श्रीमान्

हमें यह सूचना देते हुए अपार हर्ष होता है कि बिहार के सुप्रसिद्ध, राष्ट्रकर्मी और राजपुरुष श्री अनुग्रह नारायण सिंह, इसी साल, अपने जीवन के साठवें वर्ष में पदार्पण कर रहे हैं।

अनुग्रह बाबू ने पिछले तीस वर्षों में बिहार प्रांत एवं समस्त राष्ट्र की अपरिमेय सेवा की है तथा स्वभावतः ही वे हमारी श्रद्धा और कृतज्ञता के अधिकारी हैं। अतः इस वर्ष, उनकी हीरक जयन्ती मनाने तथा उक्त अवसर पर उन्हें एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का निश्चय किया है।

पिछले तीस वर्षों में हमारे देश ने राजनीति, समाज, साहित्य, विज्ञान, एवं संस्कृति के अन्यान्य क्षेत्रों में जो प्रगति की है, हम चाहते हैं कि उसकी स्पष्ट झलक इस ग्रन्थ में आ जाय। पुरातत्व एवं खोज सम्बन्धी प्रायः सभी प्रकार के निबन्धों के साथ-साथ चित्र एवं सुन्दर कविताएँ भी हम इसमें देना चाहते हैं।

अतः आपसे नम्र निवेदन है कि इस विशद ग्रन्थ के उपयुक्त अपना कोई निबन्ध या कविता यथाशीघ्र भेज कर, इस महत् कार्य में हमारी सहायता करें।

ग्रन्थ की सामग्री यथासम्भव शीघ्र ही प्रेस में चली जायगी। अतः हम चाहते हैं कि एक महीने के भीतर आपका लेख हमें प्राप्त हो जाय, जिससे कि हम उसे उचित स्थान पर छाप सकें तथा उसके सम्बन्ध की उचित हेड पीस तैयार करा सकें।

अभिनन्दन समिति ने यह भी निश्चय किया है कि जो विद्वान पारिश्रमिक लेने को तैयार हों उन्हें यथाशक्ति पारिश्रमिक भी दिया जाय। इस सम्बन्ध में आपका अभिमत जानकर हम कृतार्थ होंगे तथा उसी के अनुरूप हम काम भी करेंगे।

किन्तु प्रत्येक अवस्था में आपका लेख तो हमें एक महीने के भीतर मिल ही जाना चाहिए। बड़ी कृपा हो अगर यह सूचना दे दें कि लेख लिखने के लिए आपने कौन सा विषय चुना है।

शीघ्र उत्तर की अभिलाषा में,

विनीत
रामधारी सिंह दिनकर

[२९]

कनूलाल रोड, पटना
१४-९-४८

मान्यवर,

प्रणाम !

अत्यधिक कार्यव्यस्तता के कारण सेवा में कोई पत्र भी नहीं भेज सका और न कुशल क्षेम ही पूछ सका। आज फिर राँची जा रहा हूँ।

इधर दो भाषण दिये थे। उनकी प्रतियाँ अवलोकनार्थ प्रेषित हैं।

आपका
दिनकर

[३०]

हार्डिंग रोड, पटना
६-४-४६

मान्यवर,

कृपा पत्र मिला। मेरी बच्ची की रुखसती १ली मई को है। उसकी तैयारी के लिए मैं २४ से ही घर पर रहूँगा। अतएव, अन्तिम सप्ताह में तो फुर्सत नहीं दीखती।

ग्रन्थ आपके पास मुँगेर से ही गया होगा या जायगा। आज मैं उन लोगों को पत्र लिख रहा हूँ।

आशा है, उत्सव में अनुपस्थिति के लिए क्षमा करेंगे।

आपका
दिनकर

[३१]

सीतामढ़ी (मुजफ्फरपुर)
२८ अक्टूबर, १९४९

मान्यवर महोदय,

सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर का श्री सनातन धर्म पुस्तकालय बिहार प्रान्त की एक सुप्रसिद्ध सुप्रतिष्ठित संस्था है। पुस्तकालय की रजत जयन्ती के उपलक्ष्य में एक स्मारक ग्रन्थ प्रकाशित किया जानेवाला है जो आगामी दिसम्बर के अन्त तक प्रकाशित हो जायगा। आपसे विनम्र प्रार्थना है कि इस ग्रन्थ के लिए स्वेच्छानुसार कोई लेख या कविता शीघ्रातिशीघ्र निम्नलिखित पते पर भेजने की कृपा करें। इस कृपा के लिए संस्था आपका असीम आभार मानेगी।

भवदीय
रामधारी सिंह दिनकर

[३२]

३१-१२-४९

मान्यवर शिव जी,

मैं कल एक बात कहना भूल गया कि शनिवार ९ बजे भोर में अशोक सिनेमा हाउस में हमलोगों के विभागीय सिनेमा का प्रदर्शन होगा जिसके लिए मैंने कई अफसरों को बुलाया है। उसमें मेरा रहना आवश्यक है। अतएव, मैं सिनेमा देख कर साढ़े नौ बजे प्रस्थान कर सकूँगा। यह प्रदर्शन कुल आधे घंटे का होगा।

आपका
दिनकर

[३३]

लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर
१६-१-५१

मान्यवर शिव जी,

हमलोग कॉलेज लाइब्रेरी के लिए नागरी प्रचारिणी पत्रिका के कुल अंक खरीदना चाहते हैं। अगर आपकी जानकारी में कहीं सभी अथवा अधिकांश अंक भी उपलब्ध हों तो कृपया सूचित कीजिए। हमलोग किसी प्रकार भी सारे अंक खरीदना चाहते हैं।

आपका
दिनकर

[३४]

मुजफ्फरपुर
८-३-५१

मान्यवर शिव जी,

तार कल शाम को मिला। कॉलेज की अध्यापकी में कविता के लिए अवकाश सीमित है। कई दिन समाधि में गया, मगर, कोई चीज हाथ नहीं लगी। आखिर एक कविता किसी प्रकार बन गई जो साथ भेज रहा हूँ। उसे छपवा लीजिए। मैं भी छपी प्रति से ही पढ़ूँगा। आपने सम्मान तो मुझे बहुत बड़ा देना चाहा, मगर, यथेष्ट रूप से गंभीर समाधि में जाने का संयोग मुझे नहीं मिला।

मैं ९ की मीटिंग में पहुँच नहीं सकूँगा। १० की मीटिंग में अवश्य आऊँगा।

शेष मिलने पर।

विनयावनत
दिनकर

[३५]

५२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
२३-३-५१

मान्यवर,

प्रणाम !

पत्र मिला। समाचार ज्ञात हुआ। अभी जो समय बीत रहा है उसमें उनसे ऐसी बातें कहना ठीक नहीं लगता। भगवान भविष्य निश्चित कर दें। तब सोचूँगा।

मैं २ अप्रैल को पटने रहूँगा और ठीक सात अप्रैल से ही यहाँ फिल्म पुरस्कार का कार्य आरंभ होगा। उसमें रहना होगा। अतएव, इस वर्ष तो परिषद से अनुपस्थित ही रहूँगा। शेष कुशल है। वीरेन्द्र से बातें करूँगा।

आपका
दिनकर

[३६]

लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर
१९-७-५१

मान्यवर शिव जी,

आपके पास जो बिल भेजा गया है उस पर Counter signature आपको ही करना पड़ेगा। यहाँ की ट्रेजरी के लिए नमूने के जो दस्तखत आप भेजेंगे उन पर भी D. P. I. को attestation होना चाहिए। सेक्रेटेरियेट में पुछवा लीजियेगा।

आपका
दिनकर

[३७]

मुजफ्फरपुर
१५-१-५२

मान्यवर,

प्रणाम !

दस्ती चिट्ठी मिली। परिमल में आने की इच्छा थी। लेकिन, अब जब २४ को संचालक मंडल की बैठक हो रही है और उसमें आना आप अनिवार्य बताते हैं तब १९-२० को पटना जाना या वहाँ रहना संभव नहीं है। अतएव, २४ को ही आपके दर्शन करूँगा। वह चीज भी साथ ही लाऊँगा और समय रहते आपके सुपुर्द कर दूँगा।

आपका
दिनकर

[३८]

१२, ई० फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली
३०-५-५२

मान्यवर शिव जी,

प्रणाम !

पत्र मिला। बहुत उत्साह बढ़ा। हिन्दी में भाषण की यहाँ विशेष महत्ता नहीं है। राजेन्द्र बाबू, जवाहरलाल, टंडन जी, ऐसे लोगों के ही हिन्दी भाषणों पर यहाँ ध्यान दिया जाता है। रिपोर्टरों का जो रुख है उसके कारण भी लोग अंगरेजी में ही भाषण देना पसन्द करते हैं। मैं अब तक एक ही बार बोल सका हूँ और उस दिन पचासों सज्जनों ने मुझे बधाइयाँ भी दीं। मगर पी० टी० आई० ने सिर्फ पाँच पंक्तियाँ लीं और सर्चलाइट ने उनमें भी मिनहा कर दिया। इस दृष्टि से हमलोगों का यहाँ आना बहुत ठीक हुआ है। संघर्ष करना पड़ेगा मगर, पश्चात्पाद होने की बात नहीं है। आप लोगों का आशीर्वाद चाहिये।

आपका
दिनकर

[३९]

मुजफ्फरपुर
१३-६-५२

मान्यवर शिव जी,

प्रणाम !

परसों अजन्ता प्रेस में आपका सम्वाद मिला था। मैं रुक नहीं सकता था, इसलिए, आज्ञापालन में असमर्थ रहा। अब १७ की शाम को आऊँगा तब मुलाकात होगी।

मेरा T. A. Bill आपके आफिस में पड़ा होगा। उस पर जो कार्यवाही करनी हो, करके तैयार रखेंगे।

आपका दूसरा पत्र भी दिल्ली में ही मिल गया था।

शेष कुशल है।

आपका
दिनकर

[४०]

११९, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
३-५-५४

मान्यवर शिव जी,

प्रणाम !

परिषद की ओर से भेजा गया तार मिला। तार वहुत ही तत्परता से आया, इसलिए सोचता हूँ कि बात आपके ध्यान तक पहुँच गई है। अन्यथा इतनी आतुरता से तार भेजता कौन ? तार मिलने के पूर्व ही मैं आचार्य जी को लिख चुका था कि अवधि दिसम्बर तक वढ़ा दी गई है, इसलिए, त्याग पत्र की स्वीकृति आवश्यक नहीं है।

मैं २२ मई तक पटने आऊँगा। तब दर्शन करूँगा।

. . . .

आपका
दिनकर

[४१]

जेनेवा
२२-१२-५५

प्रिय शिव जी,

वारसा से मैं लंदन गया था। वहाँ वीरेन्द्र से भेंट हुई। हरदम साथ रहा। सकुशल और प्रसन्न है। पेरिस दूतावास के बैग में मैंने एक पत्र पू० अनुग्रह वावू को भेजा है। उसकी प्रति आपको और छविनाथ जी को भेज रहा हूँ। आपलोग वावू साहव से फिर मिलिए।

मैं २९ दिसम्बर को बम्बई और २९ को दिल्ली पहुँचूँगा। अभी कैरो जा रहा हूँ। यहाँ के हवाई अड्डे से यह पत्र भेज रहा हूँ।

आपका
दिनकर

[४२]

५२, सा० ए० नई दिल्ली
१७-२-५६

मान्यवर शिव जी,

दोनों पत्र मिले। धन्यवाद। अभी सूची नहीं आई है। रामदयाल जी का भी कोई पत्र नहीं आया है। किन्तु, आपके पत्र से मेरा काम चल गया।

पुष्प जी काश्मीरी पर लेख तैयार कर चुके हैं। शायद, आज या कल भेजेंगे। माथुर बाहर चले गये हैं। इसलिए दुग्गल के विषय में बात नहीं हो सकी है। सुहेल ने उर्दू विषयक लेख आपको भेज दिया है।

मैं २३ को प्रातःकाल पटने पहुँच जाऊँगा।

आपका
दिनकर

[४३]

५२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
२१-७-५६

मान्यवर,

मैं हिन्दी शिक्षा समिति के काम से कल यहाँ आया हूँ। अभी इधर ही रहूँगा। नये सुभाषित तथा सीपी और शंख, ये दो काव्य संग्रह कलकत्ते में छप रहे हैं। उस काम से कलकत्ता जाना हो सकता है।

चक्रवाल और उजली आग को यदि देख चुके हों तो उनके विषय में दो दो पंक्तियों की सम्मतियाँ मुझे भेज देने की कृपा करेंगे।

आपका
दिनकर

[४४]

१२ ई० फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली
२५-७-५६

मान्यवर शिव जी,

महारथी जी ने कहा कि आप फिर बीमार हो गये हैं। यह बड़ी ही चिन्ता का विषय है। कृपया अनूप से एक पत्र लिखवा कर मुझे सूचित करें कि अब अवस्था कैसी है।

आपका
दिनकर

[४५]

५२ साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
१४-११-५६

मान्यवर शिव जी,

मैं २० को कलकत्ते नहीं जा रहा हूँ। तिथि बढ़ गयी है। शायद, १२ दिसम्बर को जाऊँगा। इसलिए, शिव जी को अभी वहाँ नहीं जाना है।

पूज्यवर राष्ट्रपति जी से मिला था और अब तक की प्रगति सुना दी है। शेष कुशल है।

आपका
दिनकर

[४६]

५२, सा० एवेन्यू, नई दिल्ली
७-८-५७

मान्यवर शिव जी,

प्रणाम !

आज काश्मीर से लौटने पर आपका अत्यन्त उत्साहवर्धक पत्र मिला हृदय गदगद हो गया। आपको चीजें पसन्द आयीं, यह सोचकर लगता है मेरा कलम पकड़ना सार्थक हो गया। और क्या लिखूँ? आपके द्वारा उत्साह पाकर ही कार्य करता रहा हूँ। अब एक बार और जोर से काम करूँगा।

विनीत
दिनकर

३६, वाराणसी घोष स्ट्रीट, कलकत्ता-७
२६-१२-१९६०

श्रीमान्,

पण्डित श्री किशोरी दास जी वाजपेयी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर दो सौ पृष्ठों का एक ग्रन्थ प्रकाशित करने का निश्चय हमलोगों ने किया है। भाषा संस्कार और व्याकरण के क्षेत्र में वाजपेयी जी की सेवाएं अमूल्य रही हैं, उनकी शैली भी इस दृष्टि से अमूल्य है कि उस पर पाश्चात्य प्रभाव प्रायः नगण्य रहा है तथा उनके प्रयोग प्रामाणिकता के प्रयोग हैं।

उनका व्यक्तित्व भी कम आकर्षक नहीं है। प्रत्येक प्रश्न पर उनकी प्रतिक्रिया एक ऐसे व्यक्ति की प्रतिक्रिया होती है जिसका कहीं भी कोई निहित स्वार्थ नहीं है। साहित्य और भाषा के अनेक विवादों में उन्होंने तेजस्विता के साथ भाग लिया है और बराबर उन्होंने बातें दो-टूक कही हैं। यह अक्खड़पन उनके स्वभाव की सबसे बड़ी शोभा है।

हम चाहते हैं कि आप अपनी रुचि के अनुसार वाजपेयी जी के व्यक्तित्व अथवा उनके कृतित्व के विषय में एक निबन्ध अवश्य दें।

वाजपेयी जी ने जिन साहित्यिक शास्त्रार्थों में भाग लिया था उनकी कहानी आज की पीढ़ी के लिए विशेष रूप से रोचक और ज्ञानवर्द्धक होगी। यदि आप इस विषय में कोई निबन्ध दें सके तो उससे ग्रन्थ की उपयोगिता में विशेष वृद्धि होगी।

हमें आशा है, इस कार्य में आपका सहयोग हमें प्राप्त होगा और आपका निबन्ध मास के भीतर भीतर हमें मिल जायेगा।

निवेदक
रामधारी सिंह दिनकर

श्री कपिलदेव नारायण सिंह 'सुहृद'

[४८]

दर्लसिंग सराय (दरभंगा
२-४-३५

प्रिय सुहृद,

कल रात तुम्हारा तार मिला, द्विज जी क्यों नहीं आ रहे हैं ? क्या उन्हें अपने प्रान्त से जरा भी प्रेम नहीं है ? अगर वह अस्वस्थ हों तब कोई बात नहीं है। यदि यों ही टाल-मटोल कर रहे हों तो उन्हें किसी तरह भी मत छोड़ो। उन्हें अवश्य सभापति बनाना।

मेरे सम्बन्ध में कई बातें हैं, मुझे सरकार से मंजूरी लेनी पड़ेगी। यह पहली बाधा है। दूसरे तुम स्वागत प्रधान मंत्री हो। यह चुनाव आरोप से मुक्त नहीं हो सकता इसके सिवा मैं उम्र और साहित्य-सेवा के लिहाज से भी सभापति बनना नहीं चाहता। मुझे ये चार वर्ष तक कूदने-फांदने दो। मेरे सभापतित्व में सम्मेलन को नियन्त्रण के अन्दर रहना पड़ेगा। अथवा मुझ पर विपत्ति आयेगी, आशा है मेरी प्रार्थना पर विचार करोगे।

तुम्हारा
दिनकर

[४९]

५५, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
१४-११-५५

प्रिय भाई,

अचानक वारसा (पोलैण्ड) जा रहा हूँ। २० नवम्बर को उड़ूँगा। २३ नवम्बर को वहाँ के राष्ट्रीय कवि की शती है। उसमें कई देशों के कवि आयेंगे। भारत से मैं और मलयालम कवि वल्लातोल हैं। मगर वे जायेंगे नहीं, वृद्धता के कारण। अतएव, मैं अकेला ही चला।

आशीर्वाद का कामी,

तुम्हारा
दिनकर

[५०]

पटना-४
१७-२-५७

प्रिय भाई,

१९ से ५ मार्च तक मुझे गाँव की तरफ रहना है। सोचता हूँ, इस बीच जितना काम हो जाय, अच्छा है। अतएव फुद्दी और तेतर को तुम २२-२ तक सिमरिया भेज दो। शर्मा के लिए जो काम लिख भेजा है, वह उसके हवाले कर दो। लकड़ी का काम वह जल्दी कर दे।

तुम्हारा
दिनकर

[५१]

पींकिंग होटल, पींकिंग (चीन)
२-११-५७

प्रिय भाई,

मैं २५ को रंगून रुका, २६ को कुनमिंग, २७ को शेंगतू और २८ को पींकिंग आया। अब ५ को यह शहर छोड़ूँगा और तिंस्तीन, नानकिंग, शांघाई, और हाँगचो होकर कानटून पहुँचूँगा जो चीन की दक्षिण चौहद्दी पर है। वहाँ से १८ को हाँगकाँग जाऊँगा और फिर मैं बैंकाक एवं रंगून होकर २५ नवम्बर को कलकत्ते पहुँच जाऊँगा।

चीन में एकाध बात ऐसी भी देखी जिससे मन को धक्का लगा। यह बहुत बुनियादी बात है और उसका सम्बन्ध कवियों, लेखकों और चिन्तकों से है, इसलिए सारी मानवता के भाग्य और भविष्य से उसका सम्बन्ध पड़ेगा। किन्तु, इसके सिवा यहाँ जो कुछ है, अनुकरणीय है। देश तो यह प्रायः भारत के समान ही है। वैसी ही गरीबी, वैसी ही गन्दगी, वैसे ही गाँव, झोपड़े, नाले, खेत और किसान। किन्तु, नई सरकार की एक उपलब्धि स्पष्ट ही प्रशंसनीय है और वह यह कि यहाँ गरीबों का राज्य कायम हो गया है एवं किसान और मजदूर पूरे मन से सरकार के साथ हैं। चीनी युवक और युवती के मुख पर तुम्हें आशा,

उल्लास और दृढ़ संकल्प दिखायी देगा। विश्वविद्यालयों में युवक घोर परिश्रम से पढ़ रहे हैं और व्यायाम भी खूब कर रहे हैं। राष्ट्रीय अनुशासन कोई चीन में देख ले।

३० को यहाँ के लेखक-संघ में मेरा अभिनन्दन था। कल युनिवर्सिटी में स्वागत था। जिसमें मेरा घण्टे-भर का भाषण हुआ। कल कुछ कवि आ रहे हैं। चीनी बहुत अच्छे लोग हैं।

तुम्हारा
दिनकर

[५२]

२, साउथ एवेन्यू लेन, नई दिल्ली
२७-४-१९६६

प्रिय भाई,

तुम्हारा २१ अप्रैल का पत्र मिला। उत्तर न देने में किंचित् विलम्ब हो गया। कार्यव्यस्त रहा हूँ। प्रस्ताव जा रहा है।

हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य बहुत नाराज हैं। उन्होंने सरकार पर जोर डाला है कि समिति की बैठक बुलायी जाय। यह समिति संभवतः १६ मई को बुलायी जा रही है। जब से मैं उसका वाइस चेयरमैन बना हूँ, समिति पहले पहल ही बुलायी जा रही है। अतएव, उस समय दिल्ली छोड़ना असंभव हो जायगा। बड़ा दुःख है, लेकिन, क्या करूँ?

तुम लोग स्टेशन आये थे, यह बात मैंने सुनी थी। गाड़ी छूटते समय बाहर झांकता रहा, मगर दर्शन नहीं हुए। गड़बड़ी गलत सूचना के कारण हुई। अथवा गाड़ी ने मैक-अप कर लिया हो।

घर को फिर से संगठित करने का हलका सा प्रयत्न आरम्भ किया है। देखो, कैसे चलता है।

तुम्हारा
दिनकर

प्रस्ताव

२७-४-१९६६

देश के कल्याण और सत्साहित्य के प्रचार के लिए निम्नलिखित पुस्तकें बुक-स्टाल पर अवश्य रखी जानी चाहिए। साथ-ही-साथ और नीचे लिखे हुए प्रस्ताव भी होना चाहिए।

१. विस्तारवादी चीन के दो हजार वर्ष
लेखक : श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी
प्रकाशक : नव भारती सहकार प्रकाश प्रतिष्ठान
ए-८/४२, राणा प्रताप बाग दिल्ली-७,
मूल्य : १) २५ पैसे

२. लोकदेव नेहरू
लेखक : श्री रामधारी सिंह दिनकर
प्रकाशक : उदयाचल, राजेन्द्रनगर पटना-४, मूल्य : ४.५० पैसे

३. मनोरंजक संस्मरण
लेखक : श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी
प्रकाशक : इन्डियन प्रेस इलाहाबाद, मूल्य : ३.७५ पैसे

४. मोहन राकेश की श्रेष्ठ कहानियाँ
प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, मूल्य : २.५० पैसे

५. डेस्कों पर खुदे नाम
लेखक : श्री जगदीश वोरा
प्रकाशक : कृष्णा ब्रदर्श अजमेर, मूल्य : ३.००

६. आचार्य द्विवेदी और उनके संगी-साथी
लेखक : श्री किशोरीदास वाजपेयी
प्रकाशक : जिज्ञासा प्रकाशन, देवनगर, कानपुर-३, मूल्य : ३.००

[५३]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
२०-१२-६९

प्रिय सुहृदजी,

आपका १८-१२ का पत्र मिला। आपने जो लिखा, वह ठीक ही होगा। फिर भी मैंने जो अनुरोध किया उसका पालन आप न कर सके। भगवान आपका भला करे।

तुम्हारा
दिनकर

पुनश्च :—

मुझे इस बात का तनिक भी दुख नहीं है कि आप मुझे दर्शन न दे सके। १२-१३ को मैं यहीं था।

दिनकर

पण्डित बनारसीदास चतुर्वेदी

[५४]

पो० ऑ० दलसिंग सराय
३१-५-३५

पूज्यवर,

प्रणाम !

प्रायः साल भर से मैं आपसे दूर रह रहा हूँ। क्षमा करें। विशाल भारत भी मुझे नहीं मिल रहा है। एक दो बार 'योगी' आफिस ने भेज दिया। शायद आप मेरा निश्चित पता न जानने के कारण ही विशाल भारत के अंक C/O. योगी से भेजते हैं। मैं इन दिनों Probationary Sub-Registrar हूँ, यह शायद आप जानते होंगे। अभी डेढ़ वर्ष तक कहीं जम कर रहना मुश्किल है। अतएव मेरा पता सिमरिया, पो० ऑ० सिमरियाघाट, जिला मुंगेर ही ठीक है। उसी पते पर विशाल भारत भेजा जाय तो मैं जहाँ रहूँगा वहीं वह रिडायरेक्ट होकर मुझे मिल जायेगा।

अव्यवस्थित रहने के कारण ही साहित्य-सेवा का कार्य भी शिथिल हो रहा है। आशा है साल-भर के अन्दर-अन्दर मैं शान्ति का अनुभव करने लगूँगा। सब-रजिस्ट्रारों को समय बहुत रहता है और मानसिक परिश्रम भी बहुत कम करना पड़ता है। अगर सरकार की ओर से कोई अड़चन न आई तो मैं अधिक मनोयोग से साहित्य-सेवा कर सकूँगा ऐसी आशा है। और, काम चूँकि कम है इसलिए वेतन भी कम ही मिलता है। यही एक अभाव है। अन्यथा और कोई कठिनाई नहीं दीख पड़ती। आपसे मिलने पर अपनी परिस्थिति समझाने की चेष्टा करूँगा।

इधर बिहारी साहित्यिकों में मुझे "कस्मै देवाय" का समर्थक कह कह कर individually और छिपे छिपे लांछन लगाया गया है कि मैं तकाजे की चीज लिख सकता हूँ। यह एक और असत्य है। Points of agreements अधिक रहने के कारण मैंने आपके प्रस्ताव का समर्थन किया था और उसी अवस्था में फकत अपनी भावनाएँ पद्य-बद्ध कर दी थीं। और मुझे तो आप से इस बात पर प्रसन्नता है कि इस साल ही के अन्दर आपने कविता की फरमाइश भी नहीं की। विश्वास रखें अच्छी चीज लिखने पर विशाल भारत की सेवा अवश्य करूँगा। मैं जानता हूँ कि विशाल भारत ने मुझे क्या दिया है।

यहाँ से मैं प्रायः जून के अन्त तक रिलीव्ड होता हूँ। उस अवसर पर शायद मुझे एक सप्ताह की छुट्टी मिलेगी। उसमें मैं स्वनामधन्य द्विवेदी जी के चरण छूने को दौलतपुर जाना चाहता हूँ। अगर आप मुझे उनकी सेवा में अर्पण करने को साथ चलें तो बड़ी अच्छी बात हो। लेकिन आगे आप को समय न हो तो एक पत्र लिख कर ही मुझे गाइड कर दीजिए। अगर द्विवेदी जी से आप पहले ही पूछ लें तो और अच्छा।

व्रजशंकर जी से मेरा नमस्कार कह देंगे।

अभी-अभी योगी में डाक्टर चतुष्पाद और दरख्ते इलाही की मुहव्वत की चासनी चख कर उठा हूँ। वर्मा जी को प्रणाम।

आपका बहुत-बहुत कृतज्ञ
रामधारी सिंह दिनकर

[५५]

पो० ऑ० मीरगंज
छपरा ७-७-३५

पूज्य चतुर्वेदी जी,

प्रणाम !

आपका पत्र यथा समय मिल गया था। मैं दलसिंग सराय से समय से पहले फुर्सत पा गया अतएव कानपुर जाने का प्रोग्राम ज्यों का त्यों रह गया। अब पूजा की छुट्टियों में जाऊँगा।

मैं यहाँ ४ तारीख से काम कर रहा हूँ। १३ के दिन भर रहूँगा। फिर यहाँ से रिलीव्ड होकर मुँगेर जाऊँगा। अगर उत्तर की आवश्यकता समझें तो सिमरियाघाट (पो० ऑ०) जिला मुँगेर के पते से उत्तर दें। अगर आप ११ तक उत्तर भेज सकें तो यहीं भेजें। मुझे १३ तक चिट्ठी मिल जायेगी। यह पता मेरा निश्चित पता है। मैं पहले भी लिख चुका हूँ। मैं कहीं रहूँगा डाक मुझे रिडायरेक्ट होकर मिल जायेगी।

विशाल भारत यहीं मिला। चाय-चक्रम का सिलसिला बड़ा सुन्दर चल रहा है। मैं उस स्तम्भ को बड़ी दिलचस्पी से पढ़ता हूँ।

इधर मेरे मन में यह विचार उठ रहा है जिस प्रकार आपने कस्मै देवाय की चर्चा की थी उसी प्रकार कविता और युगधर्म पर भी कुछ लिखा

जाय। आज की कविताओं की रंगत देखिये। सोलह आने में चार आना भी तो युग की वाणी होनी चाहिए। कहते हैं एक युग के संदेश लिखने वाला कवि एक देशीय होता है। इसलिए जो कवि poet of all times बनना चाहता है उसे eternal feeling को अपनी कविता में बाँधना चाहिए। यह किसी अंश में सत्य है किन्तु सर्वांश में नहीं क्योंकि ये भाव भी जिन्हें हम एक देशीय कहते हैं दरअसल सार्वदेशीय हैं। इनकी सत्ता भी सभी युगों में थी और रहेगी। अगर एक देशीय भी मानें तो भी सभी कवियों को या कुछ विशेष कवियों को युग के विचारों पर लिखना ही चाहिये। (आगे के लोग हमें भूल जायेंगे तो भूल जाँय। कम से कम हमारे युग को तो इससे कुछ फायदा होगा। यह एक प्रकार का बलिदान है और शायद कवि के लिये इससे बड़ा बलिदान और कुछ भी नहीं हो सकता।) किन्तु, क्या जिस युग में जवाहरलाल अपनी परम रूपवती प्रियतमा का विछोह सह कर अपने व्रत का पालन कर सकते हैं, जिस युग में इतिहास के ज्योति-बीज मिट सकते हैं, उस युग में कवि अपनी कीर्ति का बलिदान नहीं कर सकते। 'भारत-भारती' के कवि की प्रतिष्ठा १९३५ में भले ही न हो पर १९१८ में वह राष्ट्र-विधायक साबित हुआ और यह पता लगाना कठिन है। Political ideas के विकास में भारत-भारती ने कितनी सहायता की। सम्भव है सौ बरस बाद मैथिलीशरण जी को लोग भूल जाँय पर तो भी भारतीय राष्ट्रीयता की नींव को यह सदैव ज्ञान रहेगा कि और चीजों के साथ-साथ उसकी सत्ता भारत-भारती पर भी कायम है। क्या देश सेवा के लिए अपने को भुला देना एक महत् पुण्य-कार्य नहीं है? फिर हमारे कवि युगधर्म्म की वाणी क्यों नहीं बोलते?

आशा है आप मेरे Points को appreciate करेंगे।

यह एक कविता विशाल भारत के लिए जा रही है जो मेरे लिए accidental है। चूंकि मैं स्वयं ऐसी कविताओं की उपयोगिता में विश्वास नहीं रखता। लेकिन, चूंकि यह devotional mood में लिखी गई है इसलिए इसको कुछ महत्व दिया जा सकता है।

आशा है आप प्रसन्न हैं।

आपका सेवक
रामधारी सिंह 'दिनकर'

[५६]

सिमरिया
२९-७-३५

श्रद्धेयवर,

प्रणाम !

आपका पत्र यथासमय मीरगंज में ही मिल गया था। वहाँ से आकर जल्दी में अपनी पुस्तक छपाने के लिए लहेरियासराय गया। वहाँ से आकर हैजे में पड़ गया। अब अच्छा हूँ।

सुना है मेरा फोटो आपको मिल गया। कविताएँ संग्रह-रूप में शीघ्र सप्ताह के अन्दर मिलेंगी। मैंने एक सप्ताह के अन्दर संग्रह छपा लिया है। प्रकाशक है पुस्तक-भंडार। पुस्तक शिवपूजन जी की देख-रेख में छपी है इसलिए शुद्ध अवश्य होगी। मेरी अपनी भूलें कहीं-कहीं रह गई हैं। उसकी ११ प्रतियाँ देव-पुरस्कार के लिए भी भेजी गई हैं। पुस्तक अभी unfinished है, केवल कविताएँ ही छपी हैं। भूमिका के लिए एक कापी माखनलालजी की सेवा में भेजी गई है। वह भूमिका लिख देंगे ऐसा मैंने सुना है। आप कृपा करके इस पत्र के पढ़ लेने के बाद ही एक चिट्ठी माखनलालजी को लिख दें कि पुस्तक उन्हीं की प्रतीक्षा में प्रकाशित नहीं की जा रही है। वह पढ़ने के योग्य एक सच्ची भूमिका लिख दें। समय बहुत थोड़ा है अतएव आप मेरी ओर से उनसे एक earnest request करें।

पुस्तक का नाम मैंने 'रेणुका' रखा है। यह नाम माखनलालजी को भी पसन्द है। हालाँकि उन्होंने 'विमानिका' नाम को अधिक पसन्द किया था। एक महीने के भीतर पुस्तक तीन तिरंगा चित्र और हर कविता पर लाइन ब्लाक के साथ प्रकाशित होगी। मैं इसी चेष्टा में हूँ। तैयारी हो रही है।

रही बात प्रचार की। सो मैं आप पर बहुत निर्भर करता हूँ। कहते हैं, बिहार के ब्राह्मण लोग मेरी कविताएँ नहीं पढ़ते हैं। अब कविताएँ पुस्तकाकार निकल रही हैं। तब भी तो कुछ हो। मैं जानता हूँ कि पं० श्रीरामजी के 'शिकार' की प्रसिद्धि का कारण उसकी समालोचना का विशाल भारत जैसे दिग्गज पत्र के मुख-पृष्ठ पर छपना भी है। मैं जानता हूँ 'रेणुका' शिकार जैसी प्रतिष्ठा नहीं पा सकती और मुझमें भी श्रीराम जी जैसी शक्ति और महत्ता नहीं है। फिर भी आप 'रेणुका' के बेड़े को खींच दें। जहाँ तक संभव हो। पुस्तक की कापियाँ कहाँ-कहाँ भेजी

जाँय, यह लौटती डाक से लिखने की कृपा करेंगे। कौन-कौन पत्र उसके प्रचार में योग दे सकेंगे। मैं आपके प्रभाव का उचित लाभ उठाना चाहता हूँ और कोई बात नहीं है। द्विवेदी जी से भी सम्मति मँगा दें तो बड़ी कृपा हो।

मेरे उस पत्र को नोट में उद्धृत करने का आपको पूरा अधिकार है। मैंने द्वादश-बिहार प्रान्तीय कवि सम्मेलन के सभापति के पद से जो भाषण दिया है उसकी एक प्रति सेवा में भेज रहा हूँ। आशा है आप उसे पढ़कर कविता-सम्बन्धी मेरे विचारों को भलीभाँति जान सकेंगे।

इस महीने का विशाल भारत मिल गया है।

मेरी बदली मुजफ्फरपुर जिला में हो गई है। ३१ तारीख से मैं बेलसन्द में रहूँगा।

पत्र-व्यवहार वहीं के पते से करने की कृपा करें। आपसे मैं बहुत जल्दी-जल्दी पत्र-व्यवहार करना चाहता हूँ अतएव पत्र शीघ्र भेजेंगे।

आपका

रामधारी सिंह 'दिनकर'

[५७]

बेलसराय, मुजफ्फरपुर

२६-९-३५

प्रिय पण्डित जी,

प्रणाम !

सजल गुलाब की तरल पटने की मधुर स्मृति अभी बिलकुल ताजा है। दुःख इतना ही है कि आपकी दुर्लभ संगति का आनन्द दो तक नहीं उठा सका। इस एक वर्ष की अवधि में सरकारी नौकरी या गुलामी की वेदना इस तीव्रता से कभी नही चुभी थी। यही चाहता हूँ कि कब मौका मिले कि आपकी सेवा में फिर से उपस्थित होऊँ और आपके सहज विनम्र और विनोदी स्वभाव का आनन्द उठाऊँ, लेकिन, यह दुनिया है कि सबको अपनी किस्मत पर रोने को लाचार करती है। Man was born free but is every where in chain आशा है अभी मैं आपको याद हूँ।

आज्ञानुसार एक कविता जा रही है। मेरी कचहरी ३० होकर बन्द हो जाती है। १ली को मैं घर के लिये रवाना होता हूँ। अगर इस

पत्र का उत्तर देना हो तो घर के पते पर देंगे। सिमरियाघाट पो० ऑ० जिला मुंगेर। मैं फिर लौट कर १३ तारीख से यहीं रहूँगा।

दादा से (माखनलालजी से) परिचय भी न हो सका। दो घण्टे भी उनके श्रीमुख से साहित्यवार्ता का सुधा-पान दुर्लभ रहा। एक बात मैंने देखी। दादा कवि भी हैं और कवि का विषय भी। गायक भी और गेय भी। आप उनके संग्रह का नाम क्या रख रहे हैं? और श्रीयुत गोविल? ऐसा विनम्र मनुष्य शायद ही मिले। उनका पता क्या है? मैं उनसे पत्र-व्यवहार रखना चाहता हूँ।

इतना सब होते हुए भी मैं यही सोच कर प्रसन्न हूँ कि बाढ़ की भयंकरता से भयभीत होकर अगर मैं पटने जाने से रह जाता तब तो मुझे आत्म-ताप में उन्मुक्त हो जाने के सिवा और कोई चारा न था।

आशा है आप प्रसन्न हैं। वर्मा जी को प्रणाम कह दें।

आपका छोटा भाई
दिनकर

[५८]

मुंगेर
५-१२-३५

श्रद्धेय चतुर्वेदी जी,

प्रणाम!

मैं प्रायः सकुशल पहुँचा। केवल रास्ते में टिकिट इनवैलिड हो जाने से पेनल्टी के ५ रु० ७ आने देने पड़े।

मैंने बच्चन की प्रतिभा और अभिव्यक्ति के विषय में बहुत सोचा है।

He seems to be the harbinger of still latter sentiments in our literature.

आप बच्चन पर लिखते हुए सरस्वती में प्रकाशित पगध्वनि कनिका का अन्तिम पद अवश्य लिखा करें क्योंकि वह उस कविता की जान है।

मैंने बेनीपुरी जी को भी संवाद भेज दिया है। पूर्णिया सम्मेलन के सभापतियों का चुनाव, जैसा मैंने सुना है, प्रायः खतम हो चला है। फिर भी मैंने संदेश भेजे हैं।

हाँ, यहाँ मुंगेर में एक हिन्दी परिषद है। इस बार फरवरी के किसी सप्ताह में उसका वार्षिकोत्सव होने जा रहा है। उसके सभापतित्व के लिए लोगों ने बाबा राहुल से प्रार्थना की है। यह मुझे मालूम नहीं था। अगर बाबा ने अस्वीकार किया तो मैं प्रेमचन्द जी के लिए आखिरी

कोशिशें करूँगा। हम लोगों का विचार है कि उस अवसर पर नवीन जी, सुदर्शनजी, जोशी जी, महादेवी या सुभद्रा जी भी जरूर रहें। आपका रहना तो Criminally necessary होगा। मैं आपको spare नहीं कर सकता चाहे वर्मा जी की वैशाखी ही मुझ पर क्यों न पड़े। अतएव आप finally लिखिए कि उत्सव की तिथि कब रखी जाय। आप दो सप्ताह की अवधि देकर लिखें कि 'पहली से १४ तक या १५ से २८ तक के बीच रखो' जिससे और लोगों की सुविधा का भी विचार किया जा सके। वसन्तोत्सव का रंग जरा यहाँ भी रहना चाहिए। मेरा जिला यही न है!

प्रेमचन्द जी, जोशी जी तथा सुदर्शन जी के लाने का कुछ भार आप पर भी रहेगा। हम लोग व्यय का प्रबन्ध करेंगे। आप ऐसा करें कि वे सब जरूर आवें।

कलकत्ते से लौटकर मैंने एक नई दृष्टि से यहाँ की परिस्थिति का अध्ययन शुरू किया है। मुझे ऐसा लगता है कि मेरे प्रान्त में प्रान्तीयता है ही नहीं। (हम लोग बुद्धू ठीक हैं लेकिन जैसा कि मनोरंजन जी ने कहा था यह बुद्धू शब्द बुद्ध से निकला है। विहारियों के हृदय में सारे भारतवर्ष के लिए आदर है। मैं समझता हूँ प्रेमचन्द जी, पन्तजी, भगवतीचरण जी, चतुरसेन जी, मिलिन्द जी आदि सज्जनों के नाम जिस आदर से विहार में लिए जाते हैं वैसा और प्रान्तों में शायद ही हो।) यू० पी० के अनेक साहित्यिक इस बात को जानते हैं कि जब-जब यहाँ (विहार में) कोई उत्सव होने लगा है लोग उनके पास काशी, प्रयाग, कानपुर और लखनऊ तक दौड़े हैं। वे नहीं आये यह उनकी शोभा है। यह चेष्टा घृणा नहीं बल्कि महान आदर का द्योतक है। आज जो कुछ हो रहा है वह accidental है और उसका कोई आधार नहीं।

मैं १२ तक यहाँ हूँ। १६ से २३ तक पो० ऑ० शेखपुरा जिला मुंगेर में रहूँगा। बीच के तीन दिन इधर-उधर बीतेंगे। आप कृपया १२ तक पत्रोत्तर यहाँ ही के पते पर दें। १२ के बाद २३ तक पो० ऑ० शेखपुरा, सब-रजिस्ट्रार आफिस के पते पर।

आशा है रेणुका की एक कापी जोशी जी को मिल गई होगी। मैं परसों घर जाऊँगा और वहाँ से कापियाँ लाकर आपकी सेवा में भेजूँगा।

विश्व-वाणी में समालोचना जल्द निकलनी चाहिए।

साथ का पत्र वर्मा जी को दे दें।

धन्यकुमार जी को वन्दे।

आपका

दिनकर

[५९]

पो० ऑ० लालगंज
मुजफ्फरपुर
६ - १ - ३६

श्रद्धेय चतुर्वेदी जी,

प्रणाम !

आपका ५-१-३६ का कृपा-पत्र आज संध्या को मिला। इस पत्र ने मुझे बहुत कुछ उत्साह दिया है।

अपने मित्रों में जरा इमोशनल कहलाता हूँ। इसीलिए लोग मुझे ऐसी बात कहने या ऐसी चीज दिखाने से डरते हैं जिससे मुझे दुःख होने की संभावना हो। अभी हाल ही, मैं शिवपूजन जी से मिला था। तब तक साप्ताहिक विश्वमित्र में निर्झरिणी की निन्दा छप चुकी थी। शिवपूजन जी ने मुझे वह लेख देखने नहीं दिया। कहने लगे जब लोग तुम्हारी निन्दा खुलकर करने लगें तब तुम समझो कि तुम्हारी लेखनी सफल हुई। अस्तु।

चौदह करोड़ लोगों के द्वारा बोली जाने वाली हिन्दी का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि लोग किसी व्यक्ति-विशेष की रचना पर साधारणतः खास तौर से आकृष्ट नहीं हो सकते। इस विशाल समुद्र में किसी इंडिविजुअल की कृति एक तिनके से बड़ी नहीं। फिर इसे तो मैं अपना सौभाग्य ही समझता हूँ कि भाव, कुभाव, अनख, आलसहूँ 'रेणुका' का नाम दस भले लोगों के मुँह पर आ जाता है।

आप विश्वास रखें, आप पूज्यों की कृपा से मुझमें इतनी ताकत जरूर है कि अखबारों में रोज निकलने वाली पंक्तियाँ मुझे अपने मार्ग से विचलित नहीं कर सकतीं। कोई प्रशंसा ऐसी नहीं जो मुझे याद रहे, कोई निन्दा ऐसी नहीं जो मुझे उभार दे। नास्ति का परिणाम नास्ति है। कुछ नहीं से कुछ की उत्पत्ति नहीं हो सकती। अगर आज कोई सत्ता है तो वह किसी के मिटाये नहीं मिटेगी। अगर आज किसी पदार्थ का अस्तित्व नहीं है तो वह किसी के पैदा करने से पैदा नहीं हो सकता। कीट्स ने एक बार एक मित्र को लिखा था :

'If all my poems were burnt the next day they were written and no eye shine upon them, yet. I would go on writing and writing'.

मैं रेणुका के दोषों को भलीभाँति जानता हूँ। उसमें कलाविदों को पद-पद पर अनुभवहीनता इमैच्युरिटी और कहीं-कहीं भाषा सम्बन्धी कमजोरियाँ मिलेंगी। कीट्स के ही शब्दों में It is a foolish attempt, rather than a deed accomplished.

मैं जो कुछ चाहता हूँ, जो कुछ सोचता हूँ उसे ठीक मनचाहे रूप में अब तक उतार नहीं सका हूँ। इस चेष्टा का एक अस्पष्ट रूप मेरी आँखों के सामने बरावर टंगा रहता है। All the same, no one should be justified in passing a remark of insincerity regarding my feelings. I don't believe in the saying that Renuka contains lines written forcibly. Although at times, my poems have been deprived of the support of my character, I know that they have always come out in spontaniety. More or less, every poem has been a direct enlightenment in my life. रेणुका को लेकर धूम मचा करे लेकिन, मैं अभी तक निश्चित रूप से यह भी नहीं समझ पाया हूँ कि मेरे political career का श्रीगणेश हो गया। भगवान मुझ पर कृपा करे कि मैं अभी कुछ दिनों तक और भी सरस्वती के चरणोदक से अपनी मूर्खता धोता रहूँ। हिन्दुओं को पुनर्जन्म का भी भरोसा रहता है।

वच्चन को मैं एक पत्र लिख चुका हूँ। उसने भी एक पत्र लिखा है। अब रेगुलर करेस्पोंडेंस शुरू करता हूँ। योगी में अवश्य लिखूँगा। लेकिन, बच्चन अपनी प्याला, बुलबुल आदि कविताएँ भेज दे तो मजमून कुछ अधिक दिलचस्प होगा।

मनोरंजन जी से पत्र-व्यवहार करके मैं अपने को सौभाग्यशाली समझूँगा।

इधर मुझे ऐसा जान पड़ता है कि शुद्ध भाषा लिखने की ट्रेनिंग मुझे और लेनी चाहिए। भरसक कोशिश कर रहा हूँ। कविताएँ शिवपूजन जी से दिखाकर छपाया करूँगा। आप इस विचार को कैसा समझते हैं? मेरे विचार से शिवपूजन जी की जैसी चार्टर्ड हिन्दी लिखने वाला विरला ही होगा।

आशा है आप प्रसन्न हैं।

अगर मैंने छुट्टी नहीं ली तो दो महीनों तक यहाँ रहने की बात है।

आपका

दिनकर

आवश्यक :—

जनवरी के अन्त में मेरे घर में कुछ यज्ञ-प्रयोजन होने वाला है। अतएव मैं भी मुंगेर में रह सकूँगा कि नहीं यह अनिश्चित है। आपके वसन्तोत्सव का क्या हुआ ? मुझे तो मार्च के पहले छुट्टी प्रायः मिल ही नहीं सकती। उसके लगभग प्रोग्राम रखें तो मैं अभी से छुट्टी की कोशिशें करूँ।

दिसम्बर का वि० भा० अब तक नहीं मिला है। भारत और अभ्युदय नहीं देखा है। न देखने की इच्छा है। विश्वमित्र वाले दोनों लेख देख चुका हूँ।

"विश्वास' वाला आपका लेख सुन्दर है। यह विचार कुछ अनन्त की ओर जाने वालों को अप्रासंगिक भले ही लगे लेकिन इसके बिना कवियों का भी उद्धार नहीं है। आज यह राजवाटिका छोड़, चलो कवि वनफूलों की ओर। एमर्सन और क्रोपटकिन को छोड़ कर आप किन्हीं दो तीन अन्य लेखकों और उनकी सुन्दर कृतियों के नाम भेज दें जो आपको पसन्द हों।

आपके जीवन में वसन्त आ रहा है—इस ४४ वें वर्ष में। भगवान करें यह कभी आपको छोड़े नहीं। आप फाल से डरते हैं ? you may have a fall, but a fall on the knee which may end in prayer.

दिनकर

[६०]

बेतिया
१४-५-३६

श्रद्धेय चतुर्वेदी जी,

प्रणाम !

लालगंज शर्मा जी के योग्य पत्र लिखते हुए आपने जिस आशंका की चर्चा की थी वह उसी समय सत्य हुई। मैं उसी का वृत्तान्त लिखने वाला था। मुझे मेरे मालिक (जिलाधीश) ने बुला कर बहुत कुछ कहा सुना। मुझसे भी जहाँ तक बन पड़ा अपनी सफाई दी।

Our Govt. have got the notion or confirmed report that I am the writer of strong and powerful patriotic poems and that I enjoy popularity all over the country our Govt. views it with concern.

मैंने साफ-साफ कह दिया है कि मैं भारतीय समुद्र, पर्वत, वन, मरुदेश और खण्डहरों पर लिखता हूँ और समझता हूँ कि यह कोई अपराध नहीं है। राष्ट्रीयता और राजभक्ति इंगलैण्ड में साथ-साथ चल सकती है। फिर मैं ऐण्टी गवर्नमेण्ट चीजें भी नहीं लिखता। यह ठीक है कि नौकरी के पूर्व में थौरोली नेशनलिस्ट था और तब भी मैंने सैकड़ों राष्ट्रीय गीत लिखे थे। ऐण्टी गवर्नमेण्ट प्रोपेगण्डा में उनका उपयोग हुआ कि नहीं यह मैं नहीं कह सकता। मेरे लिए, अपनी भावनाओं का दमन कठिन है। इसके लिए मुझे विवश नहीं किया जाय तो अच्छा। योगी के बारे में तो मुझसे डाइरेक्ट प्रश्न हुए। आखिर इस चेतावनी के साथ रिहाई मिली कि खतरनाक पत्रों और व्यक्तियों के सम्पर्क से बचो। मिलने पर यह मजेदार कहानी विस्तृत रूप से कहूँगा।

कविता तो एक दम लिखी ही नहीं। भतीजी की शादी के अवसर पर कुछ ऐसा कड़वा अनुभव हुआ कि मेरा तो एकदम दिल ही बैठ गया था। मनोरंजन दादा की चिट्ठियों से कुछ सांत्वना मिली है। आजकल वह कहाँ हैं? पटने के पते पर मुझसे उत्तर माँगा था। लेकिन मैं आलस से उत्तर न दे सका। इधर मालूम पड़ता है कि वे पटने में नहीं हैं। अगर जानते हों तो शीघ्र लिखें।

भारतीय आत्मा की छः छः पंक्ति वाली कविताएँ मुझे दस दिनों के भीतर चाहिए। एक वह जिसमें पर्वत की अभिलापा का वर्णन है और दूसरी वह जिसकी अन्तिम पंक्ति है "रमण कहूँ या रमणी कह दूँ रमा कहूँ या राम कहूँ।"

विशाल भारत के लिए कोई कविता भेजूँगा शीघ्र। स्थान सुरक्षित रहे।

राजा-रानी कविता के विपय में आपने क्या सोचा है?

मुझे पता नहीं। क्या महिला अंक में देंगे?

आपका
दिनकर

[६१]

वेतिया
२०-६-३६

श्रद्धेयवर,

प्रणाम !

विशाल भारत सम्पादक-मण्डल के लिए आप के नाम ६५ आमों की एक टोकरी पार्सल से भेज रहा हूँ। आज ही पार्सल रवाना हुआ है। कल तक मिलेगा। बिल्टी साथ जाती है। कृपया शीघ्र स्टेशन में तलाश करायेंगे। पार्सल छुड़ा लेने पर मुझे सूचना भेज देंगे। आम मालदह है जिसे यहाँ डंका कहते हैं। रेलवे फ्रेट यहीं दे दिया गया है।

एक कष्ट स्वीकार करें। किसी बुक-सेलर के यहाँ से निम्नलिखित पुस्तकों की वी० पी० शीघ्र भिजवा दें।

(१) एमर्सन की वे पुस्तकें जिन्हें आप बहुत पसन्द करते हों।
(२) आर्नाल्ड की लाइट आफ एशिया का सस्ता संस्करण।
(३) आप्टे का संस्कृत-कोष।
(४) एक पुस्तक जो आपकी रुचि के अनुसार हो।

सभी का दाम लगभग १५ रु० लगे। रुपये आठ आने की कमी-वेशी हो, मजायश नहीं। बच्चन से भेंट हुई थी। मुजफ्फरपुर आया था।

अब प्रायः स्वस्थ है। उसके विषय की एक चिट्ठी पड़ी हुई है। आप का उत्तर आने पर भेज दूँगा।

नेपाली जी कलकत्ते गए हुए हैं। भेंट हुई होगी।

रसवन्ती नामक मेरी दूसरी पुस्तक की शीर्षक कविता लिखी जा चुकी है। कहिए, भेज दूँ ?

व्रजशंकर जी भी कलकत्ते हैं। मिलें तो मेरा नमस्कार कह देंगे। वर्मा जी और धन्य कुमार जी को मेरा प्रणाम।

आपका
दिनकर

[६२]

पो० ऑ० बेगूसराय (मुंगेर)
५-११-३६

श्रद्धेयवरेषु,

प्रणाम !

मैं १२ नवम्बर तक यहाँ हूँ। फिर मुंगेर जाऊँगा।

सम्मेलन के सभापति बाबू ब्रजनन्दन सहाय चुने गए। स्वीकृति भी दे दी है। शिवपूजन जी ने फिर अस्वीकार कर दिया। कवि सम्मेलन के लिये प्रो० अक्षयवट मिश्र और बटोहिया के कवि रघुवीर बाबू के नाम चुने गए हैं। यहाँ की स्वागत-समिति ने आपके सजेशन को (योगी वाले लेख को) सभा में रखा था। इसके लिए आपको धन्यवाद। यहाँ वाले बहुत चाहते हैं कि आप यहाँ सम्मेलन के अवसर पर आवें।

भवानी दयाल जी का फोटो और सम्भव हो तो सकल नारायण जी का फोटो भिजवा दें तो बड़ी कृपा हो। इन दोनों के लिये आपका ही भरोसा है। सुदर्शन जी का आना भी नितान्त आवश्यक है।

विशाल भारत नारी-अंक मेरे पास नहीं आया। क्यों? अब मैं फिर से नियमित रूप से विशाल भारत में लिखा करूँगा।

प्रेमचन्द जी के लिए आप क्या कर रहे हैं? विशेषांक निकाल सकेंगे? उत्तर दीजिए।

आपका
दिनकर

[६३]

बेगूसराय
८-१२-१९३६

श्रद्धेय चतुर्वेदी जी,

प्रणाम !

आपका कृपा-कार्ड मिला। हम लोगों के बीच कभी गलतफहमी हो ही नहीं सकती। इतना आप निश्चिन्त समझें। मिलने पर मैं बताऊँगा कि मरण कविता अस्पष्ट सी क्यों लगती है।

विशाल भारत की विज्ञप्तियाँ बाँटने को यहाँ बाबू कपिलदेव नारायण सिंह जी सुहृद हैं ही। अपने आदमी हैं, चिन्ता की कोई बात

नहीं। आप नोटिस अवश्य भेज दें और उन्हीं के नाम से। मैंने कह दिया है।

दुःख है कि मुझे ११ दिसम्बर को बेतिया के पास शिकारपुर ऑफिस का चार्ज लेना है। १५ से यहाँ सभा होगी। दो दिन की छुट्टी है लेकिन शिकारपुर से बेगूसराय १.६ घण्टे की यात्रा है। मुझे एक दिन की और भी छुट्टी लेनी पड़ेगी। मैं अभी तक यह नहीं सोचता कि मुझे छुट्टी नहीं मिल सकेगी। सरकार को मेरी जरूरत बेमौके हुई। चाहे जो हो मैं आऊँगा अवश्य।

आप क्यों नहीं आते? अगर आप नहीं आये तो सुदर्शन जी और जोशी जी भी नहीं आ सकेंगे। और तब सम्मेलन एक घराऊ खेल ही रहेगा। सम्मेलन की सफलता आप महापुरुषों के सहयोग पर ही निर्भर है। मैं आपको सांजलि प्रार्थना करता हूँ कि आप अपने निश्चय को बदलने की कोशिश करें। यों आपके कामन सेन्स में मुझे विश्वास है और आप जो कुछ दृढ़तापूर्वक करेंगे उसे मैं अच्छा ही समझूँगा, लेकिन आप आवें अवश्य।

आपकी ही सेवा में सुदर्शन जी का पत्र भी जा रहा है। उन्हें भिजवा देंगे और पूरी चेष्टा करेंगे कि वे अवश्य आवें। आप, जोशी जी और सुदर्शन जी आ गए तो सम्मेलन सफल रहेगा। कार्य-कर्त्ताओं का उत्साह विजयी होगा। सभी लोगों को उल्लास होगा।

आशा करता हूँ अपने निश्चय पर दुबारा विचार करेंगे।

आपका
दिनकर

[६४]

पो० ऑ० सहरसा
जिला (भागलपुर) ८-३-३७

पूजनीय चतुर्वेदी जी,

प्रणाम!

ब्रजशंकर जी से भेंट हुई होगी। मैं विशाल भारत से गैरहाजिर रहने के लिए बड़ा लज्जित हूँ। यह कविता रसवन्ती में ओपनिंग होने को थी। किन्तु साहित्यांक में लिखना जरूरी है इसलिए इसे ही भेज रहा हूँ। आशा है पसन्द आएगी। अपनी सम्मति लिखेंगे।

चार महीने के अन्दर एक अंक वि० भा० का मिला है। कृपया पत्र बराबर लिखें जिससे मैं साहित्यिक बना रहूँ।

आपने शर्मा जी को पत्र लिखा था उसकी बातें घट रही हैं। The burden of failing is always on my heart that my life is being exploited. I dont't know what I shall have to do.

यहाँ मैं १२ मई तक तो जरूर हूँ। उसके बाद भी रह जाऊँ तो कोई अचरज नहीं। पत्र यहीं के पते पर भेजें। वि० भा० भी यहीं आवेगा।

आपके पत्र की प्रतीक्षा में,

आपका विनीत
दिनकर

[६५]

सहरसा
१९-५-३७

श्रद्धेय चतुर्वेदी जी,

प्रणाम !

आपकी इस वर्द्धमती उदासीनता का कारण क्या है? जनवरी, एप्रिल और मई का वि० भारत मुझे अब तक मिला नहीं। रसवन्ती कविता किस अंक में गई है, इसका पता नहीं। आप इन दिनों किस अवस्था में हैं, क्या लिख रहे हैं आदि बातें स्पष्ट लिखने की कृपा करें।

इधर मैंने पटने के 'साहित्य' के लिये 'काव्य-समीक्षा का दिशा-निर्देश' नामक एक लेख लिखा है आप जब उसे पढ़ें तो अपनी सम्मति लिखेंगे। द्विज जी ने उसे बहुत पसन्द किया है। भारतीय भवन छपरा के अधिवेशन में अध्यक्ष पद से दिया गया मेरा अभिभाषण अप्रकाशित है। कहिए तो प्रकाशन के लिए भेज दूँ। It is a Socio-literary thing of some interest, I think.

आपका
दिनकर

[६६]

पो० ऑ० सहरसा
जिला भागलपुर १-१०-३७

मान्यवर चतुर्वेदी जी,

प्रणाम !

आपके पत्र मिलते गए हैं। लज्जित हूँ कि अब तक उत्तर नहीं भेज सका। कारण यह है कि मैं पटने अस्पताल में बीमार था। उसके बाद जब से यहाँ आया हूँ, स्वास्थ्य में कोई उन्नति होती नहीं दीखती। यहाँ की जलवायु दूषित है। फिर कार्याधिक्य भी रहा, और आलस्य तो जैसे मेरे स्वभाव का अंग बन गया है।

छपने वाला भाषण साहित्यिक है और साहित्यांक में जाने के योग्य भी। किन्तु देखता हूँ अब समय नहीं रहा। अगर १५ दिन भी बाकी हों तो लिखें मैं उसे संशोधित करके भेज दूँ।

गीत-अगीत कविता मैंने हाल ही में लिखी है। मुझे तो बहुत पसन्द है। इसीलिए साहित्यांक में भेज रहा हूँ। व्रजमोहन जी को दिखा कर उनकी सम्मति और अपनी राय लिखेंगे कि आप लोगों को कैसी लगी।

बेनीपुरी से भेंट हुई थी। उससे मालूम हुआ कि आप विशाल भारत छोड़ रहे हैं। सुन कर दुःख हुआ कि पारिवारिक विपत्ति ने साहित्य से आपको छीन लिया। आपके इस काम से हिन्दी संसार की हानि होगी। किन्तु, आप अपनी स्थिति के खुद जिम्मेदार हैं। मैं तो कहूँगा कि घर भी सँभालिए और पत्र भी।

अज्ञेय जी विशाल भारत ऑफिस में आ गए क्या ? उनसे मेरा विनत प्रणाम निवेदन करें और कह दें कि मैं भी उनका एक छोटा सा प्रशंसक हूँ। इधर उनकी कविताएँ मैंने बड़े शौक से पढ़ी हैं। काव्य में भी वह एक नए क्षितिज से आ रहे हैं। उनकी 'एकायन' कब तक प्रकाशित होगी ?

विशाल भारत की कविता का स्टैण्डर्ड नीचे जा रहा है। क्या कैसी भी कविताएँ जरूर छपनी चाहिए ?

मैंने तो उत्तर में देर की किन्तु आपसे उत्तर ७ अक्तूबर के पहले चाहता हूँ।

आपका
दिनकर

पुनश्च :—

मदरी राज कवि सम्मेलन के आयोजक ने मेरे पास मार्ग-व्यय भेज दिया है। मैं पहले राजी हो गया था किन्तु अब स्वास्थ्य के कारण जाना नहीं चाहता हूँ। सम्मेलन १६ अक्टूबर को है। १९ को मुझे आफिस में लौट आना चाहिये। यू० पी० से कुछ अकेला जैसा भी लगूँगा। अगर बच्चन और भगवती बाबू वहाँ जा रहे हों तब तो जाने में आनन्द आ सकता है। आपकी राय जानना चाहता हूँ लिखें।

दिनकर

[६७]

पो० ऑ० (पटना)
मिति ६-१-३८

मान्यवर,

प्रणाम !

पता चला कि इन दिनों आप ओरछा में हैं। इसी आशा से पत्र लिख रहा हूँ।

ब्रजमोहन जी का स्वर्गवास बड़ी ही दुखद घटना है। मैं अनुमान कर सकता हूँ कि आपके हृदय पर कैसी गहरी चोट लगी होगी। प्रसाद जी गए, प्रेमचन्द गए, रामदास जी गए सबसे बढ़कर मेरे पितृवत्पूज्य जायसवाल जी चले गए, किन्तु ब्रजमोहन जी का जाना सबसे अधिक दारुण जान पड़ा। हो सकता है कि मेरा व्यक्तिगत खिचाव इसका कारण हो, किन्तु लग मुझे ऐसा ही रहा है। एक जिन्दा दिल साहित्य-शिल्पी चला गया यह तो सभी को मानना ही पड़ेगा। याद कीजिये उन मुट्ठी भर पसलियों की जिनसे आनन्द और विनोद के फव्वारे चलते रहते थे। वि० भा० में जब कभी उनका लेख छपता था मैं सबसे पहले उसे ही पढ़ता था। कलकत्ते में उनसे जो मुलाकात हुई थी वह भूलने की चीज नहीं है। Since then I was always concious that it was an attainment to know that invalid frame, the little storehouse of so many noble ideas and ready arts.

संस्मरणों का लेखन बिहार में बदनाम हो गया है। जायसवाल जी के स्वर्गीय होने पर मैं चुप रह गया। किन्तु, ब्रजमोहन जी को अपनी

श्रद्धांजलि अर्पित अवश्य करूँगा। आप कृपा करके उनका एक संक्षिप्त परिचय भेजिए। मैंने जो कुछ देखा वह लिखूँगा ही किन्तु, आप अपने इम्प्रेसन का सार कुछ उदाहरणों के साथ भेजने का कष्ट करें।

मेरी पुस्तक फरवरी में निकल जायेगी। अपना कुशल लिखेंगे।

आपका
दिनकर

[६८]

पो० आँ० मधुबनी
जिला दरभंगा १०-१२-३८

मान्यवर,

प्रणाम !

आपका कृपा-कार्ड (यह भी हिन्दुस्तानी है) कल मिला। बड़ी कृपा। लेकिन धन्य हैं आप ? पर साल दो पत्र आपके नाम लिखे। उत्तर नहीं आने पर सोचा शायद आप वि० भारत के साथ ही हम लोगों से भी पल्ला झाड़ भागे हैं। निराश होकर बैठ गया था, तब आपकी साढ़े तीन पंक्तियों वाली चिट्ठी आती है। धन्य-धन्य तुम धन्य विभीसन।

ग्रन्थ की बात। 'हुंकार' छापेखाने में पड़ गया होगा। उसमें हाहाकार, दिल्ली, विपथगा, भविष्य की आहट, वसन्त के नाम पर परिचय आदि उग्र कविताएँ रहेंगी। 'रसवन्ती' बेचारी का लग्न ही नहीं बैठ रहा है। इधर उसकी वेष-भूषा में काफी उन्नति हुई है। चापल्य-जन्य पुरुषता के दूर हो जाने से अब वह सचमुच यौवन के रस में भींगी हुई रहस्य-मधुरा रसवन्ती हो उठी है। विश्वास है आप जैसे अक्खड़ रसिक उसके 'दृग बान' से विद्ध होकर तड़पे बिना नहीं रहेंगे। योग्य प्रकाशक के अभाव में इतनी देर हो गई। लेकिन अब यह विलम्ब असह्य है। जनवरी के प्रथम सप्ताह तक कहीं न कहीं भेज दूँगा। उम्मीद है कि मार्च के पहले ही आप उसे पा लेंगे।

एक तीसरी पुस्तक 'द्वन्द्व गीत' भी प्रायः तैयार है। धूल के हीरे नाम से मैंने जो पद लिखे थे वे अब सौ के लगभग आ गये हैं। हिन्दी में रूबाइयों की धूम, तीसरे साल तक रही। मैं जरा देर करके आ रहा हूँ। लेकिन इसीलिये शायद दुरुस्त भी। रसवन्ती के साथ वह भी निकल जायेगी। मैं तो इस चेष्टा में हूँ कि शीघ्र पुस्तकें छप जाँय।

इन तीनों पुस्तकों के निकल जाने पर एक अभिनव अध्याय में प्रवेश करूँगा। इधर आपसे विछुड़ जाने पर कुछ अभाव सा अनुभव कर रहा हूँ। शायद उस void को आपका पत्र-व्यवहार भर दे।

अमरनाथ जी की कृपा के लिए उन्हें धन्यवाद.।

आशा है उत्तर अवश्य देंगे और लिफाफे में। तीन पैसे का कार्ड और चार के लिफाफे। अब जो कार्ड का प्रयोग करे उसे क्या कहिये ?

आपका
दिनकर

[६९]

पो० ऑ० मधुवनी (दरभंगा)
२७-३-३९

मान्यवर,

प्रणाम !

आपका पहला पत्र (कई पेजों वाला) यथा समय मिल गया था। मेरा बच्चा वीमार रहा। उसी हलचल में फुर्सत नहीं मिली। डिटेल में पत्र लिखने के लिये मैं तीन चार दिनों का समय माँगता हूँ। उसी में आपके हिन्दी-विरोधी मिशन की भी चिकित्सा करूँगा।

वि० भा० के लिये कविता जा रही है। मुझे रिजर्व कराने की कोशिश नहीं करनी पड़ेगी। अगर अज्ञेय जी का एक खत भी मिला होता तो मैं वि० भा० में जरूर लिखता। यह बात दूसरी है कि वि० भा० छोड़ने के समय उन्होंने मुझे जो खत लिखा था उसमें यह उपालंभ भी था कि उन्होंने मुझे तीन चार खत भी लिखे थे जिन पर मैंने ध्यान नहीं दिया। यह सरासर गलत है। मुझे एक पत्र भी नहीं मिला। वल्कि वि० भा० भी १२ महीने बन्द ही रहा। अभी भी नहीं आता है।

हिन्दी विरोधी आन्दोलन चलाने में आप असफल हों इसकी कामना करता हुआ,—

आपका
रामधारी सिंह 'दिनकर'

स्थान सीतामढ़ी (मुजफ्फपुर)
१६-४-१९३९

मान्यवर,

प्रणाम !

गत १४ तारीख से बदल कर सीतामढ़ी आ गया हूँ। यहाँ, सर्विस में रहना हुआ तो स्थायी रूप से ३ साल तक रह सकूँगा। यह स्थान काफी रमणीक है। स्टेशन से तीन मील की दूरी पर यह नया साइट भूकम्प के बाद बसाया गया है।

कृपया वि० भा० ऑफिस में मेरा पता बदलने के लिये लिख देंगे। मेरे लिखे यह काम नहीं होगा, इसीलिये आपको कष्ट दे रहा हूँ। फ्री लिस्ट में मेरा नम्बर ११३ है।

एप्रिल का वि० भा० अभी नहीं मिला है। मुझे पता नहीं कि हिन्दी विरोधी आन्दोलन में आप क्या दलील देंगे लेकिन आम तौर पर लोग यही समझ रहे हैं कि आप मार्डन रिव्यू की आवाज अपने गले से निकाल रहे हैं। हलांकि इस अफवाह में मेरा विश्वास नहीं है और न मैं यही समझता हूँ कि थरो का प्रेमी कभी दूसरे की बोली बोलना चाहेगा।

राजाजी के कार्यों से क्षुब्ध जनता में हिन्दी के विरोध में प्रतिक्रिया का जन्म लेना स्वाभाविक दीखता है किन्तु इस भय से बैठ जाने में भी कोई बड़ी बुद्धिमत्ता नहीं दीखती। अगर विरोध के भय से अधिकारी लोग चुप बैठे रहें तो किस समय की प्रतीक्षा में? क्या आपकी कल्पना भविष्य के गर्भ में कोई ऐसा सुअवसर भी देख रही है जब सारा भारतवर्ष स्वतः ही हिन्दी को अपनाने के लिये उत्सुक हो उठेगा? मिशनरी की भांति प्रचार करते रहने से हिन्दी का कुछ न कुछ कल्याण अवश्य होता जायेगा लेकिन एक दिन शासकों की भुजा पर चढ़कर भी राष्ट्र-भाषा को चलना ही पड़ेगा। बौद्ध-धर्म भी तो एक नृपाल की भुजाओं पर चढ़ कर ही फैल सका था।

हिन्दी का जो छिट-फुट विरोध मद्रास, बंगाल या अन्यत्र चल रहा है उसका शमन केवल प्रेम से नहीं हो सकता। राजाजी जो कुछ कर रहे हैं वह खतरे से खाली तो नहीं है, लेकिन वर्तमान परिस्थिति में उसे ग्रहण करने के सिवा दूसरा रास्ता नहीं दीखता। दूर रहने के कारण मुझे इस का पता नहीं है कि हिन्दी-विरोधी आन्दोलन के दमन में कितनी निष्ठुरता बरती जा रही है, लेकिन अगर कुछ लोगों को जेल भी भेज दिया जाता है तो इसमें कोई गुनाह नहीं है। यह तो करना ही पड़ेगा।

गाँधी जी के विषय में आपने व्यर्थ ही कोप किया है। (जिस देश में ईश्वर की मूर्ति की पूजा होती है वहाँ गाँधी जी की भी पूजा होकर रहेगी।)

पं० श्रीराम शर्मा जी से मेरा पत्र व्यवहार स्थापित होना चाहिये।

महं-महं प्रोविजनल प्रयोग है लेकिन खूब इक्सप्रेसिव। इसे रहने दीजिये।

हुंकार की एक कापी पं० हजारी प्रसाद जी को भी भेज रहा हूँ।

आपका

दिनकर

७

सीतामढ़ी (कोर्ट)

१२-९-३९

श्रद्धेय चतुर्वेदी जी,

प्रणाम !

आपका कृपा पत्र मिला। गर्चे वह कार्ड ही है फिर भी धन्यवाद due हो जाता है।

परिस्थितियों के हावी होने की बात। मैं अभी तक भली भाँति यह नहीं समझ सका हूँ कि वे मुझ पर हावी हैं अथवा मैं ही उन्हें रौंदता हुआ आगे जा रहा हूँ। सन् १९३६ में मेरे जीवन में एक संकट उपस्थित हुआ था जब मुझे बराबर यह सोचने को बाध्य होना पड़ता था कि नौकरी छोड़ देना ठीक है या नहीं। धनराज जी (कांग्रेस सरकार की कृपा से वे जेल में बँधे पड़े हैं) के पास आपका जो पत्र आया था वह मेरी उस स्थिति के अनुरूप ही था। मैं भी उस समय आपकी सम्मति से सहमत था कि इस्तीफा दे देने में ही मेरा कल्याण है। लेकिन शीघ्र ही मुझे मालूम हो गया कि मुझ में काँटों में दौड़ने की भी हिम्मत है। सरकार के सारे Warnings, Explanations और धमकियों के बावजूद मुझे उस वातावरण में एक Spiritual fight का आनन्द आता था और जब टिकटिकिये मेरा पीछा करते थे, तब मन ही मन मुझे बड़ा सन्तोष मिलता था।

कलम उठाकर मैंने बेबसी का अनुभव तो कई बार किया, किन्तु बार-बार लिख जाने पर मुझे शान्ति ही मिला करती थी और यह भी मालूम होता था कि वाणी के संयम में Emotions के restraint में भी एक सौन्दर्य

है, जो वाज वक्त वह काम कर जाता है जो चिल्लाने से नहीं हो सकता। उस समय की रचनाओं में अनायास ये पंक्तियाँ उतर आई हैं—

पाली मैंने जो आग, लगा उसको युग का जादू टोना
आँखें जो कुछ हैं देख रही उनका कहना भी पाप मुझे
(कवि)

मेरी कड़ियाँ कसी हुई, बाकी सबके बन्धन ढीले
(भ्रमरी)

बँधी है लेखनी लाचार हूँ मैं (परिचय)

अपनी वात कहूँ क्या मेरी भाग्य लीक प्रतिकूल हुई
हरियाली को देख आज फिर हरे हुए दिल के फोले
(सावन में)

बुझती नहीं जलन अन्तर की, वरसे दृग, बरसे जलधर
मैंने भी क्या हाय, हृदय में अंगारे पाले सजनी
(पावस-गीत)

लेकिन 'रसवन्ती' में आकर जैसा कि मैं अब समझता हूँ, मैं अपनी किस्मत से काफी खीझ उठा और शायद Kicking mood में यह लिख डाला।

यहाँ शापित यक्षों के रोज
उड़ा करते अम्वर में गान।

फ़ोड़ दूँगा माया का दुर्ग, तोड़ दूँगा यह बज्र कपाट
व्योम में गाने को जिस रोज, बुलायेगा निर्वन्ध विराट
मिटा दूँगा ब्रह्मा का लेख, फिरा लूँगा खोया निज दाँव
चलूँगा निज बल हो निःशङ्क, नियति के सिर पर देकर पाँव
सजेगा जिस दिन उत्सव हेतु, देश माता का तोरण द्वार
करेंगे हम ले मंगल शंख, उदय का स्वागत मन्त्रोच्चार

अपनी सफाई देते हुए अगर मुझे यह कहना पड़े कि मैं परिस्थितियों के अधीन नहीं हो सका हूँ तो शायद आप इसे मेरे इनफेरियारिटि कॉम्पलेक्स की प्रतिक्रिया भी मान लेंगे। लेकिन पाँच वर्षों की दूरी तय करके अभी भी मैं अपने में वही उन्मेष और जोश पाता हूँ और इच्छा में मेरी यह जिद बरकरार चली जा रही है कि मैं झुकूँगा नहीं। अब झुकने की बात भी नहीं है क्योंकि अपने जीवन और भावना के बीच मैंने एक प्रकार की हारमोनी पैदा कर ली है। विश्लेषण करने पर मुझे मालूम होता है कि इस सामंजस्य का आधार मेरी यह वृत्ति है कि मैं अपनी भावना के साथ चलता रहूँगा, अगर इसके चलते कोई कैटास्ट्रॉफी आती हो तो आया करे।

ऊपर के उद्धरणों में आप जो एक प्रकार की खीझ देखते हैं वह भी प्रायः मिट रही है। नीचे की पंक्तियाँ, जो परसाल लिखी गईं थी इसका प्रमाण हैं।

फेंकता हूँ लो तोड़-मरोड़, अरी निष्ठुरे बीन के तार
उठा चांदी का उज्वल शंख, फूँकता हूँ भैरव हुंकार
नहीं जीते जी सकता देख, विश्व में झुका तुम्हारा भाल
वेदना मधु का भी कर पान, आज उगलूँगा गरल कराल
फोड़ पैठूँ अनन्त पाताल ? लूट लाऊँ वासव का देश ?
चरण पर रख दूँ तीनों लोक ? स्वामिनी करो शीघ्र आदेश।
चाहती हो बुझना यदि आग, होम की शिखा बिना सामान
अभय दो कूद पड़ूँ जय बोल, पूर्ण कर लूँ अपना बलिदान

(असमय आह्वान हुंकार में)

'वर्तमान की जय' अभीत हो खुल कर दिल की पीर बजे
एक राग मेरा भी रण में बन्दी की जंजीर बजे।

(आमुख : हुंकार)

स्वातंत्र्य ! पूजता मैं न तुझे इसलिये कि तू सुख-शान्ति-रूप
हाँ, उसे पूजता जो चलता तेरे आगे नित-क्रान्ति-रूप
मुझ में उसका बल, तेज, रोष, तेरे दल में जिसका निनाद
विप्लव का है जो तूर्य-नाद, मेरे दिल की वह आह एक
बल उठे किसी दिशि वह्नि-राशि ले देकर मेरी चाह एक

(चाह एक)

I have given you enough materials to generalise my position. You may judge and communicate to me if I have yeilded to wicked circumstances.

The first flames of fire burn more brightly that the subs-equent ones. But all the same, the heat is there. Hands that are warmed on them will bear wishes to my contention.

There is one thing however which obstructs me from my admirers. I mean the want of whirlwind in my literary activities. I do not think I had ever the credit of thier accompaniment but even if I had I am definitely of opinion that no poll can write in a whirlwind manner and contribute

at the same time pieces which can survive the age of a century at least. साहित्यिक ब्रह्मचर्य should, I agree with you, be a necessary watch word with our creative writers. But again this seems to be a cloak to hide myself. I find in fact, no last word to explain my position. If you feel an urge to make me sing so frequetly as I used to do in the beginning of my career, it is up to you to inspire me. Recognition is so rare in our literary world and you must have come across Keats' line that a man writes for fame also. I find no paper suited to my taste wherein I should contribute my pieces. The Vishal Bharat office seems to have boycotted me. M. Varma does not care to answer my letter much less to send the paper to me. Although I sent one poem to your paper at your order, I feel slighted now. April issue was the first and the last that came to me.

If the Vishal Bharat comes to me regularly I promise to send at least 4 poems a year to it. You do not know that I compposed some pieces recently but did not send any of them for publication to any magazine. They have however, been included in my book "Rasvanti" which is in the press.

Please, correspond oftener than you are doing.

इच्छा थी कि इसी चिट्ठी में अपने प्रान्त के विषाक्त वातावरण की भी चर्चा कर दूँ लेकिन यह पत्र काफी लम्बा हो गया है और मुझे यह भी ज्ञात नहीं है कि वैसे संवाद से आपका कुछ भी मनोरंजन हो सकेगा। (बिहार में कायस्थ, राजपूत और भूमिहार की फीलिंग बड़े जोरों पर चल रही है और साहित्य-क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं बच रहा है। इसका दुख है। इस फीलिंग को कुछ डंक मुझे भी लग रही है अन्यथा मैं अपने जीवन को कुछ दूसरा रूप देने में समर्थ हो सकता था। अगले पत्र में इसकी चर्चा कुछ अधिक व्यापक रूप से करूँगा।)

आप सम्मेलन के अवसर पर बनारस आते हैं या नहीं ?

आपका
दिनकर

[७२]

पो० ऑ० सीतामढ़ी (कोर्ट)
जि० मुजफ्फरपुर
७-१०-३९

मान्यवर,

प्रणाम !

आपके कार्ड के उत्तर में मेरा जो दीर्घकाय पत्र गया था, वह आपको मिला होगा। लेकिन, उसके बाद आपकी कोई चिट्ठी नहीं मिली। उसके बाद आपको कुछ न कुछ जरूर लिखना था। उस पत्र के जाने के बाद क० का० वर्मा जी की एक चिट्ठी मिली थी जिसमें उन्होंने योरोप पर एक कविता लिखने का आदेश किया था। कविता मैंने शुरू भी की थी, लेकिन अचानक मेरे एक आत्मीय टायफायडसे आक्रान्त हो गये। आज एक महीने से बीमार हैं। उन्हीं के पीछे चिन्तित रहने के कारण कविता पूरी नहीं हो सकी। तब तक उसका अवसर भी निकल गया। अब वह अच्छे हो चले हैं। वह कविता पूरी हो सकी तो वि० भा० को ही मिलेगी। आगामी १३ नवम्बर को समस्तीपुर के छात्र-परिषद् का वार्षिक अधिवेशन होने वाला है। वहां के लोगों की बड़ी इच्छा है कि उस अवसर पर आप पधारने की कृपा करें। वे लोग आपके बड़े प्रशंसकों में से हैं। उनकी जिद थी कि आप उत्सव का सभापतित्व करने की कृपा करें, लेकिन मैंने ही कहा है कि "सभापतित्व का प्रस्ताव उन्हें कबूल नहीं होगा। सभापति तो वह होता है जिसके फोटो पत्रों में छपते हैं। चतुर्वेदी जी का फोटो छापने का सौभाग्य अभी तक किसी पत्र को नहीं हुआ है।" मुझे उम्मीद है कि आप मेरा उपकार और एहसान मानेंगे। लेकिन चाहे जो भी हो, आपको इस अवसर पर बिहार पधार कर अपना सन्देश देना चाहिये। इसमें मेरा निजी स्वार्थ यह है कि घर बैठे, फोकट में आपके दर्शन नसीब हो जायेंगे। आशा है स्वीकृति भेजने की कृपा करेंगे जिससे समय पर मार्ग-व्यय भेजा जा सके।

मेरा आफिस १६ अक्तूबर होकर बन्द होता है। बनारस का सम्मेलन १५ से १८ तक है। मैं अधिक से अधिक १७ के बारह बजे दिन तक काशी पहुँच सकता हूँ। अतएव मुझे सन्देह हो रहा है कि मेरे जाने में कुछ सार भी है या नहीं। अभी कार्यक्रम नहीं मिला है। क्या आप काशी आइयेगा ? अगर आइये तो वैसा सूचित कीजिये जिससे अपने संदिग्ध निश्चय पर मैं फिर से विचार कर सकूँ।

रसवन्ती और द्वन्द्व गीत, दोनों पुस्तकें पुस्तक भण्डार की खटाई में झूल रही हैं। आशा है उत्तर लौटती डाक से देंगे।

आपका
दिनकर

[७३]

पो० ऑ० सीतामढ़ी कोर्ट
जि० मुजफ्फरपुर
८-८-४०

मान्यवर,

प्रणाम !

पता नहीं आपको यह पत्र समय पर मिलेगा या नहीं लेकिन इसका जवाब मुझे लौटती डाक से चाहिये।

मैं एक सरकारी पत्र की एडिटरी के लिये उम्मीदवार होना चाहता हूँ। अगर आप इस विचार से सहमत हों और यह समझें कि मैं पत्रकार का काम सफलतापूर्वक कर सकता हूँ तो कृपा करके, लौटती डाक से एक टेस्टिमोनियल भेज दें। मैंने कभी किसी पत्र के आफिस में काम नहीं किया है इसीलिये ऐसे प्रमाणपत्र की जरूरत है। आशा है फड़कती हुई अंग्रेजी में आपका लिखा पत्र मुझे शीघ्र ही मिलेगा।

रसवन्ती अभी तक प्रेस में ही है लेकिन अब देर नहीं है। पुस्तक छप चुकी है।

उत्तर तुरत।

आपका
दिनकर

[७४]

Mithapur
Kanulal Road, Patna
7-9-45

My dear Chaturvedi ji,

It was refreshing to have a letter from you after I do not know how long a period of silence. The ebb is, perhaps, at an end and I hope your spirit will continue to flow in usual Buoyance.

I am really glad that you have escaped death narrowly. But believe me no krait, no malaria, no Malequl Maut can take you away from our midst till you have not finished the mission of your life. And I dare say you have to do many more works in your present life.

I am not at all apologetic for my present job. I did not seek it; I only drifted to it; and had I not drifted to this post I would have been a similar or even worse place somewhere on this big earth. Before I came to this job I was already living in a diseased condition of mind with no hope, no light and nothing to sustain me, Benipuri was in Jail, I was cut off from all friends whose encouragement had pulled me through defections.

I have lived on most condemned worst life for the last two years. The comments have been wide and very humiliating although they brought very pleasant revelations that trouble had silently given to me so much of their affection. Having worked on the present post for about 6 weeks I began to wonder if I should not give it up. But ill-circumstanced as I have been during this period I could not take a mighty decision. I always remembered your suggestion made to some common Friend as far back as 1935 that I should not continue in Govt. service. Had I acted up to it, then, it would have saved me many a ignominy. But somehow or other I could not do it and meanwhile storms overtook me although, I dare say, they failed to uproot me. The polar star has always been before my eye and you may perhaps be intersted to know in some subsequent letter if I have lost sight of it during the period when I was being comdemned. You will be interested to know that if Hindi poetry did not answer the call of time through me during this period it did not through any other poet either. But let it remain here first now.

(I am working at a big poem called कुरुक्षेत्र and can hardly find time to write stray poems. Then you want the very best of them. Please let me know if I should send you an article in prose for the present.)

It is just possible I might shake off the shackles in a few weeks and take charge of the Yogi.

With affectionable regards,

Yours sincerely,
Dinkar.

[७५]

लंगट सिंह कालेज, मुजफ्फरपुर
१६-१२-५०

मान्यवर,

प्रणाम !

१६ नवम्बर का पत्र मिला। ए० ई० की सिर्फ दो पुस्तकें मेरे पास हैं, एक तो लिविंग टौर्च और दूसरी कविताएँ। मैंने पिछले १० साल में उनकी पुस्तकों की कम खोज नहीं की है। मगर कहीं मिलती ही नहीं। अनारकिस्ट प्रिन्स भी मिले तब तो ?

आपने लिखा था कि कालेज जाना ठीक नहीं होगा। फिर आप खुद ही दुबक कर तटस्थ हो गए। मगर आपका शाप तो मुझे लग गया है। यहाँ रहते हुए आलोचनाएँ लिखी जा सकती हैं, कविताएँ नहीं। मैं प्रोफेसरों की चुप्पी से चिढ़ा करता था। अब खुद ही चुप हो रहा हूँ।

शेष कुशल है।

आपका
दिनकर

[७६]

लंगट सिंह कालेज, मुजफ्फरपुर
१८-१-५१

मान्यवर,

प्रणाम !

दोनों पत्र मिल गये हैं। पांडेय जी के पत्र और फोटो के लिए शिकारपुर खत लिखा है। वहाँ से जबाब आ जाय तो आपको सूचना दूँगा।

रोलाँ की कोई भी पुस्तक मेरे पास नहीं रह गई है। एक दो थीं सो मित्र हरण कर ले गये।

कर्ण काव्य जहाँ का तहाँ पड़ा है। गर्मी की छुट्टियों से पूर्व उस पर ध्यान देने का अवकाश नहीं है। जब से कालेज आया हूँ। सप्ताह में अस्सी-पच्चासी घंटे कड़ा चूर मेहनत कर रहा हूँ। ज्यों-ज्यों पढ़ता जाता हूँ त्यों-त्यों अपनी मूर्खता प्रत्यक्ष होती जा रही है। हैरत की बात है कि हिन्दी के एक प्रसिद्ध साहित्यकार का ज्ञान इतना छूँछा निकला। कुछ परिश्रम तो अनावश्यक ज्ञान बटोरने में जा रहा है। मगर, वह जरूरी है, इसलिये उसे भी छोड़ नहीं सकता। आखिर कुछ तो नकली काम यहाँ भी करना पड़ता है। उसके लिए नकली इल्म की जरूरत होगी ही।

शेष कुशल है। खैरियत है कि यहाँ विजिटर्स कम हैं और समय का उपयोग हो जाता है।

आपका
दिनकर

[७७]

मुजफ्फरपुर
१८-२-५२

मान्यवर चतुर्वेदी जी,

प्रणाम !

आपका ६-२-५२ का कृपा पत्र मिला। बहुत दिनों के बाद आपने मुझे जम कर एक चिट्ठी लिखी है।

क्या आप सचमुच मानते हैं कि जो लोग सरकारी नौकरी में हैं, केवल वे ही पराधीन हैं? अपने जानते मैंने नौकरी में अब तक अपमान का अनुभव तो किया है। किन्तु कभी भी इस भय से मेरी लेखनी नहीं रुकी कि मेरी नौकरी पर कोई खतरा होगा। भावों का दलन तो कभी-कभी किया है, मगर, नौकरी बचाने के लिए नहीं, बल्कि अन्य कारणों से। और बन्धनों का अपने लिए मैं कुछ उपयोग भी मानता रहा हूँ। सरकारी बन्धन में रहने के कारण ही मैंने देश के लिए वेदना और आक्रोश का अनुभव एक विचित्र रूप से किया और यही विचित्रता वह ऐंठन है जिससे मेरी राष्ट्रीय अथवा क्रान्तिकारी कविताओं में विच्छित्ति उत्पन्न हुई है। मगर, यह सब के लिए सुगम मार्ग नहीं है। यदा-कदा मानसिक क्लेश भोगते हुए भी मेरी नौकरी इज्जत से अब तक इसलिए निभी कि मुझ पर हुकूमत करने वालों में

से प्रत्येक को विश्वास रहा है कि नौकरी की मैं इज्जत नहीं करता और उसे मामूली सर्दी, खाँसी और छींक-छाँक में भी फेंक सकता हूँ। कुछ यह भय भी कि दिनकर के इस्तीफे से लोगों में (क्षणस्थायी ही सही) क्षोभ हो सकता है। नेशनल वार फ्रन्ट में रहते हुए मैंने दो वार इस्तीफे दिये थे, मगर, इसलिए नहीं कि देश में मेरी निन्दा हो रही थी, बल्कि, इसलिए कि अपने ऊपर वाले अफसर के व्यवहार से मेरे स्वाभिमान को धक्का लगा था। और तीसरे साल प्रचार विभाग से भी मैंने इस्तीफा दिया था और वह भी स्वाभिमान के प्रश्न पर ही।

कविता तो अंग्रेजों के खिलाफ छिप कर भी छपवाता था और प्रत्यक्ष नाम से भी। और एक वार मेरा छद्म-पत्र सरकार के हाथ पड़ भी गया और सरकार ने उसका फोटो भी उतरवाया। लेकिन, कुछ किया नहीं केवल वार्निंग देकर छोड़ दिया।

कांग्रेस सरकार के आने पर मैंने नियम किया कि कविताएँ अब छद्मनाम से नहीं छपवाऊँगा। जो कुछ लिखना था, नाम से ही लिखा जिसका कुछ प्रमाण आप धूप और धुआँ में भी देखेंगे।

अंग्रेजी सरकार ने ३ वर्षों के अन्दर मुझे २२ वार ट्रान्सफर किया था, जगह-जगह मुझ पर खुफियों की निगरानी भी रखी गई थी और चेतावनियाँ तो आती ही रहती थीं। But I converted the whole thing into a feeling of Exhilaration thinking myself a hero who was giving some sort of fight on a different plane.

मगर, आप जो मेरी मुक्ति की बात सोचते हैं उसमें भी एक तत्व है और उसका समर्थन मैं यह कहके कर सकता हूँ कि नौकरियों में अब मैं ठीक से अमाता नहीं हूँ। It circumscribes movements, it narrowes contact and the college work doesnot give me opportunities to be with the authors of my taste and choice.

फिर यह भी सोचता हूँ कि जो कुछ लिखना है, जल्दी लिख डालना चाहिए क्योंकि ५०-५५ में मर जाना भारत में असामयिक मृत्यु का सूचक नहीं समझा जाता है।

बुद्धदेव और सीता पर काव्य लिखने की इच्छा १६ वर्षों से बनी हुई है। इस बीच कर्ण की ओर भी ध्यान गया था, मगर, उसे सामान्य स्तर पर अभी हाल ही में लिख कर अलग कर चुका हूँ।

गाँधी-दर्शन को काव्य बना कर उसे देश के हृदय में तैरा देने की उमंग भी लहरें मार रही है, मगर इस काम के लिए ३६ महीने का समय

चाहिए और प्रोफेसरी में यह काम नहीं हो सकेगा। १९५२ में आजाद हो जाऊँ, तो १९५५ में वह विश्व-काव्य आपको मिल जा सकता है। It may be a unique thing for the whole mankind. Some times, the very idea of planning sends a thrill into my whole being.

तो आप क्या कर सकते हैं? कल बी० पी० सी० सी० के सभापति श्री सुधांशु जी ने पूछा कि क्या तुम कौंसिल आफ स्टेट में जाने के लिए नौकरी छोड़ सकते हो। मैंने कहा, नौकरी मेरी १८ साल की हो चुकी है। पेन्शन तक टिकूँ तो बाल-बच्चों को ५०-६० हजार रुपये मिल जायेंगे। मगर प्रान्त से निकल कर राष्ट्रीय धरातल पर खड़ा होने के निमित्त मैं इस लोभ का त्याग कर सकता हूँ। हमारे प्रान्त से कौंसिल आफ स्टेट में १५ व्यक्ति जायेंगे। उस सूची के लिए मेरा नाम विचाराधीन है। किन्तु, इससे भी अच्छा होता कि जवाहरलाल जी और पू० राजेन्द्र बाबू मुझे साहित्य के लिए सुरक्षित जगहों में से एक के लिए मनोनीत कर देते। अगर प्रान्त से नाम जाय भी तब भी मैं चाहूँगा कि जवाहरलाल जी मुझे आर्ट, लिटरेचर सोशल सर्विस और साइंस के प्रतिनिधियों में से ही एक बनाकर बुला लें। इसमें मुझे खुशी होगी।

इस काम में किस किस से सहायता मिल सकती है, इसे आप जानें। नवीन जी तो प्रत्यक्ष ही बहुत बड़ी सहायता कर सकते हैं। खुद पू० राजेन्द्र बाबू चाहें तो काम आसान हो जाय। (अतएव आप शीघ्र ही दिल्ली जाकर नवीन जी, पू० राजेन्द्र बाबू तथा जवाहरलाल जी से मिल कर बात कर लीजिये। मेरा ख्याल है, आपको सफलता मिल जायेगी। मगर, ये बातें बहुत छिपाकर रखी जानी चाहिए अन्यथा भम्भड़ में सब कुछ खो जायेगा।) मगर इस तरह की चेतावनी मैं आपको क्यों दूँ।

कृपया लिखिये की आप क्या कर रहे हैं।

आपका,
दिनकर

[७८]

मुजफ्फरपुर
१०-१-५३

मान्यवर चतुर्वेदी जी,

प्रणाम!

आपका ७ जनवरी का कृपा पत्र मिला। मर्यादा पुरुषात्तमों ने अपनी मर्यादा भले रखी हो, मगर, इससे कवि सम्मेलन के आनन्द में कोई

फर्क नहीं आया। 'मैं आपनि दिसि कीन्ह निहोरा, ते निज ओर न लाउब भोरा'। थोड़ा कल्याण तो मेरा भी हुआ कि हुक्म चलाने वालों में कुछ की कमी हो गई।

मैं अभी यही रहूँगा। मगर, आप धन्य हैं कि अवन्तिका और रश्मिरथी, दोनों को ठुकरा ही दिया। रश्मिरथी पर चार पंक्तियों की सम्मति प्रकाशक के पास चार दिनों में भेज दीजिये। यही सही। मगर आपसे यह भी नहीं होगा। सोच रहा हूँ कि आपका आलस्य दूर करने के लिए किस देवी से प्रार्थना की जाय।

१५ को मैं अजन्ता प्रेस जाऊँगा। १७ को फिर यहीं लौट आना है।

आपका
दिनकर

[७९]

Chaudhari Tola Patna-6
the 10th Oct. 1953.

My dear Chaturvediji,

For the last three days we have been thoroughly intellectualised at Patna, as one is etherised on the operation table. The Bharatiya Hindi Parishad is having its session here since 8-10-53 and it will end some time in the evening to-day. We had two Governors (U. P. and Bihar) in our midst who spoke on the same day on several aspects of Hindi as our national language. Shri K. M. Munshi said that the country should not be in a hurry to drive away English as we have driven away the Englishmen. His point was that if you drove away the English language, before you have trained Hindi and propagated its use quite widely in non-Hindi Zones, the vacuum would be filled up not by Hindi but by the regional languages. I see much reason in what he has said and I want my colleagues in the cause of Hindi to appreciate it. His other point was that in order to increase its power of expression, Hindi had no alternative then to base itself on Sanskrit.

I think, you should write a letter to shri Munshi and congratulate him for placing his point of view on such a high plane and in such a wise way. I am sorry, he spoke extempore and very little has been reported in the press for the benefit of the people who did not attend the meeting. It may be good to get it written and printed for private circulation at least.

The Bihar Governor made out the point that post-graduate education throughout the country should be given through the medium of Hindi and not through the regional languages.

All this happened at the inaugural function.

In the evening (9-10-53) a symposium of scholars was held under the presidentship of Dr. Dhirendra Varma which considered the progress of Hindi in various fields. It was a most representative gathering in which almost all the senior professors of Hindi of northern India were present. At this symposium a report presented by Dr. Bahari, which contained bitter criticism of the omissions and commissions of the Government of India (Education Department) and the unfortunate thing was that the report was greeted with frequent applause by the audience. The discussions at this symposium could not be confined to the professorial level and it took a mild political turn and various speakers spoke on the various aspects of the problem in some heat as well. Being provoked by the speeches I also took part in the debate and placed my own point of view before the gathering. A gist of my speech has come out in to-day's paper, a cutting of which I attach for you perusal. I am sorry, I could not defend the Education Department. for I could not find solid arguments to refute the charges brought against it. Unless the Education Department can face its critics with statement of solid achievements, it is not going to pacify the indignation which has been

generated against its Hindi policy. It is most regrettable that the Government are ignoring this criticism and we find ourselves so helpless in the matter of either consoling the people or persuading the Government to do the right thing. The sense of frustration that has resulted from the rather idle machinery of the Government has given rise to some sort of communal bias in teachers who live in the midst of young persons and through whom a good deal of opinions filters to the masses. Why can't the Education Department start a Hindi Academy and place it in charge of all work that is necessary to train Hindi as a National Language? Why should they continue to relish and enjoy the abuses that are hurled at them?

I am leaving for Jamshedpur to-day where the Bihar Pradeshik Hindi Sahitya Sammelan is having its annual session to-morrow. I am afraid, the Education Department of the Government of India will come in for criticism there too.

Rest O. K.

With kind regards,

Yours sincerely,
R. D. Sinha

[८०]

चौधरी टोला, पटना-६
२-७-५४

प्रिय पंडित जी,

प्रणाम !

पत्र मिला। रुक्मिणी जी वाला लेख आपको पसन्द आया, यह मेरे लिए सौभाग्य का विषय है। उसे आप जैसे चाहें, छाप लें।

गोर्की का जन्म-दिवस मनाया गया, यह अच्छा हुआ। अब व्हिट मैन का भी मनाया जाना चाहिए अथवा थरो या एमर्सन का। एक रस में

एकरसता है। इसीलिए गया में दारसा तम्बाकू बिकता है जो बहुत मजेदार होता है। हिन्दी के दुश्मनों की गिनती की जा रही है। हिन्दी में यह नई छुरछुरी छूटी है जिससे मोनोटोनी जरा कम हो रही है। जब से आया हूँ बेनीपुरी से भेंट नहीं हुई है। भेंट होने पर पूछूँगा कि राहुल जी के बोलने के बाद उसका क्या मत है।

कल नागार्जुन मिला था। उसका बच्चा अब अच्छा हो गया। भगवान को धन्यवाद।

शेष कुशल है। पत्नी की हालत सुधर रही है।

आपका,
दिनकर

[८१]

चौधरी टोला, पटना-६
१५-१-५५

मान्यवर पंडित जी,

घोर आलस्य का एक लक्षण यह भी है कि आदमी किताब के बदले खत लिखने लगता है। गाली अचानक (और अनिच्छित भी) आपको लग गई, लेकिन इस सत्य का पता आज अपने ऊपर सोचते-सोचते लगा है। इस इंटर सेसन में लिखना तो बहुत पड़ा है, मगर वे सब के सब खत थे। लेख लिखने और पत्र लिखने में भेद यह है कि लेख लिखने से और नहीं तो १५ रु० (जिसकी उच्चावधि आपने २० रु० बँधवाई है) आ जाते हैं, किन्तु पत्र जब बाहर जाने लगते हैं तो तीन, छह या आठ पैसे अपने साथ अवश्य ले जाते हैं। अब यही देखिये कि इस कार्ड की क्या जरूरत थी? मगर, आलस्य के कारण आपके पास भेजना पड़ा। यह खत लिखना कला के लिए कला का साक्षात प्रमाण है। मथुरा बाबू कहते हैं कि Art for arts's sake का अच्छा परिपाक आजकल झूठ बोलने के लिए कई लोग कर रहे हैं। यह कला की चरम सेवा है। राहुल जी ने भी कहीं कहा है कि झूठ सभ्यता के साथ बढ़ी है और उसका अनुपम आभूषण है।

आपका
दिनकर

[८२]

पटना-६
४-८-५५

मान्यवर चौबे जी,

प्रणाम। पत्र मिला। कहते हैं मनुष्यों के हाथों की जाने वाली दुर्गति से घबरा कर चना एक बार ब्रह्मा के यहाँ गया। किन्तु, ब्रह्मा ने कहा कि रक्षा मैं क्या खाक करूँगा। मेरे मुँह में तो खुद पानी आ रहा है। वही हाल आपका है। किन्तु, हाल-चाल जो रहे, आज्ञा आपकी शिरोधार्य है।

पत्रकारों की संस्था का सभापतित्व ग्रहण करके आपने बहुत अच्छा किया। यह हिन्दी का अपूर्व सम्मान है और अपने भाषण में आपने उस सम्मान की भलीभाँति रक्षा की है। मेरा हृदय तो आनन्द से फूल उठा।

व्रजशंकर से कल ही बातें हो रही थी। He is not at all displeased with you. He continues to be your as ardent as ever.

रामधन के पत्र पर पत्र आ रहे हैं और मैं ईंट-पत्थर सबसे प्रार्थना किये जा रहा हूँ। देखिये, क्या होता है।

मैं तीन चिंताओं का शिकार रहा हूँ। अधूरी किताब की चिंता, अधूरे मकान की चिंता, अधूरे बेटे की चिंता। बेटा तो आपके आशीर्वाद से प्राध्यापक हो गया है। वह आठ तारीख को कार्य-भार सम्भालेगा। मकान से भी जबर्दस्ती कर रहा हूँ कि अब तू पूरा हो जा क्योंकि बेसूदी कर्ज में मेरा बाल-बाल गिरवी हो गया है। Still I believe, when you can borrow money without interest, it is as good as income, provided you are given good health and peaceful time to work for its repayment.

किताब पूरी करने में लगा हुआ हूँ। जब तक पूरी नहीं होती, दिल्ली नहीं आऊँगा। Delhi makes as all shallow and flat. You can't do a good work there I think, you are the brightest instance in point.

झूठ कहता हूँ? दिल्ली दो ही प्रकार के लोगों के उपयुक्त है। एक तो उनके लिए जो सुरा और सुन्दरी के रसिया हैं। दूसरे, उनके लिए जो दिन में सोते हैं।

नागार्जुन की गरीबी अब देखी नहीं जाती। परसों प्रण किया है कि उसके लिए कुछ-न-कुछ व्यवस्था तुरन्त करूँगा। किन्तु, यह निर्धन और

साधनहीन का प्रण है जिसका पूरा होना ईश्वरीय कृपा पर निर्भर है। राँची में उसने जवाहरलाल जी पर एक कविता सुनायी जो उत्तम कोटि की थी। उत्तम से नीचे तो वह लिखता ही नहीं है। और कितने सरल, निस्पृह तथा विशाल हैं नागार्जुन।

आशा है, आप प्रसन्न हैं। पिन नहीं है, इसलिए दोनों कागज यों ही लिफाफे में डाल रहा हूँ।

आपका

दिनकर

[८३]

आर्यकुमार रोड, पटना-४

१-११-६०

मान्यवर पण्डित जी,

आपका २९-१० का कृपापत्र प्राप्त हुआ। अन्तिम पुरुषार्थ से आपको निराशा हुई, यह बात मैं नोट करता हूँ। किन्तु, इस भाव को रोकूँ कैसे? वीरता अनेक प्रकार की होती है, उसका एक प्रकार यह भी है कि आत्मा जो कहना चाहे वही कहो, यश-अपयश का विचार छोड़ दो। अभी हाल ही में पास्टरनेक पर लिखते हुए मैंने ये पंक्तियाँ लिखी थीं—

मोड़ो न धार स्वर की अकीर्तियों के भय से,
रोको मत अपना कंठ कीर्तियाँ पाने को,
रह जाती मर कर यहाँ कुसुम की भी सुगन्ध,
पत्थर की भी आवाज दूर तक जाती है।

कवि पर फूल बरसाये जायँ, तो संभव है, उनकी गंध उसी समय नष्ट हो जाय। और किसी पर पत्थर फेंके जाएँ तो यह भी संभव है कि उन पत्थरों की आवाज भविष्यत को सुनायी दे।

To give you more pain I quote a few lines more from my recent composition—

मैं वहीं हूँ तुम जहाँ पहुँचा गये थे।
खण्डहरों के पास जो स्रोतस्विनी थी,
अब नहीं वह शेष, केवल रेत भर है,
दोपहर को रोज लू के साथ उड़कर बालुका यह
व्याप्त हो जाती हवा-सी फैल कर सारे भवन में।
खिड़कियों पर, फर्श पर, मसिपात्र, पोथी, लेखनी में
रेत की कच-कच,

कलम की नोक से फिर शब्द कोई भी न उगता है।
कल्पना मल-मल दृगों को लाल कर लेती।
आँख की इस किरकिरी में दर्द कम ही हो भले,
पर खीझ, बेचैनी, परेशानी बहुत है।

कहाँ तक लिखूँ? जो कुछ भी लिखता हूँ, उसमें यही उदासी उतर पड़ती है। क्या अपनी पीठ पर आप कोड़े लगाऊँ और जबरन अपने को उस ओर हाँक दूँ जिधर कुरुक्षेत्र और रश्मिरथी के कँगूरे दिखाई देते हैं?

लगता है, संघर्ष करते करते अब टूट रहा हूँ। आप तो जानते ही हैं कि एक बेटी और पाँच भतीजियों के व्याह रचवाने का काम पूरा कर चुका हूँ। केवल अपनी बेटी के व्याह में छोटे भाई ने पाँच हजार रुपये की मदद की। बाकी सारा खर्च और लड़का मुझे ही जुटाना पड़ा। और अक्सर ऐसे दामाद मिले जो असन्तोष पालते रहे हैं। भाइयों ने बीस वर्ष पहले ही बाँट कर अलग कर दिया और अलग हो जाने पर भी उनके बेटों और बेटियों का सारा बोझ माथे पर उठाये चल रहा हूँ। यह भी विचित्र अभिशाप है। मैंने भाइयों को इतना निश्चिन्त रखा कि वे काहिल हो गये बड़े तो मेरे हिस्से का खेत पा जाने पर भी दयनीय हैं और मर-खप कर कुछ न कुछ मदद अब भी करनी पड़ती है। परिवार बड़ा भारी शोषक होता है। उसके शोषण से वही बच सकता है जो वैज्ञानिक समाजवाद में विश्वास करे। मुझ जैसे मानवतावादी लोग तो उस शोषण के जाल से निकल नहीं सकते न यही कह सकते हैं कि हमने त्याग किया है।

और जरा सोचिये कि मेरी एक बेटी अब भी क्वाँरी है और एक बेटी बड़े भाई की भी है जिसे व्याह में देना है। पोतियों का जिम्मा तो खैर मेरे लड़के का होगा। भगवान उसे सकुशल रखें। मेरा स्वास्थ्य लड़खड़ा रहा है। अब मेरा एक मात्र भरोसा मेरा पुत्र है जो सारा बोझ उठाये हुए है।

किन्तु इन सबसे अधिक हानिकर प्रभाव मैत्री-भंग का पड़ा है। साहित्य के मित्र शत्रु हो गये, जो हुए वे तटस्थ हो गये हैं। गाँव में दो-एक दोस्त थे वे भी कन्नी कटा गये क्योंकि वे मुझे प्रभावशाली समझते हैं और प्रभाव का उपयोग मैं उन्हें करने नहीं देता। लगता है, मैं गलत युग में पकड़ा गया हूँ। मुझे दस साल पूर्व ही चल देना था। कहाँ वह समय जब कविताओं से देश में लहर आ जाती थी और कहाँ यह समय जब कविताओं पर नजर कभी कभी ही उठती है। आपको इस वातावरण में आशा कहाँ दिखाई देती है? उल्लास और उमंग की कौन-सी कहानी अब शेष है?

धुँआ-धुँआ सब ओर, चतुर्दिक घुटन भरी है,
आँख मूँदने पर भी तो अब दीप्ति न आती।
तिमिर व्यूह है ध्यान, गीत का मन काला है,
धूम ध्वान्त फूटता कला की रेखाओं से।

मधुमेह तो खैर संभल गया है, किन्तु चक्कर का आना नहीं रुका है। रक्तचाप अधिक से अधिक १७० तक जाता है। किन्तु उतने में ही लक्षण अनुभूत होने लगते हैं। टण्डन जी वाले समारोह में जाने का पक्का विचार कर लिया था, लेकिन उसी दिन रक्तचाप फिर बढ़ गया तथा डाक्टर और घर के लोग एक हो गये कि अब जाने नहीं देंगे।

बिलकुल एकान्त में रहने से मानसिक शक्ति कुछ बढ़ जाती है, लेकिन एकान्त को नष्ट करने वाले छोटे-छोटे विघ्न आते ही रहते हैं।

डाक्टर कहते हैं, चिन्ता को मन से निकाल दो। किन्तु, सब चिन्ताएँ छूट जाने पर भी यह चिन्ता नहीं छूटती कि उर्वशी काव्य अधूरा पड़ा है।

व्रजशंकर व्रज में विहार कर रहे हैं आ जाएँ तो उन्हें आपका अभिवादन कह सुनाऊँगा।

आशा है, आप प्रसन्न हैं। बड़ी कृपा कि आपने इस युग में मेरी भी कविता पढ़ ली।

आपका
दिनकर

[८४]

आर्य कुमार रोड, पटना
४-९-६३

मान्यवरेषु,

प्रणाम !

आपका ३०-६-६३ का कृपा कार्ड कल पहुँचा। हाँ, नियम तो है कि 'सुर नर, मुनि, सब भोगि हैं देहधरे के दण्ड।' किन्तु आप जैसे स्वच्छ पुरुष को बीमार देखकर टंडन जी की यह उक्ति काफी सत्य नहीं दीखती कि जो बराबर बीमार रहे उसे या तो स्काउंड्रल अथवा बेवकूफ समझो। मुझ पर उक्ति लागू है यह तो टंडन जी भी मानते थे। इधर पं० जनार्दन

प्रसाद झा द्विज भी आँख की पीड़ा से परेशान हैं। चार-पाँच दिन पहले आपरेशन हुआ है। परिणाम ईश्वराधीन है।

नवीन जी के लिए जो कुछ कीजियेगा, उसमें कुछ थोड़ी सेवा मैं भी दूँगा।

आपका
दिनकर

[८५]

२ साउथ एवेन्यू लेन, नई दिल्ली
८-२-६७

मान्यवर चतुर्वेदी जी,

यह जानकार धीरज मिला कि दुर्दिन में आप मेरी याद कर रहे हैं। रामसेवक की बीमारी घट नहीं रही है। वैद्यों ने एक तरह से जवाब दे दिया। अब वह होमियोपाथ के इलाज में है। गोद में पड़ा-पड़ा वह छीज रहा है। शायद जा रहा है, मगर मेरा कोई वस नहीं चलता। और यह क्रम काफी अरसे तक चलेगा।

इधर छोटे लड़के को एक पुत्र हुआ था। सुनते ही मैं खुशी से नाच उठा। मिठाइयाँ भी बाँटी। मगर खुशी चार ही दिन ठहरी। पाँचवें दिन बच्चा अस्पताल में ही टूट गया। उसी संदर्भ में बेटे और बहू को धीरज बँधाने पटना गया था। आज ही वापस हुआ हूँ।

पंडित जी, मैं बचपन में गाय-भैंस चराता था। बाधाओं को ठेल-ठाल कर मैंने थोड़ी उन्नति की। मगर अब उसकी भारी कीमत अदा कर रहा हूँ। सोचता हूँ, यह किस पाप का दण्ड है।

भाइयों ने मुझे १९३९ में बाँट कर अलग कर दिया, मगर, बेटियाँ और बेटे मेरे माथे पर पटक दिये। मैंने भी शान्त भाव से उसे स्वीकार कर लिया। दो बेटियों और छह भतीजियों की शादी की। दो बेटों और दो भतीजों को ऊँची शिक्षा दिलवायी। सोचा था, बुढ़ापे में वह फजीहत हो रही है, जो जवानी में नहीं हुई थी। घोर चिंता और घबराहट में समय बीत रहा है। आपके आशीर्वाद की बड़ी आवश्यकता है। अब तो निर्बल के बल राम बोलने के सिवा और कोई सहारा ही नहीं।

आपका
दिनकर

[८६]

नई दिल्ली
८-७-६७

मान्यवर चतुर्वेदी जी,

आपका कृपा-पत्र मिला। मेरा स्वास्थ्य इधर बहुत गिर गया है और संयम के बावजूद तेजी से सुधर नहीं रहा है। मेरा चित्त अभी भी दबा हुआ है। ऐसी अवस्था में मैंने दो सप्ताह के लिए मॉरिशस जाना स्वीकार कर लिया है। १५ जुलाई को प्रस्थान करना है। लौटना शायद ५ अगस्त तक हो।

आपके आशीर्वाद की कामना करता हूँ।

आपका
दिनकर

[८७]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
१९ मई, १९६७

प्रिय पंडित जी,

आपका समवेदना-सूचक कार्ड मिल गया था। रामसेवक गये तो अपनी आयु से, मगर, मेरे कलेजे में आजीवन चुभने वाला शूल छोड़ गये।

भये अजस भाजन अब प्राना, कवन हेतु नहिं करहिं पयाना ?

मैं बचपन में, आवश्यकता से तो उतना नहीं, मगर गरीब परिवार में जन्म लेने के कारण शौक से गाय-भैंसे चराया करता था। पुरुषार्थ के बल पर यहाँ दिल्ली यानी संसद तक पहुँचा। गरीबी की बाधा मैंने मानी नहीं और दो भाइयों की छह और अपनी दो बेटियों का विवाह, बेटों और भतीजों की शिक्षा-दीक्षा के क्रम में अपने व्यक्तिगत सुख को बढ़ने नहीं दिया। मेरा सारा जीवन यज्ञ में बीता है, दो भाइयों को चिन्ता मुक्त रखने का यज्ञ, आठ लड़कियों के विवाह का यज्ञ। किन्तु बड़े पुण्य ने छोटे पापों से मेरी रक्षा नहीं की। अब भली भाँति समझ रहा हूँ कि विपत्ति किसे कहते हैं, लोभ, काम और कीर्ति का सुख लूटने का क्या दण्ड है। भगवान ने आग में गाड़ कर मेरा अहंकार तोड़ दिया। अपनी जिन पंक्तियों से मैं दूसरों को धीरज बँधाता था, प्रेरणा देता था, वे पंक्तियाँ मेरे लिए बेकार हैं। सहारा है तो केवल माता कौशल्या के वचन का :—

सो सब सहिब जो देव सहावा।

आपका
रामधारी सिंह दिनकर

[८८]

पोर्ट लुइस, मॉरिशस
३० जुलाई १९६७

मान्यवर चतुर्वेदी जी,

मैं और सुमन यहाँ १७ जुलाई को पहुँचे। हवाई अड्डे पर हमारा स्वागत करने को बहुत से लोग आये थे। श्री जयनारायण राय और श्री एस० एम० भगत भी पधारे हुए थे। उन दोनों को मैंने आपका नमस्कार निवेदित कर दिया है।

जयनारायण जी तो यहाँ के प्रसिद्ध नेता हैं। हमारा कार्यक्रम बनाने को जो समिति गठित की गई उसके वे ही सभापति हैं। उस समिति द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम हमने कल रात को ही पूरा कर दिया। आज हमें भारत के लिए प्रस्थान करना था। किन्तु, कमिश्नर की इच्छा के अनुसार हमलोग एक सप्ताह यहाँ और ठहर रहे हैं। यही इच्छा शिवमंगल की भी थी।

कार्यक्रम निभाने में मैं रोज थक जाता हूँ। टहलना और आराम, इन्हें छोड़कर और सब सुख है। यहाँ बूढ़े-बूढ़े लोग जब चरण छूने को झुकते हैं, तब शर्म भी लगती है और रुलाई भी आ जाती है। विहार की बहुत सी लड़कियाँ यहाँ व्याही हुई हैं। वे जब आती हैं, दृश्य कारुणिक हो उठता है।

गोरों के दाँव यहाँ के हिन्दू समझते हैं, मगर, हिन्दुओं के बीच एकता यहाँ है नहीं। मैंने कई भाषणों में एकता पर जोर दिया है और कहा है कि आप हिन्दुस्तान की नकल नहीं करें। उसके इतिहास से शिक्षा लेकर अपने को मजबूत बनायें।

चीनी यहाँ केवल २५ हजार हैं, मगर उनके तीन पत्र पूरी सजीवता से चल रहे हैं। हिन्दी में एक साप्ताहिक भी नहीं है जिसे अखबार कहा जा सके। बड़े-बूढ़े घर में भोजपुरी और बाहर क्रेओल बोलते हैं। मगर उनके बच्चे घर में भी क्रेओल बोलने के आदी हो रहे हैं।

भारत के लिए उत्साह है लेकिन, गोरों के चक्र को विफल करने में भारत क्या सहायता करेगा, यह मैं नहीं जानता।

प्रीमियर रामगुलाम काफी होशियार हैं। मुसलमानों और फारवर्ड ब्लाक के साथ उन्होंने एकता कर ली है, मगर कुछ हिन्दू उनसे फूट रहे हैं इस फूट का सुफल अन्त में गोरों को मिलेगा जिनकी संख्या केवल दस हजार है।

आजकल यहाँ दो-तीन स्वामी भी आये हुए हैं। मैंने टेलीविजन पर दो प्रोग्राम दिये हैं। रेडियो में कविता और तीन वार्ताओं के रेकार्ड भी दे दिये हैं।

१२-१४ अगस्त से पूर्व भारत आना मुश्किल दीखता है। क्योंकि नरोवी में भी तीन दिन रुकने का विचार है।

आपका
दिनकर

[८९]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली-११
सितम्बर ११, १९६८

मान्यवर चतुर्वेदी जी,

आपके दो कार्ड मिले। धन्यवाद! संस्मरण सा० हिन्दुस्तान में ही छपने वाला था। मगर अभी तो सभी अखबार बन्द हैं। "संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ" नाम से संग्रह निकालने का विचार है। बेनीपुरी और काका साहब के संस्मरण और लिख लूँ तो पुस्तक पूरी हो जायेगी। और सारी सामग्रियाँ तैयार हो चुकी हैं।

बेनीपुरी जी कोई साल भर से मरणासन्न थे। फिर भी उनके शरीर छूटने का बड़ा दुःख है। वे मेरे उन्नायकों में से थे। उन्होंने मेरे निर्माण में काफी योगदान दिया था। उनसे मैं ऋणमुक्त नहीं हो सका। एक पुस्तक मैंने उन्हें समर्पित की थी। अब इसी संस्मरण में जो कुछ भी कहना है, कहूँगा।

राहुल जी, नवीन जी और बेनीपुरी जी, तीनों के तीनों साहित्यकार असाधारण रूप से प्राणवान थे। किन्तु तीनों की एक ही गति हुई। पक्षाघात, स्मृति-लोप, असमर्थता और अन्त। अब देखिये मेरी क्या हालत होती है।

स्वराज्य के पूर्व तक बेनीपुरी को गरीबी से लड़ने की चिन्ता नहीं थी। स्वराज्य के बाद यह चिन्ता घोर रूप से जगी और उसने गलत रास्ता पकड़ लिया। मसलन गाँव में भारी मकान बनवाने में क्या तुक थी? वह मकान अगर शहर में होता तो आज उससे अच्छा किराया आता होता। मगर बेनीपुरी सुरीला आदमी था। जो सुर चढ़ गया, चढ़ गया। मैंने उसे टोका भी था, मगर उसने कहा, गाँव में मैं मकान नहीं, अपना स्मारक बनवा रहा हूँ। उसकी बहुत-सी छोटी-छोटी बातें याद आती हैं और सोच कर मन, न जाने, कैसा हो जाता है।

आपका उपदेश दीर्घ-जीवन के लिए है और कर्तव्यवश मैं जीना भी चाहता हूँ। मगर अनजाइना पेक्टोरिस कम नहीं होता, दिनों दिन बढ़ता जाता है। पिछली मई में पश्चिम-जर्मनी गया था, मगर घूमना पार नहीं लगा। १२ दिनों के बाद भाग आया।

आप लेख में जो भी फेरफार चाहें, कर दें। उसे फिर से टाइप करवा लूँगा।

मेरा बायाँ हाथ तो बिल्कुल ही काँपता है: दाहिने से भी अक्षर सुडौल नहीं निकलते। इसलिए पत्र टाइप करवा कर भेज रहा हूँ।

इधर गद्य ही गद्य लिख रहा हूँ। कविता की ओर मन नहीं जाता है। मगर कल्पना एक दिशा में काम कर रही है। एक काव्य और लिखना चाहता हूँ जिसका नाम "कल्कि" होगा। मगर ध्यान केन्द्रित करने का सुयोग प्रभु ही देंगे। अगर वह सुयोग नहीं मिला, तो यह काव्य भी नहीं लिखा जायगा।

(शिवपूजन जी, द्विज जी, नेपाली जी, नलिन जी पहले ही जा चुके थे। अब बेनीपुरी भी चले गये। बिहार का साहित्याकाश सूना हो गया।)

आपका
रामधारी सिंह दिनकर

[९०]

उदयाचल, राजेन्द्र नगर, पटना-१६
२८-८-७१

मान्यवर चतुर्वेदी जी,

कल आपके पत्रों का संग्रह मिला। श्री वृन्दावन दास जी ने भेजा है। यह संग्रह शुद्ध साहित्य का अंग है और इसके प्रकाशन से हिन्दी की श्रीवृद्धि हुई है। कुछ श्रीवृद्धि पर दावा अंग्रेजी भी कर सकती है, जैसे मेरे नाम लिखे गये पत्र में। वृन्दावन दास जी को धन्यवाद का पत्र कल ही लिख दिया। रात किताब पढ़ता रहा, सो भक्ति से गद्गद होकर आज आपको पत्र लिख रहा हूँ।

मेरा हाल शायद आपने सुना होगा। पिछले १३ जून को मेरा दिल्ली का कार्यकाल समाप्त हो गया। १३ जून से १३ जुलाई तक घर मेरे पास मुक्त था। अतएव १३ जुलाई को ही मैंने दिल्ली छोड़ी। १४ जुलाई से मैं पटने में रह रहा हूँ। हाँ, बीच में १४ दिन का एक ट्रिप

लगाया और दिल्ली, भोपाल, नेपानगर और फिर दिल्ली जाकर घर लौटा। आज फिर दिल्ली जाने का विचार है। ३१ को लौट आऊँगा।

शायद चाणक्य ने कहा है कि आदमी को जवानी में क्रोध से और बुढ़ापे में लोभ से बचना चाहिए। मेरे साथ बात उलटी हो गयी। जवानी भर मैं क्रोध की कविता लिखता रहा और बुढ़ापे में लोभ से ग्रस्त हूँ। स्वर्गीय पुत्र चार बेटियाँ छोड़ कर गये हैं। एक की शादी करवा चुका हूँ। अब तीन बाकी हैं। अगर १०-१२ साल बचना पड़ा तो उनकी भी शादियाँ करनी पड़ेंगी। उदयाचल को छोटा बेटा केदार चलाता है। उससे रोटी-दाल चल जाती है। मगर पोतियों की शादी के लिए उससे धन जमा नहीं किया जा सकता।

जब दिल्ली से चलने लगा, श्री डी० पी० मिश्र जी ने कहा, आप वाइस चान्सलर हो जाइये। उन्होंने पहले जबलपुर का और तब रीवाँ का नाम लिया। लेकिन वाइस-चान्सलरी करने का अब साहस नहीं है। भागलपुर में वाइस-चान्सलरी के कारण ही मुझे ब्लड प्रेसर का आजार हो गया था। यह भी है कि वाइस-चान्सलरी का साहित्य के साथ वैर का सम्बन्ध है। यही कुछ सोच कर पटना आ बैठा हूँ। अब तो साहित्य में ही आखिरी वर्ष लगें, उसी से मुक्ति है।

आपने निन्नानवे के फेर में पड़ने से मुझे रोका था, मगर वह तो और तेज हो गया। जिस परिस्थिति में पड़ गया हूँ उससे धन के बिना निस्तार नहीं है। अनाथ पोतियों का भार केदार पर डाल कर मुक्त साँड़ बन कर घूमूँ, यह कायरता होगी। २४ साल की उम्र में जुए को अपनी गरदन पर लिया था और ७४ तक बचा तो गरदन पर वही जुआ मौजूद रहेगा।

आपके बहुत से पत्र मेरे पास हैं। और मित्रों के भी हैं। उन्हें प्रकाशित करने की इच्छा होती है। मगर आपने सुना होगा कि पन्त जी ने बच्चन पर मुकदमा कर दिया है कि बच्चन ने उनके पत्र क्यों छाप दिये।

पटना आकर पुस्तकालय को नये ढंग से सजाने में १५ दिन लग गये। उसके बाद मैंने लिखना आरम्भ किया। एक पक्ष से वह बाधित पड़ा है। भूमिकाएँ और अभिनन्दन के लेख लिखने से ही लिखाई की असली खाज शान्त हो जाती है।

आशा है, आप प्रसन्न हैं।

विनीत
रामधारी सिंह दिनकर

श्री आरसीप्रसाद सिंह

[९१]

बेलसण्ड
२३-१०-३५

कवे !

प्रेम ।

तुम्हारी याद कई भाँति से आती है। बड़े सौभाग्यशाली हो। एक दिन तुम्हें लिखने को कुछ अस्फुट पंक्तियाँ भी लिखी थीं। मजमून कुछ ऐसा है जिसे भेजने से हिचकता हूँ। शायद कभी भेज भी दूँ।

DEPARTMENT को ले कर चिन्तित रहता हूँ। फेल कर गया (जिसकी उम्मीद है) तो बड़ी बुरी हालत होगी।

"नालन्दा" मिला या मिली होगी। रतन ने मुझे एक चिट्ठी भी लिखी थी जिसमें तुम्हारा पता माँगा था। तुम्हें नालन्दा में लिखने के लिये कहने को कहा था। और तुम ! तुम ऐसे निष्ठुर हो कि रतन के पत्र से भी परहेज रखते हो। आशा है, तुम अपनी एक सुन्दर कविता, आरसीत्व की परिचायिका, उसके पास शीघ्र भेजोगे।

दिवाकर, मधुकर आदि की पंक्तियाँ मिली थीं। कवियों का क्या सुन्दर PLEASURE TRIP था। पर मुझ भाग्यहीन को रश्क क्यों हो ?

तिवारी जी की एक प्रायः लम्बी चिट्ठी अभी मिली है। उत्तर देना या न देना, पर याद जरूर करना।

तुम्हारा
दिनकर

[९२]

पो० ऑ० सहरसा (भागलपुर)
२२-३-३७

प्रिय आरसी !

यह जानकर तुम्हें प्रसन्नता होगी कि तुम्हारे परम मित्र बाबू राधाकृष्ण जी से मेरे पत्र-व्यवहार का सिलसिला जारी हो गया है। प्रथम पत्र में ही कुछ ऐसी बेढंगी बातें हो गईं कि छविनाथ जी ने remark कर दिया।

"पहले चुम्मा गाल कटौवल"

लेकिन, मैं इस गाल कटौवल नीति का कायल हूँ अगर चूमने वाला चुम्बिता की नोंक-झोंक के सिलसिला को तोड़ना चाहता हो। मुझे मालूम नहीं तुम इस होली में लालटेनगंज हो या घर पर। मैं घर पर रहूँगा। इसी से तुम्हें भी घर के पते से लिख रहा हूँ।

मैं सहरसा अभी ११ मई तक तो जरूर हूँ। उत्तर यहीं दो।

हाँ, चयनिका तथा और कुछ बँगला कविताएँ पार्सल से भेजने की कृपा करो तो मेरा बड़ा उपकार हो। मैं नीरस होता जा रहा हूँ।

ठाकुर की अन्य पुस्तकें (खेया, कड़ि ओ कोमल, गीतांजलि, गीति माल्य आदि छोड़ कर) अवश्य भेजो और शीघ्र।

तुम जो वेलसण्ड से पुस्तक लाये थे वह संचयिता है या चयनिका ? पुस्तक जरूर भेजो। मुर्दे को जिलाओ। विशेष क्या ?

तुम्हारा
दिनकर

[९३]

ससराम
१२-६-३८

प्यारे आरसी !

तुम्हारा तकल्लुफदार खत मिला। यह देख कर दुख हुआ कि नोटिस के नीचे अपने नाम को तुमने काट दिया है। अगर तुम्हें सभाओं के साथ अपने नाम जोड़ने में इतनी दिक्कत मालूम होती है तो तुम डेढ़ सौ कोस से दूसरों को किस विरते पर बुलाना चाहते हो ? मैंने माना कि हिन्दी साहित्य के इतिहास में तुम निर्लिप्त साहित्यिक के रूप में जा रहे हो, किन्तु क्या तुम्हारी यह सरलता (तुम्हारे स्वभाव के इस अंग को मैं यही मान लेता हूँ) अपने घर वालों के सामने ऐंठ सी नहीं दीखेगी ? समय आ गया है कि तुम्हें कोड़े लगाये जायँ। इसीलिये जान-बूझ कर यह समीक्षा कर देनी पड़ी। तुम बहकते भी तो जा रहे हो।

देवव्रत जी के यहाँ तुम्हारा संग्रह देखने का संयोग मिला। सब मिला कर तुम्हारा सम्पादन भी मुझे अच्छा लगा, लेकिन एक बात खटकी। प्रारम्भ की कई कविताएँ एक ही छन्द में पड़ गयी हैं जिससे कुछ monotony आ जाने का डर है। एक ही छन्द वाली एक या दो कविताओं के बाद दूसरे छन्द वाली को स्थान देना अच्छा होगा। किन्तु, यदि तुमने अपनी कल्पना

और स्वप्न के सिलसिले के साथ उनका क्रम बाँधा है तो, मैं अपना Suggestion वापस ले लूँगा। दरअसल मुझे अधिक समय तक उसे देखने का मौका ही नहीं लगा कि वातावरण की तह तक पहुँच सकूँ।

जनता के जिस अंक में तकदीर का बँटवारा छपा है उसी में भाई राधाकृष्ण की एक कहानी मिली। पढ़ कर तबीयत फड़क गई, क्या जबान पायी है। और कितनी हिम्मत। राधाकृष्ण धरती के कलाकार हैं इसीलिये उनपर स्नेह बढ़ता जा रहा है तुम उनके अन्तरङ्गों में से हो, कभी मेरी बात भी उन तक पहुँचा देना। लिखना कि वह जिस गद्य शैली का निर्माण कर रहे हैं उसे बहुत अंशों में हिन्दुस्तानी का आदर्श मानता हूँ। इस पीढ़ी के बहुत कम लेखक ऐसी चलतू भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। अगर समय की गति के साथ उनकी अन्तर्दृष्टि गंभीर और व्यापक होती गई तो हिन्दी को प्रथम श्रेणी का कलाकार प्राप्त हो जायगा।

एक बात और, और बस।

संचयिता तुमने किसी को दे दी क्या? अगर नहीं तो उसके साथ और कुछ पुस्तकें भी पार्सल से भेजो। तुम तो अब कमाने लगे। यह पार्सल का भार अखरेगा नहीं। अगर तुम्हारी आवश्यकता बनी रही तो सभी पुस्तकें पढ़ कर तुम्हें फिर से भेज दूँगा। भाई! मैं तो सच्चा देहाती हो रहा हूँ। समय असमय कोई कष्ट दिया करूँ तो स्वीकार कर लिया करो।

आशा है, तुम प्रसन्न हो।

तुम्हारा
दिनकर

[९४]

पी० ऑ० मुंगेर (बिहार)
२८-९-३६

प्रिय रघुवीर,

सस्नेह वन्दे !

तुमने प्रथम सम्बोधन में ही 'तुम' कहकर मुझे मानो पार्श्वस्थ कर लिया। आभारी हूँ।

हाँ, यह ठीक है कि मैं भोज के मालव से पत्र लिखने वाले इस अज्ञात कृपालु मित्र के विषय में अधिक नहीं जानता हूँ। पं० बनारसी दास जी से एक बार तुम्हारा नाम सुन चुका हूँ। आज शिवपूजन जी के पत्र से तुम्हारे कुछ विशेषण मिले हैं। तुम खण्डहरों के धूसर सौन्दर्य की आभा को प्यार कर सकते हो, यह जानकार बहुत सन्तोष हुआ। चूँकि तुम जैसे भावुक जीवित हैं इसलिए इस तमिस्र युग में भी प्रिय दर्शन के भारतीय अतीत का प्रत्यागमन संभव नहीं है तो प्रत्यक्ष रूप से हिन्दी संसार से विलग नहीं रख सकता हूँ क्योंकि भाग्य ने हमें साधनहीन प्रतिकूल परिस्थिति में कैद कर रखा है। किन्तु, दूरागत प्रतिध्वनि कहती है कि रेणुका का स्वागत गालियों से हुआ था। ऐसी अवस्था में तुम मुझे दूर-देश से प्रेम का आशीर्वाद भेज रहे हो इससे बढ़कर मेरे लिए गौरव की बात और क्या हो सकती है ? तुम्हारे इस मधुर व्यवहार से मेरा रोम-रोम पुलकित हो उठा। कितने धन्यवाद दूँ।

रेणुका जा रही है। तुमने और कुछ माँगा है। तुम्हारे उत्तर के आ जाने पर भेज सकूँगा। धीरज रखो।

इच्छा होती है कि स्वयं तुम तक आकर तुम्हारा दर्शन करूँ किन्तु, यह मनुष्य का स्वप्न मात्र है। देखें इसकी पूर्ति कब होती है।

कृपया उत्तर शीघ्र दो। मैं संशय में ही रहूँगा।

क्षमा याचना के साथ

तुम्हारा
दिनकर

[९५]

बेगूसराय
१२-११-३६

प्रिय भाई,

सप्रेम वन्दे !

तुम्हारा पत्र समय पर मिल गया था। क्षमा करो कि मेरा स्वभाव कुछ लचड़ है और उत्कट इच्छा रखते हुए भी कभी कभी उत्तर देने में विलम्ब हो जाता है।

कल बुक-स्टाल पर सरस्वती देखी। तुम्हारा चित्र पहली बार देखा और इस प्रकार देखा कि तुमसे आग्रह करता हूँ कि अपना चित्र Autograph करके भेज दो। मेरी तस्वीर भी मिलेगी लेकिन कुछ देर से। शहर पहुँचूँ और विशेषतः इसी के लिए चित्र लूँ तो भेज सकूँगा।

आगरा विश्वविद्यालय गुणों की प्रतिष्ठा करने जा रहा है यह सुन कर हार्दिक आनन्द मिला है। तुम्हें शतशः बधाई। भगवान ने ऐन मौके पर तुम से परिचय कराया है। तुम्हारी थीसिस जब छप कर निकल जाय तो एक कापी अवश्य भेज देना। मैं स्वयं इतिहास का विद्यार्थी हूँ। बी० ए० में ऑनर्स इतिहास में ही था। प्राचीन भारत के सांस्कृतिक इतिहास में काफी दिलचस्पी थी। वैष्णव धर्म पर थीसिस लेने का विचार था, लेकिन संस्था ने मन की बात नहीं होने दी। मालवा पर रिसर्च के महत्त्व का अन्दाज मुझे नहीं है। एक कारण उत्सुकता का यह भी है। पुस्तक जरूर भेज देना।

तुम्हारी चिट्ठी कुछ "छायावादमयी" होती है। अबकी बार के पत्र में जो तुमने लिखा है "भेंट होगी और भगवान ने चाहा तो दो चार वर्षों··· किन्तु तब तक इस चार पैसे के साधन को नहीं तोड़ डालना" सो इसका अर्थ मेरी समझ में नहीं आया। क्या इस पर प्रकाश डालने की कृपा करोगे? स्पष्ट और निःसंकोच होकर लिखना, मैंने थोड़ी सी झाँकी भी समझ ली है।

'दिल्ली' कविता तुम चाहते हो। मैं भेजूँगा और अवश्य। अभी कापी साथ नहीं और स्मृति से शुद्ध पढ़ सकता हूँ, लिखने में अशुद्धियाँ हो जाया करती हैं। एक-आध अन्य कविताएँ भी भेज दूँगा। तुम जरूर पसन्द करोगे।

अपनी स्थिति के विषय में भी। मैं मुँगेर में attached हूँ पर साल भर घूमता रहता हूँ। जब मेरा कोई पता मालूम नहीं रहे तो यह पता

समझना (P. O. सिमरिया घाट, जिला मुंगेर, बिहार) इस बार भी इसी पते पर उत्तर देना ठीक होगा। मैं जहाँ कहीं रहता हूँ मेरी डाक सिमरिया घाट से Redirect होकर मिल जाती है।

आशा है तुम स्वस्थ और प्रसन्न हो।

तुम्हारा विनीत अनुज
रामधारी सिंह 'दिनकर'

[९६]

P. O. सीतामढ़ी कोर्ट
Dt. मुजफ्फरपुर (बिहार)
२१-६-४०

प्रिय भाई,

सादर वन्दे !

एक मुद्दत के बाद पत्र लिखने की सूझी। पूरे चार वर्ष हो गए होंगे। इस बीच में बड़ी बड़ी घटनाएँ हो गईं। तुम भी विद्यार्थी से PH. D. हो गए। जब जब नाम और यश सुनता हूँ, जी चाहता है कहीं जाकर मिल लूँ। भगवान की इच्छा कि अब तक तुम्हारे दर्शन नसीब नहीं हुए।

पिछली बार बम्बई जाने से पहले जयचन्द्र जी से भेंट हुई। उस समय वह अपना इ० प्र० लिख रहे थे। बातों के सिलसिले में तुम्हारा नाम भी निकला और काफी चर्चा हुई।

"शेष स्मृतियाँ' और पूर्व मध्यकालीन भारत की काफी शोहरत सुन रहा हूँ। इन ग्रन्थों के चलते तुम्हारी गिनती हिन्दी के नौनिहालों में हो चली है। मैं उन दोनों ग्रन्थों को देखने को अत्यन्त उत्सुक हूँ। तुम्हें तो ये ग्रन्थ कब के ही भेज देने थे। शेष स्मृतियों के लिये तो तुम पहले से ही बचनबद्ध थे।. लेकिन रेणुका भी चिट्ठी के बाद ही गई थी।

मेरी दो पुस्तकें 'रसवन्ती' और 'द्वन्द्वगीत' प्रेस में हैं। अगस्त तक उनकी प्रतियाँ सेवा में भेज सकूँगा। आशा है तुम स्वस्थ और प्रसन्न हो।

स्मृति को ताजा करने के लिये यह पत्र जा रहा है। आशा है पत्र-व्यवहार फिर से पूर्ववत जारी हो जायगा।

विनीत
रामधारी सिंह दिनकर

श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा 'मुकुर'

[९७]

सिमरिया, मुंगेर
११-११-१९४१

प्रिय मुकुर,

तुमने जो कविताएं मुझे दिखलायी थीं उनमें छन्दोभंग और यतिभंग के दोष थे। ये दोष ऐसे होते हैं जिन्हें रचयिता को स्वयमेव दूर करना चाहिए। तुम जिस छन्द में कविता लिखना चाहते हो उस छन्द की कोई कविता कई बार पढ़ो और उसकी लय अपने कण्ठ में उतार लो। इसके बाद गा-गा कर कविता लिखो और अपनी हर पंक्ति की लय कंठाग्र छन्द की लय से मिलाते चलो। जहाँ छन्द की लय का साम्य न होगा वहाँ यतिभंग होगा। छन्द का अभ्यस्त कर्ण कह देगा कि अमुक स्थल पर यति भंग है।

खूब पढ़ो। कवि के लिए कोई भी विषय वर्जनीय नहीं है। वह यदि गणितज्ञ हो तो सोने में सुगन्ध होगी। आशा है, तुम प्रसन्न होगे।

तुम्हारा
दिनकर

[९८]

उदयाचल, पटना-१६
१५-७-१९७२

प्रियवर,

आपका कार्ड मिला। अरविन्द-शताब्दी और रजत-जयन्ती एक साथ। तरह-तरह के अनुरोध रोज आते हैं। मगर मैं तो अब थक चला। साहित्य का अगला बोझ आप लोग सँभालिए। शुभकामना के लिए एक पुराना पद भेज रहा हूँ।

स्वातंत्र्य जाति की लगन, व्यक्ति की धुन है,
बाहरी वस्तु यह नहीं, भीतरी गुण है,
नत हुए बिना जो अशनि घात सहती है,
स्वाधीन जगत में वही जाति रहती है।
वीरत्व छोड़ पर का मत चरण गहो रे,
जो पड़े आन खुद ही सब आग सहो रे।

आपका
दिनकर

डॉ० लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु'

[९९]

मीठापुर, पटना
९-१-४६

प्रिय सुधांशु जी !

मुझे आशा है कि मैं ३ फरवरी या २ को भी आपकी सेवा में पूर्णिया पहुँच जाऊँगा। अगर तब तक छुट्टी पर नहीं गया तो १ली को मैं बेगूसराय जाऊँगा। सुहृद को लिख दीजिये। वहाँ से वह मेरे साथ हो लेगा।

लेकिन आप पर दो इलजाम हैं।

(१) यह कि आपको मुझे आज्ञा देने में 'साहस' करना पड़ा है।

(क्या विवशता ही अहंकार है ?)

(२) यह कि आप पटने आये किन्तु, मुझे इसकी खबर नहीं मिली।

कुरुक्षेत्र तैयार है। सुनाने को साथ लाऊँगा अगर तब तक कापी प्रेस में नहीं चली गई।

शेष कुशल है।

आपका
दिनकर

[१००]

मुजफ्फरपुर
२०-४-५१

प्रिय सुधांशु जी !

आपको हरचन्द कहा कि आप बाबूसाहब से बात कीजिये। मगर, आप पर किसी के भी अनुरोध का कोई असर नहीं होता है। मैंने जो आशंका प्रकट की थी कि कृपानाथादि उपद्रव करेंगे वह सच निकली है। कल सुना कि अर्थविभाग मेरे वेतन पर नया प्रश्नचिह्न लगा रहा है। एक बार यह निर्णय हुआ था कि He will get what he is getting as Deputy Director of Publicity. अब उससे भी नीचे लाने की बात है। अगर यह सच है तो इसे मैं षडयंत्र कहता हूँ। दुःख यह है कि इस षडयंत्र का ज्ञान बाबूसाहब को हो नहीं पायेगा और आपको अगर हो भी गया तो जिस सामुद्रिक गंभीरता का आपने वरण किया है उसकी बाड़वाग्नि में वह आसानी

से पच जायगा। फिर भी सूचना दे देना मेरा काम है। कुछ करना हो तो पत्र पाते ही मोटर उठा कर खुद जाइये। टेलीफोन में मेरा विश्वास नहीं है। अन्यथा अपने ब्रह्मचर्य की रक्षा करते रहिये, क्योंकि मैं तो उसके चलते भी आपका प्रशंसक हूँ।

आपका
दिनकर

[१०१]

१८७, साउथ एवेन्यू, नई-दिल्ली
१८-९-५४

प्रिय सुधांशु जी !

दुमका में कोई कालेज खुल रहा है, जिसमें लेक्चरर के पद के लिए मेरा लड़का रामसेवक उम्मीदवार है।

दुमका आपके प्रभाव क्षेत्र में पड़ता है। कृपया जो कुछ भी कर सकते हैं, फौरन कर दीजिये। कौरव जी दिलचस्पी ले रहे हैं। कुछ आपको भी कर देना चाहिए। इन्टरव्यू की तिथि २६ सितंबर है।

शेष कुशल है।

आपका
दिनकर

[१०२]

११, केंनिग लेन, नई दिल्ली
१७-८-६१

प्रिय सुधांशु जी !

११ का पत्र मिला। मैं लेखकों की सूची, उनके विषय और अपना सुझाव भेज चुका हूँ। काका साहब से मिल कर भी निवेदन कर दिया है। शाही जी ने बताया होगा। आगे के लिए आज्ञा दीजिये।

आपका
दिनकर

[१०३] ११, केनिंग लेन, नई दिल्ली
४-६-६१

प्रिय सुधांशु जी,

शाही जी वाले लिफाफे के साथ जो दूसरा लिफाफा गिराया था वह निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गया। अचरज यह है कि शाही जी को मेरा पत्र नहीं मिला। जो बातें याद थीं उन्हें फिर से लिख कर भेज रहा हूँ। अपना लेख मैंने तैयार कर लिया है। वह साथ संलग्न है।

देश सेवा के काम से मरा जा रहा हूँ। देश-सेवा यानी नन-मोनीटरी काम जिसमें दिन रात लगा रहना पड़ रहा है।

डाक्टर हरिवंशराय बच्चन : स्वतन्त्र भारत की वैदेशिक नीति
१३, विलिंगटन क्रिसेन्ट
नई दिल्ली

श्री मथुरा प्रसाद मिश्र एम० पी० : समाजवादी समाज की संस्कृति
४७, साउथ एवेन्यू
नई दिल्ली

श्री रामधारी सिंह दिनकर : सामाजिकता के प्रकाश स्तंभ

आपका
दिनकर

[१०४] कुलपति निवास
छावनी कोठी, भागलपुर
१० जून १९६४

प्रिय सुधांशु जी,

सप्रेम वन्दे !

आगामी १ जुलाई बुधवार को मेरी कन्या का विवाह भागलपुर में होना निश्चित हुआ है। औपचारिक निमन्त्रण-पत्र तो कई दिन पूर्व ही भेज चुका हूँ। यह पत्र विशेष आग्रह के लिए लिख रहा हूँ। मेरी प्रबल इच्छा है कि १ जुलाई को आप घंटे भर के लिए भागलपुर पधारने की कृपा करें और वर तथा वधू को आशीर्वाद तथा मुझे गौरव प्रदान करें।

और सब कुशल है। आशा है, आप सपरिवार सानन्द और सुप्रसन्न हैं।

आपका
रामधारी सिंह 'दिनकर'

[१०५]

कुलपति
भागलपुर विश्वविद्यालय
५, अगस्त १९६४

प्रिय सुधांशु जी,

हिन्दी भाषी राज्यों का कन्वेंशन १५ अगस्त को दिल्ली में आपके सभापतित्व में होनेवाला है, इसकी सूचना श्री गोपाल प्रसाद व्यास ने दी है। मैं इस सम्मेलन में भाग नहीं ले सकूँगा, इसके लिए क्षमा-याचना करता हूँ।

यूनिवर्सिटी कमीशन की पिछली दो बैठकों में मैं नहीं जा सका; एक बार बेटी के विवाह के कारण; दूसरी बार इसलिए कि दिल्ली में हिन्दी-सलाहकार-समिति की बैठक थी। कमीशन का अगला अधिवेशन १४ से १६ अगस्त तक रांची में है। इस विश्वविद्यालय का प्राइवेट परीक्षार्थी विषयक रेगुलेशन अभी तक कमीशन से मंजूर नहीं हुआ है। अगर इस बैठक में वह पारित नहीं हुआ तो विश्वविद्यालय में संकट उपस्थित हो जायगा। अतएव, मुझे इस बैठक में उपस्थित रहना ही होगा।

हिन्दी भाषी राज्यों का सम्मेलन वैसे तो उपयोगी होना चाहिए, लेकिन, एक खतरा है जिसकी ओर मैं आपका ध्यान दिलाना उचित समझता हूँ। हिन्दी के प्रश्न पर हिन्दी भाषी राज्यों की एकता को इतना प्रखर नहीं होना चाहिए कि उससे हिन्दी-विरोधियों का मंच मजबूत हो। प्रस्तावों में तो ऐसी बातें निश्चित रूप से नहीं ही होंगी, किन्तु, वक्ता इस खतरे का ध्यान रखें तो वहुत अच्छा हो।

मैं ११ अगस्त को पटने आऊँगा। उस समय मिलने का विचार है।

आपका
दिनकर

[१०६]

२, साउथ एवेन्यू लेन, नई दिल्ली
२०-११-६५

प्रिय सुधांशु जी,

सप्रेम वन्दे !

मैं कलकत्ते से बड़ा ही क्लान्त लौटा हूँ। सभा-सम्मेलन अनुकूल नहीं पड़ता है। बेवकूफी और जोश में आकर पहले जाना स्वीकार कर लेता हूँ और पीछे पछताना पड़ता है।

२४ दिसम्बर को श्री चन्द्रहासन जी एरनाकुलम में कोई सेमिनार कर रहे हैं। मुझसे वचन वे अगस्त में ले गये थे। अब तारीख के बारे में उनका पत्र आया तो दिखायी यह देता है कि १७, १८, १९ दिसम्बर को कलकत्ता रहना कठिन हो सकता है। अगर १७ से २७ तक का कार्यक्रम बने तो कलकत्ता होकर मद्रास जाना हो सकता है। अन्यथा १७, १८, १९ को मैं कलकत्ता नहीं रह सकूँगा।

सेठ जी कहते थे कि उनके दाहिने हाथ और पाँव में कुछ कमजोरी आ गयी थी। इसका अर्थ यह है कि उन पर लकवे का हल्का-सा वार हुआ है। बात भी चिंता की हो गयी।

आपका
दिनकर

[१०७]

गृह मन्त्रालय भारत सरकार
नई दिल्ली १० दिसम्बर १९६५

प्रिय सुधांशु जी,

आज सुना है कि प्रभात जी नौकरी से मुक्त हो गये हैं। यह तो होना ही था, किन्तु घटना सिहरा देनेवाली है। प्रभात जी के अनेक बच्चे अभी बहुत छोटे हैं। कुछ न कुछ करना बहुत जरूरी है।

मैंने सुना है कि राष्ट्रभाषा परिषद के लिए अभी कोई संचालक चुना नहीं गया है। मेरा विचार यह बनता है कि सरकार प्रभात जी को एक टर्म के लिए संचालक बना दे। उनकी विद्या-बुद्धि और कार्य-क्षमता असंदिग्ध है। यही नहीं, वे बिना झंझट-बखेड़े के सब को साथ लेकर भी चल सकते हैं। उनका स्वभाव सुस्थिर और संतुलित है। सरकार को पछताना बिलकुल नहीं पड़ेगा। यदि प्रभात जी संचालक बना दिये जाँय तो इससे उनकी प्रगाढ़ साहित्य-सेवा की स्वीकृति होगी।

आशा है, आप उचित स्थल पर मेरे पत्र का हवाला देते हुए प्रस्ताव रख देने की कृपा करेंगे।

आपका
दिनकर

नोट—उस समय दिनकर जी भारत सरकार के गृह मन्त्रालय में हिन्दी सलाहकार थे और सुधांशु जी बिहार विधान-सभा के अध्यक्ष थे।

संपादक

[१०८]

२, साउथ एवेन्यू लेन, नई दिल्ली
५ फरवरी १९६६

प्रिय सुधांशु जी,

आपका ३ फरवरी का पत्र मिला। कल मैं भी चव्हाण साहब से मिला था। वे पूर्णिया अब २७ फरवरी को ही जाएंगे। पटने में आपसे उनकी बातें हुई थीं, उसका जिक्र भी कर रहे थे।

मेरा एक भतीजा (भोला) जो यहाँ रेडियो में काम करता है, बहुत दिनों से विवाह को टालता आ रहा था। अब उसने विवाह करना निश्चित किया है। उसका विवाह २८ फरवरी को पटने में होगा। अतएव. अब मैं पूर्णिया नहीं जा सकूँगा।

राज्य सभा में जाने का मेरा विचार पक्का है। अगर बिहार से सूची में नाम आवे तो टिकट मिल जाना संभव दिखायी देता है। अगर राज्य सभा में नहीं पहुँच सका तो वर्तमान पद पर कब तक टिकूँगा, कुछ पता नहीं है। अतएव, जो उचित समझिये, कीजिये।

आपका
दिनकर

[१०९]

२, साउथ एवेन्यू लेन, नई दिल्ली
१८ फरवरी १९६६

प्रिय सुधांशु जी,

आपका आठ तारीख का पत्र मिला। जीवन में अच्छे अवसर मिले और मैंने उनके अनुरूप काम भी किया। अब मुझमें कोई उमंग नहीं है। राज्य सभा में जाने से छह साल कट जायेंगे। बल्कि, मेरा ख्याल है, उसी बीच यहाँ निगमबोध घाट प्राप्त हो जायगा।

आपका
दिनकर

[११०]

५, सफदरजंग लेन, नयी दिल्ली
नवम्बर १७, १९६९

प्रिय सुधांशु जी,

आपका १४ नवम्बर का पत्र मिला। मैं २८ को काशी जाऊँगा, वहीं से १ दिसम्बर को पटना। ७ तक यहाँ लौट आऊँगा। ८ दिसम्बर को आप अवश्य आइये और मेरे गरीब-खाने को पवित्र कीजिये। प्रोग्राम पक्का हो, तो दोस्तों को कह दूँ कि आप आ रहे हैं।

कांग्रेस का हाल देख कर आँसू आते हैं। ध्रुवीकरण की बात थी, सो वह भी नहीं हुई। कामराज और श्यामनन्दन मिश्र तो समाजवादी ही हैं।

सम्मेलन की स्वर्ण-जयन्ती मन जाय तो अच्छा हो।

शेष कुशल है।

आपका
दिनकर

[१११]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
२४ नवम्बर १९६९

प्रिय सुधांशु जी,

मेरा पत्र मिला होगा। स्थिति ऐसी है कि कानपुर के डी० ए० वी० कालेज के लोगों ने धरना देकर ८ दिसम्बर की संध्या का समय मुझसे ले लिया है। अतएव अब मैं दिल्ली ९ के भोर पहुँचूँगा। आठ को आप बेखटके मेरे घर पहुँच जाइये। एक दिन के बाद मैं साथ हो जाऊँगा। यहाँ स्टाफ के लोग आपकी सेवा में रहेंगे।

कांग्रेस तो अब दो हो ही गयी। लगता है, इन्दिरा जी को भगवान ने स्वस्थ रखा तो वे कांग्रेस को जिन्दा कर देंगी।

शेष कुशल है। सुहृद यहाँ कल आया था। जैसे वह काक-स्नान करता है, वैसे ही अचानक दिल्ली से भाग भी गया।

आपका
दिनकर

श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर'

[११२]

कनूलाल रोड, पटना
३१-७-४८

प्रिय मधुर जी,

कृपा पत्र के लिये अनेक धन्यवाद। न जाने आपको मेरा पत्र क्यों नहीं मिला। कृपया "मधुर लहरी" की एक प्रति भिजवाइये या उसकी नकल ही भेज दीजिये।

इन दिनों बहुत ही व्यस्त हूँ। कुछ लिखा नहीं है कि भेज सकूँ।

बलिया आकर दर्शन कर सकूँ तो यह मेरा परम सौभाग्य होगा।

आपका
दिनकर

[११३]

कनूलाल रोड, पटना
१०-९-४८

प्रिय मधुर जी,

जय शंकर !

पत्र मिला। कविता की कापी भी मिली। मैं तो आपकी हाल की कविताओं पर दंग हूँ। सच पूछिये तो ये कवितायें मेरी अपनी मनोदशाओं को ही व्यंजित करती हैं और जी चाहता है कि काश, इनमें से कई के नीचे रचयिता की जगह मेरा नाम होता। इन्हें कई मित्रों को सुना चुका हूँ। कल शाम को पूरी कापी जयप्रकाश जी के यहाँ ले गया था और उन्हें तथा अन्य मित्रों को कोई पन्द्रह कविताएँ सुनायीं। सभी लोग बड़े ही चमत्कृत हुए। इधर बिहार में इनका अच्छा स्वागत होगा, ऐसी मेरी आशा है। इनके प्रकाशन की व्यवस्था कर रहा हूँ। अगर आपकी ओर से कोई शर्त हो तो निःसंकोच भाव से लिखें कि मैं कहीं पक्का इन्तजाम कर सकूँ।

संग्रह में से तीन-चार कविताएँ मैंने बिहार (मुँगेर) से प्रकाशित होने वाले श्री कृष्ण-अभिनन्दन-ग्रंथ में दे दी है। अगर आपका चित्र पाँच-सात दिनों में मिल जाता तो और भी अच्छा होता। ग्रन्थ-समिति की ओर से ४०) चालीस रुपये की क्षुद्र भेंट एक चेक के द्वारा भेजी जा रही है। इसे स्वीकार करेंगे।

शिवजन्म ने कोई पत्र इधर नहीं लिखा। उसकी चिट्ठी मिल गई है। कृपया उसे मेरी याद दिला देंगे।

आपका
रामधारी सिंह 'दिनकर'

श्री रायकृष्ण दास

[११४]

कनूलाल रोड, मीठापुर, पटना
१६-८-४६

मान्यवर राय साहब,

प्रणाम !

आपको, शायद, विदित हो चुका होगा कि मैं हाल ही में बनारस गया था और वहाँ से अस्वस्थ होकर तुरन्त लौट आया। आने पर १४ दिनों तक ज्वर-ग्रस्त रहा। अब अच्छा हूँ मगर बहुत कमजोर।

मैं सोमवार की शाम को बनारस पहुँचा, मंगल को खानगी कामों में व्यस्त रहा। बुध को आपकी सेवा में हाजिर होने वाला था कि ज्वर आ गया और मैं तुरन्त बिस्तर गोल करके पटने भगा। अतएव, क्षमा करेंगे कि बनारस जाकर भी आपके दर्शन नहीं कर सका। शेष कुशल है।

विनीत

दिनकर

[११५]

मीठापुर, पटना
१८-१२-४६

मान्यवर,

आवेदन पत्र आचार्य जी को दे दिया। उन्होंने अर्थमंत्री से भी बातें कर ली हैं। उन्होंने कहा कि आधी रकम की उम्मीद हम लोग उनसे कर सकते हैं। बाकी प्रान्त की जनता दे। यह भी अच्छा ही हुआ। अगर गुप्त जी और आप आइये तो दरभंगा से कुछ लिया जा सकता है। लेकिन वहाँ मेरा कोई असर नहीं है। यों शामिल बाजा की तरह से मैं भी साथ चलूँगा। बात को और पक्की करने के लिए अच्छा होगा कि गुप्तजी एक पत्र आचार्य जी के पास भेज दें। बहुत काम करेगा। अगर आप जुटे रहियेगा तो सिद्धि कहीं गई नहीं है।

सम्मति के लिए कोटिशः धन्यवाद ! योगी का अंक फिर से जा रहा है। और दक्षिणा भी।

आपका

दिनकर

[११६]

कनूलाल रोड, पटना
३१-१२-४६

मान्यवर,

वर्ष का अन्तिम पत्र आपके नाम जा रहा है। आचार्य जी को मैथिलीशरण जी की चिट्ठी मिल गई है। उन्होंने उत्तर अभी नहीं दिया है। देंगे, ऐसा बोलते थे। मैंने अपनी शक्ति काफी लगायी, मगर, मार्च के अन्दर वसूल कर लेना मेरी ताकत के बाहर मालूम हो रहा है। क्या राय व्रजराजकृष्ण जी थोड़ी-सी मदद नहीं करेंगे? आधा का वादा अभी तक कायम है।

केशव जी के लिए परिश्रम तो आपको ही करना है। यों कृष्णानन्द जी ने भी अभी तक कुछ नहीं भेजा है।

प्रणाम।

आपका
दिनकर

[११७]

कनूलाल रोड, मीठापुर, पटना
२२-१-४७

मान्यवर!

एक काम से कष्ट दे रहा हूँ। उर्दू में कोई शब्द 'बामी' या 'बावी' है जिसका अर्थ होता है बिल या विवर। किन्तु, हिन्दी-कोषों में यह शब्द नहीं मिलता। मुझे इसका साधुत्व चाहिए। अगर आप किसी कोष में इसे पा सकें तो लौटती डाक से सूचित करें। हिन्दी और उर्दू, दोनों ही कोष देखने होंगे।

आपका पत्र राय व्रजराज जी को मिल गया। वे कहते थे कि आपको उन्होंने बुलाया था, मगर, आप नहीं आये। मुझसे वे अधिक बातें करने को मुखरित नहीं दीखे इसलिए मैंने आग्रह नहीं किया। अब आप स्वयं एक पत्र आचार्य जी को लिख दीजिये। कुछ न कुछ असर पड़ेगा ही।

'प्रताप' में अब तक आलोचना नहीं निकली है।

निराला अभिनन्दन समारोह का क्या हाल है? मुझे शायद समय नहीं मिलेगा।

आपका
दिनकर

[११८]

पटना
२१-१०-४९

मान्यवर।

कृपा पत्र मिला। मैंने कलकत्ते से वापस आते ही बेनीपुरी जी से बात-चीत की थी। किन्तु, यहाँ की परिस्थिति के कारण उन्हें हिलने-डुलने का साहस नहीं हो रहा है। और इस काम में मैं असमर्थ हूँ। आप बेनीपुरी जी को ही लिखें। मैं उन्हें फिर साहस दिलाऊँगा।

शेष कुशल है। कुरुक्षेत्र पर सभी की दृष्टि नहीं ही पड़ी आखिर।

आपका
दिनकर

[११९]

न्यूक्वार्टर्स पटना
१४-११-४९

मान्यवर राय साहब जी,

यह पत्र मैं रोग-शय्या से लिखवा रहा हूँ। ५-६ दिनों से ज्वर आ रहा है। अभी तक पथ्य नहीं मिला है। आने लायक होता तो. स्वयं सेवा में उपस्थित होने वाला था। असमर्थता के कारण पत्र लिख रहा हूँ। कृपया सहायता कीजिए।

रामनगर-राज्य के विलय होने के बाद, महाराज के पर्सनल स्टाफ के लोगों को थोड़ी बहुत जमीन, बन्दोवस्ती में दी जा रही है। महाराज के पर्सनल स्टाफ में मेरे भी एक सम्बन्धी, जिनका नाम श्री पृथ्वीनारायण ठाकुर हैं, रामनगर किला के अन्दर, काम करते हैं। उन्होंने भी जमीन की बन्दोबस्ती के लिए दरखास्त दी है तथा और लोगों की तरह उनका भी कुछ हक पहुँचता है। किसी कारण से पृथ्वीनारायण के आवेदन पत्र पर उचित विचार नहीं किया जा रहा है। अगर सबको जमीन मिले और पृथ्वीनारायण को जमीन न मिले तो, यह अन्याय होगा। अतएव, मैं चाहता हूँ कि आप श्री बी० एम० सेठ को कहकर पृथ्वीनारायण का यह काम करा दीजिए।

यह उपकार सीधे मुझ पर होगा।

आपका
दिनकर

[१२०]

२४ ए, हार्डिंग रोड, पटना
२१-३-५०

मान्यवर,

प्रणाम !

पंत जी की नियुक्ति के बाद मैथिलीशरण जी ने रेडियो को सहयोग देना स्वीकार कर लिया है। हम लोगों ने मैथिलीशरण जी का अनुसरण किया था और मैथिलीशरण जी ने आप लोगों (आप, नवीन जी, वियोगी हरिजी आदि) के नेतृत्व को पुष्ट करने के लिए बहिष्कार की घोषणा की थी। मैं जानना चाहता हूँ कि आप मैथिलीशरण जी की संशोधित नीति का समर्थन करते हैं या नहीं। जो स्थिति उत्पन्न हो गयी है उसे साफ करने के लिए आप को कोई वक्तव्य देना चाहिए। अगर सो नहीं करें तो मुझे लिख दीजिये कि आप लोग इस विवाद से तटस्थ हो गये हैं। हिन्दी-संसार में बड़ा भ्रम फैल रहा है। अतएव, मौन रहना ठीक नहीं होगा।

मैं उत्तर की राह देख रहा हूँ।

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

[१२१]

२४ए, हार्डिंग रोड, पटना
१३-५-५०

मान्यवर,

संसद से १००१ रु० का जो चेक मिला था उसे 'भारत कला-भवन' के नाम इन्डोर्स करके साथ भेज रहा हूँ।

कृपया पहुँच की स्वीकृति लिखें।

आपका
दिनकर

[१२२]

बिहार सेक्रेटेरियट, रांची
२४-६-५०

मान्यवर,

प्रणाम !

पहले ही प्रार्थना करता हूँ कि इस पत्र का उत्तर आप तुरन्त दीजिए और पटना के पते पर दीजिये। पता है २४ए, हार्डिंग रोड, पटना।

पन्त जी की इच्छा थी कि मैं पटना रेडियो में डिपुटी सुपरवाइजर का पद स्वीकार कर लूँ। मैंने कहा था कि इस पर विचार करना तभी संभव

होगा जब वहिष्कार की गुत्थी सुलझ जाय। इस पर कुछ बातें आरम्भ हुईं और प्रायः एक समझौता भी हुआ, किन्तु, उसकी स्वीकृति सरकार से आये बिना वहिष्कार नहीं टूटेगा। बिहार-सम्मेलन प्रतीक्षा में है। स्थायी-समिति के दो-दो अधिवेशन हो चुके, किन्तु, सरकार का स्पष्टीकरण अभी तक नहीं आ पाया है। इससे मैं समझता हूँ कि पन्त जी और राय साहब, दोनों ही व्यक्ति बाधाओं पर विजय नहीं पा रहे हैं।

इस बीच, कल मुझे पता चला है कि सरकार प्रायः यह निर्णय कर चुकी है कि मैं जी० वी० कालेज, मुजफ्फरपुर में हिन्दी के सीनियर प्रोफेसर के पद पर नियुक्त किया जाऊँ। यह पद स्थायी है और शिक्षा-विभाग में अभी इससे अधिक ऊँचे पद की आशा कर भी नहीं सकता। फिर इस पद के लिए मैं मार्च में ही लिखित सहमति भी दे चुका हूँ।

पन्त जी जिस पद के लिए कह रहे हैं वह तो एकदम अस्थायी है और अगर वह छायारूप में भी स्टेशन-डायरेक्टर के पद के अधीन हुआ तो मैं उसे कतई स्वीकार नहीं कर सकता। यों रेडियोवाले मुझे ले जाना चाहें तो मैं दो ही रूप में जा सकता हूँ एक तो यह कि मैं किसी ऐसे पद पर लिया जाऊँ जो अधिकार की दृष्टि से स्टेशन-डायरेक्टर के पद से नीचे नहीं हो; दूसरे, उस पद पर जिस पर श्रीनारायण जी थे और जो अब रिक्त है। मगर ये बातें मेरी ही बातें हैं। इनकी चर्चा मैं पन्त जी से करूँ तो उसका कोई परिणाम नहीं होगा।

अतएव, आप बतलाइये कि मैं क्या करूँ? कालेज का यह सम्मानपूर्ण ऑफर फिर दुहरा कर नहीं आयेगा। मैं इसे स्वीकार कर लेने के पक्ष में हूँ।

उत्तर की प्रतीक्षा में।

आपका

दिनकर

[१२३]

२४ए, हार्डिंग रोड, पटना

२६-६-५०

मान्यवर,

सादर वन्दे!

रांची से एक पत्र भेजा है, वह मिला होगा। आशा है, आपका उत्तर आ रहा होगा।

एक विशेष कार्य से कष्ट दे रहा हूँ। मुझे और महारथी जी को मिलकर बिहार में काम करनेवाले चित्रकारों के सम्बन्ध में एक निबन्ध

लिखना है। आपकी पुस्तक तो यहाँ उपलब्ध है, किन्तु, श्रीमती आचर वाली पुस्तक यहाँ उपलब्ध नहीं है। उसे मैंने आपके वासस्थान पर देखा था। बड़ी कृपा हो अगर उस पुस्तक को, सिर्फ १५ दिनों के लिए आप मेरे पास रजिस्टर्ड पार्सल से भेज दें। मैं दायित्व के साथ वादा करता हूँ कि काम समाप्त होते ही मैं पुस्तक आपको रजिस्टर्ड पार्सल से ही वापस कर दूँगा।

अगर आपने पुस्तक नहीं भेजी या भेजने में देर कर दी तो लेख कमजोर पड़ जायेगा। यह लेख मुझे १० जुलाई तक निश्चित रूप से तैयार कर देना है।

आपका

रामधारी सिंह 'दिनकर'

[१२४]

जनसम्पर्क-विभाग पटना,

४-८-५०

मान्यवर,

सादर वन्दे !

अभी मैं यहीं हूँ। कॉलिज आने की अनुमति मिलने में, शायद, १०, २० दिन और लगेंगे। वार्षिकांक की छपाई के सिलसिले में कलकत्ता गया हुआ था। वहाँ से आज ही वापस आया हूँ। महारथी जी का लेख कल छप गया। कच्ची हालत में ही कुछ फर्मे उठा लाया था, उसकी एक कापी भेज रहा हूँ। उस लेख को आप पढ़ जाने की कृपा करेंगे। अगर कोई भयंकर भूल रह गई हो तो मुझे सूचना दे देंगे।

मिसेज आर्चर वाली किताब भी साथ जा रही है।

शेष कुशल है। आशा है, आप स्वस्थ और प्रसन्न होंगे। राजा भैया को मेरा सप्रेम स्मरण।

आपका

दिनकर

[१२५]

आर्यकुमार रोड, पटना-४

८-२-५१

मान्यवर,

आपका कुपित पत्र मिला। पुस्तक भेजने को मैंने प्रकाशक को लिखा था। तब से मैं दिल्ली गया ही नहीं। ऐसी अवस्था में मार्जन का काम तो काशी आने पर ही होगा। : आप व्यर्थ ही दुःख मान गये। प्रणाम।

आपका

दिनकर

[१२६]

मुजफ्फरपुर
३-६-५१

मान्यवर राय साहब !

यह लड़का मेरा श्यालक-पुत्र है। इसने अभी-अभी रामनगर स्कूल से मैट्रिक पास किया है और अब इसे आइ० ए० में नाम लिखवाना है। इसका नाम कॉलेज में लिख लिया जाय, इसे फुल फ्रीशिप मिले और कोई सहायक वृत्ति भी, इसलिए आपको कष्ट दे रहा हूँ। फुल फ्रीशिप तो अवश्यमेव मिलना चाहिए। इसके लिए आप पूरा प्रयत्न करने की कृपा करेंगे। इसे आप जब जहाँ कहेंगे, वहाँ जाकर आपसे मिल लिया करेगा।

कवचकुण्डल-दान और कर्ण-कुन्ती-सवाद, ये दो नये सर्ग इस छुट्टी में मैंने लिख डाले। आगे दो सर्ग और होंगे। काव्य का नामकरण मैंने "रश्मिरथी" किया है।

शेष कुशल है।

आपका
दिनकर

[१२७]

नया टोला पटना-४
३-९-५२

मान्यवर, प्रणाम।

मैं कल आया। हालत यह है कि पटने से हम लोग 'अवन्तिका' नामक एक पत्रिका निकालने जा रहे हैं। उसके प्रथमांक के लिए एक निबन्ध (किसी प्रकार का) शीघ्र भेज दें। १३ सितम्बर तक निबन्ध हमें अवश्य मिल जाना चाहिए।

आपका
दिनकर

[१२८]

आर्यकुमार रोड, पटना-३
२६-३-५६

मान्यवर राय साहब, प्रणाम !

'संस्कृति के चार अध्याय' की प्रतियाँ आपको और वासुदेवशरण जी को भिजवा दी थीं। मिली होगी। कृपया उसे देख जायें और मुझे बतलायें कि पुस्तक आपको कैसी लगी। आपकी राय जानने को बहुत उत्सुक हूँ।

मैं इन दिन दिनों ईषत् रुग्ण हूँ। इनसुलीन चल रही है।

आपका
दिनकर

[१२९]

पटना-४

२८-६-५७

श्रीमान्,

मैं कल आपके यहाँ से बहुत ही व्यथित होकर लौटा हूँ। मारे दुःख के ट्रेन में तनिक भी नींद नहीं आयी। सारी रात यही सोचता रहा कि अत्यन्त पारिवारिक पत्र को इस प्रकार दबा लेना कहाँ की सज्जनता है? मगर; सज्जनता वह हो या नहीं; बड़प्पन अवश्य है अन्यथा इतिहास में आप अद्भुत संग्रहकर्त्ता के रूप में विख्यात कैसे होंगे? और मेरी भावना का आदर भी आप क्यों करें? मैं किस योग्य हूँ।

मैंने सात-आठ बार आपसे कहा कि पत्र आप मुझे लौटा दें। किन्तु, इस देश में कौन ऐसा बड़ा आदमी है जो छोटों की भाषा समझ सके? एक बार फिर अनुरोध करता हूँ कि पत्र आप मुझे डाक से भेज दें।

आपका

दिनकर

[१३०]

मुजफ्फरपुर (बिहार)

मान्यवर प्रणाम,

२३-१२-५८

मेरा कार्यक्रम यह है कि कल २४ की रात में यहाँ से प्रस्थान करूँगा। २६ को मुंगेर में साहित्य परिषद् की बैठक में भाग लूँगा। तब विवाह में जो बाधा आ गई है उससे भिड़ूँगा। अगर बाधा तुरंत समाप्त हो गई तो २९ तारीख को ग्वालियर के लिए प्रस्थान करूँगा। सुयोग रहने से चिरगाँव में एक दिन रुक सकता हूँ। अन्यथा फौरन वापस हूँगा। काशी रुक सकूँगा या नहीं, यह भी सुयोग पर ही निर्भर करता है। आपको पत्र लिख दूँगा।

आपका

दिनकर

श्री कृष्णानन्द जी को मेरी क्षमा याचना पहुँचा देंगे।

[१३१]

पटना

मान्यवर-प्रणाम,

२२-९-५९

पत्रवाहक पं० श्रुतिदेवशास्त्री पालिसाहित्याचार्य, व्याकरणशास्त्री तथा पंजाब के शास्त्री हैं। वैसे आप रहने वाले बिहार के हैं और पिछले आठ वर्ष से यहाँ बिहार-राष्ट्र-भाषा-परिषद् में अनुसंधान का कार्य कर रहे हैं।

वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय में पालिसाहित्य के लिए प्राध्यापक नियुक्त किया जाने वाला है। शास्त्री जी उस पद के लिए उम्मीदवार हैं। ये मेरे बहुत अपने आदमी हैं। बड़ी कृपा हो यदि इनके लिए कुछ कर सकें।

राष्ट्रकवि ४-१० को यहाँ पधार रहे हैं।

शेष कुशल है।

आपका
दिनकर

[१३२]

पटना
१८-७-६२

मान्यवर राय साहब,

आपका कृपा पत्र मिला। कल मैं दिल्ली जा रहा हूँ।

दिल्ली में दद्दा ने लक्ष्मी चन्द्र जी का एक कागज दिया था। मैंने उसे उसी दिन जगजीवन बाबू को भेज दिया। यह भी लिख दिया कि राष्ट्रकवि की सिफारिश है। उसके बाद दद्दा का एक पत्र लक्ष्मीचन्द्र जी के पत्र के साथ यहाँ भी मिला। उसका उत्तर मैंने नहीं दिया है।

आवश्यक समझें तो जमीन का विवरण टाइप करके दिल्ली भिजवा दें। मैं फिर जगजीवन बाबू को भेज दूँगा।

आपका
दिनकर

[१३३]

भारत सरकार गृह मन्त्रालय
११ अगस्त, १९६५

मान्यवर राय साहब,

पटने में डाक्टरी जाँच से पता चला कि कल-काँटा सब ठीक है। कल यहाँ पहुँचा हूँ। परसों मोगल सराय में सुधाकर जी सदलबल आये थे। उनके हाथ कई किताबों का एक सेट भेज दिया है। मिला होगा। रानी वहू मुझे छोड़ने को स्टेशन तक आयीं, इससे मैं अभिभूत हो गया। उन्हें मेरा आशीर्वाद कहिये।

१ अक्तूबर के आस-पास मेरे दामाद श्री शिवसागर मिश्र जी दिल्ली रेडियो में चीफ प्रोड्यूसर हैं कलकत्ते की ओर से काशी पहुँचेंगे। वे सपत्नीक होंगे और आपके साथ ठहरेंगे। वे लम्बे दौरे पर निकल रहे हैं। रास्ते में आपको पत्र भी भेजेंगे। अग्रिम सूचना के लिए मैं लिख रहा हूँ।

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

डॉ० आनन्द कृष्ण

[१३४]

पटना
२१-८-४६

प्रिय राजा भैया,

शुभाशीष।

सकुशल पहुँचा। सरकार को यह सूचना दे दीजियेगा। आशा है वह लखनऊ से लौटकर आ गए होंगे। उनकी सामग्री जमा कर रहा हूँ। शीघ्र ही भेजूँगा।

आप तस्वीरों का अलबम भेजते हैं या नहीं? क्या मेरा कोई मलमल का कुर्ता भी वहाँ छूट गया है? अगर मिले तो किसी सेवक को दे दीजिएगा।

शेष कुशल है।

आपका
रामधारी सिंह 'दिनकर'

[१३५]

पटना
१४-११-४६

प्रिय राजा,

रात अज्ञेय जी की कृपा से मैं स्टेशन पहुँच गया और मुझे ठीक समय पर गाड़ी भी मिल गई। कुशल कुशल पटना आ गया।

यहाँ आने पर देखा कि कई सम्बन्धी डेरे पर अधिकार किये बैठे हैं। कोई रोगी लेकर आया है, कोई शुद्ध भोगी बनकर। घर से बुलाहट हुई है। कोई काम है।

लेकिन ये तो हुईं मेरी व्यस्तताएँ। मगर असली किस्सा यह है कि गुप्त जी वाली कविता और मेरा लेख यहाँ अब तक नहीं आया है। न जाने सभा के डिस्पैचर ने उसे डाक में छोड़ा या नहीं। मुझे पूरा सन्देह था कि गड़बड़ी होकर रहेगी और वह हो गई-सी दीखती है। राय साहब से पूछो कि माजरा क्या है। अगर दोनों चीजें वहीं पड़ी हों तो पेश्तर पहली डाक से उन्हें रवाना करो। पता होगा-योगी-संपादक, पटना। रजिस्ट्री से भिजवाओ। उत्तर तो तुरत लौटती डाक से दो।

गुप्त जी और राय साहब को प्रणाम।

तुम्हारा
दिनकर

[१३६]

पटना

१८-१२-४६

प्रिय राजा,

मुझे यह जानकर दुःख हुआ कि तुम बीमार रहे। आशा है अब खूब अच्छे हो गये हो।

केशव जी और कृष्णानन्द जी की सम्मतियाँ अभी तक नहीं आईं। आठ दिनों के भीतर आ जानी चाहिए। ताकीदा जानिये।

तुम्हारा
दिनकर

[१३७]

पटना

२१-१०-४७

प्रिय भाई आनन्द जी,

सरकार को एक पत्र लिखा है कि योगी के दीपावली अंक के लिए कोई लेख भेज दें। अगर वे लेख भेज रहे हों तो आप उसके साथ ही सरकार का एक फोटो भी अवश्य भेज दें।

आपका
दिनकर

[१३८]

५-३-५३

प्रिय राजा,

तुम्हारा पत्र मिला। चेक भी। यह देखकर अचरज हुआ कि तुम सूद में विश्वास करते हो।

सरकार से कह देना कि कल शाम एक कमेटी में अशफाक साहब से भेंट हुई और मैंने कला-भवन के बारे में उन्हें काफी कह-सुन दिया है। कहते थे, "मैं जा रहा हूँ। अपने-भर पूरा जोर लगाऊँगा।"

बनारस आये बिना काम नहीं चलेगा क्योंकि विवाह के सिलसिले में बरतन आदि खरीदने होंगे। मगर अब मई में ही आऊँगा।

तुम्हारा
दिनकर

डॉ० रामकुमार वर्मा

[१३९]

कनूलाल रोड, पटना
२६-१२-४६

प्रिय डाक्टर साहब,

छुट्टी है। कृपया पुस्तकों पर अपनी सम्मति तुरत भेजिये। अब अकाज हो रहा है।

आपका
दिनकर

[१४०]

Kanulal Road, Patna
5-1-47

My dear Doctor !

Please send your opinion on Kurukshetra by the return of Post. You have already taken too much of time.

Pranam.

Yours
Dinkar

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

[१४१]

पटना
४-५-५०

मान्यवर, प्रणाम।

वेनीपुरी और मैं ७ ता० रविवार के प्रातःकाल पंजाब मेल से प्रस्थान करेंगे। आशा है आप बनारस में साथ हो जायेंगे। अब सिर्फ पूरियों से भी काम चल जायगा। और साधु तो अन-बिलोवा भी खा सकता है। चेक मेरे ही साथ चला आया है। उसे अलग भेज दूँगा।

शेष कुशल है।

आपका
दिनकर

आचार्य कपिल

[१४२]

लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर
२६-१-५१

प्रिय कपिल जी,

हम लोगों के परम प्रिय विद्वान श्री कामेश्वर शर्मा (राष्ट्रवाणी) का एक लेख कहीं निकला है जिसकी कतरन आप की सूचना के लिए भेज रहा हूँ। जरा गौर से देख जाइये।

कामेश्वर फूलें, फलें और बढ़ें, यह मेरी कामना पहले भी थी और अब भी है। उन्हें मैं यह भी छूट देता हूँ कि वे दिनकर काव्य के विरोधी के रूप में अपना विकास करें और उन्हें बुरा न लगे तो मेरे साथ एक थाली में बैठकर भोजन भी करें। मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी। किन्तु, उन्हें और प्रत्येक लेखक को चाहिये कि वस्तुस्थिति को देखकर बोले और लिखे जिससे किसी की पद मर्यादा को अनुचित जर्ब नहीं पहुँचे। पटने में एक साहित्यिक षडयंत्र चल रहा है जिसका केन्द्र यह कल्पित बात है कि दिनकर बिहार के सभी साहित्यिकों का बाधक है और कुछ लोगों के खिलाफ़ तो उसकी फौज खड़ी रहती है। जब उमा मुझ पर आक्रमण करें, वेनीपुरी मुझ पर चोट करें, प्रदीप मेरे विरुद्ध लेख छापे और कामेश्वर मेरे विरुद्ध लिखें तब लोग न जाने किसे मेरी फौज का आदमी समझते हैं? मुझे लगता है, कामेश्वर जी इस भ्रम में हैं कि दिनकर का विरोध करने से निष्पक्ष आलोचक के रूप में वे पूजे जायेंगे। सो इसे तो मैं घोर भ्रम समझता हूँ और जिस निर्णय पर मैं १५ वर्षों के वाद पहुँचा हूँ उस पर वे भी कभी न कभी आयेंगे ही। प्रयत्नपूर्वक उनसे मिलकर उन्हें आप समझा देंगे कि प्रभात जी महाराज के साथ एक साँस में वे मेरा नाम न लें। कुरुक्षेत्र के विरुद्ध वे चाहें तो एक लेखमाला आरम्भ कर दें जिसके लिए स्थान मैं राष्ट्रवाणी में ही दिलवा दूँगा। मगर, ईश्वर के नाम पर वे भाषा में शिष्टता लायें और कोई ऐसा काम न करें जिससे उन्हें बाद को चलकर लज्जित होना पड़े।

उन्हें मैंने आत्मीय समझा है, इसीलिए ये बातें लिख रहा हूँ। प्रेमी भी परस्पर एक दूसरे की आलोचना कर सकते हैं, किन्तु, ऐसी भाषा में नहीं जिससे जग हंसाई हो। मैंने जीवन-भर में किसी आलोचक के लिए कोई पत्र नहीं लिखा था। यह पहला पत्र है। साहित्य में विचार-स्वातंत्र्य रहना चाहिए, मगर, गाली-गलौज या मुँह-चिढ़ाना विचार स्वातंत्र्य नहीं है। खैर, कामेश्वर अभी-अभी अंडा तोड़ कर निकला है इसलिए बहकना तो स्वाभाविक है।

और जब सभी लोग अपने विकास के लिए दिनकर को लतियाना आवश्यक मानते हैं तो वही क्यों बाज आए ? आखिर, पटने के साहित्यिकों में निर्भीक कहलाने का गौरव तो उसे मिलेगा ही।

शेष कुशल है।

आलोचक महाराज इन दिनों घर पर हैं। वे सम्भवतः ३ या ४ को मुंगेर आयेंगे और ५ फरवरी को पटना।

आपका

दिनकर

[१४३]

मुजफ्फरपुर

२५-४-५१

प्रिय कपिल जी,

आपका पत्र मिला। प्राची का अंक भी यथासमय आ गया था। प्राची के विषय में क्या कहूँ ? मुझे तनिक भी आशा नहीं थी कि मुंगेर से आप इतनी अच्छी सामग्री प्रस्तुत कर सकेंगे। प्राची में आपने जिस सुरुचि का परिचय दिया है उससे मुझे सात्विक आनन्द हुआ। अब मैं आग्रह करूँगा कि इसका दिनों-दिन विकास कीजिए।

एक-दो बातें और हैं जिनकी ओर निर्देश कर देना उचित समझता हूँ। आवरण पर से आप मिट्टी के छोटे माधो को तो हटा ही दें। भीतर संकलन और संपादन में जो गांभीर्य है उसके अनुरूप ऊपर का आवरण सादा ही रहना चाहिए अथवा हलकी रेखाओं में कोई छोटा स्केच रहे तो ठीक है। आपका उद्देश्य कदाचित यह है कि शिक्षण-संस्थाओं में जो प्रश्न और समस्याएँ हैं, डट कर उन्हीं पर प्रकाश डाला जाय। यह एक उपयोगी काम है। मगर, स्टैंडर्ड को जरा ऊपर ले जाइये तथा इस प्रकार की समस्याओं पर भी लेख लिखवाइये जैसे :—

१) छायावाद का जन्म कब हुआ तथा उसके आदि कवि कौन हैं ?

२) नई कविता हिन्दी की परम्परा में आई है अथवा आकस्मिक रूप से ?

३) हिन्दी-गद्य के क्षेत्र में उस नेतृत्व को प्रधानता मिलनी चाहिए जो प्र० ना० मि०, बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुन्द गुप्त तथा गुलेरी जी के द्वारा दिया गया अथवा उसे जो रामचन्द्र शुक्ल एवं प्रसाद जी की देन है ?

४) यह बात कहाँ तक ठीक है कि उर्दू में से फारसी-अरबी शब्दों को हटा कर हिन्दी बना ली गई है ?

५) रसवादी आलोचना पद्धति में क्या संशोधन किया जाय कि वह आधुनिक साहित्य की व्याख्या में सफल हो ?

६) रीति कालीन साहित्य का मूल्यांकन नई समीक्षा की कसौटी पर।
७) भाषा सम्बन्धी दुष्प्रयोगों पर रोक लगाने के लिए आन्दोलन।

ये कुछ मोटे विषय हैं जो याद आ रहे हैं। इनके समानान्तर और भी समस्याएँ होंगी। सोचने पर आप खुद एक अम्बार लगा दीजियेगा।

मैं तो १२ मई तक कुछ नहीं भेजूँगा। हाँ उसके बाद कुछ न कुछ अवश्य भेजूँगा, खातिर जमा रखिये। आपके और काम भी इसी छुट्टी में होंगे। छुट्टियों में आप कहाँ रहेंगे?

आगामी ३ मई को हमारे यहाँ परिषद का वार्षिकोत्सव है। हजारी प्रसाद जी और द्विज जी आ रहे हैं। निबन्ध-प्रतियोगिता और वाद-विवाद प्रतियोगिता २ मई को है। आपके यहाँ से भी निबन्ध और वक्ता आने चाहिए। निबन्ध का विषय है, 'हिन्दी में नई समीक्षा का जन्म और विकास' वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय है, "State Vs Civil liberty," या ऐसा ही और कुछ।

शेष कुशल है।

आपका
दिनकर

[१४४]

मुजफ्फरपुर
३१-८-५१

प्रियवर,

पत्र मिला और पुस्तक की प्रति भी। देवेन्द्र और विश्वनाथ जी के लेख काफी परिश्रम से लिखे गये हैं। यों, सारी पुस्तक बहुत सुन्दर उतरी है। जिसे दिनकर-काव्य का अध्ययन नहीं करना है, पुस्तक उसको भी रोचक लगेगी। आज ही शिवबालक की किताब भी कॉलेज में एक अध्यापक के हाथ में देखी है। उसका प्रकाशन प्रयाग से हुआ है। शिवचन्द्र और मुरलीधर की पुस्तकें भी अगले मास में निकल जायेंगी। मगर मुँगेर की बात ही कुछ और है। नरसिंह बाबू का भी पत्र मिल गया है। पास में जो सामग्रियाँ थीं उन्हें झाड़-पोंछ कर दो संग्रहों में जमा कर दिया है— 'इतिहास के आँसू' और 'धूप और धुआँ' में। दोनों पुस्तकें अजन्ता से निकल रही हैं। आगे कोई चीज तैयार होगी तो विचार करूँगा।

पटने के दोस्तों की कुछ न पूछिये। शुकदेव इसलिए नाराज हैं कि उनकी किताब के पक्ष में वोट नहीं दिया (जिसकी जरूरत भी नहीं थी)। बेनीपुरी इसलिए नाराज हैं कि उन्हें किसी ने कह दिया है कि 'चुन्नू-मुन्नू' से उनका नाम इसलिए हटा है कि भीतर-भीतर मैं ही उसका सम्पादन कर रहा

हूँ और तीन सौ रुपये भी मैं ही ले रहा हूँ। शिवचन्द्र शर्मा इसलिए दुःखी हैं कि उन्हें शिव जी से ही यह पता चला कि मेरे ही कारण वे हंसकुमार के बदले पुरस्कृत नहीं किये जा सके। अगर शिव जी से ही उन्हें यह भ्रमपूर्ण बात मालूम हुई हो तो हमलोगों के लिए मर जाने के सिवा और क्या उपाय है? मैं जितना ही इन चीजों से भागता हूँ, ये लोग उतना ही हैरान करते हैं। असल में, मेरे कोई मददगार नहीं हैं। इसलिए, सबको मेरे बारे में कुछ न कुछ सुनने का मौका लग जाता है। आप निश्चिन्त रहें। हाँ, व्यर्थ ही हिलडुल कर आनन्द लूटना चाहें तो आप भी उसी राह जा सकते हैं। किन्तु यह शायद नहीं होगा। इस सारी परिस्थिति का लाभ उठा रहे हैं वे लोग जो ऐसी परिस्थिति की खोज में थे। मुझसे अकारण द्वेष करने वाले तो एक दो नहीं, अनेक हैं। हर कवि अंडा फोड़ते ही मुझी पर नजर डालता है। यह दुःख की बात है।

अभी-अभी हुंकार आया है। उसमें प्रभात जी ने बड़ी ऊलजलूल बातें लिखी हैं। अब आपके शत्रु और भी बढ़ेंगे। पीठ ताने रहिये। निराला जी ने कहा है न,—

'यह हिन्दी का स्नेहोपहार।"

सो ये सारे उपहार लेने पड़ेंगे। कोई गति नहीं है। बन्धुओं की दलील है कि गुट में रहो नहीं तो चैन से लिखने नहीं देंगे। दुर्भाग्यवश, दो तीन आदमी भी ऐसे नहीं है जिन्हें मैं अपनी गुट का कह सकूँ। अगर मेरी कोई गुट है तो उसका एकमात्र सदस्य मैं ही हूँ।

प्राची के लिए कुछ-न-कुछ अवश्य भेजूँगा। एक चीज तो जा रही है।

आपका

दिनकर

[१४५]

मुजफ्फरपुर

२०-३-५२

प्रिय भाई,

मैं नौकरी से अलग हो चुका हूँ। अब २७ मार्च को चुनाव होने वाला है। मेरे हिस्से में १५ एम० एल० ए० मुंगेर के ही हैं जिनमें से निम्नलिखित लोगों से मेरी जान-पहचान नहीं है। आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आप इन सज्जनों को २५ मार्च को पटने भिजवाने की व्यवस्था करें। इस काम के लिए मेम्बरों को टी० ए० नहीं मिलेगा। इसलिए, वे टाल-मटूल कर सकते हैं। ऐसी अवस्था में जो उचित समझिये कीजिए। कर्ज मैं फौरन चुका दूँगा।

(१) श्री योगेन्द्र महतो, परिया (बरियारपुर) (२) श्री भागवत प्रसाद, सुन्दरपुर (बाहाचौकी) (३) श्री दुर्गा मंडल, चैनबरियां (दिघी) (४) श्री गुरु चमार, रविदास ग्राम (झाझा) (५) शाह मुश्ताक साहब, मकदुमपुर कबीर–मुंगेर (६) श्री रघुनन्दन प्रसाद-मुंगेर।

यह चिट्ठी जितनी जरूरी है, उतनी ही खानगी भी। न हो तो बाबू रामगुलाम शर्मा और नन्दकुमार बाबू से भी बात कीजिए। वे लोग जो फरमावें दे दीजिए। यह मेरी ओर से, होगा। खुद जिनसे मिल सकें जरूर मिल लें। कम से कम भागवत प्रसाद. रघुनन्दन प्रसाद और मुश्ताक साहब को तो आप भेज ही सकते हैं। आपके वहाँ रहते मैंने किसी अन्य दूत को भेजना अनावश्यक समझा। अब आप आलस्य कीजियेगा तो कुछ न कुछ खतरे का सामना करना ही पड़ेगा।,

मेरा चुनाव २७ मार्च को होगा। मैं वहाँ २४ से ही मौजूद रहूँगा।

आपका

दिनकर

[१४६]

मुजफ्फरपुर

प्रियवर, २१-३-५२

खुशी की बात है कि कल भिरहा वाले को फलदान पड़ गया। समरजीत के काम में आज हाथ लगा रहा हूँ। कल पटने में देखा जायगा। आप उन दोनों की सुधि न भूलियेगा और दोनों शहरों में जहाँ जो संभव हो कर डालियेगा।

कंठ साहब से मिल कर एक दिन बात कर लीजिये कि काम का संगठन कैसे किया जाय। विश्वनाथ जी, पं० श्रीकृष्ण मिश्र, आप और कंठ, ये ही जरूरी आदमी होंगे। बाकी तो शोभा-शृंगार के लिए आयेंगे। उसमें भी आपको पतवार की जगह पर बैठना है। नहीं तो सब गंडागोल हो जायगा। मुझे दिल्ली (189 Constitution house) खबर दीजिए।

मेरी एक हरी पेंसिल आपके यहाँ छूट गई है। उसे अब पाने की उम्मीद नहीं रहने से आपको भेंट किये देता हूँ।

उम्मीद है, खटमलों का कुछ न कुछ वारा-न्यारा कर दिया होगा। कहा भी है— खटमल जेतो मारिये, तेतो पुन्य प्रसार।
डेढ़ अरब ही मनुज हैं, खटमल-वंश अपार।

शेष कुशल है। पुष्करिणी के लिये जोर लगाइयेगा। गुप्त जी का खास आग्रह है, यह बात गौड़ जी से भी कह दीजियेगा।

आपका

दिनकर

[१४७]

पटना-६
१०-१-५५

प्रिय कपिल जी,

आज रामसेवक बेगूसराय से अपना-सा मुँह लिये हुए लौट आये। सच्चिदा बाबू ने असमर्थता के लिए जो पत्र लिखा है वह आपके पास भेज रहा हूँ। मेरी समझ में तो खाक नहीं आया। सुना है, इस बार फिर सच्चिदा बाबू के सम्बन्धी उम्मीदवार हैं। किन्तु, इस असमर्थता की बात वे कैसे लिखें।

बेगूसराय का कॉलेज मेरे लिए तो अपमान की वस्तु बन गया है।

आपका
दिनकर

पुनश्च :—
२३ दिसम्बर को दिल्ली में मेरा एक बैग खो गया जिसमें सारे जीवन की बौद्धिक कमाई यानी Studies notes और पांडुलिपियाँ थीं।

दिनकर

[१४८]

श्रीनगर
१९-६-५६

प्रियवर,

दूसरा पत्र कल मिला। मैंने दिल्ली पत्र लिख दिया है। २५ को वहाँ पहुँच कर बाकी पैरवी करूँगा। आशा है, कार्य सिद्ध हो जायगा।

श्यामनन्दन बाबू गुणग्राही व्यक्ति हैं। मैं भी उन्हें बहुत चाहता हूँ।

आपका
दिनकर

पुनश्च :—
२७-२८ तक मैं पटने पहुँच जाऊँगा।

[१४९]

उदयाचल, आर्यकुमार रोड, पटना-४
२-७-५६

प्रिय कपिल जी,

श्रीनगर से मैं दिल्ली आज पहुँचा हूँ। आज ही दफ्तर जाकर परिस्थिति समझी। आपका नाम आया है, यह ठीक है। किन्तु पहला नाम किसी डॉ० टी० पी० श्रीवास्तव का है। यद्यपि, इससे कोई बाधा नहीं पड़ेगी। बाधा की बात यह है कि केवल यूनिवर्सिटियों से ५२ नाम हैं।

इतने ही सरकारों से भी आये होंगे और जायेंगे सिर्फ दस व्यक्ति। बिहार से डी० पी० आई० और पटना वि० वि० के वाइस चान्सलर खुद उम्मीदवार हैं। इससे प्रतियोगिता भयानक है। उस पर भी बि० वि० वि० का पत्र विलम्ब से आया है। मैं कह-सुन तो आया हूँ। किन्तु, आज मेरी आशा क्षीण हो गई है।

क्या एक-दो वर्ष के लिए आप हिन्दी-शिक्षक के पद पर लेनिनग्राड रहने को तैयार होंगे। बंगला आप कितनी जानते हैं?

कल मैं पटने के लिए रवाना होऊँगा तथा ४ से ८ जुलाई तक पटना ही रहूँगा। उसके बाद राँची कलकत्ता आदि जगहों पर दो-दो दिन रहना है।

आपका
दिनकर

[१५०]

५२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
२४-८-५७

प्रियवर,

तार कल रात को मिला। विचित्र बात है कि केदार तो मुंगेर में पढ़ें और सर्वजीत के लिए मुजफ्फरपुर में पैरवी करनी पड़े। किन्तु दिग्विजय बाबू ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। आज ही वे तार भेज कर प्रिंसिपल को सूचित कर रहे हैं कि उम्मीदवार उनका सम्बन्धी है। मेरा ख्याल है, दाखिला हो जायगा।

केदार मुंगेर पहुँचे या नहीं? मुझे उन्होंने कोई पत्र नहीं लिखा है।

सुना है, सम्मेलन के भावी सभापति को लेकर फिर झगड़ा मचा है। मुझे तो मत-पत्र भी नहीं भेजा गया। मुझे शंका होती है कि सम्मेलन सितम्बर में न हो सकेगा। न हो तो बात मेरे अनुकूल ही होगी। हिन्दी-कमीशन की रिपोर्ट यहाँ पेश है। उसके संबंध में क्या-क्या काम करने होंगे, अभी पता नहीं है। यदि संसदीय समिति में रखा गया तो हर मीटिंग में सम्मिलित होना और सदस्यों को समझाना-बुझाना आवश्यक होगा। यह काम सम्मेलन से अधिक महत्वपूर्ण होगा।

एक बात और है कि चीन के लेखक-संघ का निमंत्रण मैंने स्वीकार कर लिया है। यदि मेरी शर्तों के साथ वह कार्यक्रम समय पर बन गया तो अक्तूबर के अन्त में मुझे चीन जाना पड़ सकता है। अतएव, सम्मेलन को तिथि बढ़ायी जाय तो एकदम दिसम्बर या जनवरी ले जाइये।

शेष कुशल है।

आपका
दिनकर

[१५१]

५२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
१३-१२-५७

प्रिय कपिल जी,

सारी परीशानियाँ झेल कर आज पटने से दिल्ली पहुँचा। क्या जाने, मुझे क्या हो गया है कि सम्मेलनों से लौटने के बाद मुझे अपने भीतर अपवित्रता का बोध होने लगता है। उस अपवित्रता का बोध सारी राह होता आया।

मुँगेर सम्मेलन में साथ होना मेरी नैतिक जिम्मेवारी थी। किन्तु, शरीर के रोगी हो जाने से अब वह जिम्मेवारी निभ नहीं सकती। उस दिन कवि सम्मेलन चलाने का काम मुझसे ठीक-ठीक निभ नहीं सका। जनता ने अपनी रुचि को मुझ पर लाद दिया। अतएव, कई कवि बुलाये ही नहीं गये। यह भी है कि सब बुलाये जाते तो क० स० देर तक चलता और मैं १२ से आगे बैठ नहीं सकता था। कवि भाइयों को घोर असतोष हुआ यह बात सुनी है। विश्वनाथ जी और प्रफुल्ल जी नाराज हुए कि मैंने घेरे तुड़वा डाले। मगर, घेरे रहते तो जनता ऊब जाती, क० स० भी उतना ही अशान्त रहता जितना सम्मेलन का मुख्य अधिवेशन अशान्त रहा।

सबसे दुःख की बात यह हुई कि हरिमोहन जी की एक बात का मैं दुःख मान बैठा। पीछे इस दुःख मानने पर मुझे बहुत दुःख हुआ। हरिमोहन जी से आप कहेंगे कि मैं क्षमा चाहता हूँ। थकावट और चांचल्य में यह हो गया।

कवि-सम्मेलन का संचालन आपको लेना था। किन्तु आपका सहयोग वाजिबी-वाजिबी रहा। प्रफुल्ल की हैरानी भी सराहने योग्य रही और मिश्र जी भी तन मन से तत्पर रहे। मगर, हम लोगों पर रामेश्वर बाबू की कर्मठता का पूरा प्रभाव पड़ा। ऐसा दिखायी दिया कि सारा प्रबन्ध उन्हीं के कंधों पर था। मेरी ओर से उन्हें धन्यवाद देंगे।

कमलनयन, रामेश्वर बाबू और आपसे कुछ खास बातें करनी थीं। मगर, अब तो दूसरा मौका निकालना होगा। शेष कुशल है।

आपका
दिनकर

[१५२]

नई दिल्ली
२५-१-६७

प्रिय कपिल जी,

आपको मेरा इधर का हाल मालूम नहीं होगा। रामसेवक भयानक रूप से बीमार हैं। मुँह के भीतर वे जीभ को ठीक से घुमा नहीं सकते। ग्रास निगलते समय अनुभव करते हैं, मानो, पानी में डूब रहे हों। ग्रास का

अंश कभी-कभी नाक से भी निकल आता है। उँगलियों से वे बटन भी नहीं लगा सकते। आवाज बहुत दबी हुई और नकियायी हुई निकलती है। चलना-फिरना कर लेते हैं, मगर, कमजोर बहुत हो गये हैं और कमजोरी बढ़ती ही जाती है।

डाक्टर मदन मोहन सिंह के भरोसे उन्हें मैं दिल्ली ले आया था, मगर, डाक्टर साहब का मत बना कि यह मोटर-न्यूरोन है, फिजिकल डिजनरेशन आव् नर्व्स है और पाश्चात्य विज्ञान में इसका कोई इलाज नहीं है। फिर दिल्ली के चार पाँच वैद्यों ने मिलकर २१ दिसम्बर से २२ जनवरी तक उनका इलाज किया किन्तु, लाभ नाम को भी नहीं हुआ, रोग कुछ बढ़ता ही गया है। आज से उन्हें यहाँ के एक होमियोपैथ देख रहे हैं।

मैं भयानक चिंता में ग्रस्त हो गया हूँ। किस विपत्ति के भीतर से कौन विपत्ति निकलेगी, कुछ कहा नहीं जा सकता। अभी तो स्थिति यहाँ तक पहुँची है, आगे और क्या होनेवाला है, नियति को मालूम होगा। अब तो भाग्य से शिकायत भी क्या करूँ? नियति जो कुछ भेजती जायगी, हाथ उठाकर कबूल करना पड़ेगा।

आपका

रामधारी सिंह दिनकर

[१५३]

२, साउथ एवेन्यू लेन, नई दिल्ली

३०-१-६७

प्रिय कपिल जी,

आपका २८-१ का पत्र मिला। जानकर घबराहट हो गयी कि आप रक्तचाप के रोगी हो गये। एक बार सुधांशु जी की नाक से भी खून आया था और काफी आया था। मगर उसके बाद से भी वे संयम नहीं कर रहे हैं। मगर आप अब पूरे संयम से रहिये। वजन घटाइये। घी छूइये भी नहीं। भर पेट मत खाइये। दिन में १ से ३ तक न किसी से मिलिये, न काम कीजिये। जाकिर साहब कहते हैं कि दिन को उन्होंने दो खंडों में बांट दिया है। वही रास्ता आप भी पकड़िये।

मुझ पर यह मुसीबत क्यों पड़ी, इसकी बुद्धि-सम्मत व्याख्या मुझे नहीं सूझती। व्याख्या केवल दैवी सूझती है। मैं १९६३ से अपने को जबर्दस्ती हांक कर भगवान की ओर ले जाने की कोशिश में रहा हूँ। भगवान के दरबार में खूँटा गाड़ कर अपने को उससे बाँध दिया है। मगर भगवान का स्पर्श मुझे अनुभूत नहीं हुआ। लगता है, आग में भलीभाँति जलाकर वे मुझे शुद्ध करेंगे और तभी छुएँगे। कुन्ती ने कृष्ण से कहा था, 'केशव मुझे हमेशा दुःख में रखो जिससे मैं तुम्हें न भूलूँ।' कुन्ती की साधना को भगवान मुझ पर लागू कर रहे हैं।

साहित्य की पुस्तक छूने की भी इच्छा नहीं होती। केवल महर्षि रमण का साहित्य पढ़ता हूँ और उनके फोटो को ध्यान लगाकर देखता हूँ। इस प्रकार रमण-रमण रट कर विपत्ति की अवधि बिता रहा हूँ। किन्तु, इस विपत्ति की अवधि कोई है क्या ? शायद नहीं है। यों भी रमण-साहित्य पढ़ने से लगता है, महर्षि भक्त की विपत्ति में हस्तक्षेप नहीं करते थे। केवल उसे सहने की शक्ति भक्तों को दे देते थे।

किताबों में जो कुछ पढ़ा था, जीवन में उसे अब स्पष्ट देख रहा हूँ। जीवन दुःखों का पुंज है। बुद्ध ने कहा था, दुःख है और दुःख से निकलने की राह भी है। लेकिन वह राह कौन सी है ? बुद्ध को बोधिवृक्ष के नीचे क्या चीज हासिल हुई थी जिसे लोग बुद्धत्व कहते हैं ? ईश्वर को तो वे मानते नहीं थे। फिर क्या देख कर वे बुद्ध हो गये ? स्पष्ट ही, उन्हें यह ज्ञान हो गया कि मैं शरीर नहीं हूँ, मन नहीं हूँ। विपत्तियाँ मुझ पर नहीं आतीं, वे शरीर पर आती हैं और शरीर से मैं भिन्न हूँ। जिसे यह ज्ञान प्राप्त होता है, उसके भीतर अनेक शक्तियाँ आप से आप प्रकट हो जाती हैं, जैसे वह ईसा में भी प्रकट हुई थी।

जिस ज्ञान तक पहुँचने में बुद्ध को छह साल लगे थे, वह अनुभूति भगवान रमण को १७ साल की उम्र में आपसे आप प्राप्त हो गयी। लेकिन उनका कहना था, दुःख है नहीं। मनुष्य का प्रकृत रूप सुख का स्वरूप है। दुःख भ्रान्ति से उत्पन्न होता है। लेकिन, आत्मज्ञानी इस भ्रान्ति से ऊपर उठ जाता है और तब वह सुखी और शान्त हो जाता है। युद्ध, भ्रष्टाचार, विभीषिका ये तभी तक दुःख के कारण हैं, जब तक हम आत्मज्ञान से दूर हैं। एक व्यक्ति के भीतर जब विचार सो जाते हैं, प्रभाव उसका समस्त मानवता पर पड़ता है।

साहित्यवाले समस्या पर दूसरी दृष्टि से सोचते हैं। नीत्से और रिल्के के अनुसार दुःख से अलग सुख का अस्तित्व है ही नहीं। दुःख को जब हम अंगीकार कर लेते हैं तब उसी से सुख की स्थिति बनती है।

और अस्तित्ववादियों का मत है कि जीवन में दुःख है, मगर उससे निकलने का उपाय नहीं है। जीवन की किसी भी समस्या का कोई समाधान नहीं है। इसलिए ईश्वर व्यर्थ है, परलोक है नहीं, भूत और भविष्यत्, दोनों बेकार हैं। वर्त्तमान का क्षण ही अर्थपूर्ण है। क्षण की समस्या का समाधान खोजो, लम्बी योजना मत बनाओ, क्षण के भीतर जियो और जितना भी सुख उपलब्ध हो, उसे भोग लो।

अपने यहाँ किसी प्राचीन ग्रन्थ में कोई कहानी है, जो अस्तित्ववादियों का समर्थन करती है। एक अत्यन्त गम्भीर कूप है। उसके भीतर नाग फुंकार

रहे हैं और ऊपर बाघ बैठा हुआ है। कुएँ की दीवार से पेड़ निकले हुए हैं। आदमी एक पेड़ से लटका हुआ मृत्यु से बचने की चिंता से ग्रस्त है। लेकिन पास ही एक डाल से मधु का कोष भी लटक रहा है। आदमी निरन्तर भय, चिन्ता और त्रास में है। किन्तु, सुयोग पाते ही वह बढ़कर जरा सा मधु भी चाट लेता है। यह कहानी मैं जानता था, मगर, उसकी सचाई की अनुभूति अभी हो रही है।

जीवन में दुःख है, मगर वह मिटाये नहीं मिटेगा। उपाय है, बुद्ध और भगवान रमण की तरह इस अनुभूति पर पहुँचो कि मैं शरीर से भिन्न हूँ। जो कुछ होता है, शरीर को होता है, मुझे कुछ भी नहीं व्यापता। महर्षि की बाँह में कैंसर हुआ था। आपरेशन चार बार हुआ, मगर, क्लोरोफार्म उन्होंने नहीं लिया। हर आपरेशन के समय वे ऐसे बैठे रहे, मानो, बाँह उनकी नहीं हो। यह चरम उपलब्धि है। मगर कुछ निचले स्तर पर आत्मा को शरीर से भिन्न समझना संभाव्य है।

यह सारा ज्ञान मैं छाँट रहा हूँ, मगर, बेचैनी, घबराहट और निराशा की लहरें फिर भी उठती ही रहती हैं। मगर जब वे आक्रमण करती हैं, मैं पूछता हूँ, ये आक्रमण किस पर हो रहे हैं, शरीर पर या मुझ पर? इस प्रश्न मात्र से आक्रमण की धार थोड़ी मन्द पड़ जाती है। बस इसी प्रकार जी रहा हूँ।

सुना है (और अनुमान भी करता हूँ) कि रामसेवक के मन पर चिन्ता का बोझ है। यानी अब मेरे परिवार का क्या होगा? यह भी जरूर समझता होगा कि जब तक बाप कमाता है, काम चल जायेगा। फिर सोचता होगा साठ साल का आदमी और कब तक जीयेगा, कब तक कमाई करेगा? इसका समाधान है केदार के मन में रामसेवक ने जो शंका, त्रास और आतंक घुसेड़ दिया है, उसे दूर करना और केदार की सहानुभूति प्राप्त करना। मगर इस प्रश्न का वह सामना नहीं करना चाहता। अब तक वह कहता था कि लड़ाई उसकी बाप के साथ है, भाई के साथ नहीं। अब बाप के घर तो वह आ गया (कभी भी आ सकता था) मगर यह उसे यथेष्ट नहीं मालूम होता और जो यथेष्ट होगा उसके लिए कोशिश करने में उसे पराभव का बोध होता है। यानी 'हे! दिनकर जी, तुम्हारे हाथ में तो मैंने कुछ रहने नहीं दिया, मगर, घर के मालिक तुम्हीं हो और केदार को दबा कर मेरे चरणों पर ला देना तुम्हारा काम है।" यानी पहले भी वह असंभव के पीछे दौड़ कर तबाह हुआ और अब भी असंभव की आशा में अपने को नष्ट कर रहा है। और यह सब सहने के लिए भगवान मुझे जीवित रख रहे हैं। अभी तो मृत्यु मुझे अत्यन्त काम्य दिखायी देती है। वह अगर आ जाय तो कितनी मुसीबतें एक साथ खत्म हो सकती हैं।

बहुत लम्बा पत्र लिख गया। क्षमा करेंगे।

आपने ईभा से मुझ पर जो किताब निकलवायी थी, उसकी दो प्रतियाँ या कम से कम एक क्या मिल सकेगी ? इधर गिनती करने से पता चला कि मुझ पर कोई २५ किताबें निकली हैं। मगर, आप वाली पुस्तक के समान कोई और पुस्तक नहीं निकली।

आपका

दिनकर

[१५४]

राजेन्द्र नगर, पटना-१६

२१-१२-७१

प्रिय कपिल जी,

आपका १८ का पत्र आज मिला। लगा जैसे अचानक आपकी आवाज सुनायी पड़ी हो। गनीमत है कि हम-सूरत यहाँ दो चार बैठे हैं।

२५ नवम्बर के भोर मेरे बायें हाथ में झुनझुनी उठी। Movement ठीक था, मगर हाथ बहरा हो गया था। गर्म तेल की मालिश से पाँच मिनट में ठीक भी हो गया। हस्ब मामूल डाक्टर तीन घंटे बाद आये। बोले, वही था, छू कर चला गया है। यानी लकवा जुठा कर चला गया है। श्रीनिवास कहते हैं, यह यों ही डायबीटीज का आजार था। मगर ए० के० एन० ने उस दिन घर के कैद में डाल दिया। उसी में पड़ा हुआ हूँ।

मैं बीमार और देश में बड़ी घटना घटित हो गयी। पाँच नोबुल पुरस्कारों से देश को जो इज्जत नहीं मिलती, वह एक अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध जीत लेने से मिलती है। उस पर यह युद्ध तो शरणार्थियों के लिए लड़ा गया है। भारत अब दुनिया में एक शक्ति माना जायगा। अमरीका ने सातवाँ बेड़ा लाकर बहुत बड़ी गलती कर डाली।

स्थान का अखाड़ा छोटा, काल का अखाड़ा बड़ा होता है। बड़े अखाड़े के पहलवान छोटे अखाड़े में लड़ें तो उनके हारने का डर रहता है। गाँधी जी जिन्ना से स्थान के अखाड़े में लड़े थे, इसीलिए वे हार गये। मगर बँगला देश का अखाड़ा काल का अखाड़ा है, मुक्तिवाहिनी काल के उदर से जनमी हुई फौज है। इस अखाड़े में जीत गाँधी की हुई है, जिन्ना हार गये हैं। आपको मेरा एक पद याद है ?

स्थान में संघर्ष हो तो क्षुद्रता भी जीतती है,
पर समय के युद्ध में वह हार जाती है।
जीत ले दिक् में जिना, पर अन्त में बापू, तुम्हारी
जीत होगी काल के चौड़े अखाड़े में।

संतोष की बात है कि मैंने जीते जी अपनी भविष्यवाणी को सच होते देख लिया।

कभी आइये तो दर्शन जरूर दीजिये। पत्र तो अवश्य लिखा कीजिये।

आपका

दिनकर

[१५५]

पटना-१६

१२-५-७२

प्रिय कपिल जी,

आपका ६ मई का पत्र आज मिला। लखीसराय गवर्नर जानेवाले थे। वे बीमार हो गए। अतएव अभावे शालिचूर्ण के रूप में गंगा मुझे ले गये। रेल से गया, रेल से आया।

मैं भी अपनी पोती के लिए लड़का खोज रहा हूँ। कोई सीधे मुँह बात ही नहीं करता। पहले समाज में ऐसे लोग थे जिन्होंने मुफ्त लड़के दे कर, मेरा उपकार किया था। मगर अब वे लोग समाज से लुप्त हो गये हैं। नयी पीढ़ी के भूमिहार केवल अर्थ-पिशाच हैं। मैं भी जात से बाहर जाने को तैयार हूँ। दूसरा विकल्प यह कि लड़की क्वाँरी रह जाय। और कर क्या सकता हूँ?

पहले लोग सोचते थे, दिनकर भी कंगाल नहीं है, उसके पास कीर्ति है, उसे शरण मिलनी चाहिए। अब ऐसी बात कोई नहीं सोचता। ऐसी भ्रष्ट जाति से बाहर निकलने का रास्ता मिले तो इससे अच्छा और क्या होगा। मगर कोई रास्ता तो मिले।

६ लड़कियों की शादी कर चुका हूँ। रामसेवक की तीन बेटियाँ और हैं। कम से कम दो की शादी करके मरना चाहता हूँ। मुझे लगता है, भगवान ने मुझे ११ लड़कियों के ब्याह के लिए भेजा था। वह काम पूरा हो जाय तो समझूँ कि मेरे अवतार का कार्य पूरा हो गया।

ग्रन्थ अकादमी का चेयरमैनशिप मैंने स्वीकार नहीं किया है। फिर भी नव विहार ने लिख ही दिया "सरकार चारण कवि को चेयरमैन बनाना चाहती है।" पटना आकर बैठने का यह दण्ड है। असल में भूमिहार ही नहीं, यह सारा प्रान्त सड़ गया है।

अप्रैल में तीन बार दिल्ली जाना पड़ा। परसों फिर दिल्ली जा रहा हूँ। सरकारी खर्च पर रास्ता तौलने में समय जा रहा है।

शेष कुशल है। दाँतों का दर्द अभी-अभी शान्त हुआ है।

आपका

दिनकर

डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन'

[१५६]

पटना
३-६-१९५२

प्रिय भाई !

यहाँ पटने से 'अवन्तिका' निकलने जा रही है। सुधांशु जी ने तुम्हारे पास पत्र भेजा था, मगर, तुमने जवाब नहीं दिया। अगर यह रुख रखोगे तव तो हम लोग हो बीते। अतएव, फौरन एक कविता 'अवन्तिका' के प्रथमांक के लिए भेज दो और साथ में अपना एक चित्र भी। कविता और चित्र १०/९ तक अवश्य आ जाने चाहिए।

You must note that this is going to be the leading magazine of Hindi.

उत्तर की आशा में,

तुम्हारा
दिनकर

[१५७]

मुजफ्फरपुर
१९-९-५२

प्रिय भाई !

कविता तो तुमने बड़ी लहरदार भेजी। मुझे खूब पसन्द आयी। प्रथम अंक में जा रही है। मगर, तुम्हारे तथा कथित प्रगतिवादी मित्र तो इसे महज रोमान्टिक कहेंगे। लेकिन नहीं, उनके वीच Condemnation कृति का नहीं, कृतिकार का होता है। विश्वास नहीं हो तो दिनकर पर उनका जो मत है उसकी तुलना उनके महादेवी-विषयक मत से करके देख लो।

'रश्मिरथी' में छूट तो वहुत है, मगर, जो लिखा गया वह काफी है। तुम्हें एक हद तक चीज पसन्द आयी इससे मिजाज बन गया। अभी १८ नवम्बर तक यहीं रहूँगा। बच्चों को प्यार, दुलहिन को आशीर्वाद।

तुम्हारा
दिनकर

[१५८]

चौधरी टोला, पटना
२७-१०-५३

प्रिय भाई !

मेरी एक पोती तीन साल की है। दूसरी भी हुई है, जिसकी आज छठी है। शाम को श्रीमती जी ने गर्म दूध से अपना चेहरा जला लिया। उनका

उपचार चल रहा है। इस प्रकार, घर में सुख और दुःख दोनों विद्यमान है। और पस्ती में बैठे-बैठे मुझे तुम्हारी याद आ रही है। अय हर आदमी से साँसों का हिसाब माँगने वाले, कुछ अपनी साँसों का भी हिसाब दो। तुम कविताएँ कम लिखने लगे हो। साल में एक दर्जन नहीं लिखोगे तो फिर जवानी को धिक्कार। चालीसा के बाद तो तीन लिखना भी दूभर हो जाएगा। और अपनी भाषा में प्रशंसक कम, निन्दक अधिक जन्म लेते हैं। इकबाल ने, शायद, सोलह साल कविता की कोई पुस्तक उर्दू में नहीं निकाली थी और इलियट के वेस्ट लैंड से फोर क्वार्ट्रेट तक की दूरी भी बीस साल की है। मगर, हिन्दी में कोई ऐसा करे तो उसकी मृत्यु का ढिंढोरा सब लोग पीटने लगते हैं।

हिन्दी कविता की प्रगति अवरुद्ध है। हर बारह साल के बाद नये क्षितिज का निर्माण होना चाहिए, आशा के विरुद्ध दिशा से किसी कवि को उतरना चाहिए। मैं चाहता हूँ कि तुम अपने आपसे एक प्रश्न करो कि तुमने अपने हिस्से के नये क्षितिज का निर्माण कर लिया या वह काम अभी बाकी है। मेरे ख्याल से, तुम्हारा क्षितिज अभी तक पूर्ण रूप से उभर कर सामने नहीं आया है।

और कवि की संकीर्णता की वृद्धि कवि-सम्मेलनों में होती है, यह तुम जान लो। हम सभी लोगों को भागना चाहिए इन सम्मेलनों से। मैं तो कोशिश करके हार गया, मगर, कवि-सम्मेलनों से छुटकारा नहीं मिलता। बेबसी है। फिर भी जिस सत्य को अनुभव करता हूँ, वह तुम्हें बता रहा हूँ। मैं तुम्हारा गुरु नहीं, अग्रज नहीं, एक पीठ का भाई हूँ, इसलिए, हर बात कह सकता हूँ और तुम्हें भी यही अधिकार देता हूँ।

कविता की भूमि जकड़ी जा रही है। ऐसी चीजों की जरूरत है जो आलोचकों को अनुपस्थित मानकर लिखी जाएँ, जिन्हें जनता आसानी से समझ सके और समझ कर आनन्द उठा सके। और ऐसी चीजों की भी जरूरत है जिनके भीतर से कवि अपने आप पर आड़ी चलाता हो, अपने आप को चीरता हो, जिनके भीतर से उसके दिमाग के फटने की आवाज सुनायी देती हो। आशा है, संकेत समझ रहे हो।

और आज ही एक कविता लिखी है जिसका नाम 'संकेत' रखा है। दो पद उसके ये हैं :—

दूँ तुमको जीभ उधार? सूर्य, क्या बोलोगे?
भाषा जिनकी मौजूद, भाव वे जूठे हैं।
हैं भेद अछूते जो, उनको कहना चाहो
तो वाणी के साधन समस्त ये झूठे हैं।

संकेतों से आगे वाणी की राह नहीं,
कुछ लाभ नहीं किरणों को मुखर बनाने से।
रव की झंकारों से न भेद खुल पायेगा,
जो खुला नहीं नीरव प्रकाश फैलाने से।

मैं अपने भीतर थकावट अनुभव करने लगा हूँ। लगता है, अब तक जब भी रचना की समाधि में जाता था, मेरी मुद्रा तनी हुई रस्सी के समान हो जाती थी और उसी मुद्रा में अच्छी कविताएँ लिखा करता था। मगर, अब तनाव को मन बर्दाश्त नहीं करता, न इतना अच्छा स्वास्थ्य ही रह गया है कि तनाव का संकट झेल सकूँ। इसलिए, अब जो नई टेकनिक पसन्द आ रही है उसके पीछे कुछ शारीरिक शिथिलता भी काम कर रही है। मम्मट ने काव्य के कारणों में एक कारण स्वास्थ्य को भी माना है। वह बहुत ठीक है।

मगर, तनाव की कविता भी खूब होती है। मैं अपनी मुट्ठी से मशाल फेंक रहा हूँ। तुम उसे बायें हाथ में ले लो। दाहिने में तो तुम अपनी मशाल ले आये हो। भगवान करे तुम्हारे हाथ में यह मशाल अप्रतिम तेज से जले।

But mind you my dear, the greatest force is in the greatest restraint and when you begin to write less, you will begin to say more.

बक गया हूँ जुनूँ में क्या-क्या कुछ, कुछ न समझे खुदा करे कोई।

सस्नेह
दिनकर

[१५९]

आर्यकुमार रोड, पटना-४
१८-११-६०

प्रिय भाई,

तुम्हारा १२-११ का पत्र आज मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम पीपल में लटकने को वापस फिर आ रहे हो। पूरी प्रसन्नता तब होगी जब, सचमुच, लौट आओगे और अँधेरे को फाड़ने के लिए फिर मशालें चलाना शुरू कर दोगे। मशालें जलती बहुत हैं, चलती ही नहीं। साम्यवाद को कोसते कोसते साहित्य अपना आदर्श भी भूल गया है।

जरा चिराग जलाओ, बड़ा अँधेरा है,
जरा नकाब उठाओ, बड़ा अँधेरा है।

अध्ययन की दरार भरने लगो तो मेरी रचनाएँ भी देख लेना जो आजकल, ज्ञानोदय, कल्पना और कादम्बिनी में इसी साल अगस्त से इधर निकली हैं।

अब सुन लो कि दो मास से बीमार चल रहा हूँ। कठिन पथ्य पर जी रहा हूँ जिसमें चावल, आटा, दूध और मीठे फलों का सर्वथा अभाव है। अक्तूबर से चक्कर आ रहा है। कभी-कभी यह भी सोचना पड़ा है कि महायात्रा नहीं तो उसका समारंभ समीप है। किन्तु, अब सँभल रहा हूँ और ३० नवम्बर तक पूरी तरह सँभल जाऊँगा। दिल्ली जाना अब उसके बाद ही होगा। मगर, और कोई यात्रा नहीं होगी। प्रभाग को कहो कि क्षमा करे। मुहम्मद पहाड़ से न टकरायें। तुम्हें क० स० से अब अजीर्ण हुआ लगता है। मैंने तो २४ जनवरी १९५८ को ही उसे वृत लेकर छोड़ दिया।

तुम्हारा
दिनकर

[१६०]

पटना
२८-१२-६२

प्रियवर,

तुम्हारा पत्र घूम कर यहाँ पटने में मिला और काव्यरचना में व्यस्त रहने के कारण उसका उत्तर मैं आज दे रहा हूँ। मेरा स्वास्थ्य ऐसा नहीं है कि दौड़-दौड़ कर देश में दहाड़ता फिरूँ। इन दिनों कवियों की पूछ बड़े जोर की है। दो-एक पत्र हर रोज मेरे पास भी आते हैं। लेकिन, सबके पाँव पकड़ता चल रहा हूँ। तुम भी अपने पाँव बढ़ा दो। मेरा इसी में कल्याण है। लाज न मैं अपनी रख सकता हूँ, न तुम्हारी।

बेशर्म तो तुम हो। जब तक कोई लिखवाये नहीं, अपने मन से पत्र क्यों लिखोगे ?

लेकिन, कविताएँ लिख रहा हूँ।

तुम्हारा
दिनकर

[१६१]

११, केनिंग लेन, नई दिल्ली
१८-९-६३

प्रिय भाई,

तुम्हारा १३-९ का पत्र मिला···कहना चाहिए प्रेम-पत्र मिला। २९ नवम्बर के लिए अभी से किसी कार्यक्रम में बँध जाना शक्य नहीं है।

मैं इधर पारिवारिक कलह के कारण घोर रूप से दुःखी और संकटग्रस्त रहा हूँ। वे स्थितियाँ सुलझ जाँय तभी महाकाल के घर आने की बात सोच सकता हूँ।

तुम तो मेरे लिए गूलर के फूल हो गये।

तुम्हारा
दिनकर

[१६२]

नई दिल्ली
१९-११-६३

प्रिय भाई,

तुमने जिस सांस्कृतिक दूत को भेजा, वह तो नहीं मिला, हाँ, तुम्हारा ९ ता० का पत्र आज १६ को मिला है।

८ दिसम्बर को अगर मैं अच्छा रहा तो हरिद्वार जाऊँगा। वचन दिया हुआ है। अतएव, ८ दिसम्बर का समय उज्जैन के लिए अननुकूल है।

सस्नेह
दिनकर

[१६३]

गृह मंत्रालय, नई दिल्ली
३० जुलाई, १९६५

प्रिय भाई,

श्री कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह के बारे में तुम्हारा पत्र मिला। चन्द्रप्रकाश जी इस बार मुझसे दो-तीन बार मिलकर गये हैं। आदमी तो बस हीरा है। जैसा विद्वान वैसा ही नेक मिजाज। मुझसे जो भी होगा, करूँगा। मगर, ये बातें राजनीति के अधीन हैं और राजनीति असली हीरों को छोड़ कर चलने में ही देश सेवा समझती है। उफ! प्रतिभाओं की कितनी उपेक्षा चल रही है! यह देश इसी पाप से मरेगा।

नये पद पर काम अभी कम है। मुश्किल से थोड़ा अवकाश मिला है। सो पढ़-लिख कर अपने को अप-टू-डेट बना रहा हूँ। वाइस-चान्सेलरी में तो लगता था, अब साहित्य छूटा, केवल बादशाहत के सहारे जीकर एक दिन मर जाना होगा। बड़ी मुश्किल से जान छूटी।

तुम तो मेरे छली मित्र हो। फिर भी तुमसे मिलने की उत्कंठा बनी रहती है। सितम्बर में उज्जैन आने का समय निकाल सकता हूँ। पर, कह नहीं सकता कि उस समय स्थिति क्या रहेगी।

बच्चों को मेरा प्यार और आशीर्वाद।

तुम्हारा
दिनकर

[१६४]

२, साउथ एवेन्यू लेन, नई दिल्ली,
१३-२-६७

प्रिय भाई,

तुम्हारा १०-२ का पत्र मिला। बड़ा ढाढ़स हुआ। रामसेवक का इलाज वैद्य कर रहे थे। लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। निदान अब वह होमियोपाथ के इलाज में है।

एक बुजुर्ग डाक्टर मित्र ने कहा है, "भूल जाओ कि वह तुम्हारा बेटा है। वह एक न्यास है जिसकी तुम्हें रक्षा और सेवा करनी है।"

जहाँ भी पूछता हूँ, इसी तरह का उत्तर मिलता है। घबराहट के मारे मेरा अपना स्वास्थ्य भी डावाँडोल हो रहा है। और यह चिंता कितनी बड़ी है कि अगर मैं गिर गया तो उसकी सेवा भी कठिन हो जायगी।

३ जून, १९६३ ई०, को रामसेवक ने मेरे साथ रार रोपी। बेटे और बाप के झगड़े में बाप कमजोर होता है क्योंकि उसका अपना हृदय भी आधा पुत्र की ओर हो जाता है। रामसेवक ने जब मुझे चारों तरफ से घेर कर असमर्थ कर दिया, मैं पाण्डिचेरी में जाकर गिरा। श्री माँ ने मेरी विपत्ति शायद कम नहीं की, मगर, किसी तरह उस विपत्ति को सह्य बना दिया।

शरीर का जो भोग है उसे भोगे बिना छुटकारा नहीं है। कामिनी, कंचन और कीर्ति का जो सुख भोगा था, उसकी कीमत अदा कर रहा हूँ। इधर छोटे लड़के को एक पुत्र हुआ। खबर सुनते ही मैं दिल्ली में खुशी से नाच उठा। मगर खुशी चार दिन ही ठहरी। पाँचवें दिन बच्चा अस्पताल में ही टूट गया। उस सदमें में पटना गया था। अभी ८ को वापस हुआ हूँ।

बुद्ध ने ठीक कहा था कि जीवन दुःख का नाम है। अस्तित्ववादी भी ठीक ही कहते हैं कि जीवन दुःखों से पूर्ण है और दुःखों का कोई समाधान नहीं है। चिन्ता और घबराहट से ऊपर उठना चाहता हूँ, मगर, उठ नहीं पाता।

तुम्हारा
दिनकर

[१६५]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
२०-१०-६७

प्रियवर,

मैं दस दिनों के बम्बई-प्रवास से कल लौटा हूँ। बखोरी जी १६ को ही कश्मीर से लौट आये और मेरे ही घर को पवित्र कर रहे हैं। यह मेरा सौभाग्य है। आज वे हरिद्वार गये हैं। कल वापस आयेंगे।

तुम्हारे यहाँ चलने को वे भी मुझसे आग्रह कर रहे हैं। ट्रेन की यात्रा जल्दी से जल्दी २५ को आरम्भ हो सकती है या २६ को अगर ट्रेन में जगह मिल जाय। लेकिन इतना खर्च कहाँ से जुटाओगे? अगर २७ को कोई समारोह रख कर मुझे तार दो तो मैं आने की सोच सकता हूँ अन्यथा उन्हें भेज दूँगा। वे लोग एक दिन तुम्हारे पास रह कर दूसरे दिन मेरे घर लौट आयेंगे।

एक गाड़ी यहाँ से दस बजे रात में चलती है। तुम हमें रतलाम से लोगे या इन्दौर से? सभा का कार्यक्रम रख कर सविस्तार सूचना तार से दो। २७ को सभा रखना ठीक होगा। हम उसी हिसाब से चलेंगे या बखोरी दम्पति को भेज देंगे। मैं कुछ थका हुआ भी हूँ।

टिकट तुम्हारा तार आने पर खरीदा जायेगा। इसलिए तार शीघ्र भेजो।

तुम्हारा
रामधारी सिंह दिनकर

[१६६]

५, सफदर जंग लेन, नई दिल्ली,
दिसम्बर ११, १९६८

प्रिय भाई,

तुम्हारा दो पन्नों का वृहत् पत्र मिल गया था। उज्जैन से लौटने के बाद मैं इलाहाबाद और पटना चला गया। पोती के लिए वर ढूंढ़ना था। इलाहाबाद में ठीक किया है।

मुख्यमंत्री श्री गोविन्दनारायण सिंह जी ने मुझे दो बार फोन किया। किन्तु कुछ तो शरीर की कमजोरी के कारण और कुछ संघ-लोक-सेवा-आयोग में व्यस्त होने के कारण मैं उनकी आज्ञा का पालन नहीं कर सका। मन में अपराधी महसूस करता हूँ। लेकिन असमर्थता से यह दोष हो गया। मैं उनसे मिलकर कहना चाहता था कि वे स्वर्गीय श्री गंगाप्रसाद पाण्डे के लड़के श्रीरामजी पाण्डे को कहीं कोई काम दिलवा दें। लेकिन वह नहीं हो सका। तुमसे मुख्य मंत्री जी की मुलाकात हो तो मेरी ओर से क्षमा माँग लेना। आगे जब भी वे मुझे बुलाना चाहें, मुझे सुविधा का समय बनाने का मौका दें। मैं जरूर आऊँगा। सुना उन्होंने पंतजी और महादेवीजी को भी बुलाना चाहा था, मगर वे लोग भी नहीं जा सके। यह ठीक नहीं हुआ।

गंगाप्रसाद के बेटे (श्रीरामजी पाण्डे) ने हिन्दी लेकर एम० ए० (द्वितीय श्रेणी में) पास किया है। वह पी० एच० डी० करना चाहता है। कोई रास्ता निकाल कर उसे उज्जैन बुला लो या बाहर ही किसी कालेज में जगह दिलवा दो। बड़ा पुण्य होगा। गंगा से जब मैं अन्तिम बार मिला था, उसने मुझसे अनुरोध किया था कि मैं रामजी को कहीं लगा दूँ। लेक्चरर नहीं तो किसी अन्य पद पर भी उसे ले लो जिससे वह डाक्टरेट कर सके।

सम्मेलन ने प्रो० वासुदेव विष्णुदयाल को साहित्य वाचस्पति की उपाधि देना निश्चित किया है। वे २५ जनवरी को इलाहाबाद में सदेह उपस्थित होकर उपाधि ग्रहण करेंगे।

उज्जैन में तुम नहीं रहे, इससे थोड़ी उदासी रही। लेकिन भवहू ने मेरा स्वागत-सत्कार अच्छा किया। लड़कियों को देखकर प्रसन्नता हुई। उज्जैन में जनमत यह देखा कि तुम ठीक से अपना काम चला रहे हो। शरीर का हाल क्या लिखूँ? 'क्रुरती हुई युद्ध रोगों से देह हारती जाती है।' आशा है, तुम प्रसन्न हो।

तुम्हारा
दिनकर

[१६७]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली

प्रिय भाई, २०-६-६९

मॉरीशस की दो तीन लड़कियाँ इस देश में आकर संघर्ष कर रही हैं। उनमें से एक कुमारी लक्ष्मी जोधन वर्धा में रह कर साहित्यरत्न की तैयारी कर रही है। उसी के हाथ यह पत्र भेज रहा हूँ। जो भी सहायता संभव हो, अवश्य कर देना।

मेरा मिजाज ठीक है। फरवरी में बड़ी पोती का ब्याह किया। अभी ९ जून को शिवसागर की भी बड़ी लड़की का ब्याह हो गया।

आशा है, तुम प्रसन्न हो। तुम्हारा
दिनकर

[१६८]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली

प्रिय भाई, १-२-१९७०

एक परम आवश्यक कार्य से यह पत्र लिख रहा हूँ। डाक्टर प्रेम स्वरूप को मैं भली-भाँति जानता हूँ। वे दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा में हिन्दी के विभागाध्यक्ष थे। अब आगरे में हैं। वे संस्कृत और हिन्दी में प्रथम श्रेणी के एम० ए० हैं। संस्कृत के वे पी० एच० डी० हैं, हिन्दी के डी-लिट्। संस्कृत में वे काव्य तीर्थ और साहित्याचार्य भी हैं। संस्कृत और हिन्दी, दोनों की थीसिसें प्रकाशित हैं। लगभग वीस रिसर्च पेपर भी प्रकाशित हैं। हिन्दी के कई आलोचकों ने उनका उद्धरण दिया है। कइयों ने नाम दिये बिना ही माल हड़प लिया है।

इस विद्वान के साथ न्याय होने में देर हो रही है। तुम तेजस्वी पुरुष हो। इनके साथ न्याय करवाने की कोशिश करो। शीघ्र इधर आना हो, तो दर्शन अवश्य दो।

आशा है, प्रसन्न हो। तुम्हारा
दिनकर

[१६९]

५, सफदर जंग लेन, नई दिल्ली
जनवरी ११, १९७१

प्रिय भाई,

आज दफ्तरवालों ने राय दी है कि जुलाई, १९७१ में उन्हें असम क्षेत्र में दो साल हो जायेंगे। उस समय तबादला हो सकता है। वे अभी से कोई पारिवारिक कारण बताकर आवेदन कर दें कि उनकी अगली पोस्टिंग मध्य-प्रदेश में की जाय। आवेदन पड़ जाय, तब उसकी प्रति मुझे मिलनी चाहिए कि दफ्तर में पैरवी करवा सकूँ।

मेरा ख्याल है, ऊपर बोलने से भी जुलाई के पूर्व कुछ होगा नहीं। वैसे तुम जैसा कहो, करने की कोशिश करूँ। अथवा तुम यहाँ आओ, तो हम साथ पन्त जी के पास चलें। मगर अभी यह सुयोग बनना मुश्किल है।

शेष कुशल है।

तुम्हारा
दिनकर

[१७०]

राजेन्द्रनगर, पटना-१६
२९-११-७२

प्रिय भाई,

चिरंजीव श्री अरुण कुमार के विवाह का निमंत्रण पत्र पहुँचा। बड़े आनन्द की बात है। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो।

बरात में सम्मिलित होना शक्य नहीं है, एतदर्थ क्षमा माँगता हूँ।

चि० अरुण और किरण को आशीर्वाद।

फूलें सब अरमान तुम्हारे, सब विधि हो सौभाग्य—उदय।
अमर उत्स हो प्रणय-सुधा-रस का यह मंगलमय परिणय॥
एक प्राण, दो तन होकर भी रहने दो इतना अवकाश।
तुम दोनों के बीच निरन्तर बना रहे हरि का आकाश॥

तुम्हारा
दिनकर

[१७१]

पटना-१६
३-५-७३

प्रियवर,

बधाई का तार मिला। हर आदमी यही लिख रहा है कि बहुत देर से मिला। यहाँ एक सभा चीफ जस्टिस की सदारत में हुई थी। उन्होंने भी कहा, न्याय देर से मिला, मगर मिल गया। चलो, मरने के पहले यह भी हो गया।

तुम्हारी हार्दिकता तार में भी है। धन्यवाद।

तुम्हारा
दिनकर

श्री कामेश्वर शर्मा 'कमल'

[१७२]

मुजफ्फरपुर
४-१०-५२

प्रियवर,

अप्रतिष्ठा की बात नहीं हो तो ६ नवम्बर को आ सकता हूँ। टंकित आप अधिक से अधिक जो ठीक करवा लें। आना यहीं से होगा। मैं लिखा पढ़ी में नहीं पड़ूँगा।

समय डावाँडोल है। नौकरी कीमती चीज होती है। पहले भी ज्ञान था, अब भी मानता हूँ। नया उद्योग जमाने का समय निकल गया।

ज्ञान बाबू को खत पर खत लिखे, मगर, वे लाज के मारे सिकुड़ते चले जा रहे हैं। यह और बुरी बात है। वे हमें किताबें क्यों नहीं देते? चाहें तो पूरा स्टाक मैं ले सकता हूँ। अब इस पर भी अगर वे चुप रहें तो यही समझूँगा कि दोस्त की अब छाया भी शेष नहीं है।

तुम्हारा
दिनकर

[१७३]

पटना-४
२४-११-६०

प्रिय भाई,

वट-पीपल के लिए कागज, जहाँ तक मुझे याद है, १२८ पेज भर का लिया गया था। ज्ञान बाबू लिखते हैं कि वह ९६ पेज पर खत्म हो रहा है। इस सम्बन्ध में जो स्थिति हो, मुझे लिख भेजो। जो कागज घटे वह खरीद कर दाम अपने पास से दे दो और बिल मुझे भेज दो। बिल तो हर हालत में उदयाचल के नाम आना ही चाहिए।

मेरा मिजाज अच्छा है। इधर कोई उपसर्ग नहीं उठा। भोजन वही चल रहा है। १५ दिसम्बर से पहले शायद यहाँ से नहीं टलूँगा।

तुम्हारा
रामधारी

[१७४]

११, केनिंग लेन, नई दिल्ली
१०-५-६२

प्रिय भाई,

पत्र मिला। खुशी तो मुझको भी नहीं हुई। लेकिन, अछता-पछता कर मेरा भी मत यही है कि काम में वह लग जाय। आगे रास्ता खोलने का प्रयत्न जारी रखा जाय।

३० को राज्यसभा में मेरा एक भाषण हुआ। ३ को जवाहरलाल जी ने राज्यसभा में उसकी प्रशंसा की। आमि पेयेछि बन्धु, राजकंठेर माला।

सुना, मेरी हिन्दी-नीति गले के नीचे नहीं उतरी। एक फ्रेज का पता चला है, Much too positive लेकिन, दिनकर पोजिटिव तो रहेगा। इसलिए, अब निश्चिन्त हूँ।

कोई काम नहीं हो पा रहा है। राजेन्द्र बाबू की विदाई, राधाकृष्णन् का स्वागत। दिल्ली के पेट में वायु चालू है। १३ को फ्री हो जाऊँगा। १४ को कहीं भी जा सकता हूँ। पटना जाने का विचार है, मन मसूरी की ओर भी दौड़ता है। फिर कलकत्ता भी है अगर ज्ञानेन्द्र बाबू का इशारा हो। जब छपाई चलती है तब ज्ञान बाबू मेरी माशूका हो जाते हैं।

तुम्हारा
रामधारी

[१७५]

पटना-४

प्रिय भाई, ११-६-६३

सम्भाव्य दुर्घटना को लेकर हमलोग चिन्तित थे। कल रात उस दुर्घटना ने यह रूप लिया कि रामसेवक बाबू अपनी सास, सरहज, सरहज की दो बच्चियाँ, साले, पत्नी और तीन बेटियों को घर से निकाल कर मारवाड़ी होटल चले गये। मैंने उन्हें समझाने की कोशिश नहीं की, क्योंकि वे बावले कुत्ते की तरह भूँक रहे थे और मैं अगर समझाने जाता तो वे मेरा अपमान करते, अपमान तो काफी किया, शायद, अपशब्द कहते। यह दण्ड उन्होंने किस कसूर पर दिया है, इसका हमलोग केवल अनुमान ही लगा सकते हैं। कल मैं उदयाचल के दफ्तर में बैठकर कुछ स्टाक की स्थिति समझ रहा था। उसी पर यह तुफान उठा है। लेकिन, पता चला है कि घर छोड़ने की उनकी योजना दो चार दिन पुरानी थी।

मैं शान्त था, अब भी शान्त हूँ और उनकी इन्तजारी कर रहा हूँ। लेकिन, उन्हें बुलाने का साहस मुझे अत्यन्त दुःखदायी मालूम होता है। अगर वे नहीं आये तो २०-२५ जून तक मुझे एक मैनेजर चाहिए जो एकाउन्टेंट भी हो और मुझे धोखा नहीं दे। कम से कम तीन महीने के लिए भी एक ऐसा आदमी अवश्य खोजो।

तुम्हारा
रामधारी

[१७६]

पटना

प्रिय भाई, १२-६-६३

कल जो पत्र भेजा वह मिला होगा। राम सेवक नहीं लौटे हैं, न मैं उन्हें बुलाने गया हूँ। बाल बच्चों को छोड़ कर भागते तो उन्हें जाकर मनाना मेरा धर्म था। लेकिन, जिस तरह वे भागे हैं वह परिवार-भंजन की

घोषणा है। कल रात मैंने निश्चय किया है कि अब अगर वे आयेंगे तो मैं सीधे बंटबारे का प्रस्ताव उनके सामने रखूँगा। यह भी कहूँगा कि जो आदमी इस घर में रहना चाहे वह हिस्सेदार का हिस्सा चुका दे। हिस्सेदार इस घर को छोड़ कर चला जायगा। उदयाचल का पार्टनरशिप रजिस्टर्ड होना चाहिए। बिजिनेस पर मेरा पूरा कन्ट्रोल अगर उन्हें मान्य नहीं हुआ तो किताबें मैं छीन लूँगा। या उदयाचल को खुद चलाऊँगा और उनके पालन की भी जिम्मेदारी अपने सिर ले लूँगा। तुम एक विश्वासी मैनेजर या एकाउन्टेंट ठीक करो।

उत्तर दो। शिवसागर मेरे कारण पटने में रुक गया है। हरिद्वार भी है।

तुम्हारा
रामधारी

[१७७]

पटना
१४-६-६३

प्रिय भाई,

दो पत्र मिले होंगे। कल कोई पत्र नहीं लिखा। कल सुबह छः बजे मैं मारवाड़ी होटल गया और कल्लो तथा पूनम को ले आया। बाद में राम सेवक अपनी सास को लेकर दो मोटरों में मधुवनी चले गये, बीवी भी साथ गयी हैं। ट्रेन से नहीं जाना कितनी अच्छी बात है। तीनों बच्चियाँ घर में हैं, माँ-बाप बाहर हैं। देखें कब तक लौटते हैं। कुछ सूझता ही नहीं कि किया क्या जाय। उदयाचल और परिवार, दोनों का नाश सामने दिखायी देता है।

तुम्हारा
रामधारी

[१७८]

पटना
१५-६-६३

प्रिय भाई,

दो पत्र भेज चुका हूँ। तीसरा कल लिखा जो गिरा नहीं सका। वह भी आज ही जा रहा है। रामसेवक मधुवनी से नहीं लौटे हैं।

जनवाणी से पता लगाकर मेरी खानगी सूचना के लिए लिखो कि किस पुस्तक की कितनी प्रतियाँ वहाँ बाकी हैं। मेरी आज्ञा के विना एक भी किताब यहाँ नहीं आयेगी।

तुम्हारा
रामधारी

[१७९]

पटना-४
२०-६-६३

प्रिय भाई,

रामसेवक सपत्नीक १५ ता० को आ गये। तब से वे यहीं हैं। मुझसे बोलते-चालते नहीं हैं। कल रात मेरा मिजाज फिर बिगड़ गया था। आज सुबह डाक्टर आया तब रामसेवक भी आये। मैंने कहा, मेरी जानकारी में तुम बिजिनस चलाओ, इसमें क्या खराबी है। उन्होंने कहा, मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिए। उनकी योजना उदयाचल के नाम से एक दूकान खोलने की है। लक्ष्य यह है कि उदयाचल दूकान और उदयाचल प्रकाशन के बीच गड़बड़ी पैदा हो और मैं अगर रोकूँ तो मेरी बदनामी फैले। पार्टनरशिप वे नहीं करेंगे। वे मुझे सताना चाहते हैं, उदयाचल को नष्ट करना चाहते हैं, झगड़े का विषय बनाना चाहते हैं।

मैं अब चाहता हूँ कि उदयाचल नाम का उपयोग उन्हें करने दूँ और अपनी पुस्तकों के लिए एक ट्रष्ट खड़ा करूँ जिसका नाम "दिनकर-साहित्य निधि" हो। किन्तु, इससे पुस्तकों पर खान्दान वालों का अधिकार समाप्त हो जायगा।

तुम्हारे लिए यह नितान्त आवश्यक है कि एक सुयोग्य मैनेजर की खोज करो। अब मैनेजर तुरन्त मिलना चाहिए।

वहाँ कौन पुस्तकें कितनी हैं, यह सूचना नहीं मिलने से मैं घबरा रहा हूँ।

रामसेवक के साथ फाइनल हो गया। अब जो भी विलम्ब होगा उससे बिजिनस खराब होता जायेगा। इसलिए, तुम्हें मुस्तैदी के साथ एक अच्छा आदमी खोजना है।

क्या एक दिन के लिए तुम आ नहीं सकते ?

तुम्हारा
रामधारी

[१८०]

पटना-४
२०-६-६३

प्रिय भाई,

एक पत्र भोर में भेज चुका हूँ। उनसे बातें दूसरे राउण्ड में भी हुईं। मैंने उनके भ्रमों के निवारण की आखिरी कोशिश की, उनके मन में मेरी पोतियों के विवाह की चिन्ता देखी। मैंने कहा, परिवार पालकर जो बचा सको उसे मैरेज फण्ड में जमा करते जाओ। यह मेरी पसन्द का काम होगा। लगता है, विचार उनका बदल गया। अगर शान्ति हो गयी तो परसों मैं दिल्ली चला जाऊँगा।

तुम्हारा
रामधारी

[१८१]

मद्रास
१७-७-६३

प्रिय भाई,

यहाँ आते ही केदार का तार मिला कि रामसेवक को पुत्र पैदा हुआ है। इच्छा तो हुई कि तुरन्त घर लौट चलूँ, लेकिन, स्वाभिमान ने रोक दिया। जिस घर का द्वार अपने लिए बन्द करके आया हूँ वह द्वार भाग्य की इस अनुकूलता से भी नहीं खुलेगा।

रामसेवक को आशीर्वाद का तार भेज दिया है और केदार को पत्र लिख दिया है कि मैं उस घर में अब भी नहीं लौट सकता। हाँ, विभा को वापस लाना चाहें तो वे ले आयें।

आज मैं पाण्डिचेरी जा रहा हूँ। कल लौट आऊँगा। १९ की शाम को हवाई जहाज से हैदराबाद जाऊँगा। वहाँ २४ तक रहूँगा।

यहाँ का पता :—

SRI LEKHA
4, C. P. Rama Swamy Aiyar Road, MADRAS

शेष कुशल है।

तुम्हारा
रामधारी

[१८२]

११, केनिंग लेन, नई दिल्ली
७-८-६३

प्रिय भाई,

मैंने हैदराबाद से ज्ञान बाबू को एक पत्र लिखा था कि वे मुझे दिल्ली के पते पर यह लिख कर भेज दें कि उनका असली बकाया कितना पड़ता है। जनवरी में ज्ञान बाबू ने जो हिसाब भेजा था उससे बकाये की रकम ९-१० हजार निकलती थी। उसके बाद सेबोने कहा था कि रकम १५ हजार तक जा सकती है। फिर बाद को मुझे चिढ़ाने के लिए उसने १८ हजार बता दिया। अतएव, यह जरूरी है कि ज्ञान बाबू जरा कष्ट उठा कर मुझे पूरे बकाये की लिस्ट भेज दें। इस काम के लिए मैंने हैदराबाद से तुम्हें भी लिखा था। लेकिन, तुम सिर्फ साथ मिलकर रोना जानते हो। काम तुम्हारे लिए पहाड़ हो जाता है।

यह जानना भी जरूरी है कि संस्कृति के चार अध्याय पर कागज, छपाई, जिल्दबाजी, कवर का डिजाइन, कवर का कागज और छपाई मिलाकर कुल खर्च कितना पड़ा है और कितनी किताबें छापी गयी थीं। इससे यह पता लगेगा कि Per Copy प्रोडक्शन खर्च कितना बैठता है।

झगड़ा अब हममें से एक की मृत्यु के साथ ही रुकेगा और अपनी आयु सेबो को देकर मैं अब मरना चाहता हूँ। ऐसे में, उचित है कि ज्ञान बाबू खुद तकलीफ उठाकर वह सारी जानकारी मुझे दे दें जिससे उनका ऋण मैं अदा करके मरूँ।

आशा है, अब जो उत्तर आयेगा वह ढेलफेकौअल नहीं होगा।

तुमसे मैंने कहा था कि बेरी वालों से बात करो। संस्कृति के चार अध्याय का स्टॉक वे नकद खरीद लें और आगे के लिए किताब का अनुबन्ध मैं उन्हीं के साथ कर दूँगा। उनसे गम्भीरता से बात करके मुझे लिखो। काशी जाना पड़े तो वहाँ जाओ।

तुम्हारा
रामधारी

[१८३]

१५, किचनर रोड, नई दिल्ली
१६-८-६३

प्रिय भाई,

तुम्हारा १३/८ का पत्र कल मिला। जनवाणी के मुख से उसके बकाये का हिसाब जान लेने से मन आश्वस्त हो गया। इतना तो संस्कृति के चार अध्याय से ही पट जाना चाहिए।

अच्छा, अब मैं चिन्ता छोड़ता हूँ। जो कुछ होगा, धीरे-धीरे हो जायगा।

श्री माँ की कृपा।

तुम्हारा
रामधारी

[१८४]

१५, किचनर रोड, नई दिल्ली
२२-८-६३

प्रिय भाई,

राजपाल वालों ने एतराज किया कि छपाई की दर बहुत अधिक है। तुम ज्ञान बाबू से मुझे एक पत्र तुरन्त भिजवाओ कि दर यही ली जाती रही है।

राजपाल वालों को मैंने ५०% कमीशन का आफर दिया है जिससे १५ हजार नकद मुझे तुरन्त मिल जायें। Authority मैं जनवाणी को दूँगा कि पुस्तकें बेचकर आप अपना बकाया वसूल कर लें। यहाँ बात पक्की करके मैं कलकत्ते आ रहा हूँ।

रामसेवक अब यह कहते सुने जाते हैं कि उदयाचल से उनका कोई सरोकार नहीं है। साथ ही, उदयाचल का समर्पणनामा वे मुझे नहीं भेजते

हैं। अतएव, चक्रवाल प्रकाशन नामक नयी संस्था का जन्म अब ध्रुव हो गया है। शिवकुमार रिहाई पा गया। उसे मैंने लिखा है कि एक महीना दिल्ली रह कर वह Book-Trade की ट्रेनिंग ले ले और तब पटने में बैठकर प्रकाशन चलाये। अगर वह पटना रहना स्वीकार करले तो उसकी मदद से केदार का कारखाना भी कालक्रम में खड़ा हो सकता है।

केदार ने लिखा है कि रामसेवक बँटवारे पर आमादा हैं। अतएव, घर और पुस्तक के बँटवारे की एक योजना मैंने केदार को भेज दी है कि रामसेवक की मन्जूरी वह उस पर लिखवा ले। दूसरा आफर यह है कि उदयाचल वह मुझे समर्पित करे और खुद अपना अलग रोजगार खड़ा करे। मेरा ख्याल है, उसके पास एकाध लाख रुपये हैं। इतने के बिना ऐसा अहंकार नहीं उमड़ सकता था। मगर जो हो, उदयाचल अगर मेरे कब्जे में आया तो उसे अब पास भी फटकने नहीं दूँगा। यह नहीं हुआ तो नयी संस्था कायम होगी और वह उदयाचल को बन्द कर देगी। मेरा मिजाज अब बहुत अच्छा है। काम भी जोरों से कर रहा हूँ। चिन्ता की कोई बात नहीं।

१—तुमने जनवाणी के बकाये की जो लिस्ट भेजी है, उसमें शर्मा ब्लाक का बकाया शामिल है या नहीं? नहीं तो उसका बिल क्या होगा?

२—रघुनाथ दत्तो का कितना बाकी है?

३—चक्रवाल प्रकाशन का उद्घाटन नवम्बर में करना है। 'उजली आग', 'कोयला और कवित्व' तथा एक अंग्रेजी पुस्तक उसके पहले छप जानी चाहिए। क्या ये काम जनवाणी में समय पर पूरे हो सकेंगे या दो-एक जगह फैला दूँ?

४—चक्रवाल मासिक पत्र की घोषणा अभी करू या बाद में?

तुम्हारा
रामधारी

[१८५]

११, केनिंग लेन, नई दिल्ली
२८-८-६३

प्रिय भाई,

तुम्हारा पत्र भी २८ का है और उत्तर भी २८ की ही रात को लिख रहा हूँ।

राजपाल वाले कहते हैं कि लागत ४-५६ नहीं ४-५० पड़ती है। बँधी कापियाँ वे इसी दर पर लेंगे। खुली में एक रूपया प्रतिकापी कम कर देंगे जनवाणी उन्हें सारी कापियाँ भेज देंगी और उसकी कीमत वे जनवाणी को दे देंगे। बाद में बिक्री पर मुझे रायल्टी देंगे। रायल्टी की दर वे १६% चाहेंगे, मैं २० चाहता हूँ। पुस्तक के ऊपर वे राजपाल का नाम छापेंगे। बँधी कापियों पर उदयाचल का नाम बना रहेगा जैकेट पर राजपाल का नाम

अतिरिक्त रूप में छापा जाएगा। मगर, यह सब काम वे खुद दिल्ली में करेंगे। मुझे पता नहीं कि जैकेट भी छप गया है या नहीं। तुम लिखो कि इन शर्तों पर किताबें दी जानी चाहिये या नहीं।

केदार के कई पत्र आये हैं। उनके उत्तर में मैंने जो पत्र लिखे हैं उनमें से कुछ की प्रतियाँ तुम्हारे अवलोकनार्थ भेज रहा हूँ। पढ़कर लौटा दोगे। बटवारे का एक प्रस्ताव भी मैंने केदार को भेजा है। उसका जवाब अभी नहीं मिला है। कल व्रजशंकर जी का एक पत्र मिला कि रामसेवक उनसे बात करने गये थे। बातें उन्होंने क्या की, यह विशद रूप से ज्ञात नहीं है। पत्र से झलकता यह है कि तीन प्रश्न उन्होंने उठायें हैं।

१—उदयाचल में तो केदार का साझा हो जायगा, लेकिन केदार के लिए जो इण्डस्ट्री कायम की जायगी उसमें मुझे हिस्सा मिलेगा या नहीं ?

२—दिनकर जी को मैं उदयाचल सौंप चुका हूँ। वे उसे सम्भाल क्यों नहीं लेते ? (यानी १-४-६३ से मैंने जो स्टाक और देना-पावना की सूची माँगी थी, उसे वे नहीं देंगे। मुझे मिलेगा dead Stock और कर्जा।)

३—उदयाचल मैं तब चलाऊँगा जब वे उदयाचल से प्रकाशित एक भी पुस्तक किसी को नहीं दें।

इसमें केवल पहला प्रश्न सार्थक लगता है। बाकी सब शैतानी की बातें हैं। व्रजशंकर जी ने टिप्पणी नहीं भेजी है। केवल सलाह दी है कि दो एक दिनों के लिए आकर फरियौता करवा दीजिये।

मेरे मन में एक बात आयी है कि जब मैं चलूँ तब तुम्हें तार दे दूँ। तुम भी चलो और देखा जाय कि रास्ता निकलता है या नहीं। लेकिन, मुझे अभी बटवारे के प्रस्ताव की प्रतिक्रिया भी देख लेनी है।

मेरी तन्दुरुस्ती लौट आयी है। १५ यूनिट इनसूलिन लेकर सब ठीक चल रहा है।

उत्तर केनिंग लेन के पते पर भेजो क्योंकि अब मुझे अपने घर लौटना है। फिर मेरे नाम की चर्चा फैल रही है। लेकिन, मैं क्यू से अलग खड़ा हूँ।

तुम्हारा
रामधारी

पुनश्च :—

शिवकुमार, सचमुच, किसी काम का आदमी नहीं रह गया है। उसे कुछ खानगी पत्र मैंने रजिस्ट्री से भेजे, लेकिन, उत्तर उसका नहीं आया। दूसरा पत्र लिखा, उसका भी जवाब नदारद। यह नेष्ट आदमी है। अब सोचो कि प्रकाशन चलाना पड़ा तो आदमी कहाँ से आयेगा। घर तो खैर मथुरा वाला दिसम्बर तक बन जायेगा।

[१८६]

११, केनिंग लेन, नई दिल्ली
१३-१०-६३

प्रिय भाई,

रामसेवक ने ४ अक्तूबर को एक पत्र लिखा कि मैं अपने आप को आपके न्याय पर छोड़ता हूँ। उसके बाद मैंने उसे एक पत्र और दो तार भेजे। आज उसका पत्र मिला है जिससे मालूम होता है कि अब वह साझीदारी के लिए तैयार है। हाँ, अपनी कुछ कठिनाइयाँ बताता है। इसलिए, मैं आज ही पटने जा रहा हूँ। दिल्ली एक्सप्रेस से और कोशिश करूँगा कि दो दिनों में रजिस्ट्री करवा कर यहाँ लौट आऊँ। मेरे बारे में यहाँ जो चर्चा है उसका विरोध दक्षिण के एक महापुरुष ने किया है। अतएव, मैं उधर से निश्चिन्त हो गया हूँ। श्री मां जिस राह पर रखना चाहेंगी वही ठीक है।

तुम बुध दिन या बृहस्पतिवार को आलोक को फोन करोगे। वह जब तुम्हें बुलाये, तुम उससे अकेले में मिलो और चीज अपने पास रख लो। उसका उपयोग किस तरह किया जायगा यह बात मैं पटने से लिखूँगा या दिल्ली लौट कर। दिल्ली मैं २० तक अवश्य पहुँच जाता हूँ। तुम उससे कहना कि यह जनवाणी प्रेस के लिए है।

तुम्हारा
रामधारी

[१८७]

११, केनिंग लेन, नई दिल्ली
११-१२-६३

प्रिय भाई,

'कोयला और कवित्व' की पाण्डु लिपि भेज रहा हूँ। इसे तुरन्त पंचिंग में दे दो। दूसरी प्रति है नहीं, इसलिए, इस प्रति की हिफाजत का जिम्मा केवल तुम पर रहेगा। काम शुरू करवा दोगे तभी कापी ठीक रहेगी।

'उजली आग' का कोई भी फरमा नहीं आया है। बात क्या है?

बाल-साहित्य के चित्र तुम बनवा रहे हो या नहीं?

निहार बाबू से पत्र लेकर परसों तुम्हें भेज चुका हूँ।

तुम्हारा
रामधारी

[१८८]

भागलपुर
२३-५-६४

प्रिय भाई,

दिल्ली में तुम्हारा पत्र मिल गया था। पटना मैं २० की शाम को वापस हुआ। आते ही सुना कि १८ मई को रामसेवक बाबू अपने बाल-बच्चों को घर से निकाल कर उस घर में चले गये जिसमें वे प्रेस बिठा रहे हैं। १८ ता० को छविनाथ जी की पोती का विवाह था। छः बजे शाम को जब

शहर भर के लोग निमन्त्रण में इकट्ठे हुए (स्पष्ट ही, मेरा आँगन भरा होगा, मैदान भरा होगा) तभी रामसेवक बाबू ने रिक्शे बुलवाये और मेरी पुत्रवधू घर से निकल कर रिक्शे में बैठ गयीं। यह सब सुन कर मैं अनुद्विग्न ही रहा। दूसरे दिन रात को रामसेवक बाबू मेरे पास आये और बोले कि अब बटवारा हो जाना चाहिए। मैंने कहा यह रचनात्मक सुझाव है और मैं इसे स्वीकार करता हूँ। मगर, बाँटने को तो एक घर ही है। जैसे पसन्द पड़े, बाँट लो। मुझे दो दिन का समय है। इस बीच रजिस्ट्री भी करवा लो। उन्होंने कहा, तीन हिस्से लगेंगे तो हिस्सा मैं नहीं लूँगा। स्पष्ट ही, वे माँ-बाप को प्रश्रय देना नहीं चाहते हैं। कहा भी कि घर दो भाइयों के नाम से है, दोनों भाइयों के बीच बाँट दीजिये। मगर मैं नीचे रहूँगा और यहीं प्रेस चलाऊँगा। मैंने कहा, इसके मानी ये हुए कि केदार भी यहाँ नहीं रह सकते। तो अच्छा है कि तुम पूरा घर ले लो। नीचे प्रेस करो और ऊपर रहो। केदार से मैं Release लिखवा देता हूँ। उन्होंने कहा, मैं मुफ्त नहीं लूँगा। मैंने कहा, उदयाचल को मैंने Hindu undivided family की जायदाद घोषित कर दिया है। उसमें तुम्हारा जो हिस्सा है उसे तुम केदार के नाम में Release कर दो। वे यह बात मान गये लेकिन कहा यह कि कलक्टरेट जाकर कातिब मुझे ढूँढ़ना होगा, मजमून मुझे बनवाना होगा आदि-आदि। मैंने कहा, जरा सोचो कि यह काम मुझसे हो सकता है या नहीं। वे चले गये। दूसरे दिन मैं उनकी राह देखता रहा, वे नहीं आये। मैंने समझा, यह भी पीस ऑफेंसिव है।

लेकिन, कल मैंने तीन कमरों में अपने मतलब के सामान बन्द करके घर छोड़ दिया। विभा और मालकिन साथ आयी हैं। केदार को ससुराल में रहने की सलाह दे दी है। गाय को सोरमपुर भेज दिया। टेलीफोन काट कर मथुरा वाले घर में लगाने को पत्र लिख दिया है।

बटवारा वे कर लें, यह अच्छा है। मगर, बटवारे के पहले उन्हें उदयाचल पर किसका कितना बकाया है, यह लिखकर दे देना होगा। केदार के नाम से उन्होंने बीमा करवाया था, वह कागज दे देना होगा। बीमा चालू करवा कर उससे कर्ज लेना होगा जिससे केदार के लिए अलग मकान बन सके। इसके सिवा, उन्हें यह भी लिखना होगा कि उदयाचल पर वे कभी भी कोई दावा नहीं करेंगे, न दावा उनकी औलाद की ओर से किया जायगा। ये शर्तें उन्हें मान्य नहीं होंगी, इसीलिए वे बात फेंक कर चले गये।

विवाह १ जुलाई को अवश्य होना है। तिलक १५-२० जून के बीच जायगा। आपका यहाँ १५ दिन रहना अनिवार्य है। तिलक के दिन से ही रहिये। उसके पूर्व मुझे कलकत्ता आना है। आपको अनुकूल हो तो ३० मई को आ सकता हूँ। पत्र पाते ही तार दीजिये।

विशेष यहीं हैं। विनता को शीघ्र बुलाने की चेष्टा में हूँ। शिवकुमार पटना नहीं पहुँचे हैं।

चक्रवाल प्रकाशन योजना के अनुसार चलेगा। रामसेवक बाबू उसी को गड़बड़ करने के लिए चाल चल रहे हैं। विन्दो से मैंने कह दिया है कि मेरा कोई भी मित्र या सम्बन्धी अब बीच-बिचाव मत करे। रामसेवक चाहें तो कोर्ट में नालिश कर दें। अब उनके साथ समझौते की कोई भी कोशिश मेरी ओर से नहीं की जायगी।

आपका

रामधारी

[१८९]

पटना

प्रिय भाई, २६-८-६४

मैं यहाँ परसों रात में आया। आज भागलपुर जा रहा हूँ। कल बटवारे की रजिस्ट्री हो गयी। पूरा घर रामसेवक को मिला। उदयाचल केदार को मिला और चक्रवाल मुझे। मैं कोई हिस्सा नहीं लेता तो रजिस्ट्री नहीं हो सकती थी। अब मैं चक्रवाल केदार को दे दूँगा। प्रकाशन उदयाचल ही रहा। एक लाख का घर देकर केदार को इतना ही फायदा हुआ। अब दूसरा घर बनाने की चिन्ता सवार हुई है।

इस समय तुमसे भेंट करना जरूरी है। मैं ३० ता० रविवार को भागलपुर से चलकर ३१ के भोर कलकत्ता पहुँचना चाहता हूँ। तुम भागलपुर तार से सूचित करोगे कि मेरा यह कार्यक्रम रहे या नहीं।

तुम्हारा

रामधारी

[१९०]

२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली

प्रिय भाई, १९-१२-१९६६

प्रकाश के बारे में तुम्हारा पत्र मिला। मैं यहीं हूँ।

मेरा पत्र मिला होगा। आज डाक्टर मदनमोहन सिंह ने कह दिया कि रामसेवक की बीमारी का एलोपैथी में कोई इलाज नहीं है। उसी समय से शहर के वैद्यों का पता लगा रहा हूँ। नींद नहीं आयी। इसलिए गाढ़ी रात में तुम्हें यह पत्र लिख रहा हूँ।

अब क्या होगा? रामसेवक और उसके बाल-बच्चों को कौन देखेगा? क्या केदार उन्हें अपने पास बुला लेगा और उनका घर किराया लगा देगा? लेकिन क्या रामसेवक और उसकी पत्नी बाकी लोगों को शान्ति से जीने देंगे? अगर अलग रहना हो तो वे लोग किसके सहारे जियेंगे?

(सारी जवानी भाइयों का बोझ ढोने में निकल गयी। क्या बुढ़ापे में रामसेवक के लिए मुझे बैल की तरह खटना पड़ेगा? क्या भगवान ने मेरे लिए फुरसत लिखी ही नहीं थी?)

और अगर यही होना था तो फिर दूसरा घर बनाने की जहमत मेरे माथे क्यों ठोंकी गयी? घर नहीं बनाना पड़ता तो रामसेवक की दो बेटियों के ब्याह लायक पैसा मेरे पास होता। मगर, मुझे ऐसी परिस्थिति का सामना करना पड़ रहा है जिसमें पैसे पास में नहीं हैं और बोझ बहुत बड़ा माथे पर आन पड़ा है। मैं भाग्य के सामने आज पराजय स्वीकार करता हूँ। बहुत लड़ा, मगर, अब लड़ाई नहीं चल सकती।

तुमने मेरे आत्मदाह को इन्च-इन्च देखा है। तुमने यह भी देखा है कि पीठ दिखला-दिखला कर भी मैंने लड़ना नहीं छोड़ा। मगर, आज श्रीमाँ को मैंने लिखा है कि अब मुझे गार्हस्थ्य से अलग खींचिये। संसार के प्रति मेरी विरक्ति पूर्ण हो चुकी है। कौन किसका भाग्य विधाता है? सब कुछ अदृष्ट करता है। मगर बेचारे केदार को मैं कीचड़ में छोड़कर जाऊँगा। मेरा यह भी ख्याल है कि मेरे मंच से हटने के बाद रामसेवक अच्छा होने लगेगा। रामसेवक का इलाज एक ही है—मेरी मृत्यु या मेरा गार्हस्थ्य-त्याग। तुम्हारा

रामधारी

पुनश्च :—

इधर मालकिन को विश्वास हो गया था कि मैं किसी का अत्याचार सह कर गार्हस्थ्य में न रहूँगा। इसलिए, वह ठीक से रह रही थी। मगर जभी उसने सुना, बीमारी ला-इलाज है, उसका मिजाज तनने लगा है यानी अब भागो तो देखूँ।

[१९१]

५, सफदरजंग लेन, नयी दिल्ली

प्रिय भाई, १६-८-६७

तुम्हारे दो पत्र मिले। मैं जिस जहाज से दिल्ली उतरा उसी जहाज से कपिला वात्स्यायन अमेरिका चली गयी। शायद १५ दिन बाद लौटेंगी। प्रकाश के बारे में आज कल में मिनिस्ट्री में पूछताछ जरूर करूँगा। फिर खबर भी दूँगा।

आज तुम्हारा अन्तर्देशीय पत्र मिला। केदार से फोन पर पूछ कर यह पत्र लिख रहा हूँ। वह आज ही बैंक गया था। उसने मुझे बताया है कि १९७४ रु० का चेक भुन गया है। मैं केदार का अविश्वास नहीं करता। तुम कागजवाले के ध्यान में यह बात लाओ और बाकी बिल मुझे भेज दो।

ऐसा कैसे हो सकता है कि पटना का बैंक कहे कि पेमेंट हो गया और दत्त कहें कि चेक डिजानर हो गया है ?

छात्र-संस्करण की जिल्दबन्दी केदार पटने में करायेंगे। अतएव फरमे और कवर उन्हें भिजवा दो। पुस्तकालय संस्करण की बँधाई कलकत्ते में होगी। उसके लिए केदार ने आज २५० रु० पेशगी स्वरूप ज्ञान बाबू को मनीआर्डर से भेज दिये हैं। बाकी बिल वे जिल्दबन्दी हो जाने पर तुरन्त चुका देंगे। यह इन्तजाम कोई खराब इन्तजाम नहीं है।

H. M. T. की घड़ी तो यहाँ मिल जानी चाहिए अगर स्टाक खाली नहीं हो। कल मैं इसकी पूछताछ करूँगा। जितना शीघ्र होगा, घड़ी तुम्हें भेज दूँगा। मेरी ओमेगा चोरी हो गयी। मैंने भी मॉरिशस जाने के पहले H. M. T. की ही घड़ी खरीद ली है।

सुरेन्द्र के लिए साहुओं के यहाँ तो अब मैं कोई रास्ता नहीं देखता। उसका Particular टाइप करवा कर भेज दो तो, दिल्ली क्लाथ मिल में कोशिश करूँ। नौकरी मिलने में देर होने से उसकी डिगरी का मान घटता जा रहा है। केन्द्रीय सरकार में वह कहाँ पर आवेदन दे रहा है ? लिखोगे।

मॉरिशस यात्रा में तो मुझे हर रोज सीने का दर्द झेलना पड़ा। थकावट हर घड़ी बनी रही। यहाँ आकर अर्धजीवित अवस्था में विश्राम कर रहा हूँ। शायद यह दर्द ही मेरा खटोला बनेगा। अब मैं देश या विदेश भ्रमण के काबिल नहीं रहा।

पटना जाना चाह रहा हूँ, मगर दुलहिन का मास पूरा चल रहा है। असमंजस में जा नहीं पा रहा हूँ।

तुम्हारा

रामधारी

[१९२]

५, सफदर जंग लेन, नई दिल्ली

प्रिय भाई,

२०-२-६८

शिवकुमार का एक पत्र आया है। उसे तुम्हारे अवलोकनार्थ भेज रहा हूँ। अगर तुम एक हजार भी दे सको तो एक हजार और मिलाकर उसे दे आऊँ। मकान बनाने की मुसीबत के कारण मैं और उदयाचल दोनों प्रायः शून्य रह रहे हैं। तुम इस स्थिति पर साहस के साथ विचार करो। बेचारा बड़े कष्ट में है।

उदयाचल से रुपये ज्ञान बाबू को शायद गये नहीं। इसीलिए वे प्रूफ नहीं भेज रहे हैं। मैं भी सिर नीचा होने के कारण तकाजा नहीं कर सकता।

मिजाज बहुत ठीक नहीं हैं।

तुम्हारा

रामधारी

[१९३]

५, सफदर जंग लेन, नई दिल्ली
१२-३-६८

प्रिय भाई,

तुम्हारा पत्र मिला। अप्रैल २० से पूर्व ही तुम एक हजार का जुगाड़ कर दो। बेचारा भारी मुसीबत में फँसा है। उसका यह सोचना ठीक ही था कि मेरे पास रुपये होंगे। किन्तु, कल्लो के लिए जो जमा किया है वह Fixed Deposit में बन्द है। बाकी सभी आमदनी मकान खाता जा रहा है और पाँच हजार बराबर इसलिये बचाकर रखता हूँ कि माँ अतिवृद्धा हैं। लड़के का हाल देखकर तो मिजाज घबरा रहा है। कैसे पार लगेगा?

इस वर्ष लग्न शायद ९ मई तक ही है। मुझसे मॉरिशस जाने का अनुरोध सरकार ने नहीं किया। सम्भव है २७ अप्रैल को दो सप्ताह के लिए जर्मनी जाना पड़े। शिवकुमार के लिए प्रबन्ध उसके पूर्व हो जाना चाहिए।

जिस जैन को पत्र भिजवाने की बात सूझी थी, उसे पत्र नहीं भिजवा सका हूँ। ये लोग बड़े फार्मल हैं।

मेरा स्वास्थ्य किसी तरह चल रहा है। ज्ञान बाबू को नमस्कार कहना।

३१ मार्च को रामसेवक की वर्षी पड़ेगी। केदार को बुलवाकर यहीं निर्वाह कर लेना है।

तुम्हारा
रामधारी

[१९४]

नई दिल्ली-११
२८-१-६९

प्रिय भाई,

तुम्हारा एक कार्ड मिल गया था। सभी खरीदगी यहीं हो गयी अथवा हो जायगी। कलकत्ते आने का सुयोग नहीं मिल सका। शरीर काफी थका हुआ और थोड़ा असमर्थ है। फिर भी इधर उधर जाना ही पड़ता है। हर यात्रा के अन्त में सोचता हूँ. अब बाहर नहीं निकलूँगा। मगर विश्राम के बाद फिर गलती कर बैठता हूँ।

हम लोग ७ फरवरी को पटना चले जायेंगे। तिलक १८ को जायगा और बरात २४ को आयेगी। बरात के ठहरने के लिए राजेन्द्र नगर का कमूनिटी हाल रिजर्व करवा लिया है। बरात २५ की शाम को लौटेगी। वर-कन्या २८ को रुखसत होंगे।

तुम पटना कब पहुँचते हो, यह लिखोगे।

तुम्हारा
रामधारी

[१९५]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
२३-९-६९

प्रिय भाई,

विनता अभी तक हार मानने को तैयार नहीं है। वह और डाक्टरी सहायता लेना चाहती है। कलकत्ते में जिन डाक्टर से मेरे सचिव श्री राम प्रकाश पुरी की दोस्ती है, उन डाक्टर ने पुरी को लिखा है कि वे इस केस को देखना चाहते हैं। उन्हें कोई खास इलाज मालूम है जिसे वे अचूक समझते हैं। उन्होंने पुरी को जो चिट्ठी लिखी थी, उसकी कापी मैंने विनता को भेज दी थी। विनता ने अपना सारा हाल डाक्टर खट्टर को लिख भेजा है। उचित यह है कि तुम डाक्टर खट्टर से मिलो और वे जो कुछ राय दें उसे विनता या विशेष को लिख भेजो। अगर विनता के कलकत्ते जाने की जरूरत हो, तो यह प्रोग्राम भी तुम तय कर दो और मुझे तथा विनता को सूचित करो।

शेष कुशल है। जरा 'लोकदेव नेहरू' के फाइनल रूप को देख लेना, किताब १९६७ के अन्त में प्रेस को दी गयी थी। अब १९६९ का अन्त समीप है। दूसरी किताब में चित्र चार लगेंगे। छपाई के समय देख लो, नहीं तो गलती हो सकती है। पहले फरमे के प्रूफ में चित्र नहीं था। सन्त ज्ञानेश्वर का चित्र आरम्भ में ही लग जाना चाहिए। उत्तर देना।

डाक्टर खट्टर का पता :—डॉ० रोशन लाल खट्टर, राष्ट्रीय फार्मेसी
१, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता

लोकदेव नेहरू का मूल्य ६ रु० कर देना चाहिए।

तुम्हारा
रामधारी

[१९६]

नई दिल्ली
१७-४-७०

प्रिय भाई,

साधु जी से भेंट हुई थी। मगर उन्होंने यह नहीं बताया कि विवाह कब होगा। क्या तिथि अभी निश्चित नहीं हुई है ?

मैं कलकत्ते आने की बात सोच रहा हूँ। १५ मई तक आऊँ तो ठीक रहेगा या नहीं ?

मेरा स्वास्थ्य किसी तरह चल रहा है। मधुमेह शायद ठीक ही है। इधर जाँच नहीं करवायी है। रक्तचाप एक दो मास पूर्व दिखलायी पड़ा था। केवल अनजाइना का दर्द मद्धिम रूप में रोज हाजिरी देता है।

विजय बाबू चले गये, यह तुमने सुना होगा। अब हम लोगों की बारी है। अब प्रभु, पार करो मोरी नैया।

तुम्हारा
रामधारी

[१९७]

नई दिल्ली
२-३-७१

प्रिय भाई,

मैं १४ को दिल्ली से बाहर गया और २६ फरवरी को लौटा। इसी बीच तुम्हारा पत्र आया। तुम्हारे नातेदार मुझसे मिल नहीं सके, न तुमने मामले की पूरी जानकारी दी है। ऐसे में पैरवी करना फिजूल है। माथुर साहब से सहयोग तो मिल सकता था।

मैं इस बार गाँव भी गया था। लौटती तुम्हारे घर पर भी गया था। ब्रह्मदेव बाबू से भेंट हुई थी।

अभी स्वामी मुक्तानन्द जी दिल्ली आये थे। उनकी संगति में तीन दिन बड़े आनन्द से कटे।

तुम जैसी स्थिति में हो, वह चिन्तनीय है। चिन्ता होती भी है। मगर तुम पत्र नहीं लिखते। कुशल समाचार भेजते रहना चाहिए।

तुम्हारा
रामधारी

[१९८]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
२४-६-७१

प्रिय भाई,

तुम्हारा पत्र मिला। बच्चों को २९ जून को तूफान से पटना भेज रहा हूँ। मैं १३ जुलाई तक जाऊँगा। मुझे चार महीनों की छुट्टी मिली है। घर १३ जुलाई तक मेरे पास है।

मध्यप्रदेश के एक बुजुर्ग दोस्त कहते हैं कि जबलपुर चलिये। मगर मुझे इस आफर के बारे में उत्साह नहीं है। वाइस चान्सेलरी की झंझट में अब पड़ना नहीं चाहता। जबलपुर पटना की लाइन पर भी नहीं है। यह तीन वर्ष का वनवास होगा।

मेरे जीवन के क्रियाशील वर्ष अब पांच सात से ज्यादा नहीं है। इन वर्षों को शुद्ध साहित्यिक कामों में लगा सकूँ, तो मुझे सन्तोष होगा। अप्रैल में अगर राज्यसभा में पहुँच जाऊँ तो वह वाइस चान्सेलरी से अच्छा होगा।

जिन यह वेदन निर्मई भला करेगा सोय।

तुम्हारा
रामधारी

[१९९]

३१, सरदार पटेल रोड, नई दिल्ली
३१-१२-७३

प्रिय भाई,

दो दिनों से ३१ नम्बर में नहीं हूँ। ११४ नम्बर मालचा मार्ग में हूँ। कई दिन बाद A-B, २ पंडारा रोड चला जाऊँगा। तुम उत्तर ३१ सरदार पटेल रोड पर ही भेजना। बनवारी के लिए पत्र साथ है। उन्हें दे देना। जो खुले रुपये मेरे पास हैं वे काफी भी हो सकते हैं या सम्भव है ५-६ हजार और लग जाँय।

इस वार पटने में जब तक रहा पूर्ण रूप से शान्त रहा। आज आलोक ने कहा, जैन धर्म का उपदेश यह है कि गृहस्थ प्रतिहिंसा-जन्य क्रोध से बचे। मैं इस क्रोध से बचना चाहता हूँ। किन्तु परिवार से अलग हो जाना तो प्रतिहिंसा नहीं है। मेरे लिए अब और कोई गति नहीं है। तुम और सच्चिदा २७ जनवरी तक दिल्ली आ जाओ तो दिलासा रहेगा। यहाँ मालचा मार्ग में तुम ठहर सकते हो गरचे मैं पाँच मील दूर रहूँगा। विशेष बाबू नहीं आयेंगे।

धन में मुझसे बड़े हैं।

तुम्हारा
रामधारी

श्रीमती उमादेवी भुवालका

[२००]

नई दिल्ली

श्री उमा जी !
२५-४-५३

आपने अस्वस्थ रहते हुए भी मुझे विदा देने को हवाई अड्डे तक आने का कष्ट किया, इसके लिए धन्यवाद देता हूँ।

जब से आया हूँ, आपकी बीमारी की चिन्ता में हूँ। भगवान आपको पूर्ण स्वास्थ्य दें। इन्द्रकुमार जी व्यस्त रहते हुए भी बराबर आपके स्वास्थ्य की चिन्ता में रहते हैं। आप उनके उपदेशों को मानकर चलिए और डाक्टर से सहयोग कीजिये। बीमारी की बात भूल जाइये, खूब खाइये और खूब आराम कीजिये। आपके छोटे-छोटे तीन बच्चे हैं। उनके लिए आपको अभी मजबूत होकर जीना है।

ज्यादा क्या कहूँ? आप खुद बुद्धिमती हैं।

आपके स्वास्थ्य के लिए भगवान से प्रार्थी हूँ।

आपका
दिनकर

[२०१]

डाकघर - सिमरिया, जिला मुंगेर
१४-६-५३

प्रिय श्री उमा जी !

सप्रेम वन्दे ।

कल अचानक आपका पत्र यहाँ दिहात में मिला। मुझे सानन्द आश्चर्य हुआ। मेरी दो भतीजियों का व्याह है। उसी सिलसिले में यहाँ गाँव में आया हुआ हूँ और अभी ३० जून तक यहीं रहूँगा। आपने बड़ा अच्छा किया कि यहाँ रहते मेरी याद की।

धन्यवाद।

मैं आपको या भाई इन्द्रकुमार को भूलूँ, यह कैसे हो सकता है? असल में, आपका जब पत्र मिला तब मैं दिल्ली से तुरन्त रवाना हो गया और उसके बाद ऐसा समय कम मिला जबकि दो रात एक ही स्थान पर सो सकूँ। इसीलिए, उत्तर नहीं जा सका। और कोई वात नहीं थी। यह भी सोचता था कि पत्र जरा जम के लिखूँ। मगर, उसके लिए समय नहीं मिला। फिर भी विलम्ब के लिए क्षमा माँगता हूँ। आशा है, आपका सहज उदार हृदय, जो सदैव क्षमा करता आया है, अब भी क्षमा करेगा।

हमलोगों की काउन्सिल का सेसन अब १७ अगस्त से शुरू होनेवाला है जिसके लिए सम्भवत: मैं १२ अगस्त को दिल्ली के लिए प्रस्थान करूँगा। किन्तु, विवाह की झंझट ३० जून को खत्म हो जायगी और मुझे उम्मीद है कि मैं १०-१२ जुलाई तक पटने चला जाऊँगा जहाँ मुझे रहना है।

आप अगर अगस्त तक फर्रुखाबाद रहनेवाली हों तो वैसी सूचना देने की कृपा कीजिये जिससे मैं दिल्ली जाते हुए फर्रुखाबाद उतर कर आपसे मिल लूँ। मद्रास तो बहुत दूर पड़ जाता है। आप उत्तर आ गई हैं तो आपसे मिल लेना धर्म है। फिर मद्रास न जाने कब जा पाऊँगा। अगर आपकी सुविधा यह हो कि मैं जुलाई के ही दूसरे तीसरे सप्ताह में आपसे मिलूँ तो वैसा भी लिखिये।

कविता का काम तो आजकल वन्द पड़ा है। विवाह की झंझट बड़ी होती है। उसी झंझट में पड़ा हूँ। निमन्त्रण जा रहा है। एक पत्र लिख कर मेरी वच्चियों को आशीर्वाद दीजिये।

भाई इन्द्रकुमार जी अगर फर्रुखाबाद आवें—आनेवाले हों तो खबर दीजिये। उनसे मिलने की उत्सुकता बहुत है। वच्चे कहाँ हैं, कैसे हैं? दोनों को मेरा बहुत-बहुत प्यार और आशीर्वाद कहिए। मेरे बच्चे आनन्द से हैं।

आपने अपने स्वास्थ्य का हाल नहीं लिखा। फर्रुखाबाद स्वास्थ्य सुधार के लिए आई हैं या माताजी से मिलने के लिए? वहाँ कब तक रहने

वाली हैं, सो जरूर लिखिये। स्वास्थ्य पर ध्यान दीजिये। तन्दुरुस्ती से बढ़ कर और कोई चीज नहीं है।

अपनी माता जी से मेरा प्रणाम कहिए। अगर आ सका तो उनके दर्शन करूँगा।

उत्तर देने का पता ऊपर लिखा है।

आपका
दिनकर

[२०२]

चौधरी टोला, पटना-६
६-२-५४

प्रिय उमाजी,

हमलोग सानन्द आ गये। आपने बीमारी की हालत में भी हमलोगों की जो देखभाल की उसके लिए हम सब कृतज्ञ हैं। सिर्फ एक ही काम आपने गलत किया कि साड़ी का छोटा उपहार अस्वीकृत कर दिया। मैं तो इन्द्रकुमार जी पर फरमाइश करने में भी संकोच नहीं मानता और आप उपहार लेने में भी संकोच करती हैं। यह झगड़ा जमकर अब अप्रैल में किया जायगा।

एक बात कह दूँ उसे आप ध्यान में रखें। आपका शरीर ईश्वर की कृपा से अब रोगरहित हो गया है। मन से भी बीमारी का भय हटा दीजिये और खूब खाइये, खूब घूमिये। इतने से ही आप बलवती हो जायेंगी। दो मील रोजाना घूमने से आपका तन और मन दोनों ठीक रहेगा।

मेरी पत्नी आपको आशीर्वाद और बच्चों को प्यार भेजती हैं।

शेष कुशल है।

आपका
दिनकर

श्री उर्मिलाचरण गुप्त

[२०३]

५२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
१४-११-५९

प्रिय उर्मिला,

आशीर्वाद।

दद्दा जब आने लगें तब याद करके मेरी पेलिकन कलम उनके साथ कर देना।

नवीन जी की हालत सुधरी है, लेकिन अभी उठे नहीं हैं। वाणी में काफी सुधार हुआ है।

तुम्हारा
दिनकर

[२०४]

नई दिल्ली
२५-४-५३

प्रिय भाई,

तुम्हारा पत्र कल मद्रास से लौटने पर मिला। मद्रास में फिल्म बोर्ड की मीटिंग थी।

यह तुम्हारा स्नेह है कि मेरा छोटा-सा सम्मान भी तुम्हें उत्साह देता है। यह फ़क़त मेम्वरी है। सवैतनिक अवैतनिक कुछ भी नहीं। हाँ, मीटिंग देखने पर लगा कि जवाबदेही कम नहीं है।

गोरख बाबू, मिश्रजी और कार्यीजी के बारे में तुमने जो कुछ भी लिखा वह बहुत दुःखदायी है।

मैं आज चला, कल आओगी तुम
परसों सब संगी-साथी,
दुनिया रोती-धोती रहती
जिसको जाना है जाता है
भगवदिच्छा।

तुम्हारा
दिनकर

[२०५]

१८७, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
८-९-५४

प्यारे भाई,

पत्र मिला। तीन दिनों से फिल्म जाँचने के काम में बेगार पकड़ा गया हूँ। आज पामपोश देखा। कश्मीर की छवि देखकर तबीयत लहालोट हो गई। तुम लड्डू खा रहे होगे। यहाँ लड्डू का फोटो ही नसीब है।

जवानी सौन्दर्य की लहरों पर तैरती है। सच पूछो तो तैरने की उमंग अभी मेरी भी मरी नहीं है। किन्तु, जवानी मर गई। जीवित रहती तो दौड़ कर श्रीनगर नहीं जा पहुँचता? वहाँ फूलों की जो कविताएँ तुम दोनों लिख रहे होगे उनकी कल्पना मैं कर रहा हूँ। मगर, भाई, रंग और खुशबू दोनों लाना। नहीं तो मैं माफ नहीं करूँगा। कविता की फसल खूब उपजी है न?

तुम्हारा ही
दिनकर

[२०६]

५२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
१९-२-५५

प्रिय भाई,

कविताओं का चुनाव कल नहीं हो सका। द्विवेदी जी संकट में हैं कि कैसे यह चुनाव हो जाय। पन्तजी ने कविताएँ भेजी; पर कई मित्रों ने नहीं भेजी। कुछ राय दे सकते हो कि यह काम कैसे हो ?

प्रभात जी, रामदयाल, जानकीवल्लभ, रुद्र, तुम, इनकी १९५३ में प्रकाशित कविताओं में जिन्हें तुम जाने योग्य समझो उनकी प्रतिलिपियाँ मुझे भेज दो। अनुमति माँगने का काम अकादेमी वाले करेंगे। केसरी जी ने कविता भेज दी है। रामदयाल की हिमालय वाली कविता अच्छी थी। तुम्हारा क्या विचार है ?

Bibliography में जो सूचना यहाँ है उसमें तुम्हारी और रुद्र की सभी पुस्तकें नहीं हैं। १९५४ से पूर्व तुम्हारी और उसकी कौन कौन पुस्तकें निकली है ?

शेष कुशल है।

तुम्हारा ही
दिनकर

[२०७]

५२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
१५-३-५५

प्रिय भाई,

७-३ का पत्र आज मिला। न जानें, क्यों। मैं न तो नाराज हूँ, न तुमने नाराजी का कोई काम किया है। दोनों पत्र मिल गये। एक तो मेरे पत्र के उत्तर में ही था। हाँ, तुम्हारा एक पत्र बिना उत्तर के था। स्वास्थ्य ढीला हो गया है। इसलिए, चूक हो जाती है। क्षमा करो। मैं १९ की शाम को पटने आ जाऊँगा। तब भेंट होगी ही। भगवान तुम्हारी यात्रा को सफल करें।

तुम्हारा ही
दिनकर

[२०८]

५२ सा-एवेन्यू, नई दिल्ली
२४-४-५५

प्रिय भाई !

पत्र मिला। दरखास्त दे दो। न होगा तो रुपये बाद को भेजे भी जा सकते हैं।

कल एक दुर्घटना हो गई। हमारे बड़े भाई का एक नाती यहाँ है। कल शाम को कुछ हम उम्र लड़कों ने उसकी बाँह तोड़ डाली। चमड़ी फट

गई, आर्टरी टूट गई, हड्डी निकल गई, बहुत रक्त बहा। तब से उसे लेकर हम अस्पताल में हैं। आज डॉ० नवाब को फोन किया था। एक्सरे से ज्ञात हुआ कि सेटिंग ठीक है। उँगलियों में गति है, पर गर्मी कम है। सूजन भी है। लड़का अभी तक बर्राता है। इस कष्ट-कथा के लिए क्षमा करोगे। अब पटने में तुम्हारे दर्शन जाने के पहले होंगे या नहीं, नहीं कह सकता।

भगवान तुम्हारी यात्रा सफल करें।

तुम्हारा
दिनकर

[२०९]

५५, साउथ एवेन्यू नई दिल्ली
१४-११-५५

प्रिय भाई,

निमन्त्रण बल्लातोल को भी गया था। किन्तु, वे वृद्धता के कारण नहीं जायेंगे। मैथिलीशरण जी भी बीमार हैं। अतएव, उत्तर से मैं एकाकी चला और दक्षिण से कोई गया तो गया, नहीं तो यात्रा निर्गुण रहेगी। २० नवम्बर को तीन बजे दिन में जहाज छूटता है। आज कपड़े बनने दे दिये। मगर, अकेला जाना अच्छा नहीं लगता है। किन्तु, तुमने इतनी मालाएँ वहाँ लदवा दीं कि अब जाना ही पड़ेगा।

तुम्हारा ही
दिनकर

[२१०]

कैरो-बम्बई का आकाश मार्ग
२७-१२-५५

प्रिय भाई,

तुम्हें वारसा से लिखा हुआ मेरा पत्र मिला होगा जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय कवि-सम्मेलन का हाल लिखा था। उस समय उत्साह में था, अतएव दिल खोलकर अपनी बड़ाई लिख गया जिसके लिए लज्जित हूँ। किन्तु, लज्जा की वैसी कोई बात भी नहीं है। कहीं न कहीं अपना हृदय खोलकर चित्त को शान्ति मिलती है।

वारसा से मैं क्रैकोव गया और वहाँ से पोजनन। दोनों नगरों के साहित्यिकों ने मेरा निश्छल स्वागत किया और दोनों नगरों में मैंने भारतीय संस्कृति पर भाषण दिये। पोजनन से वारसा ६/१२ को लौटा। वहाँ बर्लिन रेडियो का आदमी टाक लेने आया था। मैंने भारतीय कविता पर टाक दिया जो २२/१२ को ब्राडकास्ट हुआ होगा। वारसा से ८/१२ को मैं लन्दन के लिए रवाना हुआ। रास्ते में प्राग देखा और रात में उड़ान के स्थगित हो जाने के कारण ब्रुसल्स में ठहरा। ब्रुसल्स छोटा-सा पेरिस है। ९/१२ को लन्दन पहुँचा और वहाँ १४/१२ तक रहा। वीरेन्द्र बराबर साथ

रहा तथा ओमप्रकाश ने भी काफी सेवा की। किरण और आलेहसन भी साथ रहे और उन्होंने B.B.C. के लिए कई प्रोग्राम लिये। हिन्दी परिषद् की भी सभा हुई जो तीन-चार घंटे चलती रही।

१५ को मैं लन्दन से जिनेवा आया और १७ की रात में वहाँ से ट्रेन से पेरिस गया। २१ को ट्रेन से ही पेरिस से फिर जिनेवा आया और २२ को जिनेवा से उड़ गया। रोम उतरने का प्रोग्राम था किन्तु कुछ तो थकावट से और कुछ अन्य कारणों से रोम नहीं उतरा। सीधे कैरो चला आया। आज कैरो से बम्बई जा रहा हूँ। दिल्ली ३०/३१ तक पहुँचूँगा और पटना ७/१ तक। पटना चलने के पूर्व तुम्हें तार दे दूँगा। लेकिन, उसके पूर्व तुम भी नीचे लिखे पते पर मुझे एक पत्र लिखो :—

55, South Avenue, New Delhi

शेष कुशल है। कैरो रेडियो ने भी दो इन्टरव्यू और एक वार्ता ली है। वार्ता का विषय है composite culture of India and the Arab contact.

वे लोग भारत में भी घोषणा करेंगे कि ब्राडकास्ट कब होगा।

यूरोप देखने के बाद प्रजा सत्ता और वैयक्तिक स्वातंत्र्य के विषय में मेरा विश्वास बढ़ गया है। पोलैंड में जो धक्का लगा था वह क्षणिक निकला। यह भी हुआ कि जिनेवा से आते समय जहाज कैरो में नहीं उतर सका। अतएव, वह लेबनन की राजधानी Beirut चला गया। वहाँ हमलोग २० घंटे रहे। एक देश विना विजा के ही देख लिया।

तुम्हारा ही
दिनकर

[२११]

५२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
६-९-५६

प्रिय भाई,

तुम्हारा ४-९ का पत्र आज मिला। चोरी कुछ खास नहीं हुई है, चोर केवल दो जोड़ जूते ले गया जो चालीस पचास रु० के रहे होंगे। और उसकी उदारता देखो कि एक जोड़ नया बूट उसने छोड़ भी दिया। कागज-पत्र और कपड़े उलटा-पुलटा कर, छींट-छाँट कर छोड़ गया था। कागज या किताबें गायब न हुईं। यह परमात्मा की कृपा है। किन्तु, चार ताले तोड़े उसने। अब तक कुछ भी पता न चल सका है कि चोरी क्यों की गयी।

मधुमय के विषय में छुरछुरी वाली बात पर लज्जित मत करो। मैंने जो रिमार्क किया होगा, उसके बाहरी रूप पर किया होगा। इस शब्द का प्रयोग मैं मिलते-जुलते कई अर्थों में करता हूँ और सभी अर्थ अहिंसक होते हैं। उस पर मेरी लिखित सम्मति ही मेरी सुचिन्तित और निष्पक्ष सम्मति है।

'रीता' की प्रति अभी वहीं रखो। ३० तक ले लूँगा और कुछ न कुछ करूँगा भी।

यात्रा विवरण का एकाध अध्याय भेज दो जिसे दिखला कर बातें की जा सके। वैसे तो बातें उड़ी-पुड़ी हो जायँगी।

मेरा हाल यह है कि आते ही चक्रवाल के लिए एक लम्बी भूमिका लिखने में लगा। किन्तु, वह काम आगे नहीं बढ़ सका। मित्र आते रहे, वह अलग बात है। किन्तु, कितने ही अप्रिय काम इस समय आ पड़े। Hindi Examination Committee में युद्ध करना पड़ा, कापीराइट बिल की प्रवर-समिति में अकेले जूझना पड़ रहा है। और प्रतिपक्षी हैं काका साहेब कालेलकर जो सरकार के इस प्रस्ताव को आगे बढ़ा ले जाना चाहते हैं कि कापीराइट की अवधि ५० से घटा कर २५ वर्ष कर दी जाय। और लेखक इस विपत्ति के समय भी सजग नहीं हैं।

मानों, ये विपत्तियाँ कम नहीं रही हों इसलिए देश भर के शिक्षामंत्रियों के सम्मेलन में पूज्यवर पण्डित जी ने ऐसा भाषण दे दिया जो भारतीय भाषाओं और विशेषतः हिन्दी के विरुद्ध पड़ता है। और शिक्षामंत्रियों ने (शायद मौलाना साहब के दबाव में पड़कर) एक ऐसा निश्चय कर लिया है जो अगर काम में लाया जाय तो उन विश्वविद्यालयों को फिर से अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाने को विवश होना पड़ेगा जो अंग्रेजी छोड़कर अभी हिन्दी माध्यम से चल रहे हैं। यदि ऐसा हुआ तो दिल्ली से देवघर तक के नौजवानों का भविष्य अन्धकारमय हो जायगा। मैं क्षण-क्षण इस चिन्ता से मरा जा रहा हूँ। यह अत्युक्ति नहीं, वर्तमान परिस्थितियों का शाप होने के कारण सत्य है। मिलने पर बताऊँगा।

और कल रात नवीन जी बीमार हो गये हैं। उनके बाएँ अंग में पक्षाघात के लक्षण प्रकट हो रहे हैं। वे अब अस्पताल में हैं। वहीं से आने पर तुम्हारा पत्र मिला और पत्र लिखकर फिर उन्हीं के पास जा रहा हूँ।

अपनी कहानी भी लिखनी है तुम्हें। मैं प्रकाशन अपने हाथ में लूँगा। मगर, यह कहानी मिलने पर। लम्बी कथा है। गरीब के लिए सुयश विष है। विषं सभा दारिद्रस्य।

तुम्हारा
दिनकर

[२१२]

५२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
१२-११-५६

प्रिय भाई,

तुम्हारा ९/११ का पत्र आज मिला। रीता का स्वागत हो रहा है, यह मेरे लिए हार्दिक सुख की बात है। ठीक वही आनन्द मिलता है जो अपनी पुस्तक के स्वागत से मिलता। भगवान ने तुम्हें शक्ति दी है। कथा

साहित्य को कुछ दे डालो। "हँसी खुशी" पर पुस्तक के लिए बधाई। मेरा ख्याल है, रीता भी पीछे नहीं रहेगी। रीता बहुत बढ़िया उतरी।

मैं २० को कलकत्ते जा रहा हूँ। तभी 'चक्रवाल' प्रकाशित हो जायगा। 'उजली आग' के पहले फरमे का प्रूफ मैंने देख कर भेज दिया है। यहाँ दिल्ली आने पर समय बचाना मुश्किल हो जाता है। जो साहित्यिक दिल्ली आ बसता है उसका दिल्ली-वास हो जाता है ऐसा अज्ञेय जी का मत है। और यह सत्य भी है।

तुम्हारा ही
दिनकर

[२१३]

नई दिल्ली
१९-९-५८

प्यारे भाई,

'नारायणी' का नवीन संस्करण अच्छा निकला। इस संस्करण में किताब जँचती है। पहली कविता पहले स्थान के लायक मुझे नहीं लगी। अतुकान्त कविताओं में काव्यरस खूब सघन है। मैं ६ अक्तूबर को पटने पहुँचूँगा।

तुम्हारा
दिनकर

[२१४]

५२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
२४-६-५९

प्रिय भाई,

गृहस्थी के चक्कर में पड़ जाने पर मनुष्य का बौद्धिक स्तर प्रायः छूट ही जाता है। पिछले महीने मेरी यही अवस्था थी। आया तो यहाँ भी गृहस्थी के ही प्रसंग में किन्तु, कुछ यह लोभ भी अवश्य था कि एकान्त में पुस्तकों की दुनिया में रहकर अपना सन्तुलन ठीक कर लूँगा। उसमें कुछ कृतकार्य भी हुआ कि १७ जून को अचानक राष्ट्रकवि श्री गुप्त जी भयानक रूप से बीमार होकर दिल्ली चले आये। उनकी किडनी ने काम करना बिलकुल बन्द कर दिया था। हमलोग बिलकुल अब-तब की अवस्था में थे। एक दिन तो मैं सारा दिन दौड़ता रहा। भगवान की कृपा कि ७२ घंटे तक रुके रहने के बाद पेशाब १८ की शाम को जारी हो गया। अब वे बहुत अच्छे हैं। दो-चार दिनों में अस्पताल से आ जायेंगे।

सेठ जी की पुस्तकों की रिव्यू मिली। तुमने मेरा बोझ हलका कर दिया। धन्यवाद।

लोगों को फारम मिले या नहीं, पता चले तो लिखोगे। बाकी यह काम अब बन्द ही रहे।

मैं इधर धर्म और विज्ञान के विषय में अपना दिमाग साफ करने में लगा हुआ हूँ। बहुत सी ऐसी जानकारी सामने आयी जो पहले अज्ञात थी। शायद कुछ लिखूँगा भी।

मामा वरेरकर जिद किये हुए हैं कि २८ को डलहौजी चलो। यह ठंडा मुकाम पठानकोट से ५० मील दूर काँगरा की ओर है। अगर गया तो दिल्ली से दो-एक सप्ताह अनुपस्थित रहूँगा। शेष सब कुशल है। नई धारा का जो अंक तुमने भेजा वह मिल गया और तभी मैंने उपन्यास की भूमिका भी पढ़ ली थी।

तुम्हारा
दिनकर

[२१५]

५२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
३०-११-५९

प्रिय भाई,

आज तुम्हारे दो कार्ड एक साथ मिले। एक पहले भी आया था।

हाँ, तुम्हारा नाम मैंने ही मद्रास भेजा है। और भी कई नाम भेजे थे, प्रभातजी, नलिनजी, सुधांशुजी, बेनीपुरी, ब्रजशंकर आदि के। प्रभातजी को मैंने लिखा भी है कि वे मद्रास जायँ। मेरे लिए भी उन लोगों का बड़ा जोर है और मैं चाहता भी हूँ कि जाऊँ। किन्तु, मैं तो भटमहा आदमी हूँ। ऐन वक्त पर बाधा पड़ जा सकती है।

कल मैंने फिर मद्रासवालों को लिखा है कि वे डाक्टर रघुवीर को अवश्य बुलायें। वहाँ Adequacy of Indian Languages for Science and Modern Thought भी एक विषय है जिस पर विचार होगा। लेकिन, रघुवीर न गये तो इस विषय को वहाँ साफ कौन करेगा? अंग्रेजी के पक्ष-पातियों का एकांगी दृष्टिकोण तो तुम समझते ही हो। हमलोगों के भी प्रतिनिधि वहाँ जायँ, इसमें देश और हिन्दी का हित है। लेकिन खर्च तो है। अपनी जेब देख लोगे। प्रभात जी को भी यही लिखा है।

तुम्हारा
दिनकर

[२१६]

५२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
१८-१२-५९

प्रिय भाई,

तुम्हारा दुखदायी पत्र कल शाम को मिला। किडनी में कोई फ्रैक्चर है क्या? चिन्ता से मैं काँप उठा हूँ। भगवान करें कि तुम्हारे दूसरे पत्र में यह सम्वाद हो कि बीमारी मामूली-सी है और वह शीघ्र छूट जायगी।

बीमार तो मैं भी हूँ। पेट का दर्द चल ही रहा है। इलाज शुरू हो गया है। २३ को मेरा भी एक्स-रे होगा। किन्तु, तुम्हारी बीमारी से इतना चिन्तित हो उठा हूँ कि अपनी बीमारी भूल गयी है। कृपया दूसरा पत्र शीघ्र भेजो।

बधाई का भी तुम्हारा पत्र मिल गया था। ठीक उसी समय एक सज्जन ने एक ताना लिख भेजा। ताना क्या, तुम्हारी चुगली थी। पस्त होकर मैंने दोनों में से किसी पत्र का उत्तर नहीं दिया।

किन्तु, ये सब बातें बाद में होंगी। अभी इतना ही। पत्र लिखो कि तुम्हारा हाल क्या है।

तुम्हारा
दिनकर

[२१७]

११, केनिंग लेन, नई दिल्ली
१-९-६०

प्रिय भाई,

परसों का पत्र मिला। तुम तत्पर हो, यह जान कर अनुग्रहीत हुआ। यही बन्धुत्व है। राजद्वारे श्मशाने च यः तिष्ठति स बान्धवः। तुम दोनों कसौटियों पर ठीक रहोगे, ऐसी आशा है।

पैरवी में तुम तीन ओ वाले फूल हो, यह आत्मज्ञान तुम्हें हो गया। लेकिन, यही गुण यदि मेरे पक्ष में मापा जाय तो एक ओ और लगाना होगा।

सस्नेह
दिनकर

[२१८]

११, केनिंग लेन, नई दिल्ली
१६-४-६१

प्रिय भाई,

आज यहाँ आते ही तुम्हारा पत्र मिला। कल और परसों चेहरा तो देख ही चुका था। चिन्ता हुई कि तुम कठिनाई में हो।

समय से पेट यदि रोज स्वयमेव साफ हो जाय तो सभी अंगों को लाभ होता है और चेतना को भी। मैं स्वयं इस मामले में २७ जनवरी से अच्छा चल रहा था। बस, १२ अप्रैल से कुछ गड़बड़ी शुरू हो गयी है और उसी अनुपात में चेतना पर भी प्रभाव पड़ा है। इसलिए, मेरा ख्याल है, पेट की सफाई पर ध्यान दो। बेल का गूदा २-३ तोला खाया करो। फल तो देर से आता है, किन्तु, वह स्थायी होता है। स्वानुभूत प्रयोग लिखता हूँ।

किन्तु, कुछ सफाई मन की भी होनी चाहिए। जिस काम से आत्मा तुष्ट रहे उसी से चेतना भी स्वच्छ रहती है। पुरानी बातों में बड़ा बल है। ईर्ष्या, द्वेष, निन्दा सुनने या करने की प्रवृत्ति, क्रोध और लोभ, इन्हें वश में लाना कठिन होता है। किन्तु, कोशिश करने से कुछ सफलता भी जरूर मिलती है, ऐसा मेरा अपना अनुभव है। मैं तो विशेषतः क्रोध से ही हारता हूँ। लेकिन, संघर्ष जारी है।

नवम्बर-दिसम्बर की बीमारी के बाद मैंने अपने मन को विशेष रूप से स्वच्छ बनाने की कोशिश की है और उसका प्रभाव मेरे स्वास्थ्य के लिए हितकारी सिद्ध हुआ है। हर आदमी के कुछ अपने सवाल होते हैं, किन्तु, साहित्य धर्मी होने के कारण हम दोनों में कुछ न कुछ समानता जरूर होनी चाहिए। इसलिए कुछ थोड़ी बातें तुम्हारी जानकारी के लिए लिख देता हूँ।

हाल में मैंने अपने मन को ये हिदायतें दी हैं।

सुयश के पीछे नहीं दौड़ना ; धन के पीछे भी नहीं दौड़ना। जो मिला सो मेरा, जो नहीं मिला वह किसी अन्य अधिकारी मानव-बन्धु का है।

दोस्ती में मर्द अच्छे होते हैं; औरतें निकृष्ट होती हैं। मर्दों की दोस्ती का भरोसा रखना।

दोस्त से दोस्त के समान, मुलाकाती से मुलाकाती के समान मिलना।

ऐसा काम नहीं करना जिसे छिपाने की जरूरत हो। ऐसे किस्से नहीं जानना जिनकी जानकारी से कोई जवाबदेही आती हो।

Loyalty is the greatest attribute of man, इसका खुद निर्वाह करना और दोस्तों से केवल इतनी ही सी चीज़ की माँग करना। इससे जीवन में शान्ति मिलती है।

यदि ईश्वर में तुम्हारा विश्वास हो तो कोई नाम जपना शुरू कर दो। मैं कई नाम जपता हूँ। इधर हाल में एक जाप यह भी शुरू किया है :—

श्रीकृष्ण ! गोविन्द ! हरे ! मुरारे ! हे नाथ ! नारायण ! वासुदेव !

रामचरित मानस का पाठ भी नियमित रूप से करो।

ऐसा भी हो सकता है कि तुम समझो, भैय्या थक गये और मुझे भी थकावट की ओर खींच रहे हैं।"

भगवान करें कि तुम कभी नहीं थको, किन्तु, शान्ति का स्थान थका-वट के स्थान से अधिक दूर नहीं होता। गरीबी में जन्म लेकर प्रतिकूल परिस्थतियों से जूझते हुए पुरुषार्थ के कुछ थोड़े करतब मैंने भी दिखाये हैं। किन्तु, नारायण ! अब साफ देखता हूँ कि सबसे बड़े पुरुषार्थ का नाम आत्मसमर्पण है। No warrior can achieve a greater conquest

than unconditionally surrendering himself to the will of God.) सब शोकों का एक नाम है क्षमा, हृदय विचलित मत होना। ईर्ष्या, द्वेष, आलोचना, व्यंग्य, कुत्सा, कलंक, लोभ और काम, इन्हें पीठ दिखा कर यदि शान्ति पा सकूँ तो मैं हारता नहीं, विजय ही प्राप्त करता हूँ।

पत्राचार द्वारा आपस में हम एक-दूसरे की थोड़ी सहायता जरूर कर सकते हैं। इससे हृदय का भार भी हलका होता है।

तुम्हारा
दिनकर

[२१९]

११ केनिंग लेन, नई दिल्ली
३०-१२-६१

प्रिय भाई,

सचमुच, तुम्हारे कई पत्र आये, किन्तु, मैं उत्तर नहीं दे सका। संदेश तो कई दिन पहले ही भेज चुका हूँ। तब आज उत्तर देने का साहस पाया है।

पटने से कलकत्ते गया था। वहाँ से वापस होते ही देश-सेवा के कार्य (यानी स्वर्गीय सरदार पटेल की पुण्य-तिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित करने को) अहमदाबाद भेज दिया गया। गया तो A/C से लेकिन, मेरा डब्बा चक्के पर था। सो हड्डियाँ अठी-अठी चौंसठ का पहाड़ा पढ़ते-पढ़ते वेतरह झकझोर खा गयीं। अहमदाबाद पहुँचा तब पीठ में दर्द होने लगा। लौटकर यहाँ आया तब दर्द छाती में समा गया। अब आगे की चिंता की तुम कल्पना कर सकते हो। अब तबीयत सुधर गयी है, लेकिन, अभी दस दिन और मैं यात्रा पर नहीं निकल सकता। काँग्रेस के महाधिवेशन को भी यहीं से प्रणाम कर रहा हूँ।

तुम्हारा
दिनकर

[२२०]

जनवाणी प्रेस कलकत्ता
७-१-६३

भाई मेरे !

खुश रहो, बढ़ो, फूलो-फलो और समाज की सेवा में लगे रहो। रोम-रोम से तुम्हारे लिए आशीर्वाद ध्वनित होता है।

कई दिन पूर्व दिल्ली से एक पत्र मिला जिसमें तुम्हारी निर्भीकता की भूरि-भूरि प्रशंसा थी। लिखने वाले ने लिखा था "आपके मित्र नारायणजी ······ हम सबको उनके लिये बड़ा गर्व हुआ।" सचमुच तुम मेरे मित्र हो, भाई हो, सखा हो, सहचर हो, समधर्मा और बन्धु हो। मुझे भी गर्व है कि तुम मेरे भाई हो। अब तो १५-१६ तक पटने आकर तुमसे तुरन्त मिलना है।

वह कविता बढ़ते-बढ़ते ५४६ पंक्तियों पर जाकर खत्म हुई। इसका कुछ श्रेय तुम्हें भी है क्योंकि तुमने उसका एक अंश अश्रु-विगलित होकर सुना था। मैं भी उस अंश की रचना के समय खूब रोया था। अनुभव जब कवि में उत्पन्न होते हैं तब उन्हें सहृदय में भी प्रकट होना ही चाहिए। यह चमत्कार कई बार देखा था। इस बार भी वह देखने को मिला। संग्रह कोई ८० पृष्ठों का होगा। जैसे पुराण १८ और गीता १८ अध्याय है। वैसे ही, जान-बूझकर मैंने भी १८ कविताएँ डाल दी हैं, १५ नयी और ३ पुरानी।

शेष कुशल है। आज ही फुरसत मिली। अतएव, आज से पूर्व पत्र नहीं लिख सका। प्रभात जी को नमो नमः कहना।

तुम्हारा
दिनकर

[२२१]

११, केनिंग लेन, नई दिल्ली
२५-७-६३

प्रिय भाई,

कल दिल्ली पहुँचने पर तुम्हारा पत्र मिला। उस दिन मैं पौने छह बजे से ही बॉगी में आकर बैठा था। पता नहीं, तुम्हें गलत खबर कैसे पहुँच गयी।

तुम्हारा कहना ठीक है कि गलतियाँ मुझसे हुई होंगी। यह भी मानता हूँ कि परिवार के लिए मैं उससे अधिक मोह में पड़ा रहा हूँ जितना जरूरी था। लेकिन, क्या करूँ? जिसके क्रोध की लपट से बचने को घर से भाग गया उसी के लिए चिंता करता हुआ भटक रहा हूँ। उस चांडाल का चेहरा मन से उतरता ही नहीं।

मद्रास में मुझे डिसेंट्री हो गयी। उसी हालत में हैदराबाद पहुँचा। वहाँ का कार्यक्रम पूरा करके परसों रात दिल्ली पहुँचा हूँ। बच्चनजी भी हैदराबाद गये थे। हम दोनों साथ ही वापस आये हैं।

आगे क्या होगा, इसका मुझे ठीक-ठीक पता नहीं है क्योंकि कोई भी योजना चलती दिखायी नहीं देती है। विपद की बात यह है कि इस साल बेटी का ब्याह नहीं हो सका और घर में जो नयी बहू आयी, उसके बसने में कठिनाई उत्पन्न हो गयी। अब विनष्ट हो जाने में ही कल्याण है।

तुम्हारा
दिनकर

[२२२]

नई दिल्ली
७-८-६३

प्रिय भाई,

तुम्हारा कार्ड मिला। १३ को संसद का आरंभ है। उस दिन तो अवश्य रहूँगा। किन्तु, बहुत संभव है कि १४ को १०-१२ दिनों के लिए हैदराबाद चला जाऊँ। उसके तुरन्त बाद कहीं न कहीं विदेश जाने का विचार है। घर छोड़ने का शॉक अब समाप्त है। मैं अनिकेतन हो गया, इस स्थिति से reconciled हो चुका हूँ। सिर्फ जनवाणी के कर्ज का भार गरदन तोड़ रहा है। 'संस्कृति के चार अध्याय' का कापीराइट बेचना जरूरी-सा लगता है। मगर, लोग गरजू समझकर कम दाम देने की मुद्रा में बात करते हैं। एक कोई चीज है जिसके निकल जाने से आदमी गोबर हो जाता है। Authority forgets a dying king. मैं तो मामूली मनुष्य ठहरा। कर्ज उतर जाय तो दिमाग भी ताजा हो जायगा। अब किससे क्या लेना? अंतहु तोहि तजेंगे पार, तू न तजत अब ही तो।

तुम्हारा
दिनकर

[२२३]

११, केनिंग लेन, नई दिल्ली
२४-९-६३

प्रिय भाई,

आज धर्मयुग में तुम्हारा लेख देखा। पारिवारिक बातों को छोड़ गये होते, वही अच्छा होता। बेकार अनेक लोग मुझसे दरियाफ्त करेंगे। बैंक फेल कर गया, नाव डूब गयी, सर्वस्व स्वाहा हो गया। यही न? चलो; भगवान ने मेरी गलती ही पोंछ दी। चरणों की धूल दो कि बेटी और भतीजी के विवाह इस साल हो जायें। फिर मैं कहीं से भी अधीन नहीं रहूँगा।

कबिरा मैं का चितऊँ मम चिन्ते का होइ,
चिंता मेरी हरि करें, चिंता मोहि न कोइ।

माखनलाल जी का लेख पढ़ा न? ऐसी निश्छल प्रशंसा हिन्दी में बहुत दिनों के बाद छपी है। आज मैं अपना सब दुःख भूल गया।

इधर १०-१२ नयी कविताएँ लिखी हैं। लारेन्स की २५-३० कविताओं का अनुवाद भी किया है। दो काव्य-संग्रह छपवाने की बात है।

Poems and Parables पर काम जारी है, मगर, मेरा नहीं, उस्तादों का।

तुम्हारे भाई को दो दिन फोन किया, मगर, वह आया नहीं।

समय निकालकर मेरे लिए एक मिनट प्रार्थना किया करो।

तुम्हारा
दिनकर

[२२४]

नई दिल्ली
४ अक्टूबर, १९६५

प्रिय भाई,

तुम्हारा २८ सितम्बर का पत्र मिला। सतत साहित्य साधना के लिए बधाई देता हूँ।

प्रभात जी के बारे में तुम्हारा लेख साप्ताहिक हिन्दुस्तान में देखा। तुम उनका कुशल समाचार लिखने की कृपा करो। वैसे प्रभात जी को मैंने भी पत्र लिखा है। उनके विषय में चिन्ता लगी हुई है।

तुम्हारा
दिनकर

[२२५]

२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
४ अक्टूबर, १९६६

प्रिय भाई,

तुम्हारा ३० सितम्बर का पत्र परसों मिला। बधाई के लिए धन्यवाद।

पहले ज्योतिषी ने गणना करके मेरी जन्मतिथि ३० सितम्बर १९०८ बतायी थी। फिर श्री रामलोचन जी पाण्डेय ने मेरी माताजी से भेंट की और मेरी जन्मतिथि ३० के बदले २३ सितम्बर कर दी। अब यही तिथि मैं भी स्वीकार करता हूँ। पंच कहें सो ही ठीक है।

मैंने ५९वें वर्ष में प्रवेश किया है। मित्र अभी भी मुझसे बड़ी सेवाओं की उम्मीद करते हैं, सो क्या तर्क सम्मत है ?

बुढ़ापा नातवानी ला रहा है।
जमाना जिन्दगी का जा रहा है।
किया क्या, और आगे क्या करेगा ?
आखिरी वक्त दौड़ा आ रहा है।

अब मैं अतीत हो चला। भगवान तुम लोगों को बढ़ायें और काम करने का सुयोग दें।

तुम्हारा
दिनकर

[२२६]

२, साउथ एवेन्यू लेन, नई दिल्ली
१०-२-६७

प्रिय भाई,

तुम्हारे ३० सितम्बर के पत्र का उत्तर गया था। संयोग से कापी मौजूद थी, उसे भेज रहा हूँ।

खब्तुलहवास और नेपाल की झलकियाँ देख गया। यात्रा-विवरण उच्च कोटि का तुमने लिखा है। काफी पसन्द आया। बधाई देता हूँ।

खब्तुलहवास की जिन्दगी तुम्हारी जिन्दगी में इस तरह समा गयी है कि वह अपने मुख से तुम्हारी ही आत्म-कथा कहता है।

अन्त में शेष कुशल है, लिखना चाहता था। मगर वह है नहीं। भगवान तुम्हें बढ़ायें।

तुम्हारा
दिनकर

[२२७]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
४-६-६७

प्रिय भाई,

पत्र मिला। कतरने लौटा रहा हूँ।

मैं ८ से ११ जून तक पटने रहूँगा। फिर १२ को चल दूँगा बाल-वच्चों के साथ।

इस बूढ़े बैल को जीवन की सन्ध्या में भी फुरसत नहीं मिली। हमसे अच्छे रहे सदके में उतरने वाले।

तुम्हारा
दिनकर

[२२८]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
२३-९-६७

प्रिय भाई,

जन्म दिन की बधाई का पत्र मिला और आज ही मेरा जन्म-दिन है। तुमने पिछले साल के पत्र की बात याद रखी। धन्यवाद।

तुमने छठीं संज्ञा की बात लिखी है, मगर यहाँ तो पाँच में से ही दो एक गायब हो रही है।

राजेन्द्र नगर में मेरा घर डूबा हुआ है। कभी २४३९९ पर पूछ कर केदार की खबर लेना।

तुम्हारा
दिनकर

[२२९]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
१-११-१९६८

प्रिय भाई,

मैं आज ही पटने से लौटा हूँ। लौटते ही डाक में तुम्हारा कार्ड मिला। पढ़कर स्तब्ध रह गया। तुमने कार्ड २२ अक्तूबर को डाला है, मैं २३ अक्तूबर को यहाँ से पटने चला गया। २४ से ३० तक पटने ही था, मगर किसी ने भी मुझे यह नहीं बताया कि तुम बीमार हो। तुम्हारी खबर जानने को दो बार हुंकार प्रेस में फोन भी किया, मगर किसी ने उठाया ही नहीं। ईश्वर को लाख धन्यवाद कि तुम संकट से उबर गये। तुम तेजस्वी हो, मनस्वी हो, सर्वहितकामी और वीर हो। भगवान करें कि तुम शीघ्र से शीघ्र

पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करो और बहुत दिन जीवित रहकर साहित्य की सेवा करते रहो।

अचानक तुम्हें चक्कर आ गया, इसके मानी ये हैं कि तुम अपने रक्त-चाप पर नजर नहीं रखते हो। धुनी हुए बिना कोई काम हो नहीं पाता और धुनी जीवन का यही शाप है कि वह अपनी ओर से बेखबर हो जाता है।

जिस समय तुम बीमार हुए उस समय तुम व्यस्त थे या नहीं, नहीं जानता। किन्तु हमलोग जब पिछली बार मिले थे, उस समय तुम काफी व्यस्त थे। नेपाल के सिलसिले में तुमने जो काम किया, वह एक व्यक्ति का नहीं, संस्था का काम था। उसमें तुम्हें सफलता भी बड़ी भारी मिली थी। अब वैसे बड़े काम में तुम्हें नहीं पड़ना चाहिए।

मैं अपनी मेडिकल पोथी पटने ले गया था कि श्रीनिवास जी को दिखा सकूँ। लेकिन, स्वास्थ्य दिखाने का वक्त नहीं निकाल सका। उनसे मिला होता तो तुमसे मिलना हो ही गया होता।

इन दिनों मेरा सारा समय लड़का ढूँढ़ने में जा रहा है। मेरा अवतार ही कन्यादान के लिए हुआ है।

श्री माँ से प्रार्थना करता हूँ कि तुम शीघ्र स्वस्थ हो जाओ। तुम्हारा

दिनकर

[२३०.]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली

प्रिय भाई, ११-११-६८

तुम्हारा ५/११ का पत्र आज मिला। कल मैं एक सप्ताह के बाद राजस्थान से लौटा हूँ। शरीर चकनाचूर है। फिर भी १३ को उज्जैन जाना है। सुमन जी ने लिखा है कि मेरा नहीं आना उनकी अवमानना का प्रतीक है। सो जाना पड़ेगा। लौटकर आने पर यात्राएँ बन्द कर दूँगा। मेरा हाल भीतर से खराब है। 'करती हुई युद्ध रोगों से देह हारती जाती है।'

तुमने जो कुछ लिखा है उसकी थोड़ी बहुत कल्पना मैंने की थी। आशा है, जैसे मैं यात्रा छोड़ना चाहता हूँ, वैसे ही तुम भी थकान से दूर रहोगे।

हिन्दी की मेरी दो किताबें कई मास पूर्व निकली थीं। भेज नहीं सका हूँ। अभी एक किताब अंग्रेजी में निकली है, Reflections on Man and Things.

कविता का बल्ब फ्यूज हो गया। गद्य लिखता रहता हूँ। जहाँ तहाँ देखते ही होगे। नेपाल पर कोई भी पुस्तक नहीं मिली है।

भगवान तुम्हें चिरायु करें। तुम्हारा

दिनकर

पोद्दार रामावतार अरुण

[२३१]

नई दिल्ली
३ मई १९५४

प्यारे अरुण,

माफ़ी का एक पत्र तुम्हारा मेरे पास बाकी चला आ रहा है। ३ मार्च के कवि सम्मेलन में मैं सम्मिलित नहीं हो सका, इसका कारण चुनाव का चक्कर था। लेकिन, मुझे तुरन्त तुम्हारे पास पत्र लिखना चाहिए था। वह काम भी इतनी देर के बाद कर रहा हूँ। अब तो दोहरी क्षमा का प्रार्थी हूँ।

राष्ट्रपति भवन में मैंने 'विदेह' की प्रति देखी। छपाई-सफाई तो आकर्षक है ही, इस पुस्तक में तुम्हारी भाषा खूब प्रौढ़ होकर उतरी है और जहाँ-जहाँ मेरी दृष्टि पड़ी, कविता की बुनावट में भी दृढ़ता देखी। मेरा ख्याल है, यह रचना श्रेष्ठ हुई है और ऐसा लगता है कि अब तुम हिन्दी को अच्छे प्रबन्ध-काव्य देने की स्थिति में आ गए हो। दुःख सिर्फ इस बात का है कि तुम्हारी रचनाओं पर देश का ध्यान जैसा पड़ना चाहिए वैसा नहीं पड़ रहा है। लेकिन यह निराशा की बात नहीं है। ध्यान जाएगा और खूब जाएगा।

हिन्दी भाषी क्षेत्र ही कुछ इतना विस्तृत है कि एक कोने की आवाज को दूसरे कोने तक पहुँचाने में काफी समय लग जाता है।

आशा है, स्फुट रचनाएँ भी की होंगी। मिथिला पर जो रचना योगी में छपी थी, वह बहुत अच्छी थी।

शेष कुशल है। स्वास्थ्य मेरा शिथिल हो रहा है। 'करती हुई युद्ध रोगों से देह हारती जाती है।' ठीक वही अवस्था नहीं है, किन्तु ओज का अभाव अनुभव कर रहा हूँ।

तुम्हारा
दिनकर

[२३२]

पटना, २४ मई १९५८

प्यारे अरुण,

१९ को यहाँ लौटने पर तुम्हारा कार्ड मिला। फिर मित्रों से तुम्हारा दुःखदायी विवरण सुना। मुझे तनिक भी ज्ञात नहीं था कि तुम इस जोर से बीमार हो। तुम शरीर से हलके थे। कैसे यह रोग तुम्हें हो गया, कुछ समझ में नहीं आता। कृपया लिखो कि सरकार ने कोई सहायता दी है या नहीं। केन्द्र को तो यह बात मालूम भी नहीं होगी। तुम्हारे यहाँ से कोई पत्र आ जाय तो मैं भी कुछ करना चाहता हूँ। भगवान से प्रार्थना है कि तुम्हें शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हो।

तुम्हारा
दिनकर

[२३३] १० नवम्बर १९६०

प्रिय अरुण,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम बीमार हो गए, यह जान कर चिन्ता बढ़ी। पूनम (पौत्री) तो अब अच्छी है। दो महीनों से मैं ही बीमार हूँ। मधुमेह में उलझन पैदा हो गई है। इलाज तो नहीं, भोजन का नया क्रम चल रहा है जिसमें चावल और आटा नहीं है। आज तुम्हारा पत्र भी आया और MANKIND का नया अंक भी। उसमें डाक्टर राम मनोहर लोहिया ने खुद तुम्हारी किताब की रिव्यू की है।

तुम्हारा
दिनकर

[२३४]

२७ जनवरी १९६६

प्रिय अरुण,

कल यह देख कर सात्विक हर्ष हुआ कि राष्ट्रपति ने तुम्हें पद्म-श्री प्रदान की है। अवश्य ही यह तुम्हारी साहित्य-सेवाओं की न्यायसंगत स्वीकृति है। भगवान करें कि इस सम्मान का उपभोग तुम पूर्ण स्वास्थ्य के साथ लम्बी आयु तक करते रहो।

तुम्हारा
रामधारी सिंह दिनकर

[२३५]

नई दिल्ली, २० मई १०६९

प्रिय अरुण,

'महाभारती' की प्रति कल प्राप्त हुई। आकार देख कर दंग रह गया। जो भाषा तुमने अपने लिए तैयार की है, उसका प्रभाव सर्वत्र दिखाई पड़ा। भूमिका पढ़ गया हूँ। महाभारती साहित्य की ऊँची कृति है। इस काव्य का शब्द-सौन्दर्य अद्भुत है और छन्दों की रचना ठोस है। मैं तुम्हें बधाई भेज चुका हूँ।

मेरी बधाई और मेरा आशीर्वाद।

तुम्हारा
दिनकर

[२३६]

नई दिल्ली, १७ अप्रैल १९७४

प्रियवर,

कार्ड मिला। खुश रहो और प्रार्थना करो कि अब भगवान मुझे उठा लें।

तुम्हारा
दिनकर

[२३७] New Delhi, 12.5.54

My dear Duggar Saheb

Yours of the 10th instant. We had not followed the colour indication of the design. Kamalji explained to me. I, therefore, want to use it. I will see that the bill is paid in time. Please send the bill personally to me of the first week of June to my Patna address (Patna-6) Chowdhury Tola.

Rest O. K. with Namaskar, Yours sincerely
दिनकर

[२३८]

New Delhi 9.11.56

My dear Duggarji

Your letter of 3.11.56 reached me only yesterday.

1. The Tail pieces should all be made quickly otherwise they shall be of little use to me. They will be owned by the press.

2. Dwandwageet designs you should kindly prepare. I will require them in March.

3. I want the following illustrations for the Rashmirathi :—

   1) The one you have drawn in tricolour.

   2) Kabach Kundal Dan, one colour.

   3) Kunti-Karna one colour.

   4) Parasu Ram-Karna one colour.

   Size Demy 1/8. I shall require them in March.

4. As I told you the cover design for उजली आग is done elsewhere.

5. I had requested you to drop a card to my Patna address for Rajgrih while at Patna I forgot all about it. But I will talk to the authorities in December now.

I returned from Calcutta very much disappointed for the चक्रवाल could not be published.

I shall be in Calcutta on 20.11 again. Then I should bring रश्मिरथी and द्वन्द्वगीत।

Yours sincerely
DINKAR

*श्री रामानुज प्रसाद सिंह

[२३९]

साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
२४-९-५५

प्रिय भोला,

कल मैं प्रस्थान नहीं कर सका। पत्र भेजा, वह मिला होगा। आज एक हजार रुपये का ड्राफ्ट (No. DE 53603) तुम्हारे नाम से भेज रहा हूँ। इसे लेकर योगी प्रेस जाना और ब्रजशंकरजी या शर्माजी के साथ स्टेट बैंक (पहले का इम्पीरियल) जाकर रुपये भुना लेना। बस, अब इस रुपये से मकान का काम खत्म हो जाना चाहिए। इसमें बढ़ई का भी हिसाब शामिल है। रुपये बच रहें तो कुछ सेठ को दे देना या घर-खर्च के लिए रखना। यह आखिरी किस्त है। अब महीनों तक मुझे रुपयों का संयोग नहीं है। इति-श्री।

ड्राफ्ट का शोर-गुल मत करना। पैसे हिफाजत से लाकर घर में रख छोड़ना। रात से यहाँ झड़ी लगी हुई है। वहाँ भी तो काम नहीं ही लगा होगा। मैं अब आठ तक आऊँ-तो-आऊँ या बाद भी आ सकता हूँ। वहाँ सब कुछ सूने में छोड़ कर सिमरिया मत भाग जाना। कोई-न-कोई आदमी बराबर रहे। ड्राफ्ट की पहुँच लिखना और भुन जाय तो उसका समाचार भी।

तुम्हारा
रामधारी

[२४०]

५२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
५-१०-५५

प्रिय भोला,

पत्र मिला था। किताबें मत भेजो। चिट्ठियाँ भी वहीं रोक रखो। चैक तुमने कैसे भेजा कि अब तक नहीं आया है? कहीं गुम न हो जाय। रामसेवक का पत्र मिला किन्तु, उसके साथ चैक तो नहीं था।

मैं ९ को चल कर १० के प्रातःकाल आऊँगा।

तुम्हारा
रामधारी

---

*रामानुज प्रसाद सिंह दिनकर जी के भतीजे हैं। दिनकर जी इन्हें भोला नाम से ही सम्बोधित करते थे। —सम्पादक।

[२४१]

लन्दन
२३-११-५५

प्रिय भोला,

मैं दिल्ली से कल चला और आज कैरो, रोम, जेनेवा होता हुआ यहाँ साढ़े सात बजे शाम को पहुँचा जब मेरी घड़ी में रात को एक बजा था। कल भोर वारसा जाना है। वहाँ से २-१२ तक यहाँ लौट आऊँगा और तब लन्दन, पेरिस, जेनेवा, रोम और कैरो देखता हुआ २५-१२ तक बम्बई पहुँचूँगा। मिजाज प्रायः ठीक है। इस हवाई-यात्रा में कष्ट नहीं हो रहा है यद्यपि जहाज २१ हजार फीट ऊपर उड़ता है।

तुम्हें कोई आवश्यक बात लिखनी हो तो इस पते से लिखो—

C/o. High Commissioner of India
India House, London (U. K.)

शेष कुशल है।

तुम्हारा
दिनकर

[२४२]

वारसा
३०-११-५५

प्रिय भोला,

लन्दन से भेजा हुआ पत्र मिला होगा। वारसा हम २४ को आये और तभी से पार्टियों, सम्मेलनों, मुलाकातों आदि में व्यस्त रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय डेलिगेशन में जाने के लिए स्वास्थ्य मजबूत चाहिए। बड़ा परिश्रम करना पड़ता है।

परसों International evening of Poetry नाम से एक अन्तर्राष्ट्रीय कविसम्मेलन हुआ जिसमें ३० देशों के कोई ४४ कवि वर्त्तमान थे। सूची में मेरा नम्बर १२वाँ था। किन्तु, तुम्हें जान कर खुशी होगी कि कविसम्मेलन भारतवर्ष के हाथ रहा। अपनी भाषा की कविता तो सब को प्यारी लगती है। जहाँ अनेक भाषाओं का सम्मेलन हो, वहाँ ध्वनि और अनुवाद से व्यंजित अर्थ ही काम करता है। इस काम में हिन्दी बड़ी ही क्षमता वाली भाषा सिद्ध हुई। परसों ही वारसा यूनिवर्सिटी में मेरा Indian Poetry पर भाषण भी हुआ।

२-१२ को हम लन्दन जायेंगे और वहाँ १० तक रहेंगे। फिर हम पेरिस, जेनेवा, रोम आदि होते हुए २२ दिसम्बर तक बम्बई पहुँचना चाहते हैं।

यहाँ का जीवन मुक्त, प्रफुल्लित और उल्लास से युक्त है। राजनीति की बातें कोई नहीं बोलता। कवि, गायक और कलाकार यहाँ की जनता के सर्व श्रेष्ठ सदस्य हैं। वे ही अमीर भी हैं। युवक दल बाँध कर देश और सरकार को मुक्त सहयोग दे रहे हैं और सारा देश जोर से प्रगति कर रहा है। मामूली-से-मामूली कलाकार को जनता इतने आनन्द से उछालती है कि चित्त प्रसन्न हो जाता है। कला की पूजा मैंने यहीं देखी।

तुम्हारा
रामधारी

[२४३]

वारसा
६-१२-५५

प्रिय भोला,

पिछला पत्र मिला होगा जिसमें मैंने अन्तर्राष्ट्रीय कवि-सम्मेलन का विवरण लिखा था। उसके बाद बर्लिन रेडियो के लिए एक टॉक यहीं रेकार्ड करवाया। फिर क्रैकोव नामक शहर देखने गया। वहाँ से पोजनन नामक शहर गया। आज घूम-घाम कर वारसा आया हूँ। परसों आठ दिसम्बर को यहाँ से लन्दन के लिए रवाना होना है। प्रोग्राम, अनुमानतः इस प्रकार रहेगा :—

९ से १३ दिसम्बर तक लन्दन, १४ को लन्दन से जिनेवा आना
१४-१५ जिनेवा रहना, १६ को जिनेवा से पेरिस जाना (ट्रेन से)
१६ से १९ तक पेरिस रहना, २० को जिनेवा वापस आना (ट्रेन से)
२१ को जिनेवा से रोम जाना, २१, २२, २३ रोम रहना
२४ को रोम से उड़ कर कैरो पहुँचना, २४, २५, २६ कैरो रहना
२७ को कैरो से बम्बई के लिए प्रस्थान

दिल्ली में शायद एक सप्ताह रुकना पड़ेगा। उसके बाद पटने आऊँगा। शरीर अच्छा रहा तो यह प्रोग्राम ठीक से निभाऊँगा। अभी तक शरीर अच्छा ही था। क्रैकोव में दाँत में दर्द हुआ। एक दाँत उखड़वा दिया। केदार को समय पर रुपये भिजवा देना। जयनाथजी से कहना कि खड़्ग बाबू का कर्ज देना न भूलें। शोभा का क्या हुआ यह चिंता लगी हुई है ?

तुम्हारा
रामधारी

[२४४]

जिनेवा-रोम के बीच का आकाश-मार्ग
२२-१२-५५ सायंकाल

प्रिय भोला,

तुम्हारा पत्र redirect होकर आज जिनेवा में मिला। शोभा का ऑपरेशन सफल हुआ, यह जानकर चिंता हटी। रूस नहीं गया। उन देशों में हर चीज आग के मोल बिकती है। आने पर बताऊँगा। लंदन से जिनेवा आया, यहीं से पेरिस गया और आज यहीं से कैरो जा रहा हूँ। रोम की यात्रा स्थगित कर दी। कैरो २३ से २६ तक रहूँगा। २६ की रात में कैरो से उड़ कर २७ को दो बजे दिन में बम्बई उतरूँगा। तुम यह पत्र पाते ही एक खत नीचे लिखे पते पर डाल दो जो मुझे बंबई मिल जाय।

C/o. S. P. Jain 'SHIKHAR KUNJ'
29, Carmichale Road, Bombay.

चिट्ठी में यह लिखो कि शोभा कैसी है, विभा और मालकिन कैसी है, कल्लो सिमरिया में क्यों है, मेहमान का क्या हुआ, वे पटने हैं या काझा, रुपये की तकलीफ तो नहीं है, शोभा पटने कब तक रहेगी ?

मैं बम्बई २८ तक रहूँगा। २९ को दिल्ली चला जाऊँगा। वहाँ भी चार दिन रहना पड़ सकता है। तब पटने आऊँगा। भाषा-आयोग के काम से शायद पटने भी टिक नहीं सकूँगा।

तुम्हारे लिए तीन टाइयाँ खरीद ली हैं। यह पत्र २०००० फीट की ऊँचाई पर से लिख रहा हूँ।

तुम्हारा
रामधारी

[२४५]

नई दिल्ली
२९-८-५६

प्रिय भोला,

यहाँ आकर देखा तो दो जोड़ जूते गायब हैं। ये चोरी चले गये। और सब कुछ ठीक है।

माताजी का क्या हाल है, यह जानना बहुत आवश्यक है—यदि तुम घर से हो आये हो तो तार से खबर दो।

गाँव में रिलीफ देने के लिए आज मैंने श्री बाबू, कृष्णवल्लभ बाबू, कलैक्टर, कमिश्नर और एस० डी० ओ० को अलग-अलग पत्र लिख दिये हैं। यह खबर गाँव भिजवा देना। बाबू महावीर कुँअर से माफी माँग कर

कहना कि आवश्यकता के कारण मैं अचानक उनसे मिले बिना चला आया हूँ। वे अन्यथा न मानें।

रामप्रसाद को काम आरम्भ करने को कहो। मैं कलैक्टर को आज फिर पत्र लिख रहा हूँ। तुम उनसे फोन करके पूछ लो। मैं चालीस वोरा सीमैंट के लिए उनके हाथ में दरख्वास्त दे आया हूँ।

परमिट मिल जाय तो सीमैंट खरीद कर काम जारी रखना। राजकर्ण इस काम पर रहेगा। मुझे वह सूचना भी रोज भेजता जायगा।

पूनों का हाल लिखना।

तुम्हारा
रामधारी

[२४६]

साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
४-९-५६

प्रिय भोला,

पत्र मिला। हाल मालूम हुआ। मथुरा बाबू ने कहा कि जयनाथजी ने पाँच-सौ रुपये दिये जिनमें से मालकिन ने चार-सौ रुपये बिनवा को दिये हैं। ये रुपये जयनाथजी ने कब दिये? क्या मेरे आने के बाद? यह लिखोगे।

ब्रजशंकरजी आठ सितम्बर को पटने पहुँचेंगे। उनके मार्फत पाँच-सौ रुपये भेज रहा हूँ। घर में जो काम लगा हुआ है उसमें खर्च करने के लिए। सीमैंट का परमिट मिला या नहीं, यह समाचार नहीं मिला है।

उदयाचल का कार्य आरम्भ होगा। अन्तिम रूप से यह बात मैंने रामसेवक को लिख दी है।

मैं ३० सितम्बर से पहले पटने नहीं आ सकूँगा।

घर पर आने-जाने वालों की भी खबर देते रहोगे। शेष कुशल है।

तुम्हारा
रामधारी

[२४७]

५२, सा-ए, नई दिल्ली
१-१२-५६

प्रिय भोला,

मेरा प्रोगाम बदल गया। मैं अब ९-१२ के प्रातःकाल यहाँ से हवाई-जहाज से सीधे कलकत्ते जाऊँगा और वहाँ से १४ को चलकर १५ को पटने पहुँचूँगा।

कल तुम्हें लिखा है कि मेरे घर में जो आलमारी है उसमें से THE KATNS CAME नामक अंग्रेजी-उपन्यास निकाल कर Book-Post रजिस्टर्ड कर के मेरे पास भेज दो। आशा है वह किताब ५-६ ता० तक मुझे मिल जायगी। रामसेवक की चिट्ठी कलकत्ते से आज आयी है। उसके कलकत्ता जाने से अच्छा काम हुआ।

तुम्हारा
रामधारी

[२४८]

नई दिल्ली
५-१२-५६

प्रिय भोला,

तुम्हारा पत्र और पुस्तक का पार्सल मिला। आदित्य की बीमारी से घबराने की कोई बात नहीं है। मुझे भी I. A. में एक बार दमा हो गया था, किन्तु, वह छूटा, सो छूट ही गया। आदित्य का भी छूट जायगा।

आदित्य की परीक्षा (डाक्टरी) करवा कर डाक्टर जो बताये वह दवा और पथ्य करो। पथ्य इसमें बढ़िया पुष्ट भोजन होना चाहिए। कपड़े गर्म बनवाने हों तो फौरन बनवा दो। देर न करना। महीने-आध-महीने के विश्राम से परीक्षा में लाभ ही होगा, हानि नहीं होगी। वह पूरा विश्राम करे। लेटा रहे। पढ़ना हो तो मनोरंजन के लिए किताबें पढ़े। धूप भी खाय और सर्दी से भी बचे। घी, अंडे, मांस, यह ज्यादा खाय। भात छोड़ दे। रोटी, पूड़ी, हलवा, यह सब अच्छा रहेगा। कद्दू न खाय। पूरा विश्राम करे। इसमें कमी नहीं हो। ऊपर-नीचे बार-बार न आवे।

मैं १५ दिसम्बर को पटने पहुँचूँगा, ऐसी आशा है।

सीमैंट बाजार से लेकर काम चलाओ। चिट्ठियाँ वहीं रहने दो।

मैं १०, ११, १२, १३, १४ कलकत्ते रहूँगा। उत्तर वहीं भेजो।

तुम्हारा
रामधारी

[२४९]

५२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
१४-८-५७

प्रिय भोला,

तुम्हारा पत्र आज मिला। मैं यह जानना चाहता हूँ कि खिड़की कितनी और चौखट कितने बने हैं और कितनी सिमरिया आ गये तथा केवाड़ी का क्या हुआ।

सिमरिया की कोई चिट्ठी नहीं आई है। रामसेवक का भेजा हुआ मोटा लिफाफा भी आज ही मिला है। 'रश्मिरथी' के छपे फरमे नहीं मिले हैं।

छविनाथजी का भी पत्र मिला है। उनका एक पत्र पहले भी आया था जिसका मैंने उत्तर भी भेजा था। मगर, वह उन्हें मिला नहीं। मैं १६ को हवाई-मार्ग से भूपाल जा रहा हूँ।

तुम्हारा
रामधारी

[२५०]

बेगूसराय
१६-२-५८

प्रिय भोला,

मैं तो यहाँ आकर विपद में फँस गया। शिवकुमार का लड़का १२ ता० की शाम को मोटर दुर्घटना में पड़ गया। Head injury सांघातिक है। १२ की रात से वह यहीं अस्पताल में है। कल रात को उसे लेकर हम लोग सोनपुर होकर आ रहे हैं। मंगल के प्रातःकाल महेन्द्रू उतरेंगे या अगर misconnection हो गया तो ११-१२ वजे जहाज से पहुँचेंगे। तुम मुन्दर वाबू अथवा विजय वाबू अथवा दोनों से मिल कर Ambulance के साथ महेन्द्रू-घाट पर दोनों ट्रेनों में मौजूद रहोगे। आते ही उसे विजय वाबू के चरणों में डाल देना है। यह बात विजय वाबू को कह दोगे।

तुम्हारा
रामधारी

[२५१]

५२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
१८-४-६०

प्रिय भोला,

आशीर्वाद !

मैं १० ता० को कटक गया था, परसों वापस आया हूँ। २९ तक सभा चलेगी और २ मई को मैं मुक्त हो जाऊँगा। घर अगर बनना खत्म हो तो पटना जाऊँगा। अन्यथा कहीं और।

शुकदेव डाक-तार के लिए उम्मीदवार है। मेरे पास रेफरेंस आया था। आशा है, वह चुन लिया जायगा। किन्तु, बहुत कुछ तो इन्टरव्यू पर निर्भर है। इसे गुप्त रखना, मगर, उसको बता देना।

तुम्हारा
रामधारी

[२५२]

२९, कारमाइकेल रोड, बम्बई

१६-१-६१

प्रिय भोला,

दो आर्टिस्ट कुछ ideas ले गये हैं। आज ड्राइंग दिखायेंगे।

यहां के सबसे बड़े Heart Specialist का नाम डाक्टर 'वकील' है। अपने फन के लिए उन्हें १९५८ में पद्मभूषण भी मिला था। परसों उन्होंने जांच की। बोले स्कीमिया भी है और Heart enlargement भी। फिर भी, कार्डियोग्राम से पता चला कि पहले से हालत सुधरी है। किन्तु, जिस ढंग से उन्होंने बात की उससे मैं चौंक उठा हूँ। बोले, आप तेजी से चार मील चलते कैसे हैं? लाइफ का टेम्पो खत्म कीजिये, हो सके तो संसद छोड़ कर घर बैठिये और हार्ट को आराम दीजिये और दवा कीजिये। आज उनकी हिदायतें लिखित रूप में मिलेंगी। Blood sugar कल करवानी है।

वायुमार्ग से ही लौटने का विचार है। २० को आऊँगा अथवा २१ को। तार दे दूँगा।

पथ्य ठीक चला है। बेल नहीं मिला। कब्जियत शुरू हो गयी। टहलना छोड़ दिया उससे और भी।

I must show Vakil's report to Dr. ghoshal. Meanwhile I will start treatment for heart.

तुम्हारा

रामधारी

[२५३]

पटना

२७-१-६४

प्रिय भोला,

सकुशल पहुँच गया। सेवो की तबीयत खराब देखी। अभी रात में ही खत लिख रहा हूँ। गिराया कल जायेगा।

दोनों जोड़ जूते वहीं रह गये चमड़े के टुटहे बाक्स में। उस बक्से को तुरन्त भेजो जिससे जूते मेरे पास तुरन्त पहुँच जायें। बाकी चीजें चाहे जब भेजना।

सेवो के स्वभाव से आज फिर भय लगा। शायद मुझे सब छोड़ कर संन्यस्त होना है।

१. एलिजबेथ ब्रूनर से तीनों चित्र ले आना। २. रजनीजी से अनुवाद की कॉपी ले आना। ३. लोग पूछें तो कहना कि डाक्टर आने की अनुमति अभी नहीं देंगे। ४. Flowers of Hell घर में होगी। Goethe in weimar रजनी के पास है। ये दो किताबें संसद-पुस्तकालय को लौटा आना और मुझे खबर देना।

तुम्हारा

रामधारी

[२५४]

पटना

२-१०-६८

प्रिय भोला,

जाड़े के कपड़ों की जरूरत यहीं पड़ेगी। कुञ्जी भेज रहा हूँ। बड़े बक्से में दोनों कुरते और ऊनी बंडी निकाल कर सिद्धेश्वर के मार्फत भेज दो। वह शायद शुक्रवार को पटने के लिए प्रस्थान करेगा। अथवा मिश्रजी आते हों तो उन्हीं के हाथ भेज दो या मथुरा आता हो तो उसी के हाथ। कोई नहीं मिले तो विशेष के ही मार्फत भेज देना। चिट्ठियाँ आयी हों तो उन्हें भी भेज देना।

चिट्ठी गाँथने वाली फाइल में यानी खोंसुआ में दो तीन चिट्ठियाँ होंगी जिनका लैटर-हेड है The Radhakrishnan Number, Madras उनमें से एक चिट्ठी भेज दो, डाक से। मुझे V. Kalidas का पता लेना है।

कोठरी को वरहवट्टू होने मत देना।

आदित्य अगर पाण्डुलिपि बृहस्पति या शुक्र तक भेजेगा तभी वह चीज पटने में मिलेगी। मैं मंगल की शाम को कलकत्ते जा रहा हूँ। देर हो तो वह सीधे प्रेस भेजे। पता :—

जनवाणी-प्रेस

36, Baranasi Ghosh Street, Calcutta-7

तुम्हारा

रामधारी

[२५५]

२२-१२-६८

प्रिय भोला,

कुञ्जी इसी लिफाफे में जा रही है। भीतर आलमारी में एक पण्डितजी की पाण्डुलिपि है। उस पुस्तक का नाम "भारतीय दर्शन" या ऐसा ही कुछ है। लेखक हैं पण्डित यशोधर झा। कॉपी लम्बी-लम्बी दो हैं। दोनों या तीनों कापियाँ बढ़ियाँ से वेष्ठित करके और बाँध कर रामसेवक के नाम से तुरन्त भेज दो। रजिस्ट्री पार्सल से भेजना, खुद लगाना और रसीद रख लेना। जरूरी है। कापी लम्बी साइज की है जिस साइज का सादा कागज साथ है।

तुम्हारा

रामधारी

[२५६]

लन्दन
२३-११-५५

प्रिय मथुरा,

मैं यहाँ आ गया। जहाज कैरो, रोम और जेनेवा रुका था। यहाँ ७॥ बजे शाम को पहुँचा जब मेरी घड़ी में रात का एक बजा था। लन्दन का जो दृश्य ऊपर से देखा वह अतीव सुन्दर था। शहर बहुत बड़ा है। इतना बड़ा कि अभी हम हवाई-अड्डे से २२ मील दूर के होटल में ठहरे हैं, जहाँ से ६ बजे भोर तक फिर हवाई अड्डे पर पहुँच जाना है। रात के अभी ११॥ बजे हैं।

सागर साहब मेरी गार्जियनी ठीक से नहीं कर सकेंगे। जहाज में आज उन्होंने अपना मफलर खो दिया और अभी उनकी अटेची मोटर में ही छूट गई। हवाई अड्डे पर से एक लड़की ने फोन किया है कि अटेची है। वह बेचारी भेज रही होगी। और सागर जगे-जगाये बैठे हैं।

यात्रा के कष्ट ठीक से झेल गया हूँ। किन्तु भोजन से अभी से अरुचि हो रही है।

This is a land of active people. They will devour us if we do not learn to work hard in India. It is no use criticising Europe. Europe is worshipping the God of work. We are meditating on the meaning of work—कर्मण्येवा·········
This is all humbug.

मगर ठीक बात तो कुछ देखने पर सूझेगी। कपूर साहब को पत्र सुना दो और नमस्कार कहो। सागर साहब सबको सलाम कहते हैं।

तुम्हारा
रामधारी

डॉ० महेशनारायण

[२५७]

आर्यकुमार रोड, पटना–४
२३–३–५६

भाई महेशनारायणजी !

आपका पत्र मिला। पढ़ कर हृदय गद्‌गद् हो गया। अब वैसे लोगों का अभाव हो रहा है जो कलाकार का मनसूवा बढ़ाते रहें। हाँ, शिवजी ऐसे व्यक्ति जरूर हैं। उन्होंने जो कुछ लिखा है, वह आशीर्वाद है और आपने जो कष्ट किया उसे आपकी शुभकामना मानता हूँ। आपने खूब याद किया। धन्यवाद।

आपका
दिनकर

[२५८]

आर्यकुमार रोड, पटना-४
६-३-६०

प्रिय श्री महेशजी,

मैं वेनीपुरीजी के यहाँ गया था इसलिए, नई धारा का अंक और आपकी चिट्ठी वाहर से आनेपर मिली। लेख मैं पढ़ गया, क्योंकि आपका पत्र साथ था। अन्यथा, अपने वारे में लिखी चीजें मैं अव कम पढ़ता हूँ।

एक दो बातें इस लेख में गलत हैं। स्कूल की मास्टरी मैं बरबीघा में करता था, बड़हिया में नहीं।

रवि बाबू जब पटने आये थे, तब मैं उनसे मिलने नहीं गया था। यह ठीक है कि जायसवालजी के कहने पर मैं रवि बाबू से मिलने को ही कैजुएल छुट्टी लेकर पटने आया था, किन्तु, मिलना नहीं हो सका। आते ही देखा कि जायसवालजी का पारा चढ़ा हुआ है। वे रवि बाबू से मिलने नहीं गये, तब भी नहीं, जब रवि बाबू ने स्वर्गीय गोपाल बाबू बैरिस्टर को भेजकर उन्हें बुलवाया। यह संभव है कि उन्होंने रवि बाबू के सेक्रेटरी को फोन पर मेरे बारे में कहा हो, किन्तु, चूंकि जायसवालजी जाने को तैयार नहीं हुए, इसलिए, मैं भी नहीं जा सका। यह बात मुझे ठीक याद है।

काशी में नागरी प्रचारिणी सभा की स्वर्ण जयन्ती पर होने वाले कवि-सम्मेलन का सभापतित्व भी मैंने नहीं किया था।

आपने मेरी कच्छी टोपी की खूब याद रखी है।

"संस्कृति के चार अध्याय" का पहला अध्याय इसलिए कमजोर है कि जिस विषय को मैं प्रतिपादित करना चाहता था उसपर अभी काम ही बहुत कम हुआ है। मेरा उद्देश्य हिन्दू-धर्म का गुणगान करना नहीं, प्रत्युत् विभिन्न प्रान्तों के हिन्दुओं के बीच सामाजिकता की खोज करना था। यह कार्य जहां तक सम्भव था, कर दिया है। आगे का जिम्मा नयी उम्र के विद्वानों का है।

यदि आपकी निराशा का कारण यह हो कि मैंने हिन्दू-धर्म पर द्रविड़ प्रभाव क्यों दिखाया, तो इससे आपको निराश नहीं होना चाहिए। काम, यद्यपि, अभी कम हो पाया है, पर, इतना तो मुझे सत्य प्रतीत होता है कि जो संकेत मैंने किया है, अगले २० वर्षों में, उस पर विपुल साहित्य तैयार हो जायेगा और आपलोग भी मानने लगेंगे कि हिन्दू-संस्कृति की रचना केवल आर्यों ने नहीं की थी, उसके निर्माण में आर्येतर जातियों का भी बहुत बड़ा हाथ था।

आपका

दिनकर

चित्रकार उपेन्द्र महारथी

[२५९]

श्रीनगर

२०-६-५६

प्रिय भाईजी,

अधिक तो नहीं घूम सका किन्तु, जहाँ-जहाँ गया आपकी याद आती रही। प्रधानतः इसीलिए यह पत्र लिख रहा हूँ।

मैं २८ की शाम तक पटने पहुँच जाऊँगा। क्या उस समय तक चक्रवाल का डिजाइन तैयार रहेगा। क्षितिज का संकेत, एक लघु पक्षी। बाकी जो हो।

आपका

दिनकर

[२६०]

१६-७-५६

प्रिय महारथी बाबू,

चक्रवाल और उजली आग के डिजाइन बने या नहीं ? चक्रवाल की छपाई समाप्त प्राय है। मैं १९ के प्रातःकाल पटने पहुँचूँगा और २१ को दिल्ली चल दूँगा। क्या मैं १९ या २० को आप से मिलकर डिजाइन ले सकता हूँ ? उत्तर मेरे पटने के पते पर भेज दें। पत्र न लिखें तो जयनाथजी को २०६३ (आफिस) २६८४ (घर) फोन कर दें।

आपका

दिनकर

श्री रघुनाथ विकल

[२६१]

५२, साउथ एवेन्यू नई दिल्ली
८-९-५६

प्रिय भाई,

आपका ६-९ का कृपा-पत्र मिला। आपका ख्याल ठीक है। 'नया वर्ष' नामक कविता मेरी नहीं है। मालूम होता है कि भ्रमवश यह भूल हो गई है। आप चिन्ता न करें। मैं अधिकारियों को लिख रहा हूँ।

धन्यवाद।

आपका
दिनकर

[२६२]

आर्यकुमार रोड, पटना ४
१८-११-६०

प्रिय भाई,

आपका ८-११ का पत्र मिला। कमेटी को सूचना मैंने फिर दे दी है। किन्तु यदि आप प्रकाशक का पता लिख दें तो पुस्तक मँगाकर मैं उसे खुद नोटिस दे दूँ।

आपका
दिनकर

श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह

[२६३]

नई दिल्ली
१८-१२-५६

प्रिय राजेन्द्र जी,

मैं बाहर था। आज वापस आने पर आपका पत्र मिला। 'चक्रवाल' की भूमिका में प्रसंगवश मैंने पांच-सात कवियों के नाम लिये हैं। यह केवल नमूना दिखाने को। वैसे सभी नाम गिनाये जाएँ तो कई पन्ने लग जाएँगे। इसमें बुरा मानना क्या? साहित्य में न तो मेरा कोई दल है, न आप वैसे किसी दल के सदस्य हैं। हाँ, यह दोष लगाया जा सकता है कि हजार को छोड़कर मैंने पांच-सात ही नाम क्यों लिये। किन्तु, जब हजार नाम गिनने का अवकाश न हो, तब यह दोष तो लगेगा ही। अतएव, मैं इस आलोचना को महत्त्व नहीं देता। आगे यदि और कुछ लिखना सम्भव हुआ तो अनेक कवियों के नाम आ जाएँगे और सम्भव है, आपका नाम न आये। तो क्या

इससे यह समझियेगा कि मैं आप को आगे बढ़ाना नहीं चाहता हूँ? ये सब छोटी बातें हैं। जहाँ सुनिये, वहीं भूल जाइये।

आज हिन्दी में काम वही कर सकता है, जो कुछ बहरा हो। संस्कृति वाले विषय पर कभी बात हो, तभी आप जान सकेंगे कि आपको मेरी सहायता की आवश्यकता है या नहीं? जनवरी के तीसरे सप्ताह में पटने में मिलूँगा। निन्दा और स्तुति, दोनों से तटस्थ होना सीख रहा हूँ। कोशिश तो बहुत दिनों से जारी थी। अब सफलता की आशा हो चली है। भगवान आप लोगों को बढ़ाएँ। निरालाजी के शब्दों में—'हम कीच की ईंट हैं। आप लोग हम पर पांव रखकर आगे निकलिए।' शेष कुशल है।

आपका
दिनकर

[२६४]

साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
७-१२-५९

प्रिय राजेन्द्र

कल शाम को यहां लौटने पर वीरेन्द्र का पत्र मिला, जिसकी पीठ पर तुम्हारी भी कुछ पंक्तियां अंकित हैं। वीरेन्द्र ने अपना भाव लिखकर व्यक्त किया है। अव्यक्त रह जाता तो और उत्तम बात होती।

तुमने तो अपनी कोई बात मुझसे कही नहीं। बताओगे तो शक्ति-भर सहायता करने की कोशिश अवश्य करूँगा। निरालाजी के अनुसार अब हम लोग 'पौधर' हैं और बच्चों को हम पर पांव रख कर निकलना चाहिए।

पत्र मिल जाए तो उत्तर लिखना।

तुम्हारा
दिनकर

[२६५]

साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
१० फरवरी १९७०

प्रिय राजेन्द्रजी,

बहुत दिनों के बाद आपका उत्तर आया। मैने सोचा था, पत्र भटक गया। 'अमावस और जुगनू' की वार्त्ता सुनकर आश्चर्य भी हुआ और दुःख भी। खैर, कुछ सूझ गया तो करूँगा। अभी मेरा दिमाग ठिकाने नहीं है। मथुरा बाबू ने वह घर छोड़ दिया। वे 'कंस्टीट्यूशन हाउस' चले गए और मैं बेटी के घर आ गया हूँ। दो कमरे हैं इसमें। एक में मैं हूँ और दूसरे में अभी १५ आदमी हैं। कागज-पत्र बन्द हैं। लिखने-पढ़ने का सिलसिला चल

नहीं सकता। सुबह ही उठकर प्रातःकर्म के लिए मामा (वरेरकर) के यहाँ चला जाता हूँ। यह सब इसलिए लिख रहा हूँ कि आप यह जान सकें कि आपका यह सुगम्भीर पत्र किस मुद्रा में मुझे प्राप्त हुआ है।

किन्तु बिना विचिकित्सा के भी इतना तो स्पष्ट है कि आपका भाग्योदय साहित्य में ही होगा। साहित्यकार को सलाह-मशविरे की जरूरत नहीं होती और परिस्थितियाँ क्या सलाह-मशविरों के अनुसार आदमी को चलने देती हैं? इसीलिए मैं सलाह देने की गुस्ताखी नहीं करूँगा। केवल अनुभव की दो-एक बातें बताता हूँ। इन्हें केवल सुन लीजिए।

१९६४ में जब मुझे सब-रजिस्ट्रारी का ऑफर आया, बेनीपुरी ने सलाह दी कि कबूल मत करो। सरकारी नौकरी में जाकर अपने कवि की हत्या ही करोगे। यह बहुत ही नेक सलाह थी। लेकिन, मैं उस पर नहीं चल सका। सारी जिन्दगी परिवार की गरीबी से जूझने में बीत गई। जिस समय लोग ताश और बैडमिण्टन खेलते हैं, उस समय को भी मैंने साहित्य में लगाया। बस इतना ही काम मुझसे हो सका और कीर्ति मुझे क्षमता से अधिक मिल गई। कारण, शायद यह था कि मैंने अपने आपको अमरता के अयोग्य पाकर उन कामों को खूब मनोयोग से किया, जिनकी मुझ में योग्यता थी। अमर बनने का मनसूबा बाँधता तो वह काम भी नहीं हो पाता, जिसे ईश्वर ने मुझसे करवा लिया है।

जिस युग में पैदा हुआ, उसकी योग्यता और सम्मान को समझने में मैंने गलती नहीं की है, इसका मुझे विश्वास है। आज भी जो नवयुवक आज के युग की योग्यता और प्रवृत्ति को पहचान कर चलेगा, उसे अधिक कठिनाई नहीं होगी, यद्यपि कठिनाइयाँ आज पहले से बहुत बढ़ी हैं। मुश्किल यह है कि निराला के आए बिना साहित्य की परिधि विस्तृत नहीं हो पाती, किन्तु, हर आदमी निराला बनने की कोशिश में फँस जाए तो साहित्य ठिठक जाएगा। बस, इतना ही आत्मज्ञान हम सबको हासिल करना है।

Please do not try to make yourself No. 1 of your time. Always try to give only such things as are under your spontaneous command. लीजिए, एक उपदेश तब भी दे ही गया, जिसके लिए क्षमा चाहता हूँ।

आपका भाग्योदय साहित्य में है। अपनी सारी बाधाओं के भीतर से अपनी राह आप निकालिए। कृपया यह भी याद रखिए कि अन्ततः एक व्यक्ति कोई एक ही चीज हासिल करता है।

आपका

दिनकर

'ज्योत्स्ना' (पटना) से साभार

स्व० पुत्र रामसेवक सिंह

[२६६]

कलकत्ता-२७
११-५-५७

प्रिय नुनू,

विनता को फोन पर कह दिया था आशा है, कल शाम तक भोला या शिवकुमार आ जायेंगे।

अयुतानन्दजी ने दिन २० मई बताया था, लेकिन, विष्णुकान्तजी ने २२ मई बढ़िया कहा था। विष्णुकान्तजी से पूछ कर Varify कर लो। मैं भी आज पंडित से Varify करूँगा और २२ के बारे में मुझे भ्रम नहीं है तो वही दिन पक्का करके निमंत्रण भेजूँगा यहीं से।

तिलक किस दिन आयेगा ? मैं १३ को न चला तो १४ को तो अवश्य चल दूँगा। मुझे पटना आना है या सिमरिया, सो तार से बताओगे। घर के लोगों को सिमरिया जाना है।

कपड़े बनवाने हैं :—

१. आदित्य को शेरवानी, पैंजामा, टोपी, जूता।

२. बाकी लोगों के लिए कुरते, नरेश वगैरह को पैंजामे आदि।

घर पर सवारी, बाजा, पुन्ना वगैरह तैयार है या नहीं ? जो पूछना हो फोन पर पूछ लो। भोला के आने पर मैं रात में फोन करूँगा। कागज पैंन्सिल लेकर फोन पर रहना।

तुम्हारा
रामधारी

[२६७]

कानटून
१७-११-५७

प्रिय नुनू,

आज चीन-प्रवास का अन्तिम दिन है। कल प्रातःकाल इस शहर से ट्रेन से चलूँगा ७॥ बजे भोर में, और हांगकांग पहुँचूँगा ११ बजे। १८, १९, २० ये रातें हांगकांग में बीतेंगी। २१ को बैंकाक जाऊँगा। २१, २२ ये रातें बैंकाक में। श्री आनन्दमोहन सहाय Ambassador मेरे मित्र हैं। अगर छुट्टी पर नहीं गये हों तो उनसे भेंट होगी। २३ को रंगून पहुँचूँगा। २४ को रंगून में बर्मादेशीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का जलसा है। उसका उद्घाटन करूँगा और २५ को अवश्य-अवश्य कलकत्ता पहुँच जाने का विचार है। कामेश्वर को लिख दिया है कि २६ की रात में दिल्ली-एक्सप्रेस से मेरी सीट रिजर्व करवा रखे

कि मैं २७ के प्रातःकाल आठ बजे पटने पहुँच जाऊँ। २८ या २९ को दिल्ली चला जाऊँगा। अगर सम्मेलन का मुँगेर-अधिवेशन हो रहा है तो मुझे दिल्ली से फौरन वापस होना होगा। २६ के प्रातःकाल कलकत्ते से फोन भी करके तुमसे बतियाने का विचार है सुबह ९ बजे तक। यह समाचार तुम ब्रजशंकरजी को दे दोगे।

यात्रा अच्छी रही या नहीं, ठीक नहीं कह सकता। पीकिंग और शंघाई-रेडियो से वार्त्ताएँ दीं, वे ब्रजशंकरजी को भेज चुका हूँ। पीकिंग-विश्वविद्यालय शंघाई-विश्वविद्यालय और कानटून-विश्वविद्यालय में अंगरेजी जानने वाले छात्रों और प्राध्यापकों के समक्ष भाषण दिये, बातें कीं। विषय भारतीय संस्कृति, साहित्य, कला और राजनीति। प्राइम-मिनिस्टर से मिला, ढेर साहित्यिकों से मिला, प्राचीन चीन के अवशेष देखे, नये चीन की उमंग देखी, और सबसे बढ़ कर चीन के दर्पण में भारत की कमजोरियाँ देखीं। मन पर भारी प्रभाव पड़ा है और इसके कारण मेरी प्रवृत्ति में परिवर्त्तन होंगे, ऐसा लगता है।

एक शिक्षा देश के लिए ला रहा हूँ। युवक कस कर व्यायाम करें, औरतें निकम्मी न रह कर घूमें-फिरें और अपने आपको सँभालना शुरू कर दें, नौकर को पुत्र और भाई की तरह रखो, केवल भाव से ही नहीं, धन और मान से भी, हलवाहों को घर का सदस्य समझो, धन जुगाना लोग छोड़ दें, किफायतसारी से काम लो, हर आदमी manual work भी करे, घर को बाहर और भीतर से फूलों से सजा दो। वैयक्तिक सम्पत्ति रहने वाली नहीं है, भारत में भी नहीं। कम-से-कम, भारत विनोबा पर आ कर ठहरेगा अर्थात् ज़रूरत से फाजिल किसी के पास नहीं रहेगा। अपरिग्रह, निवृत्ति और अहंकार—विसर्जन के विना नया समाज नहीं लाया जा सकता। अभी भारत में ज़ो समाज चल रहा है उसे चलने देना प्रत्यक्ष अन्याय है। समाजवादी ढाँचे का समाज क्या है, इसे कांग्रेस के नेताओं को स्पष्ट करना होगा। गोल-मटोल ढंग से हम कब तक चलते रहेंगे? Our ideology must he clarified and the country must know the goal for which it is asked to work.

भोजन पसन्द का कहीं नहीं मिला। अर्धोपवास में भी चीनी चलती रही। पता नहीं क्यों इन्सुलीन खराब हो गई? शांघाई में दूसरी ली वह अनभ्यास के कारण ठीक से काम नहीं करती है। कल शाम को मन अचानक वहुत उदास हो गया। आज ठीक है। पत्र जो पटने से भेजा वह कल यहाँ मिल गया। यह पत्र हांगकांग पहुँच कर छोड़ूँगा कल। तुम्हारा

रामधारी

[२६८]

पीकिंग (चीन)
३०-११-५७

प्रिय नुनू,

२५ को रंगून पहुँचा। अपने राजदूत के घर पर ठहरा। २६ को रंगून से उड़कर कुनमिंग आया। लेखक-संघ की ओर से दो सज्जन स्वागतार्थ आये थे। वे मुझे होटल ले गये और लेखक-संघ में मेरा अभिनन्दन हुआ। खा-पीकर शहर देखने गया। रात में नींद आ गई। २७ के प्रातःकाल उड़ा और शेंगतू आया। यहाँ पता चला कि जहाज पीकिंग नहीं जायगा क्योंकि मौसम खराब है। रात शेंगतू होटल में काटी। २८ के प्रातःकाल ८।। बजे जहाज उड़ा और २। बजे दिन में पीकिंग पहुँच गया। बीच में जहाज सिंकियांङ् में उतरा था। पीकिंग में तीन व्यक्ति स्वागतार्थ खड़े थे। कुनमिंग, शेंतुंग और सिंकियाङ् में मिजाज अच्छा नहीं रहा। कुछ उड़ान की हरारत और उससे भी अधिक चीनी-पद्धति के भोजन से विरक्ति, इन दोनों के कारण मन काफी दब गया था। पीकिंग-होटल आकर मन प्रसन्न हो गया। भोजन यूरोपीय ढंग का यहाँ अच्छा मिलता है। एक कवि और एक दुभाषिया साथ रहता है। समय अच्छी तरह कट रहा है। केवल २८ की रात भर नींद नहीं आयी।

यहाँ मैं ४ तक हूँ। ५ को दौरे पर निकलूँगा और तिंत्सीन, नानकिंग, शंघाई, हाँगचो होकर १६ को कानटून पहुँचूँगा। १८ को हांगकांग, २० को बैंकाक और २५ को रंगून पहुँचने का विचार है। २८ नवम्बर तक कलकत्ता अवश्य पहुँच जाऊँगा, ऐसा विचार है। १९ को हांगकांग अवश्य रहूँगा। शेष कुशल है।

तुम्हारा
दिनकर

[२६९]

नई दिल्ली
१६-१२-५८

प्रिय नुनू,

Tata Company में लेबर वेलफेयर अफसर की जगहें खाली हुई हैं। भोला को इसमें दरखास्त भेजनी चाहिए। पूरा पता वहीं रंजनधारी बाबू के आफिस से मालूम होगा। रामविलास को लेकर उस आफिस में जाना होगा और पता लगा कर आवेदन देना होगा। लेकिन, यह काम आनन-फानन होना चाहिए। दरखास्त की एक कॉपी मुझे यहाँ भी भिजवा दो। शेष कुशल है। मिजाज ठीक चल रहा है।

मुझे यह पता नहीं चला कि रुपये तुमने दादा को भेज दिये या नहीं।

तुम्हारा
रामधारी

प्रोफेसर के० दोइ (जापान)

[२७०]

Aryakumar Road,
Patna-4
The 6th July, 1957.

Dear Shri Doi,

Thank you very much for your kind letter of the 18th June, 1957. I am very glad to know that my book "Sanskriti Ke Char Adhyay" has attracted your notice and you want to translate it into Japanese. I give you permission for the same on the terms and conditions mentioned in your letter. I also agree with you that the translation should appear in two parts, the later two chapters appearing first. If you want the preface, written by Pandit Nehru, to accompany the translation, please write to me so that I may send the original English version of the preface to you. Panditji had written the preface originally in English.

No, I have not received the book-review, written by Prof. WATANABE. I should be glad to receive a copy of the same from you.

By the way, could you send me about two dozens of modern Japanese poems, rendered faithfully into Hindi prose from which translations into Hindi verse could be prepared ? I want to do the job myself.

I had the good fortune of meeting your poet NOGUCHI when he had visited our country in 1935. At that time some of Prof. NOGUCHI'S poems were rendered into Hindi and received well by the people. Since then, no modern Japanese poems have been translated here.

With kind regards,

Yours sincerely,
R. D. SINHA

[२७१]

आर्यकुमार रोड, पटना-४
१९ सितम्बर १९५७

प्रिय भाई दोइ साहब,

कुछ दिन पूर्व आपका दूसरा पत्र मिला जिसमें तारीख आपने नहीं दी है। उत्तर में बहुत विलम्ब हो गया। कृपया क्षमा करेंगे।

यदि आप 'संस्कृति के चार अध्याय' का अनुवाद खण्डों में निकालना चाहते हैं तो सुगम योजना इस प्रकार बनेगी :—

(१) प्राचीन भारतीय संस्कृति : इस खण्ड में प्रथम और द्वितीय अध्याय लिये जायेंगे। बल्कि, दूसरे अध्याय में भी पेज १९१ (द्वितीय संस्करण) तक का ही मैटर पहले खण्ड में लीजिये।

(२) मध्यकालीन भारतीय संस्कृति : इसका आरम्भ "क्रान्ति की गंगा में शैवाल" नामक प्रकरण से करना चाहिए जो द्वितीय संस्करण में पेज १९२ से शुरू होता है। इस खण्ड में पेज ३९८ तक का मैटर यानी पूरा तृतीय अध्याय आ जायेगा।

(३, अर्वाचीन भारतीय संस्कृति : इसमें पूरा चतुर्थ अध्याय आ जायेगा।

मेरा यह भी सुझाव है कि आप पहले तीसरी, फिर दूसरी और बाद में पहली जिल्द प्रकाशित करें।

नेहरूजी-लिखित प्रस्तावना का अंग्रेजी-मूल मेरे पास सुरक्षित है। वह सभी खण्डों की प्रस्तावना बन सकती है। मैं उसकी एक प्रति यथासमय आपको भेज दूँगा।

शंकाओं का समाधान इस प्रकार है :—

(१) 'संस्कृति-भाषा' गलत छपा है। शुद्ध रूप संस्कृत भाषा ही है।

(२) 'सुगबुगाता रहा है।' सुगबुगाना क्रिया है। अर्थ होता है धीरे-धीरे हिलना। सुगबुगाना जिन्दगी की निशानी है। मुर्दा सुगबुगाता है यानी मुर्दे में धीरे-धीरे जान महसूस होती है।

(३) 'इससे भी एक बड़ी वस्तु' (पेज ८) मेरा तात्पर्य इस बात से है कि भारत में अनेक नस्लों और अनेक धर्मों के लोग हैं और उनकी भाषाएँ भी अलग-अलग हैं। फिर भी, वे एक महाजाति के रूप में एक होकर जीते आये हैं। विश्व की एकता की भी सबसे बड़ी बाधा यही है कि संसार में अनेक नस्लों, अनेक धर्मों और अनेक विचारों के लोग हैं तथा उनकी भाषाएँ भी अलग-अलग हैं। अतएव, विश्व की एकता की समस्या भारतीय एकता की समस्या से मेल खाती है। किन्तु, अहिंसा के जिस साधन को अपनाकर भारत ने अपनी एकता का निर्माण किया (प्रथम अध्याय की ओर संकेत है) उसी साधन को अपनाकर हम सारे विश्व में एकता स्थापित कर सकते हैं।

(४) राह-दान का अर्थ है राह चलने को अनुमति देना, राह चलने में सहयोग देना, यात्रा के लिए सुविधाएँ देना।

(५) 'महमूद गोरी' गलत छपा है। मुहम्मद गोरी ही होना चाहिए।

(६) दिक्काल=दिक्+काल=देश और काल=टाइम एण्ड स्पेस TIME AND SPACE.

(७) मानवात्मा=HUMAN SOUL

सम्भावना यह है कि अक्तूबर के अन्त तक मैं चीन जाऊँ। वहाँ से लौटते समय दो-चार दिन जापान रुकने का भी विचार है। उस समय आपसे मुलाकात हो जाये तो बहुत अच्छा हो।

शेष कुशल है।

मेरे दो पते हैं :—

१) जब पार्लमेंट का सेसन चलता रहता है, मैं दिल्ली में रहता हूँ।
पता : 52, SOUTH AVENUE, NEW DELHI,

२) जब पार्लमेंट का सेसन नहीं रहता, मैं पटने में रहता हूँ।
पता : ARYAKUMAR ROAD, PATNA-4.

आपका
रामधारी सिंह दिनकर

[२७२]

Aryakumar Road, Patna
22-10-57

प्रियवर दोइ साहब,

आपका पोस्ट-कार्ड मिला। आप ने यह नहीं लिखा कि मैंने जो यह बताया कि 'संस्कृति के चार अध्याय' का अनुवाद तीन जिल्दों में निकालिये, वह प्रस्ताव आपको पसन्द आया या नहीं। नेहरूजी ने अंग्रेजी में जो भूमिका लिखी थी, उसकी एक प्रति मैं इस पत्र के साथ भेज रहा हूँ।

चीन के लिए मैं २५ अक्तूबर को कलकत्ते से उड़ूँगा और २७-२८ तक पीकिंग पहुँच जाऊँगा। चीन में मैं १५ नवम्बर तक रहना चाहता हूँ। उसके बाद हांग-कांग और बैंगकाक होकर भारत लौट आऊँगा। Foreign Exchange की कठिनाई के कारण अब जापान नहीं जा सकूँगा।

शेष कुसल है।

आपका
रामधारी सिंह दिनकर

पुत्री विभा

[२७३]

Peking Hotel, China
30-10-57

प्यारी बेटी,

साथ के पत्र से मेरा पिछला और अगला प्रोग्राम मालूम होगा। यह देश है तो भारत के ही समान (यहां भी धान, गेहूँ, शकरकन्द और कोबी हैं, बाँसों के झुरमुट हैं, झोंपड़े हैं, मिट्टी के मकान हैं, गन्दगी है) किन्तु, यहाँ राज-काज दूसरे ढंग का है। बाजार में सभी दूकानें सरकार की है, किताबें भी सरकार ही छापती है, अखबार भी सरकार ही निकालती है और सारे देश के लोग नीले रंग का कपड़ा पहनते हैं। आदमी यहाँ बहुत हैं। सड़कों के दोनों ओर लोग भरे रहते हैं जिनमें कल्लो और पूनम की उम्र के बच्चे भी अगणित होते हैं। औरतें भी कोट और पैंट ही पहनती हैं। लड़कियाँ अक्सर दो चोटियाँ निकालती हैं और माँग गरदन से ललाट तक चीरती हैं। देश गरीब है। इसलिए, ज्यादा लोग रूई-भरा पैंट और कोट पहनते हैं। छींट की दुलाई खूब चलती है और छींट के रूई-भरे कोट में बच्चे खूब गुलथुल दीखते हैं। सच पूछो तो सौन्दर्य इस देश में बच्चों में ही मिलता है।

सारे देश के लोग पूरे मन से सरकार के साथ हैं और सभी व्यक्ति देश को शीघ्र-से-शीघ्र सुखी और सम्पन्न बनाने के लिए जी-तोड़कर काम कर रहे हैं। यहाँ विरोधी सभा और जुलूस तथा नारे और राजनीतिक कुढ़न कुछ नहीं है। लड़की और लड़के व्यायाम भी खूब करते हैं। यह गुण भारतवासियों को भी सीखना चाहिए।

तुम्हारा
रामधारी

स्व० हजारीप्रसाद द्विवेदी

[२७४]

साउथ एवेन्यू, नयी दिल्ली
४-१२-५७

मान्यवर द्विवेदी जी,

हिन्दी की राजनीति, सद्यः दुर्बल दीखती है। तमिलनाड और बंगाल पूरे जोर पर हैं। समाचार आप पढ़ ही रहे होंगे। प्रचार पुस्तिकाएँ भी प्राप्त हो रही होंगी। अतएव, हिन्दी तथा अन्य देशी-भाषाओं की ओर से भी कुछ कहा जाना चाहिए। बिहार-सम्मेलन का अधिवेशन ७-८ को मुँगेर में है। उसमें एक दिन आप भी आ जायँ तो अच्छा रहे। काशी में जो सम्मेलन हो रहा है उसके प्रस्ताव दिल्ली में छपने चाहिए। प्रयाग में परिषद्

जो कुछ कहे, उसे भी दिल्ली में छपना चाहिए। प्रत्येक प्रस्ताव की प्रतिलिपि गृहमंत्रालय को जानी चाहिए।

देश में जो स्थिति उत्पन्न की जा रही है, वह विघटन को उत्तेजना देगी। असल में, समस्या क्या है? हम हिन्दी को किसी पर भी नहीं लादने की बात बार-बार कह चुके हैं और हम उस पर आरूढ़ भी हैं। फिर भी लोग हिन्दी वालों को भाषा-साम्राज्यवादी कह रहे हैं। Give the dog a bad name and then hang him. मैं तो सोचता हूँ कि हिन्दी-देश की राजभाषा हुई है या नहीं अथवा उसे राजभाषा होना चाहिए या नहीं, इसका निर्णय अहिन्दी-भाषियों पर ही छोड़ देना चाहिए। वे यदि चाहें तो हिन्दी को राजभाषा बना लें। अन्यथा उन्हें जो निर्णय पसन्द हो, वही कर लें। किन्तु, इतने से ही समस्या का समाधान नहीं होता। संविधान में देश ने एक निर्णय किया और नेताओं ने कहा कि उस निर्णय को काम में लाना चाहिए। हिन्दी-प्रान्तों को इस काम में कठिनाई कम दीखी। अतः, उन्होंने अपने विश्वविद्यालयों में शिक्षा का माध्यम बदल दिया। कुछ अन्य भाषा-क्षेत्रों में भी विश्वविद्यालयों की शिक्षा का माध्यम वहाँ-वहाँ की क्षेत्रीय भाषा बना दी गयी है। अब मुख्य प्रश्न यह है कि उन विश्वविद्यालयों से जो ग्रेजुएट तैयार हो रहे हैं, उनके लिए केन्द्रीय नौकरियों के दरवाजे खुलेंगे या नहीं? बंगाल और तमिलनाड, अंगरेजी का पल्ला नहीं छोड़ना चाहते। तो उनके लिए अंगरेजी का माध्यम बना रहने दीजिये। किन्तु, जो न्याय बंगाल और तमिलनाड चाहते हैं, वही न्याय हिन्दी-प्रान्तों समेत गुजरात और महाराष्ट्र को भी चाहिए। अन्यथा स्थिति यह हो जायगी कि इन प्रान्तों के युवक अधिकाधिक संख्या में बेकार होते जायेंगे और उनके इलाके उन लोगों के चारागाह बने रहेंगे जो अंगरेजी में हुशियार हैं। यह स्थिति अन्याय की स्थिति होगी और इन प्रान्तों की जनता उसे स्वीकार नहीं करेगी। फिर जो सरकार, छोटे आन्दोलनों से भीत हो कर, राजभाषा के प्रश्न पर निराशाजनक निर्णय करेगी, उसे अत्यन्त भीषण आन्दोलन का सामना करना पड़ेगा और इन आन्दोलनों से देश की एकता को चोट पहुँचेगी, अतएव, कुशल का एकमात्र मार्ग यही है कि केन्द्रीय नौकरियों के दरवाजे अंगरेजी समेत उन सभी भाषाओं के लिए खोल दिये जायें जिनमें स्नातक तैयार होते हों। निराशाजनक निर्णयों से हिन्दी-प्रान्तों में जो भाव उदित होनेवाला है उसकी सूचना अभी से दिल्ली को दे दी जानी चाहिए। लोग एकतरफा भय से सहमे जा रहे हैं। भाषणों, लेखों, वक्तव्यों और प्रस्तावों को दिल्ली में छपवाने की बहुत आवश्यकता है।

आपका
दिनकर

✓डा० विवेकीराय

[२७५]

आर्यकुमार रोड, पटना-४
१-१-५८

प्रिय रायजी,

आज दिल्ली से लौटने पर आपका २०-१२-५७ का कृपा-पत्र मिला। आपकी कृपा है कि इतनी गम्भीरता से मेरी प्रवृत्तियों पर विचार करते रहते हैं।

शासन की छाया मेरे लिए नयी नहीं है। हाँ, मेरे आलोचकों को यह बुरा अवश्य लगा कि मैं संसद का सदस्य क्यों हो गया। मैं स्कूल का शिक्षक था, सब-रजिस्ट्रार था, युद्ध के समय प्रचार अफसर था, कांग्रेसी सरकार का प्रचार अफसर था और सब के बाद में प्रोफेसर। क्या ये सभी पद रचनात्मक प्रतिभा के उपयुक्त थे? और-तो-और, आपने प्रोफेसरी करते हुए कितने कवियों को अच्छी कविताएं लिखते देखा है? मगर, जब मैं इन पदों पर था, लोग समझते थे, मैं ठीक जगह पर हूं। केवल अब उन्हें लगता है कि मैं खतरों के बीच हूं। ठीक जगह कवि को कहाँ मिलती है? कविता का मेल किसी भी पद से नहीं बैठता और साहस तथा शक्ति हो तो सभी पदों से बैठता है। कम-से-कम, मेरा तो यही अनुभव है।

नौकरी (और उसके साथ लक्ष-मूल्य पेंसन का मोह) मैंने १९५२ में छोड़ी। तब से मेरी पुस्तकें कौन-कौन निकली हैं? नील कुसुम, संस्कृति के चार अध्याय, नीम के पत्ते, दिल्ली, रेती के फूल, चक्रवाल, उजली आग, देश-विदेश, सीपी ओर शंख, नये सुभाषित, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता, वेणुवन और काव्य की भूमिका (प्रेस से निकली नहीं हैं) महीने भर में आ जायेंगी। उर्वशी काव्य पर काम चल रहा है। पाँच साल में १४ पुस्तकें क्या कम होती हैं? मगर, अब हिन्दी में पढ़ता कौन है? लोग यही देखने में मशगूल हैं कि मिट्टी के पाँव किसके कितने निकले हैं।

और संसद की सदस्यता को एक समय मैंने भी भूषण समझा था। नहीं तो उसके लिए क्लास-१ की नौकरी क्यों छोड़ता? किन्तु, वह शौक भी अब पूरा हो गया। और अब यह भूषण भी किसी भी समय उतर सकता है बिना किसी सोच-विचार के :

सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जान्यौ नाग

आपने 'दिल्ली' कविता में जोश का जो उतार देखा है, वह उतार नहीं, चढ़ाव का दृष्टान्त है। सुबह के समय फूल पर शबनम होती है, मगर, दोपहरी के फूल पर तो शबनम होती नहीं। इतने-से भेद को ह्रास समझना ठीक नहीं है। साहित्य में जजमेंट देना परिपक्व बुद्धि का काम है।

बल्कि, कविता पर निर्णय देना, कविता-रचने से भी अधिक बड़ा काम है। आपके समान मेरे और भी कई परम भावुक मित्र हैं जो रसवंती और रेणुका की भावुकता का अभाव देख कर मुझे कोसते रहते हैं। और यह सत्य है कि मैं भावुकता की भूमि से आगे निकल गया हूँ। मैं वापस जाना चाहता भी नहीं। जिसकी रसवन्ती, रेणुका, हुंकार और कुरुक्षेत्र के आप आशिक रहे हैं, उसके नील कुसुम को भी सहानुभूति से देखिये। अपने पचासवें वर्ष में आकर कोई अविकसित मनुष्य ही भावुकता को अपनी सम्पत्ति मानेगा। यों, नील कुसुम में भी भावुकता से लदी कई कविताएँ हैं जिनके कारण मेरी प्रशंसा नहीं, आलोचना की जानी चाहिए।

गाँव की सेवा से आपका क्या तात्पर्य है, मैं नहीं जानता। गाँववाले आपको क्या करने कहते हैं? मुझसे तो वे बहुत काम लेते हैं और फिर कलह-प्रपंच आदि से बाज भी नहीं आते। गाँव नरक है। अपने गाँव की नारकीयता कम करने में मैं बचपन से लगातार जुटा रहा हूँ। लेकिन, सुधार होता नहीं। मैं ग्राम-सेवा के बारे में आपको कोई राय नहीं दे सकता। हाँ, साहित्य-सेवा कहीं भी रह कर, की जा सकती है। यदि अपने लिए आप चार-छह घंटे का एकान्त निकाल सकें। एकान्त नहीं तो साहित्य-सेवा नहीं। एकान्त उपलब्ध है तो सारी साधना चल सकती है।

कमलापतिजी वाला पत्र आपने कहाँ देखा?

आपका
दिनकर

[२७६]

नई दिल्ली
१४-१२-५९

प्रिय विवेकी बाबू,

सप्रेम वन्दे!

आपका कृपा-पत्र मिला। आगे की साहित्य-सेवा तो ईश्वराधीन है। दिल्ली में एकान्त नहीं मिलता। एकान्त पटने में भी नहीं है। भगवान् की कृपा से एकान्त मिल जाय तो उर्वशी पूर्ण हो।

आपका
दिनकर

[२७७]

११ केनिंग लेन, नई दिल्ली
२-९-६१

प्रिय विवेकी बाबू,

आपके दोनों कार्ड मिल गये हैं। क्या करूँ? उर्वशी यदि मुझे भी खरीदनी होती तो कुछ समय बाद ही खरीदता। बुढ़ापे में शृंगार का यह एक काम हो गया। आगे सस्ता संस्करण निकलवाऊँगा।

स्वास्थ्य कमजोर ही चल रहा है।

आपका
दिनकर

[२७८]

आर्यकुमार रोड, पटना-४
२९-६-६३

प्रिय भाई,

मैं १९ जून को बाहर चला गया था। आज लौटने पर आपका २०-६-६३ का पत्र मिला, जिसके साथ मेरा लिफाफा नत्थी है। सारी बातें जान कर बड़ा ही कौतूहल हुआ, बड़ा ही आनन्द आया। सभी प्रेरणाओं के स्रोत भगवान् हैं। वे ही मनुष्य को खड्ड में ले जाते हैं, वे ही उसे फिर खड्ड से निकाल देते हैं। भाग्य और दुर्भाग्य, संघर्ष और शान्ति, सब अदृष्ट की लीला है। बहुत अच्छा हुआ कि आप एम० ए० हो गये। और आपका सर्वप्रथम आना तो स्वाभाविक परिणाम है। बधाई! अब आपका प्रवेश कालेज में होना चाहिए। कालेज देहात में भी हो तो वरेण्य है। आपकी संगति से युवकों का कल्याण होगा।

मैं इधर पारिवारिक चिन्ताओं से जर्जर हो गया हूँ। मैं लेखक और कवि हूँ। इतना सोचना भी दूर की याद-जैसा लगता है।

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

[२७९]

राजेन्द्र नगर, पटना-४
१६-३-७३

प्रियवर,

आपका पत्र मिला। गाजीपुर जा कर भी आपसे भेंट नहीं हुई, यह दुःख की बात है। अगर फिर से जाने का सुयोग मिला, तब भेंट अवश्य होगी, यह आशा करता हूँ।

अब शरीर कमजोर पड़ने लगा है।

आपका
दिनकर

[२८०]

पटना
९-११-५८

मान्यवर जयप्रकाशजी !

प्रणाम।

मानवीय गुणों पर जोर देते हुए आपने अभी हाल में जो बयान दिया है उसकी कतरन मैंने पास रख ली है और उसे कई बार पढ़ गया हूँ। अजब संयोग की बात कि जब आपका बयान निकला, मैं धर्म और विज्ञान पर एक निबन्ध लिख रहा था जो ४० पेज तक गया है, मगर, अभी कुछ अधूरा है। बयान पढ़कर मुझे लगा कि आप जिस चीज को इतनी अच्छी भाषा में और इतनी सुस्पष्टता के साथ कह रहे हैं, मेरी असमर्थ भाषा भी उसी के आस-पास चक्कर काट रही है। इस बयान पर लोगों की क्या प्रतिक्रिया है, यह भी मुझे मालूम है। लेकिन, हर बड़े काम की राह में लोक-मत कुछ बाधक बनकर आता है और उसकी उपेक्षा किए बिना ये काम किए नहीं जा सकते। वर्त्तमान सभ्यता अनेक रूढ़ियों को तोड़कर आगे बढ़ी है, लेकिन, मुझे अब पूरा सन्देह हो रहा है कि वह खुद एक प्रकार की रूढ़ि में जा फँसी है, जिसका उपयुक्त भाषा के अभाव में, मैं 'बुद्धि की रूढ़ि' नाम देता हूँ। अगर मनुष्य को विकसित होना है तो उसे इस रूढ़ि से भी निकलना होगा। बर्ट्रेण्ड रसल ने लिखा है कि आदमी में तीन प्रवृत्तियाँ होती हैं, instinct to live, instinct to think and instinct to feel. ये मैं अपनी भाषा में रख रहा हूँ। Feel शायद उसने नहीं कहा है। इस प्रवृत्ति का नाम उसने spirit की प्रवृत्ति दिया है। इन तीनों में समन्वय हुए बिना मनुष्य का दोषहीन विकास नहीं हो सकता। रसल और हक्सले के अलावे, मैंने Alexis Carel की Man : The Unknown नामक किताब में भी यही देखा कि वैज्ञानिक सभ्यता गलत दिशा की ओर जा रही है और मैं मान गया हूँ कि कैरेल का कहना बिल्कुल ठीक है। एक धारा है जो सबको बहाए लिए जा रही है। जरूरत है उन पुरुषों की जो इस बहाव में बहने से इनकार कर दें। आपने अपना पाँव जमा लेने का इरादा किया है, इसलिए, मैं आपका सादर अभिनन्दन करता हूँ।

युद्ध-काव्य के विषय में भी आपका सुझाव बेनीपुरी से मिला है। होगा।

आपका
दिनकर

[२८१]

भागलपुर-विश्वविद्यालय
४-३-६४

प्रिय जयप्रकाशजी,

गाँधी-विचार-धारा में डिप्लोमा-कोर्स चलाने की योजना की एक प्रति आपके अवलोकनार्थ भेज रहा हूँ। हमारे यहाँ के शिक्षक इस योजना को व्यावहारिक मानते हैं। पता नहीं, बाहर के शिक्षा-विशारद् कैसा समझेंगे ?

योजना पर आवर्त्तक-व्यय कोई नब्बे हजार रुपए प्रति वर्ष पड़ेगा। इसमें अगर गाँधी-स्मारक-निधि, विश्वविद्यालय-अनुदान-आयोग और विहार-सरकार तत्परता से अनुदान दें तो योजना जुलाई से चालू हो जायेगी।

आप अपनी प्रतिक्रिया लिखित रूप में भेजने की कृपा करें और अनुकूल सूत्रों को पत्र लिखें कि धनाभाव के कारण यह योजना रुक नहीं जाय।

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

श्री श्रेयांसप्रसाद जैन

[२८२]

५२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
८-२-५९

प्रिय श्रेयांसजी,

सप्रेम वन्दे।

आपका बधाई का प्यार-भरा पत्र मिला। धन्यवाद ! समाचार पढ़ कर मैं अनुद्वेलित था, किन्तु, जब दोस्तों ने खत और तार भेजने शुरू किये तब मेरा मन भी सुगबुगा उठा। फिर अकबर का शेर याद आया —

शायराना दाद क्या अच्छी
मुझे दी चर्ख ने।
तेगे-अब्रू का था आशिक,
खां-बहादुर कर दिया ।।

बम्बई आने का सुयोग अभी तो नहीं है। मगर, आने का मन हो रहा है।

आपका
दिनकर

[२८३]

पटना-४

२९-१-६०

प्रिय श्रेयांसजी,

अब पहले आने में कोई तुक नहीं दीखती। ११ को वहां कवि-सम्मेलन है और कवि-सम्मेलनों में मैं जाता नहीं। अगर वहाँ पकड़ा गया तो सर्वत्र मुसीबत खड़ी हो जायगी। अतएव, आपके पाँव पकड़ कर इसके लिए माफी चाहता हूँ। आरकेस्ट्रा में अब तो शामिल होना मुहाल है। सोलो में उज्र नहीं, सो १४ को सोलो बजा दूँगा।

I have returned from Calcutta extremely depressed.

यह पस्ती, हस्बमामूल, अब एक दो महीने घेरे रहेगी। सस्नेह

दिनकर

[२८४]

आर्यकुमार रोड, पटना-४

२-२-१९६०

प्रिय श्रेयांसजी,

कल देहात से रात में लौटा। तब आपका तार मिला। आज जवाबी-तार आपको भेज दिया है। २९ जनवरी को पत्र भी लिखा है। वह मिला होगा।

मैंने १९५८ के २४ जनवरी को एक अणुव्रत लिया कि कवि-सम्मेलनों में नहीं जाऊँगा। तब से कई ऐसे मित्र, जिनका आसरा था, कुछ उदासीन हो गये। मैं नहीं जानता था कि इस छोटे से व्रत के पालन में इतनी कठिनाई होगी। किन्तु, व्रत नाम ही कठिनाइयों को निमन्त्रण देता है। मेरी प्रार्थना है कि आप कृपा करके मुझे कवि-सम्मेलन से बचा दें। १४ को आऊँगा।

आपका

दिनकर

[२८५]

नई दिल्ली

१४-८-६१

प्रिय श्रेयांसजी,

इधर सुनने में आया कि आप अधिक अस्वस्थ हैं और होमियोपैथिक इलाज करवाने को लखनऊ जाने की बात सोच रहे हैं।

कल मुझे काका कालेलकर साहब ने बताया कि बम्बई में एक होमियोपाथ Dr. B. P. Shirvaikar हैं जिनकी दूकान कहीं बम्बई फोर्ट में है। शिरवाइकर के हाथ में यश है। एक बार काका के Spine की हड्डी टूट गयी थी, डाक्टर आपरेशन बताते थे और आपरेशन करने में डरते भी

थे। शिरवाइकर ने दवा से टूटी हड्डी ठीक कर दी। अभी काका आँख को लेकर बहुत बीमार हुए थे। सात दिन बम्बई रहे, शिरवाइकर ने आँखें बिलकुल ठीक कर दीं। मेरा ख्याल है, एक सप्ताह आप उनसे दिखवा कर देखिये कि क्या होता है ?

मुझे बड़ा दुःख है कि आपको जो भी बीमारी होती है वह पकड़ाई नहीं देती। मन कारण है। संभव होता तो मैं आपका मन बहलाने में योग देता। किन्तु यहाँ तो :

राजा दुखिया, परजा दुखिया, जोगी को दुख दूना,
कहै कबीर सुनो भई साधो, कोई घर ना सूना।

आपका
दिनकर

[२८६]

नई दिल्ली
३१ अगस्त १९६१

प्रिय श्रेयांसजी,

सप्रेम नमोनमः !

मैं इधर एक दिन मूर्च्छा के आभास में पड़ा था। ब्लड-प्रेशर नहीं था, शायद, वायु का ही कोप था। अब ठीक हूँ। मगर, ठीक क्या कहना :

हैफ़ ! ऐय्याम जवानी के चले जाते हैं,
हर घड़ी दिन की तरह हम भी ढले जाते हैं।

आपका
दिनकर

[२८७]

११, केनिंग लेन, नई दिल्ली
२८-८-६३

प्रियवर,

आपका पत्र मिला। आप दस्तखत न भी करें तो पत्र मैं आपका ही समझूंगा। साफ दिखता है कि दस्तखत करने में भी आपको कठिनाई होती है। मेरे परिवार की समस्या ज्यों-की-त्यों चल रही है। बड़े बेटे ने बगावत कर दी है। परिवार पालने के लिए प्रकाशन खोला था। कितनी हैरानी, कितनी नम्रता, कितनी निर्लज्जता से यह संस्था कायम हुई। इसे आप थोड़ा-बहुत जानते हैं। अब बड़े साहब कहते हैं, भाई को हिस्सा नहीं दूँगा। छोटा लड़का डालमिया नगर में Paper technology सीख रहा है। उस पर भूत सवार है कि ट्रेनिंग लेना छोड़ कर वह खिड़की-ग्रिल आदि की इंडस्ट्री चलायेगा। मेरी छोटी बेटी बी० ए० फाइनल में है। उसकी शादी नहीं

कर सका, यह मेरी पहली कमजोरी है। छोटे लड़के का व्याह इसी साल किया है। पतोहू भी बी०ए० में पढ़ रही है। वह अभी वस नहीं पायी है। यह मेरी कमजोरी नम्बर दो है। एक भतीजी अविवाहित है, यह कमजोरी नम्बर तीन है। इन्हीं विवशताओं का लाभ उठाकर बड़े साहव ने बगावत करने की हिम्मत की। खैरियत की वात यह है कि बेटी और भतीजी के व्याह के लायक पैसे मेरे पास जमा हैं और हर किताव का कॉपीराइट मेरे पास है। उपाय केवल यह करना है कि प्रकाशन की नयी संस्था कायम कर दूँ और वरस दो वरस में उसे कामयाव बना दूँ। यही एक काम कठिनाई का है क्योंकि लड़कियों की शादियाँ किये बिना मैं प्रकाशन-संस्था कायम करने से घवड़ाता हूँ क्योंकि उतनी पूँजी एकत्र करना कठिन होगा। मगर, पाण्डिचेरी वाली माँ सव ठीक कर देंगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

एकान्त-सेवन के लिए १०-१२ दिनों से चरतरामजी के घर ठहरा हुआ हूँ। खूव आराम मिला है और तन्दुरुस्ती इतने ही दिनों में वापस मिल गयी है। यह सव श्री-माँ की कृपा है।

कल रामनाथजी यहीं मिलने को आये। काफी खुश हैं, प्रधान-मंत्रीजी के कदम को वहुत सही समझते हैं, मेरा भी यही ख्याल है क्योंकि पक्षपात की कोई वात मैं इस में नहीं देखता। इसी निष्पक्षता से अगर सभी सरकारों का पुनः संगठन करने में वे कामयाव हो गये तो देश और कांग्रेस का भला होगा। यह पंडितजी का विराट्-रूप है। इतना वड़ा साहस वे ही दिखा सकते थे। यहाँ तरह-तरह की अटकलवाजियाँ चल रही हैं, लेकिन सत्य क्या है, यह तो एक ही व्यक्ति जानता होगा।

आपके पत्र से वहुत सुख मिला। मित्र, आप अभी वहुत दिन जियें।

आपका

दिनकर

[२८८]

३४७, पंडारा रोड, नई दिल्ली

१७-६-६५

प्रिय श्रेयांसजी,

भागलपुर की वाइसचान्सेलरी मैंने छोड़ दी। १४ जून को मैंने भारत-सरकार के हिन्दी-सलाहकार के पद का कार्यभार सँभाल लिया है। अव यहीं रहने का विचार है। अभी घर नहीं मिला है। दफ्तर मिलने में भी दो चार दिनों की देर है।

पारिवारिक कलह के खंजर ने फाड़ कर भीतर से मुझे तार-तार कर दिया है। असल में मृत्यु या वैराग्य, ये ही दो रास्ते हैं। मैं दोनों से

बचने को जीने के बहाने ढूंढ़ रहा हूँ। इसी में गलती-पर-गलती हुई चली जा रही है।

आप से मिलने को मन बड़ा बेचैन है। देखिये, कब तक दर्शन प्राप्त होते हैं ?

अपने स्वास्थ्य का समाचार लिखियेगा।

आपका
दिनकर

[२८९]

२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
२३-१२-६६

प्रिय श्रेयांसजी,

अपने बड़े लड़के की बीमारी के बारे में मैंने जो पत्र आपको लिखा है, वह मिला होगा। परसों दिल्ली के चार-पाँच वैद्यों ने उसे देखा और उसका इलाज शुरू किया है। आज मुझे यह सूझा है कि इस भयानक रोग के बारे में पण्डित शिव शर्मा की राय लेना बहुत ही आवश्यक है। इसलिए कागज का एक गुच्छा पंडित शिव शर्मा के लिए भेज रहा हूँ। अगर शर्माजी बम्बई में हों तो आप फोन पर उनसे बात करके कागज उन्हें विश्वासी आदमी के जरिये भेज दीजिये और आग्रह कीजिये कि वे एक दिन यहाँ आकर मेरे बेटे को देख जायें।

मैं गरीब आदमी हूँ। शर्माजी का भार उठाना मेरी शक्ति के बाहर है। लेकिन अगर वे आने को तैयार हों तो वायु-मार्ग का किराया उनके चरणों पर रख दूँगा। मैं भारी विपत्ति में हूँ। आप एक बार मेरे बच्चे को शर्माजी से दिखला दीजिये। मुझे लगता है, वे अगर आ गये तो रामसेवक बच जायेगा।

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

[२९०]

२, साउथ एवेन्यू लेन, नई दिल्ली
२६-१२-६६

प्रिय श्रेयांसजी,

आपका २२ दिसम्बर का पत्र मिला। आपकी बातों से बड़ा ढाढ़स हुआ। भगवान की कृपा से ही आप-जैसे संत-पुरुष की मैत्री प्राप्त होती है।

आशा है, कल रविवार को आपको मेरा पत्र मिल गया होगा और पंडित शिव शर्मा से आपकी बात हो गयी होगी।

रामसेवक में थोड़ी-सी खुशदिली आयी है और छह-सात घण्टे वह अच्छी नींद से सोने लगा है। अवस्था में और कोई परिवर्त्तन नहीं हुआ है।

आपका
दिनकर

[२९१]

२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
६ जनवरी १९६७.

प्रिय श्रेयांसजी,

आपका ४ जनवरी का पत्र मिला। आपका पहला पत्र भी मिला था, जिसके साथ पं० शिव शर्मा का पत्र था। उससे पहले ही मैं पं० राधाकृष्ण उपाध्याय को बुला चुका था। उन्होंने भी यही कहा कि इलाज की पद्धति ठीक है। वे एकाध जगह परिवर्त्तन चाहेंगे, किन्तु, अभी नहीं। वैद्य कहते हैं कि चार सप्ताह इलाज करने के बाद ही परिवर्त्तन की बात सोची जानी चाहिये। आज इलाज का सत्रहवाँ दिन है। रोग में कोई फर्क नहीं पड़ा है। बल्कि रोगी की भूख कम हो गयी है। पहले दिन रात में आठ गिलास दूध पी जाता था। अब तीन-चार पर ही बस कर देता है।

मेरा ख्याल है, उसके मन में चिन्ता चल रही है। उसने हर आदमी से सम्बन्ध तोड़ कर, सब को कष्ट पहुँचा कर; अपनी और परिवार की ऐसी बुरी स्थिति बना ली है जो मेरे बस के बाहर की चीज है। असमर्थता का अनुभव मैं भी करता हूँ और वह भी करता है। यही चिन्ता उसे सम्भलने नहीं दे रही है।

जितनी सूझ-बूझ और शक्ति मुझ में है, उसे लेकर मैं उसके रोग से जूझ रहा हूँ। मगर दिनों-दिन मेरी चिन्ता बढ़ती जाती है। जैसे उसे अपनी बीमारी और अपने परिवार की चिन्ता है, उसी प्रकार मुझे भी दोनों बातों की फिक्र है। मगर इलाज करवाने का रास्ता है। उसके परिवार के बारे में कोई उपाय मुझे नहीं सूझता। जब तक मैं जीवित हूँ और कमाता हूँ तब तक तो चल जायेगा, मगर मेरे बाद भगवान मालिक हैं।

आपका
दिनकर

[२९२]

२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
१७-२-१९६७

प्रिय श्रेयांसजी,

प्रेम बाबू का पत्र और दो हजार का ड्राफ्ट मिल गया। काफी राहत हो जायगी। आगे भगवान की जैसी कृपा होगी, वैसा करूँगा। आपका मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।

कुदिन हितू सो हित, सुदिन
हित अनहित किन होइ।

कुदिन में काम आने वाले मित्र ही मित्र हैं। सुदिन की मित्रता और शत्रुता का कोई खास मूल्य नहीं है।

यह जान कर चिन्ता हुई कि आपकी तबीयत अलील है।

मैं किसी तरह रीढ़ सीधी रखने की कोशिश में हूँ। रामसेवक का रोग बिगड़ता ही जा रहा है। यहाँ के होमियोपाथ को थोड़ा और समय दे कर लड़के को मैं कलकत्ता ले जाने की बात सोच रहा हूँ। वहाँ देश के नामी-होमियोपाथ रहते हैं।

आपका
दिनकर

[२९३]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली-११
जून १८, १९६९

प्रिय श्रेयांसजी,

मैं ५ जून को पटना चला गया था। १७ जून को लौटा तब डाक के ढेर में आपका प्यारा पत्र मिला। हृदय आनन्द से खिल उठा।

हाँ, मैं इधर बहुत बाहर रहा हूँ। पहले तो पोती के विवाह के कारण बार-बार बाहर जाना पड़ा। उसके बाद नातिन के विवाह के सिलसिले में बाहर रहा।

मेरा अवतार कन्यादान के लिए हुआ है। २५ साल की उम्र से यह सिलसिला शुरू हुआ और अब तक चल रहा है। अपनी कमाई से ६ कन्याओं के विवाह रचवा चुका हूँ। भगवान से माँगता हूँ कि वे कम-से-कम तीन कन्याओं के विवाह और रचवाने दें।

स्वास्थ्य साधारणतः ठीक ही चल रहा है। कभी-कभी थकावट की लहर जोर से आ जाती है, तब थोड़ी घबराहट होती है।

आपसे मिलने की इच्छा तीव्र हो रही है। आशा है, शीघ्र ही दर्शन होंगे।

आपका
रामधारी सिंह दिनकर

[२९४]

५, सफदरजंग लेन, नयी दिल्ली
२७ जून १९७१

प्रिय श्रेयांसजी,

दूसरी कठिनाई यह है कि सार्वजनिक रूप से चैरिटी लेने का असर अच्छा नहीं होगा। सार्वजनिक-चैरिटी, सार्वजनिक काम में ही जानी चाहिये। मैं अभी पब्लिक-लाइफ में ठहरना चाहता हूँ। आप भी विचार करके अपनी राय बताइये।

आपका
दिनकर

[२९५]

राजेन्द्रनगर, पटना-१६
१८-७-७१

प्रिय श्रेयांसजी,

बोरिया-बधना लेकर मैं १४ तारीख को पटना पहुँच गया। आते ही भगवान्-सत्यनारायण की पूजा की और अपना नया जीवन आरंभ किया। भगवान करें कि मेरा नया जीवन शुद्ध साहित्यमय जीवन हो।

उस योजना के विषय में मैंने श्रीद्वारकाप्रसाद मिश्र से राय ली थी और कई साहित्यिक मित्रों से भी। सब की राय हुई कि नगर अपनी पसन्द के कवि को पुरस्कृत करे, और कवि वह पुरस्कार स्वीकार करे इसमें दोष नहीं है, भले ही ईर्ष्या उत्पन्न हो। दिनकर-साहित्य-पुरस्कार-समारोह-समिति मुझे जो पुरस्कार देगी उसे मैं स्वीकार करूँगा।

मनहर को पत्र लिखा था। उसने उत्तर नहीं दिया। इस समिति में भारतीजी, अधिकारीजी और पृथ्वीराज कपूर को भी सम्मिलित करना चाहिए।

मैं ३ अगस्त को भोपाल रहूँगा और ७ अगस्त को नेपानगर। लोभ जगता है कि बम्बई भी आ जाऊँ, लेकिन अभी इस लोभ को रोकना पड़ेगा।

मेरा अगला जन्म-दिन २३ सितम्बर को पड़ेगा। उस दिन मैं ६३ साल का हो जाऊँगा। समारोह उसी दिन हो तो अच्छा है।

शेष कुशल है। आशा है, आप प्रसन्न हैं।

आपका
रामधारी सिंह दिनकर

[२९६]

राजेन्द्रनगर, पटना-१६
२०-७-७१

प्रिय श्रेयांसजी,

कल एक पत्र भेज चुका हूँ। आज इसलिए लिख रहा हूँ कि यूरोप से एक किताब निकली है The Future Shock उसमें औद्योगिक सभ्यता के संकट की भविष्यवाणी है। कृपया उसे बाजार में खोजवाइये। मिल जाय तो पढ़ कर मुझे भी पढ़ा दीजिये।

आपका
दिनकर

[२९७]

राजेन्द्रनगर, पटना-१६
२०-१२-७१

प्रिय श्रेयांसजी,

२५ नवम्बर के भोर मेरे बायें हाथ में झुनझुनी उठी, हाथ बहरा हो गया, लेकिन movement मौजूद था। पाँच मिनट में ठीक भी हो गया। लेकिन डाक्टर ने उसे पैरेलिसिस का स्पर्श माना और मुझे खाट पर

लिटा दिया। अभी तक घर से बाहर निकलने की अनुमति नहीं है। कमजोरी इधर बढ़ गयी है। शायद यह House Arrest का परिणाम है।

नये घर में जाने के अवसर पर बधाई देता हूँ। जाने मेरा आना अब कब होगा? शेष कुशल है।

आपका
दिनकर

[२९८]

राजेन्द्रनगर, पटना–१६
३०-१२-७१

प्रिय श्रेयांसजी,

मैंने अपनी बीमारी की सूचना कारमाइकेल-रोड के पते पर भेजी थी। वह पत्र अवश्य ही आपको नहीं मिला, अन्यथा उत्तर अवश्य आया होता।

२५ नवम्बर के भोर में मेरे बाएँ हाथ में झुनझुनी उठी। एक घंटे में वह जाती रही। लेकिन डाक्टरों ने उसे अशुभ मान लिया और मुझे महीने भर के लिए खाट पर लिटा दिया। अब अच्छा हूँ, मगर कमजोर हूँ। घर से बाहर आने-जाने लगा हूँ।

दिल्ली में सरकारी-दवा पर जीता था। अपने पैसे से दवाई खरीदनी पड़ी तो आटे-दाल का भाव मालूम हो गया। २० जनवरी को दिल्ली जाने का विचार है। आप उस समय वहाँ पधारेंगे क्या?

विजय तो साहब, खूब हुई! लड़ाई-भिड़ाई से मुल्क की तन्दुरुस्ती बनती है। खास कर developing लोगों को तो यह गुण भी develop करना चाहिए। मगर मेरा ख्याल है पाकिस्तान के साथ यह हमारा आखिरी युद्ध था।

आपका
दिनकर

[२९९]

पटना-१६
७-८-७२

प्रिय श्रेयांसजी,

आपकी लिखावट पढ़े और आपकी आवाज सुने बहुत दिन हो गये।

सुना है, रजनीशजी की नई पुस्तक 'महावीर वाणी' के नाम से निकली है। क्या वह किताब आप मुझे आते-जाते किसी आदमी से या पार्सल से दिल्ली भिजवा सकेंगे? देर होने से पटना ही भिजवाना ठीक होगा।

साहित्य का काम तो चल रहा है, लेकिन पोती का विवाह नहीं हुआ। साल-भर कोशिश करता रहा, मगर किसी ने बात ही नहीं की। विवाह के बाजार में जो मन्दी आयी है, वह और कहीं नहीं है। मैं बहुत ही घबराया हुआ रहता हूँ। आशा है, आप स्वस्थ और प्रसन्न हैं।

आपका
दिनकर

श्री वीरेन्द्रकुमार जैन

[३००] आर्यकुमार रोड, पटना-४

२२-१०-५९

प्रिय वीरेन्द्रकुमार जी,

"अनागता की आँखें" की एक प्रति प्रकाशक ने मेरे पास भी भेजी है। उसके लिए आपको धन्यवाद देता हूँ। पुस्तक की साज-सज्जा, छपाई और गेट-अप, सब बहुत अच्छे हैं। किन्तु, उन सबसे अच्छी हैं कविताएँ, जिनका स्वाद बिलकुल ताजा और नवीन है।

नये ढंग के कवियों के आगमन से हिन्दी-कविता की परिधि विस्तृत होने लगी है, और आप की कविताएँ परिधि के इस विस्तार का दृष्टान्त उपस्थित करती हैं। कविता का अन्तिम विश्लेषण उसमें प्रयुक्त भाषा का ही विश्लेषण होता है और भाषा से मेरा अभिप्राय ललित-लवंगी भाषा से नहीं, प्रत्युत्, उन विलक्षण विशेषणों से है जिनमें सरस्वती पूरे अस्तित्व के साथ समासीन होती है। आपकी भाषा में यह गुण पर्याप्त मात्रा में मौजूद है। मैंने प्रथम वाचन में ही पुस्तक को प्रायः, रंग दिया है। जिन पंक्तियों में निशान लगे हैं उनमें से कुछ ये हैं :—

ओ री ओ, गुज़रती हुई हवाओ !
लाओ तुम्हीं पर आज खत लिख दें।
...हम आज वक्त में नहीं हैं।

x x x

चमेली के चाँदनी फेनिल
गन्ध-सरोवर में नहा कर उठती
निर्वसन अप्सरा-सी यह रात !

x x x

देखते ही निमिष-मात्र में खुल पड़े
अन्तर की चिन्मति-भूमा के
अमृताभ वातायन।

x x x

देह विदेह हुई जाती है
परम समर्पण के इस पल में।

x x x

मेरी ममता के एकान्त गोपन-कक्ष में
मुक्ति का महाकाश रमण करने आता है।

ऐसी और भी अनेक पंक्तियाँ हैं जिनका रस मैंने जी-भर कर पिया है। नयी कविता छोटी खुराकों में पढ़ने की चीज है, किन्तु, आपकी कविताएँ मैंने कुछ कम छोटी खुराकों में पढ़ी हैं। इसीलिए, वे मुझे प्रिय लगीं।

भूमिका भी पढ़ गया हूँ। आपने अपने वैचारिक-व्योम की जो नाप की है, उससे आपकी आत्मा का इतिहास स्पष्ट हो जाता है। मगर, मेरा ख्याल है, अरविन्द आपसे छूटे नहीं हैं। भारत और अगली मानवता के विषय में कुछ-कुछ ऐसे ही विचार मैंने भी बनाये हैं।

एक हाथ में कमल, एक में धर्मदीप्त विज्ञान,
लेकर उठने वाला है धरती पर हिन्दुस्तान।

आप अपने को 'आउट साइडर' क्यों कहते हैं? इतनी अच्छी कविताएँ लिखनेवाला चिन्तक-कवि अपने को 'आउट साइडर' कहे, इससे एक ध्वनि तो यह निकलती है कि आपके समकालीन औसत कवि भी बहुत ऊँचे हैं और दूसरी यह कि आप अपने काल की बधिरता से अप्रसन्न हैं। समय बहरा हो जाय तो कवि अप्रसन्न होगा ही, लेकिन, बहरे को सुनाने के लिए आप जोर से बोलने लगें, यह भी मैं नहीं चाहता। आप जिस धरातल पर हैं, वही आपका अत्यन्त अनुकूल धरातल है।

मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिये।

आपका
दिनकर

[३०१]

पटना-४
६-११-५९

प्रिय भाई,

मैं कहीं एकान्त वास में हूँ। पत्र किसी तरह तुम्हारा मिल गया। तुमने मेरे उद्‌गारों को जिस निश्छल प्रेम से स्वीकार किया है उससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ। भगवान तुम्हें आगे बढ़ायें।

वे लोग मेरी राय से चलेंगे, ऐसा मैं नहीं मानता। फिर भी, मौका मिलते ही थाह लेने की कोशिश करूँगा। मैं नहीं जानता था कि तुम भी हक़दार हो। लेकिन तुम्हारा पक्ष लेने में मेरे सामने कोई बाधा नहीं है। आफिस जाना तो भाई सत्यकामजी से प्रणाम कहना।

तुम्हारा
दिनकर

[३०२]

५२, साउथ एवेन्यू, नयी दिल्ली
२५-११-५९

प्रिय भाई,

तुम्हारा पत्र मिला। नोट जा रहा है। साथ में एक चित्र भी है। ३५० के बदले शायद ४५० शब्द होंगे। सब छापना।

तुम्हारे काम की बात। मुझे तो यह दिखायी देता है कि आदमी बाहर से ही आयेगा। और कोई विकल्प वे स्वीकार नहीं करेंगे। लेकिन, तुम्हें हतोत्साह नहीं होना चाहिए। जो काम तुम्हारे हाथ में है उसे मनोयोग-पूर्वक करते जाओ। परिणाम अपने समय पर निकलेगा।

सस्नेह
दिनकर

[३०३]

११, केनिंग लेन,
४-९-६०

प्रिय भाई वीरेन्द्र,

तुम्हारा १/९ का पत्र मिला। दुख है कि तुम धर्मवीर के साथ नहीं चल सके और तुम्हें हटना पड़ा।

कोई अय 'शाद' पूछे या न पूछे, इससे क्या मतलब ?
खुद अपनी क़द्र करनी चाहिए साहबे-कमालों को।

प्यारे ! मैं किस योग्य हूँ कि इस आड़े वक्त तुम्हारे काम आऊँ ? फिर भी कोई बात मन में आये तो लिखना।

तुम्हारे आध्यात्मिक विश्वास के टोन से मुझे भी तसल्ली हुई।

तुम्हारा
दिनकर

[३०४]

११, केनिंग लेन, नयी दिल्ली
७-३-६१

प्रिय भाई,

तुम्हारा पत्र मिला गया था जिसमें तुमने 'उर्वशी' का अंश माँगा था। 'भारती' के सीमित कलेवर में सजने योग्य कितना अंश कहाँ से तोड़ूँ, यह ठीक समझ में नहीं आया। अगर भेजने योग्य अंश मिल सका तो अब भी इच्छा है, भेज दूँ।

तब तक रवीन्द्रनाथ की चार कविताओं के अनुवाद भेज रहा हूँ। गद्य में हैं इसलिए शुद्ध हैं। प्रायः मक्षिका-स्थाने-मक्षिका ही समझो। पसन्द आ जायें तो अभी से मई तक छाप लो। वर्ना कोई खास आग्रह नहीं।

मिजाज कल तक बहुत अच्छा लगता था। रात से विकृति फिर दिखायी दे रही है।

तुम्हारा
दिनकर

[३०५]

आर्यकुमार रोड, पटना-४
१७-७-६१

प्रिय भाई,

उर्वशी के बुक-केस पर नाम की गड़वड़ी हो तो उस पर ध्यान मत देना। जो प्रति पहुँची हो, उसे स्वीकार करना।

आशा है, फिशर की पीड़ा अब नहीं है।

तुम्हारी राय जानने की अतीव उत्कंठा है।

तुम्हारा
दिनकर

[३०६]

२, साउथ एवेन्यू लेन, नई दिल्ली
२५-४-६६

प्रिय भाई वीरेन्द्र,

"यातना का सूर्य-पुरुष" की प्रति मिली। उलट-पलट कर कई कविताएँ पढ़ गया हूँ। "अनागता की आँखें" की अपेक्षा इस संग्रह की कविताओं में तुम ज्यादा गहराई में पहुँचे हो। ये नयी कविताएँ काव्य-नाम को सार्थक करती हैं।

तुम्हें इस संग्रह के लिए प्रकाशक नहीं मिला, यह वड़ी ही चिन्ता का विषय है। क्या नये कवियों को पुस्तकें खुद ही प्रकाशित करनी पड़ेंगी? मेरा ख्याल है, नयी कविता की उपलब्धि इतनी वड़ी हो गयी है कि प्रकाशक उसे पाठकों के पास पहुँचायें और घाटे से वच सकें।

मगर, यह और पक्ष है। मैं तो तुम्हें यह पत्र बधाई के लिए लिख रहा हूँ। सम्भव है, कुछ और पढ़ कर दूसरा पत्र भी लिखूँ। जियो।

तुम्हारा
दिनकर

[३०७]

२, साउथ एवेन्यू लेन, नई दिल्ली
१४-५-६६

प्यारे भाई वीरेन्द्र,

तुम्हारा ३ मई का दुःखदायी पत्र समय पर ही मिला। पढ़कर हृदय काँप उठा। मुझे यह मालूम हुआ था कि तुम्हारी नौकरी अब नहीं है। किन्तु, यह पता नहीं था कि अवस्था इतनी विपन्न है। मैं क्या करूँ, यह दस दिनों से सोचने पर भी समझ में नहीं आ रहा है। तुम पर यह विपद अगर उस समय आयी होती जब मैं संसद-सदस्य था, तो मैं शायद कोई सहायता कर सकता था। अब तो दिल्ली में न तो जवाहरलाल हैं,

न मैं संसद में हूँ। "यारो, यारी छाड़िये, अब रहीम वे नाहिं"। मेरा प्रभाव मुझे छोड़ कर चला गया है। फिर भी कुछ बातें हैं जो हो सकती हैं।

१. तुम मुझे अपना विवरण टंकित करवा कर भेज दो। उसमें सिलसिला खास तौर से यह दिखाने का होना चाहिए कि तुम रेडियो के उपयुक्त हो। तुम तो रेडियो में थे भी। कैसे हटे थे, सो अलग से लिखना। यह विवरण मैं राजबहादुरजी को दूँगा। लेकिन, यह ठीक है कि प्रधान-मन्त्री दिलचस्पी जाहिर करें तो काम आसान हो जायगा। कार्य का यह भाग सम्पन्न करने के लिए तुम बच्चनजी को लिखो। पंडितजी का जो सामीप्य मुझे प्राप्त था, उससे अधिक, बहुत अधिक सामीप्य अब प्रधान मन्त्री से बच्चन जी का है। वे चाहें तो कार्य-सिद्धि अवश्य हो सकती है।

२. रमा जी की पुस्तकवाली-योजना तो अब खटाई में है। बेनेट-कोलमैन भी अभी हाथ से बाहर है। फिर भी उनके पास तुम अपना आवेदन भेज दो और उसकी प्रति मुझे भी भेजो। मैं अवश्य बात करूँगा।

३. "यातना का सूर्य-पुरुष" पर इतनी सामग्री लिख दूँगा जिसका उपयोग फोल्डर के रूप में किया जा सके।

४. मेरे पत्र का उपयोग तुम यथा-रुचि कर सकते हो। तुम्हारा

रामधारी सिंह दिनकर

[३०८]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली

जुलाई १, १९६८

प्रिय भाई,

तुम्हारा चिरप्रतीक्षित कार्ड मिला।

एहि सर आवत अति कठिनाई,
राम कृपा बिनु आइ न जाई।

४, ५, ६, १६, १९, २० जुलाई को हिन्दी-सम्बन्धी समितियों की बैठकें हो रही हैं, जिनमें मेरा रहना अपरिहार्य है। अतएव, गुरु-पूर्णिमा तो हाथ से गयी। अब अगस्त या सितम्बर में आने का विचार करता हूँ।

तुम जब मात्र एक कार्ड लिखते हो तब भी वह साहित्य का टुकड़ा हो उठता है। तुम्हारी भाव-विह्वलता का ही यह परिणाम है कि तुम्हें गुरु मिल गए और तुम एक ऐसी जगह पहुँच गये जहाँ शान्ति से जीना सुलभ है। योग, गार्हस्थ्य के लिए भी आवश्यक है। किसी हद तक वीतराग हुए बिना जिन्दगी की ठोकरें सँभालना मुश्किल काम है।

शेष कुशल है। तुम्हारा

रामधारी सिंह दिनकर

[३०९] ५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
अप्रैल ४, १९७१

प्रिय वीरेन्द्रजी,

मैं ८ अप्रेल के भोर फ्रण्टियर-मेल से बम्बई पहुँचूँगा और श्रेयांसजी के घर जाऊँगा। वहाँ से उसी दिन कार से गणेशपुरी-आश्रम चला जाऊँगा और वहाँ तीन रात ठहरूँगा। आप या तो मेरे साथ आश्रम चलें या १ बजे दिन में श्रेयांसजी के घर पर मुझ से मिल लें।

आपका
दिनकर

[३१०]

उदयाचल
राजेन्द्र नगर, पटना-१६
६-१०-७१

प्रिय भाई,

तुम्हारा २९ का पत्र मिला। एक पत्र दिल्ली से लिखा है वह मिला या नहीं? लक्ष्मीचन्द्रजी तैयार है। श्रेयांसजी से चर्चा हुई थी। देख रहे हो—मेरा दाहिना हाथ भी काँपने लगा है! तुम्हारा पत्र बड़ा ही प्यारा है, जुगाने के लायक।

तुम्हारा
दिनकर

[३११]

राजेन्द्रनगर, पटना-१६
१९-१०-७१

प्रिय वीरेन्द्रजी,

आपने ईसाई-धर्म के बारे में मुझे जो पाँच पुस्तकें दी थीं, उन्हें मैंने थोड़ा-बहुत पढ़ कर देखा है। अनुवाद की भाषा अच्छी है, छपाई-सफाई बेहतरीन। ईसाई-धर्म-प्रचारक, ईसाइयत और हिन्दी की सेवा साथ-साथ कर रहे हैं. यह खुशी की बात है। मेरा धन्यवाद फादर तक पहुँचा दें।

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

[३१२]

उदयाचल, पटना-६
१९-१०-७१

प्रियवर,

लक्ष्मीचन्द्रजी से बात फोन पर हो गयी थी। वे किताब छापने को तैयार हैं। आप उनसे लिखा-पढ़ी करें और अपनी आवश्यकता भी बतायें।

महावीर पर आप छन्द में लिखेंगे या मुक्त-छन्द में?

आपका
दिनकर

[३१३]

राजेन्द्रनगर, पटना-१६
१०-१२-७१

प्रियवर,

तुम्हारा बिना तारीख का पत्र पहुँचा। २५ नवम्बर के भोर मेरे बायें हाथ में कुछ हुआ, जिसे डाक्टर ने Mild Stroke बताया है। तभी से खाट पर आराम कर रहा हूँ। सभी उपसर्ग एक घंटे में शान्त हो गये। मधुमेह भी ठीक है। रक्तचाप जरा जरूर गरदन तानता है।

श्री गुरुदेव को तुरन्त पत्र भेजा था। उत्तर नहीं आया, २० नवम्बर को दिल्ली में फोन पर लक्ष्मीचन्द्र से फिर बात हुई। न जानें बात आगे क्यों नहीं बढ़ती है? आज गुरुदेव को फिर पत्र भेजा है।

तुम्हारा
दिनकर

[३१४]

उदयाचल, पटना-१६
७-१-७२

प्रिय भाई,

तुम्हारा २ का पत्र मिला। तुम मेरे जन्म-जन्म के बन्धु हो। बाबा जहाँ रखें, जैसे रखें, सब स्वीकार है।

मैं घर से तो बाहर शहर में आने-जाने लगा हूँ, लेकिन यात्रा पर निकलने की अनुमति अभी नहीं है। मेरा ख्याल है, बाबा ने तुम से जो कुछ कहा है, स्थिति वही है।

नया वर्ष तुम्हारे लिए मंगलमय हो।

तुम्हारा
दिनकर

[३१५]

राजेन्द्रनगर, पटना-१६
१०-२-७२

प्रियवर,

पहला पत्र भी मिला था और आज कार्ड भी मिला। दिल्ली-कानपुर हो आया हूँ। १४ फरवरी को मद्रास जाने का विचार है। मगर दिल्ली में बिना परिश्रम के भी थक जाता था। देखें, मद्रास यात्रा में कैसा रहता है।

लक्ष्मीचन्द्रजी ने एक बार मुझसे कहा था कि पुस्तकों का चयन अब केवल मेरे कहने से नहीं होता है। इस काम के लिए एक कमेटी बना दी गयी है। लगता है, इसी कठिनाई के कारण वे मौन रह जाते हैं। रमाजी चुप क्यों रह जाती हैं, नहीं कह सकता। शायद वे किताब लेना नहीं चाहती हैं।

माचवे जी को आज पत्र लिख दिया है।

जय गुरुदेव !

तुम्हारा
दिनकर

[३१६]

राजेन्द्रनगर, पटना-१६
५-४-७२

प्रिय भाई,

२५/३ का पत्र मिला। एक बार तो मैंने ऑफर लौटा दिया। अब अगर बाबा स्वामी मुक्तानन्द परमहंस की कृपा से दुबारा आया, तो मान लूँगा। नहीं आया तो बाबा का नाम जपता ही हूँ।

तुम कठिन तपस्या से गुजर रहे हो। इसका सुफल तुम्हारी सन्तान को मिलेगा। भगवान तुम्हारी कठिनाइयों को कम करें।

मैं २३ मार्च से ३ अप्रैल तक दिल्ली था। इसी से उत्तर में विलम्ब हुआ।

तुम्हारा
दिनकर

[३१७]

पटना-१६
२५-७-७२

प्रिय भाई,

पत्र मिला। महावीर पर काव्य मैं नहीं लिख रहा हूँ। खंडकाव्य लिखते समय पूरी निश्चिन्तता चाहिए, उसका जिम्मा कोई लेने को तैयार नहीं हुआ। दूसरे मेरे मन में कोई कथानक भी नहीं बैठता है।

भूमिका मैं अवश्य लिखूँगा। इधर गद्य, गद्य, गद्य लिखने में इतना बोझ पड़ा कि एक उँगली में घट्ठा पड़ गया है।

शेष कुशल है।

तुम्हारा
दिनकर

[३१८]

नई दिल्ली
८-६-७३

प्रिय भाई,

धन्यवाद। पत्र ८ जून को यहीं मिला। मैं २० जून को श्रेयांसजी के साथ बम्बई आऊँगा। नारी और अध्यात्म की बात मैंने तुम्हारे जीवन को देख कर नहीं, कविता को देख कर लिखी है। और स्वीकारता हूँ कि इस द्वन्द्व से मैं खुद अभी हाल-हाल तक पीड़ित था।

तुम्हारा
दिनकर

श्री क्षेमचन्द सुमन

[३१९]

आर्यकुमार रोड, पटना-४
२४-३-६०

प्रिय सुमन जी,

आपका १७-३-६० का २२२/८/१७२८६ संख्यक पत्र मिला।

शाहजहाँ को काट कर मैंने 'रात्रे ओ प्रभाते' कविता चुन ली है। आपके यहाँ मेरी जो सूची हो, उसमें संशोधन कर लीजिये। अब कविताएँ २५ की २५ रहीं।

कृपलानीजी ने भारती की कविताओं की प्रतिलिपि माँगी है। आपको याद होगा कि पाण्डुलिपि मैंने आपको कृपलानीजी के समक्ष लौटा दी थी। वह आपके ही पास होगी।

आपका
दिनकर

स्व० भारतभूषण अग्रवाल

[३२०]

आर्यकुमार रोड, पटना-४
३०-१०-६०

प्रिय भारतभूषण जी,

हंसकुमार और भवानीप्रसाद द्वारा किये गये अनुवादों की पाण्डुलिपियाँ मिलीं। मैं उन्हें सादर वापस कर रहा हूँ। कारण, योग्यता का अभाव तो है ही, अभी स्वास्थ्य तथा समय का भी अभाव है। यह काम आप किसी और को दे दें। श्री मन्मथनाथ गुप्त और उनकी पत्नी श्रीमती माया गुप्ता, ये दोनों मिलकर अथवा उनमें से कोई एक इसे जाँच दें तो जँचवा लीजिये। हाँ, कुछ मानदेय का खर्च पड़ेगा। वे लोग इस काम को बखूवी अन्जाम दे सकते हैं।

एक सुझाव और देता हूँ। पटने के श्री ओमप्रकाश आर्य जर्मन अच्छी जानते हैं, वैसे रूसी में भी उनका प्रवेश है। अनुवाद के काम में उन्हें भी साथ लेना चाहिए। उनका पता है :—

श्री ओमप्रकाश आर्य, फ्लैट नं० ३२
राजेन्द्र नगर, पटना

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

श्री क्षेमचन्द्र सुमन और भारतभूषण जी के पत्र साहित्य-अकादमी, नई दिल्ली से प्राप्त हुए हैं। —सम्पादक

श्री प्रफुल्लचन्द्र दास

[३२१]

11, Canning Lane, New Delhi
8-8-60

Dear Shri Das,

Your letter of 16-6-60 reached me only to-day.

I am willing to write a foreword to the Hindi translation of Eliot's poems. Please send me a file of the printed forms and await reply.

I am sorry, I could not send you a bunch of my selected poems. I hope to do so in the next quarter.

Yours sincerely,
Ramdhari Sinha Dinkar

[३२२]

11, Canning Lane, New Delhi
2-9-60

My dear Prafulla Babu.

Your letter. Kindly excuse my delay. The Preface is going tomorrow.

Yours Sincerely,
Dinkar

[३२३]

Aryakumar Road, Patna-4
7-7-61

My dear Prafulla Babu,

Thank you for your letter. Rajpal & Sons of Delhi have published a small collection of my poems. The book is being sent to you. You may get it translated.

I have a copy of Anabasis. I have not seen the other book. I am not very much impressed by the work. I do not think, I shall enjoy the task.

Rest all right.

Yours sincerely,
रामधारी सिंह दिनकर

श्री रामसागर चौधरी

[३२४]

११, केनिंग लेन, नई दिल्ली
४-३-६१

प्रिय श्री रामसागर चौधरी,

सच ही, मैं आपको नहीं जानता तब भी आपका २८-२-६१ का पत्र पढ़ दुःखी हुआ। यह लज्जा की बात है कि बिहार के युवक इतनी छोटी बातों में आ पड़े।

मैं जातिवादी नहीं हूँ। तब भी अनेक बार लोगों ने मेरे विरुद्ध प्रचार किया है और जैसा आपने लिखा है, वे अब ऐसी गन्दी बातें बोलते हैं। लेकिन, तब मैं जातिवादी नहीं बनूँगा। अगर आप भूमिहार-वंश में जनमे या मैं जनमा तो यह काम हमने अपनी इच्छा से तो नहीं किया, उसी प्रकार जो लोग दूसरी जातियों में जनमते हैं, उनका भी अपने जन्म पर अधिकार नहीं होता। हमारे वश की बात यह है कि भूमिहार होकर भी हम गुण केवल भूमिहारों में ही नहीं देखें। अपनी जाति का आदमी अच्छा और दूसरी जाति का बुरा होता है, यह सिद्धान्त मान कर चलनेवाला आदमी छोटे मिजाज का आदमी होता है। आप-लोग यानी सभी जातियों के नौजवान—इस छोटेपन से बचिये। प्रजातन्त्र का नियम है कि जो नेता चुना जाता है, सभी वर्गों के लोग उससे न्याय की आशा करते हैं। कुख्यात प्रान्त बिहार को सुधारने का सबसे अच्छा रास्ता यह है कि लोग जातियों को भूल कर गुणवान के आदर में एक हों। याद रखिये कि एक या दो जातियों के समर्थन से राज नहीं चलता। वह बहुतों के समर्थन से चलता है। यदि जातिवाद से हम ऊपर नहीं उठे तो बिहार का सार्वजनिक जीवन गल जायेगा।

आप सोचेंगे, यह उपदेश मैं आपको क्यों दे रहा हूँ? किन्तु, आपने पूछा, इसलिए, आप ही को लिख भी रहा हूँ। आज आप पीड़ित हैं, अपने को आप दुःखी समझते हैं। आपके विरुद्ध जिनका द्वेष उभरा है, कल उनका क्या भाव था? शायद अपने को वे उपेक्षित अनुभव करते थे। इसलिए, स्वाभाविक है कि उनका असन्तोष व्यक्त हो रहा है। और उपाय भी क्या था? इसलिए, आपको धीरज रखने को कहता हूँ, उच्चता पर आरूढ़ रहने को कहता हूँ।

जाति नाम का शोषण करके मौज मारनेवाले चन्द लोग, जो कुछ करते हैं उसकी कुत्सा उस जाति-भर को झेलनी पड़ती है, यह आप-लोग

समझ रहे हैं ? यही शिक्षा कल उन्हें भी मिलेगी जो आप को केवल इसलिए डस रहे हैं कि आप भूमिहार हैं। तो इससे निकलने का मार्ग कौन-सा है ? केवल एक मार्ग है। नियमपूर्वक अपनी जाति के लोगों को श्रेष्ठ और अन्य जातिवालों को अधम मत समझिये। और यह धर्म उस समय तो और भी चमक सकता है जब आदमी आँच की कसौटी पर हो।

आपका
दिनकर

डॉ० चन्द्रदेव सिंह

[३२५]

आर्यकुमार रोड, पटना-४
१३-४-६३

प्रियवर,

कविता मिली। पढ़कर बड़ा मजा आया। मुझे आपने जो गालियाँ दी होंगी, उन्हें मैंने नहीं देखा, न आज से पहले यह बात मुझे मालूम थी। लेकिन अच्छा हुआ कि आपने स्वयं अपना मार्जन कर लिया। यह शुद्ध हृदय का लक्षण है, यह इस बात का संकेत है कि आप वैयक्तिक मालिन्य से ऊपर रहना चाहते हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में चरित्र ही प्रधान है।

'परशुराम की प्रतीक्षा' से दो प्रकार के लोग बहुत नाराज हैं। एक वे जो यह समझते हैं कि चीनी-आक्रमण के विरुद्ध जगनेवाला क्रोध जल्दी शान्त हो जाए, नहीं तो यह क्रोध देश की प्रगतिशील प्रवृत्तियों के विरुद्ध पड़ेगा। दूसरे वे लोग जो यह समझते हैं कि युद्ध का जवाब युद्ध से न देने की भावना यदि बढ़ी तो वह गांधी-धर्म के प्रतिकूल जायगी।

मेरे जानते दोनों-के-दोनों गलती पर हैं। भारत साम्यवादी हो जाए तब भी चीन से उसकी खटपट चलती रहेगी जैसे रूस के साथ चल रही है। और गांधी-धर्म को भी मैं एक दूसरे रूप में समझता हूँ। गाँधीजी कहते थे, कायरता सबसे बुरी चीज है, उनके बहुत से शिष्य ऐसे हैं, जो केवल यह मानते हैं कि अहिंसा सबसे अच्छी चीज है। लेकिन जो कायर भी नहीं है और अहिंसक भी नहीं, वह क्या करे ? इस सवाल का जवाब गांधीजी के पास था, लेकिन, सर्वोदयवालों के पास नहीं है। इसीलिए उनमें से कुछ लोग मुझे हिंसावादी मानकर मेरी निन्दा करते हैं।

पिछले १५ वर्षों में देश कहाँ-से-कहाँ पहुँचा है, यह बात मेरे प्रसंग में भी देखी जा सकती है। १९४६ में 'कुरुक्षेत्र' निकला था। उसी में यह पंक्ति थी "जिनको सहारा नहीं भुज के प्रताप का है, बैठते भरोसा किए वे

ही आत्मबल का।" लेकिन कुरुक्षेत्र पर द्वेष के उतने तीखे बाण नहीं बरसे थे जितने परशुराम पर बरस रहे हैं। ३७ साल की अहिंसा-साधना का नतीजा यह निकला कि छह लाख हिन्दू और मुसलमान पाप की तलवार से काटे गये। यदि देश की निर्वीर्यता नहीं टूटी, तो वह कितना बलिदान लेगी, यह कवि और चिन्तक समझ सकते हैं। बाकी लोगों की समझ में यह बात तब आयेगी जब दुर्घटना घटित हो चुकेगी। कितना लिखूँ ? केवल आपको धन्यवाद देता हूँ। आप बड़े अच्छे हैं।

आपका

दिनकर

'ज्ञानोदय' से साभार। —सम्पादक

[३२६]

राजेन्द्रनगर, पटना-१६

१२-६-७२

प्रिय चन्द्रदेव,

तुम्हारी बड़ी कृपा है कि नैनीताल में तुम्हें मेरी याद आयी।

हिन्दी-ग्रन्थ-अकादमी के चेयरमैनशिप का ऑफर सरकार की ओर से आया था। तुम जानते हो कि उस पद पर अभी सुधांशुजी काम कर रहे हैं। वे रुग्ण तो हैं ही, अभी भारी विपत्ति में भी हैं। अपने पद पर वे बने रहें तो उससे उन्हें थोड़ा ढाढ़स रहेगा। यही सब सोच कर मैंने ऑफर को स्वीकार नहीं किया। वैसे काम की मुझे जरूरत है। माथे पर अनाथ पोते-पोतियों का बोझ है जो मुझे अब क्षण भर को भी निश्चिन्त होने नहीं देता।

क्या करूँ, कुछ समझ में नहीं आता है।

हम जिस समाज में जी रहे हैं, उसके प्रोप्रायटर राजनीतिज्ञ हैं, मैनेजर अफसर हैं, बुद्धिजीवी मजदूर हैं।

बूढ़ा मजदूर भर-पेट मजदूरी नहीं कमा सकता, वही हाल मेरा है।

सरस्वती और लक्ष्मी के बैर को बुझाने की कोशिश मैं जीवन-भर करता रहा, लेकिन वह बैर बुझा नहीं। अभी तो वह जरा तेज ही हो गया है।

भावुकता में विलाप की बातें लिख गया, क्षमा करना।

भगवान तुम्हें सुखी रखें।

तुम्हारा

दिनकर

स्व० अशोकजी

[३२७]

आर्यकुमार रोड, पटना-४
३-१-६४

प्रिय अशोक जी,

एक कार्य से कष्ट दे रहा हूँ। आशा है, इस पर तुरन्त ध्यान देंगे और मुझे क्षमा करेंगे।

बिहार में स्वामी सहजानन्द सरस्वती के दाहिने हाथ पं० यमुना कार्यी थे जिनका देहान्त सन् १९५३ ई० में हो गया। उन्होंने सन् १९४२ ई० में पटने से "हुंकार" नामक एक साप्ताहिक पत्र निकाला था जो अनवरत रूप से सन् १९५६ ई० तक चला। अब कार्यी जी के बच्चे उस पत्र को इसी २६ जनवरी से फिर निकालना चाहते हैं। किन्तु रजिस्ट्रार महोदय Procedure 6, Section 5 के अन्दर 'हुंकार' नाम की मंजूरी नहीं दे रहे हैं। जहाँ तक मैं जानता हूँ, हुंकार नाम का कोई पत्र, कम-से-कम, हिन्दी में नहीं निकलता है।

कृपया दफ्तर जा कर पता लगाइये कि यह रुकावट कैसे दूर की जा सकती है? अभी २६ दिसम्बर को हुंकार-प्रेसवालों ने फिर से आवेदन किया है।

आपका
रामधारी सिंह दिनकर

आचार्य किशोरीदास वाजपेयी

[३२८]

साउथ एवेन्यू लेन, नई दिल्ली
२१-८-६५

श्रद्धेय वाजपेयीजी,

आपका पत्र आज मिला। आपका यह पितृ-स्नेह बलदायक होगा।

आपने जो बातें बतलायी हैं, उनमें से अधिकांश पर आरूढ़ हूँ—यहाँ तक कि अब ब्रह्मचर्य में भी ढील नहीं है। किन्तु, असली बीमारी मेरे मन में बसी हुई है और वह परिवार को लेकर है। दुर्भाग्यवश, मेरे बड़े लड़के ने परिवार का ध्वंस कर दिया, रजिस्ट्री से बँटवारा कर लिया और अब बतलाता है कि उसके पास जीविका नहीं है। मैंने राय दी कि जो घर तुम्हें हिस्से में मिला है उसे किराये पर उठा दो और खुद किराये में रहो।

मेरे पास जो भी सम्पत्ति थी, दोनों भाइयों के बीच बँट गयी। मेरे पास न घर है, न कारबार। पटने में किराये के मकान में रहता हूँ। सम्पत्ति के नाम पर एक मोटर कार है जो पटने में है।

राहुलजी की दुर्दशा उनकी पत्नी ने की। नवीनजी को मृत्यु के मुख में उनकी पत्नी ने ढकेला। बेनीपुरी की दुर्दशा उसके पुत्र ने की और मुझे भी दुर्दशा में मेरा बेटा ही डाले हुए है। जो कहीं भी मार नहीं खाता, वह सन्तान के हाथ मारा जाता है। तब भी मानता हूँ कि भगवान मेरे बेटे का कल्याण करें।

भागलपुर में हालत बहुत खराब थी। दिल्ली में ज्यादा आराम है। तब भी दिमाग के भीतर खंजर घूमता रहता है। बड़ी मुश्किल से उसे रोक पाता हूँ। मैं जीवन में चारों-ओर से घिर गया हूँ। मृत्यु और वैराग्य के सिवा तीसरा दरवाजा दिखायी नहीं देता है। दुःख भूलने को ही वाइस-चान्सेलरी की ओर गया था। दुःख भूलने को ही दिल्ली आ गया हूँ। किन्तु, संसार-त्याग के बिना मुझे मानसिक शान्ति अब शायद नहीं मिलेगी।

आपके उपदेशों पर अमल करने की कोशिश करूँगा। आपका

दिनकर

[३२९]

२, साउथ एवेन्यू लेन, नई दिल्ली

६-१०-६५

मान्यवर वाजपेयी जी,

आपका ४ अक्टूबर का पत्र आज मिला। स्वास्थ्य काम-चलाऊ जैसा ही है। सबसे अधिक ध्यान तो आजकल स्वास्थ्य पर ही देता हूँ। किन्तु, अधिक सुधार की अब सम्भावना नहीं दीखती है। तब भी ठीक ही चल रहा हूँ। आपने मेरे चित्र में भी मेरे स्वास्थ्य की ही खोज की, इसके लिए धन्यवाद देता हूँ। आशा है, आप मजे में हैं। आपका

दिनकर

[३३०]

२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली

१-४-६६

श्रद्धेय वाजपेयी जी

सादर नमस्कार।

आपका कृपा-पत्र मिला। वह पत्र तो अत्यन्त वैयक्तिक है। उसे जनता को न दीजिये। वैसे, जनता से छिपी भी कौन बात रहती है?

सकुशल हूँ। आपका

दिनकर

डॉ० गोपाल राय

[३३१]

२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
३-११-६६

प्रिय राय जी,

मैं २९ तारीख को पटने था, मगर, आपसे मुलाकात नहीं हो सकी। आज प्रवास से वापस आने पर आपका पत्र मिला। उद्धरण दोनों सचमुच अशुद्ध हैं। अगले संस्करण में मार्जन हो जायगा। तथ्य की ओर कोई भूल हो तो निःसंकोच लिखियेगा।

आलोचक यदि हितकामी हो तो वह भी प्रशंसक के ही समान प्रिय है। मुझे दोनों प्रकार के आलोचक उपलब्ध रहे हैं, वे भी जो आलोचना करते समय केवल कृतियों को देखते हैं और वे भी जिनकी दृष्टि कृति पर कम, मेरे अप्रिय व्यक्तित्व पर अधिक रहती है। आशा है, आपके शिष्य प्रथम कोटि के हैं। आशा है आप प्रसन्न हैं।

आपका
दिनकर

[३३२]

२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
३०-११-६६

प्रियवर,

२३-११-६६ का पत्र कल मिला। मैं दक्षिण भारत गया हुआ था। कल शाम को ही वापस आया हूँ।

आपने बड़ा अच्छा किया कि डाक्टर रामचन्द्र के रिव्यू की कतरन भेज दी।

आशा है, आप सुप्रसन्न हैं। क्या ज्ञानोदय-वालों ने आपसे रिव्यू माँगी है? मुझसे लक्ष्मीचन्द्रजी कह रहे थे।

आपका
दिनकर

[३३३]

नई दिल्ली
१३-३-७०

प्रियवर,

आपका २६-२ का पत्र मिला। उसके पूर्व ही राजेन्द्रलाल जी लम्बी छुट्टी पर चले गये। छुट्टी पर से ही अवकाश ले लेंगे। फिर भी कागज उन्होंने मुझसे मँगा लिया। आज फोन पर उनसे बात हुई। बोले, विज्ञापन चला गया होगा या तुरन्त जायगा। जब मुझसे आपने कह दिया, तो निश्चिन्त हो जाइये। पता नहीं, विज्ञापन आपको मिला है या नहीं।

अपनी हाल की कविताओं के पक्ष में मैं अभी कुछ भी नहीं कह सकता। मेरा कोई खास मत बना नहीं है। केवल यही कह सकता हूँ कि इन कविताओं की मैं रचना नहीं करता। वे अकस्मात् पत्तों की तरह फूट निकलती हैं। हाँ, बाद को शब्द बदलने में कठिनाई होती है, दिमाग फटने लगता है। गैरवाजिब ढंग से बैठे हुए शब्द भी हिलने से इन्कार कर देते हैं। यह नया अनुभव है।

आपका कहना ठीक है कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ। इतना और जोड़ दीजिये कि मैं विपत्तियों से झुलसा हुआ हूँ। मेरे जीवित रहने की कोई लॉजिक नहीं थी, फिर भी बच गया हूँ। लेकिन इसे कौन देखे? सच्चे-शहीद भी मरने के पूर्व तक सन्देह के पात्र रहते हैं। मैं तो नकली ठहरा।

आपका पत्र पढ़कर मन कुछ सोचने लगा था। उसी मुद्रा में एक कविता फूट पड़ी। केवल अवलोकनार्थ भेज रहा हूँ।

२७ मार्च की शाम को पटना पहुँचूँगा। २८ को नालन्दा जाना है।

मैं मुजरिम हूँ,
यह बात मैं कैसे मान लूँ?
गीतों की यह विधा मेरी चुनी हुई नहीं है।
यह तो सरस्वती की अपनी पसन्द की राह है।
मैं तो वर्षों से गीतों के इन्तजार में था
कि आनेवाली नदियों के समान
वे नाचते और उछलते आयेंगे।
लेकिन उन्होंने एक नयी चाल पकड़ ली है।
मैं उन्हें कोई बात सिखा नहीं सकता
न वह रास्ता दिखा सकता
जिस पर मेरी सरस्वती की
सवारी आती थी।
मैंने अपने आपको क्षमा कर दिया है।
बन्धु, तुम भी मुझे क्षमा करो।
मुमकिन है, वह ताजगी हो,
जिसे तुम थकान मानते हो।
ईश्वर की इच्छा को
न मैं जानता हूँ, न तुम जानते हो।

आपका

दिनकर

*श्री उदयराज सिंह

[३३४]

आर्यकुमार रोड, पटना-४
२५-१०-६३

प्रिय शिवजी,

नई धारा के लिए तीन कविताओं का एक गुच्छा भेज रहा हूँ। किसी एक ही अंक में प्रकाशित होना चाहिए।

आपका
दिनकर

[३३५]

२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
१-२-६७

प्रिय शिवजी,

आपने इण्डियन नेशन से एक कतरन भेजने की कृपा की थी। किन्तु, आज तक मैं धन्यवाद भी नहीं भेज सका। कृपया क्षमा करें।

बड़ी विपत्ति में दिन गुजार रहा हूँ। रामसेवक भयानक रूप से बीमार हैं। एलोपैथी में कोई इलाज नहीं है। आयुर्वेद से भी कोई लाभ नहीं हुआ। अब होमियोपैथी का सहारा लिया है। भगवान ही जानते होंगे कि क्या होनेवाला है।

'शुद्ध कविता की खोज' की प्रति 'नई धारा' को गयी या नहीं, यह भी याद नहीं है। नहीं गयी होगी तो दो-तीन दिन में पहुँच जायगी।

आशा है, आप सपरिवार सानन्द हैं। श्रद्धेय राजा साहब से प्रणाम कहेंगे। पुनश्च—

अभी यह दुःख-सम्वाद और सुना कि मुझे एक पोता हुआ था, वह कुरजी-अस्पताल वालों की असावधानी से जाता रहा।

आपका
दिनकर

[३३६]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
३-९-६८

प्रिय शिवजी,

सप्रेम वन्दे।

अगस्त की 'नई धारा' मिली। दो तीन लेख बहुत पसन्द आये। पत्रिका बहुत ठीक निकल रही है। बधाई !

एक छोटा-सा लेख अपना भी भेज रहा हूँ।

आपका
दिनकर

* श्री उदयराजसिंह का घरेलू नाम शिवजी है। —सम्पादक

डॉ० लक्ष्मीचन्द्र जैन

[३३७]

२, साउथ एवेन्यू लेन, नई दिल्ली
१०-२-६७

प्रिय लक्ष्मीचन्द्र जी,

मेरे परिचय के बारे में अंग्रेजी का एक वक्तव्य आपके पास गया है यानी मैंने ही दिया है। उसमें कुछ गलतियाँ है। अतएव कृपा कर शुद्धि के लिए उसे तुरन्त वापस कर दीजिये। संशोधित रूप आपको शीघ्र भेज दूँगा।

आपका
दिनकर

[३३८]

२, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
१४ मार्च १९६७

प्रिय लक्ष्मीचन्द्रजी,

आपका २९-१२-६६ का तृ / ले / हि / ४२७७ संख्यक पत्र मिला। धन्यवाद। निम्नलिखित सामग्रियाँ इस पत्र के साथ भेजी जा रही हैं :—

१. जीवन की उल्लेखनीय घटनाओं की सूची — अपेंडिक्स १
२. मेरी पुस्तकों की कालक्रमानुसार सूची — " २
३. अन्य भाषाओं में प्रकाशित मेरे ग्रन्थों की सूची — " ३
४. मेरे साहित्य के विषय में प्रकाशित स्वतन्त्र ग्रंथों की सूची — " ४
५. श्री जगदीशचन्द्रजी माथुर के अंग्रेजी लेख की कॉपी — " ५
६. डॉक्टर लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु' के लेख की कॉपी — " ६
७. सुधांशुजी के लेख का अंग्रेजी-अनुवाद — " ७
८. कुरुक्षेत्र के एक सर्ग का अंग्रेजी-अनुवाद जो १९५५ में छपा था २ प्रतियाँ
९. समीक्षा-विन्दु नामक विज्ञापन-साहित्य की प्रति २ "

अंग्रेजी और स्पैनिश भाषाओं में प्रकाशित मेरी पुस्तकों की कुछ प्रतियाँ मेरे पास हैं। रूसी, कन्नड़, तेलुगू की केवल एक-एक प्रति हैं। मेरे बारे में हिन्दी में जो पच्चीस-तीस पुस्तकें निकली हैं, उनमें से भी कुछ की प्रतियाँ मेरे पुस्तकालय में हैं। आवश्यकता होने पर कुछ पुस्तकें भेजी जा सकेंगी, लेकिन इस शर्त पर कि वे मुझे लौटा दी जायें।

आशा है, आप सकुशल हैं।

आपका
रामधारी सिंह दिनकर

श्री मन्मथनाथ गुप्त

[३३९]

नई दिल्ली
१८-५-६७

प्रिय मन्मथ बाबू,

एक पत्र आपका आज मिला, एक पहले मिला था। पहला कम कटु था। दूसरा ज्यादा है।

मैं भाग कहाँ से गया ? नौकरी में हूँ ही, खाना-पीना चल ही रहा है, मौके पर हँस भी लेता हूँ, आज-कल दफ्तर में डट कर ८ घंटे काम भी करता हूँ। हाँ, इस घर से भाग जाना निश्चित हो गया। २३ मई से मेरा पता होगा—

५, सफदर जंग लेन।

घोष साहब के बारे में मेरी जानकारी कुछ है ही नहीं। किसी दिन खोद कर जीवनी सुनवाइये तो कोई अच्छी चीज तैयार की जा सकती है।

शाह तो बड़ा भारी बैंसा निकला।

अभी आठ दिन मैं बहुत व्यस्त रहूँगा। सरकार में हिन्दी की स्थिति पर एक रिपोर्ट तैयार कर रहा हूँ। देखता हूँ, अच्छा तभी था जब गरजता था और फूल की मालाएँ पहनता था। सरकारी तन्त्र में घुस कर हिन्दी का काम करना सबके साथ झगडा मोल लेना है। जो अफसर हिन्दी के मामले में जितना शैथिल्य दिखलाता है, वह भारतीय एकता का उतना ही बड़ा प्रहरी समझा जाता है।

आपका
दिनकर

[३४०]

५, सफदर जंग लेन, नई दिल्ली
८-८-६९

प्रिय मन्मथ बाबू,

योजना के बारे में आपका पत्र मिला था। सत्यनारायण बाबू का जवाब आ गया है कि वे इस विषय की पूछ-ताछ कर रहे हैं।

अभिनन्दन-ग्रन्थ के लिए कोई नयी चीज लिखना, अभी पार नहीं लगेगा। पुराने लेख को ही सँवार कर भेज दूँगा।

आशा है, आप सकुशल हैं।

आपका
दिनकर

[३४१]

५, सफदर जंग लेन, नई दिल्ली
सितम्बर २६, १९६९

प्रिय मन्मथ बाबू,

आपका २४/९ का पत्र मिला। राजपाल वालों का भी फोन आया था, मैंने कहा, कोई नयी कविता नहीं जोड़नी है, जैसी है वैसी छाप लें। यह जान कर खुशी हुई कि आप अगली किताब अंग्रेजी में लिख रहे हैं। हिन्दी का वातावरण दमघोंटू है ही।

आपका
दिनकर

डॉ० शिवप्रसाद सिंह

[३४२]

५, सफदर जंग लेन, नई दिल्ली
७-७-१९६७

प्रियवर,

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि हिन्दी के महास्तम्भ पण्डित हजारी प्रसादजी द्विवेदी आगामी श्रावण शुक्ल एकादशी को अपने जीवन का साठवाँ वर्ष पूरा कर रहे हैं, तथा काशी के साहित्यिकों ने यह आयोजन किया है कि इस अवसर पर उन्हें एक ग्रन्थ भेंट किया जाय। मुझ पर आरम्भ से ही द्विवेदीजी की कृपा रही है और आरम्भ से ही मैं उन पर श्रद्धा रखता हूँ। विद्वान और लेखक वे आज बे-जोड़ हैं किन्तु मनुष्यता की दृष्टि से भी उनके समकक्ष पहुँचने वाले लोग देश में कम ही होंगे। उन्होंने जो कुछ लिखा है उसका अधिकांश चिरायु होगा।

बहुत अच्छा होता यदि मैं इसी समय द्विवेदीजी का संस्मरण लिख पाता, किन्तु इन दिनों मेरी मनोदशा खिन्न है अतएव इस मांगलिक अवसर पर मैं मान्यवर हजारीप्रसादजी को प्रणाम करता हूँ और भगवान से मनाता हूँ कि वे उन्हें शतायु करें।

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

'शान्तिनिकेतन से शिवालिक' से साभार। —सम्पादक

श्रीमती पद्मा सचदेव

[३४३]

नई दिल्ली
२९-९-६७

प्रिय पद्मा,

तुम्हारी पुस्तक 'मेरी कविता : मेरे गीत' की भूमिका पत्र के साथ संलग्न है। प्राप्ति की सूचना देना।

आशा है तुम स्वस्थ हो।

तुम्हारा
दिनकर

भूमिका :—

जब से स्वराज्य हुआ है, भारत की भाषाओं में जान आ गयी है। जिसमें जहाँ तक बढ़ने का दम है, वह वहाँ तक बढ़ने की कोशिश कर रही है। देश के कुछ बड़े-बूढ़े लोग, जिन्होंने भारत की मिट्टी को नहीं समझा था, जो बड़े-बड़े शहरों में जनमे और वहीं बढ़ कर अब वृद्ध हो गये हैं, जिन्होंने अंग्रेजी में दक्षता प्राप्त करके पहले अंग्रेजों को चकित किया और स्वराज्य के बाद से जो नये राजनीतिज्ञों को भी चकरा देने में कामयाब हो गये हैं, वे लोग कहते हैं कि भाषाओं का जागरण भारत के लिए सबसे बड़ा खतरा है। लेकिन, मुझ जैसे सिर-फिरे लोग यह समझते हैं कि भारत की भाषाएँ यदि नहीं जगीं, तो पार्सल से जो स्वराज्य १५ अगस्त १९४७ ई० को आया था, वह मुर्दा-का-मुर्दा पड़ा रहेगा। जनता को उसकी भाषा नहीं मिली, तो वह बढ़ेगी कैसे? वह अपने दुःख-दर्द, उम्मीद और उमंग की अभिव्यक्ति क्या अंग्रेजी की मदद से करेगी? ऐसे सभी बड़े लोगों से मेरा एक ही सवाल है कि अगर जनता को उसकी भाषा मिलनेवाली नहीं थी तो फिर स्वराज्य की ही ऐसी जल्दी क्या थी। शासन का लिबास तो बदल गया, मगर जनता के हृदय के भीतर उमंग का चिराग जलाने का रास्ता कब खुलेगा?

अंग्रेजी में कविताएँ लिख कर बहुत से हिन्दुस्तानियों ने हिन्दुस्तान वालों को चक्कर में डाल दिया। मानो वे कह रहे हों, देखा? जिस भाषा में तुम ठीक से बात नहीं कर सकते, उसमें हम कविताएँ लिखते हैं। मगर इन कविताओं को पढ़ा किसने? जो असली हिन्दुस्तानी हैं, वे अपनी कविताएँ अपनी भाषाओं में पढ़ते हैं और उन्हीं कविताओं पर झूमते भी हैं। रह गये अंग्रेज, सो वे तो अंग्रेजी में कविता लिखनेवाले हिन्दुस्तानियों को कवि ही नहीं मानते। आरू दत्त को भी नहीं, तोरू दत्त को भी नहीं, भारत-

कोकिला को भी नहीं, हरीन्द्र चट्टोपाध्याय को भी नहीं। है इनमें से कोई कवि जिसकी कविता अंग्रेजी कविताओं के किसी भी प्रतिनिधि-संग्रह में स्थान पा सकी हो? और मेरे सामने "कामनवेल्थ एन्थालाजी" का नाम मत लीजिये। यह विशेषण ही बताता है कि संग्रह, साहित्य नहीं, राजनीति की दृष्टि से किया गया है।

कविता की असली भाषा कवि को मातृभाषा ही हो सकती है। सीखी हुई भाषा में ज्ञान का साहित्य लिखा जा सकता है, रस का साहित्य लिखा नहीं जा सकता। और रस-साहित्य में भी कविता और गीत के बीच भेद है। कविता में कुछ ज्ञान भी होता है, पाण्डित्य भी होता है, कवि की कारीगरी भी होती है। मगर गीत केवल रस की बूंदें हैं, कवि के भीतरी व्यक्तित्व के प्रस्वेद हैं, उसके दर्द की खुशबू हैं। उनके लिए ज्ञान और पाण्डित्य साधक नहीं, बाधक ही होते हैं:—

इश्क को दिल में जगह दे 'अकबर',
इल्म से शायरी नहीं आती।

कभी सोचा है कि संस्कृत में गीत क्यों नहीं लिखे गये? संस्कृत का चलन कई हजार साल तक रहा, फिर भी जयदेव को छोड़ कर और कोई कवि संस्कृत में नहीं हुआ जिसे हम गीतकार कह सकें। कारण स्पष्ट है। संस्कृत कभी भी मातृभाषा नहीं थी। मातृभाषा, बराबर कोई-न-कोई प्राकृत रही थी। संस्कृत पर अधिकार सहज में प्राप्त नहीं होता था, वह प्राप्त किया जाता था।

गाथासप्तशती प्राकृत में जनमी, क्योंकि उसके भीतर पाण्डित्य नहीं, जनता के हृदय की भावनाएँ हैं। और गोवर्धनाचार्य जब संस्कृत में आर्या सप्तशती लिखने लगे, तब उन्हें अनुभव हुआ, मानो, वे नीचे बहनेवाले जल को नल के द्वारा ऊपर चढ़ा रहे हों।

और जो हाल संस्कृत का हुआ, वही हाल हिन्दी का रहा है। हिन्दी में कविताएँ अत्यन्त उच्चकोटि की लिखी जाती हैं, मगर असली गीत हिन्दी या उर्दू में नहीं लिखा जा सकता। यहाँ तक कि सिनेमा ने भी यह साबित कर दिया है कि उपभाषाओं अथवा जनपदीय भाषाओं का सहारा लिये बिना सच्चे गीत लिखे ही नहीं जा सकते और चूँकि सिनेमावाले लोग उर्दू-परस्त हैं, इसलिए जनपदीय भाषाओं से रस लेना वे नहीं जानते। जैसे संस्कृत, प्राकृत से आगे बढ़ जाने के कारण गीतों की भाषा नहीं रही, वैसे ही गीतों की भाषा हिन्दी-क्षेत्रों में भी हिन्दी नहीं, डोगरी, पंजाबी, राजस्थानी, ब्रजभाषा, अवधी, बुन्देलखण्डी, भोजपुरी, मैथिली और अंगिका रह गयी हैं।

और डोगरी के गीत कितने विलक्षण होते हैं, यह देख कर आजकल मैं दंग हूँ। डोगरी की सहज कवयित्री श्रीमती पद्मा सचदेव का मैं बड़ा ही उपकार मानता हूँ कि उन्होंने मेरे घर आकर मुझे उस अद्भुत आध्यात्मिक सम्पत्ति का ज्ञान कराया जो डोगरी भाषा में बिखरी पड़ी है।

कविता में आज कल ज्ञान का युग चल रहा है यानी कविता मर गयी है, उसकी लाश पर बड़े-बड़े पंडित कलाकार कारीगरी और नक्काशी करके नोबुल-पुरस्कार पाते हैं और हम जब उनकी शुहरत से खिंच कर उनकी कविताएँ पढ़ने लगते हैं, तब हमारा मोह-भंग हो जाता है।

पद्माजी ने डोगरी के लोकगीतों के सिवा कुछ अपनी कविताएँ भी मुझे सुनायीं और उन्हें सुन कर मुझे लगा, मैं अपनी कलम फेंक दूँ, वही अच्छा है। क्योंकि जो बात पद्मा कहती है, वही असली कविता है और हम में से हर कवि उस कविता से दूर, बहुत दूर हो गया है :—

यहाँ सरसों फूली हुई है,
मालूम नहीं, किसके भुलावे में आ गयी।
दूर तक खिलखिला रही है,
मानो, ब्रह्मा की अंजलि से बिखर गयी हो।
मालूम नहीं, किसके वियोग में
यह गोरी-पीली हो गयी है।
इसके बीज बिखरे हैं
चंबे, जम्मू और अखनूर में,
जी करता है, सारी की सारी बांध लूँ।
केसर और कँटीली झाड़ियाँ समेट लूँ।

गाथा को आर्या बनाने में जो मुसीबत गोवर्धन को झेलनी पड़ी थी, डोगरी को हिन्दी में ढालनेवालों की मुसीबत उससे जरा भी कम नहीं है। फिर भी जी करता है कि पद्मा के गीतों या कविताओं के कुछ और अनुवाद पाठकों के सामने बानगी की तौर पर जरूर परोस दूँ :—

क्या ये राजाओं के महल आपके हैं ?
मेरा घर मुझ से छूट चुका है,
मैं राह भूल गयी हूँ।
बरसों पहले मेरी आँखों की ज्योति
मुझ से छिन चुकी है।
यह ज्योति छीन जिन्होंने
मुझे अन्धी बना कर फेंक दिया है
मेरे बाग का पौधा जिन्होंने उखाड़ लिया है।

(उस पौधे पर अभी कोंपलें भी नहीं आयी थीं)
मेरा साजन तब तक ज्यादा दूर भी नहीं गया होगा,
तभी जिन्होंने मेरी काँपती टहनियाँ काट लीं,
क्या वे दरातियाँ आपकी हैं ?

x x x

मेरा चाँद बेर के दरख्त के पीछे चढ़ा है।
यह दरख्त कटवा दो जिससे मेरा चाँद मुँह खोल कर बोले।

x x x

टसू वृक्ष के ये लाल फूल,
लगता है, विधाता ने अपने हाथ से छुए हैं।

x x x

पहाड़ के पीछे से चाँद हँसते-हँसते
ऐसे धीरे-धीरे आता है
जैसे नयी दुलहन मुँह दिखाने को
धीरे-धीरे घूँघट उठा रही हो।
यह वासन्ती चाँद !
इसका अंग-अंग पीला है।
किसी के वियोग में सूख कर काँटा हो गया है।
या हो सकता है कि तपेदिक ने इसका
यह हाल किया है।

कवयित्री पद्मा को तपेदिक हुआ था और वे तीन वर्षों तक जिन्दगी और मौत के बीच झूले झूलती रही थीं। अपनी एक कविता में अपनी बीमारी का हाल भी उन्होंने लिखा है, मानो किसी को वे चिट्ठी लिख रही हों :—

मैं बहुत दिनों से बीमार थी
चारपाई से लगी हुई थी।
घुप्प अँधेरे में सोते-सोते
सुधबुध खो बैठी थी।

असली कविता शायद कोरी घटनाएँ मात्र हैं। मगर, धन्य है वह आदमी जो घटनाओं का रस, इतिहास का सत जुगा सकता है। सच्ची कविता शायद नारियों के लिए अधिक स्वाभाविक है क्योंकि वे चुपचाप अन्याय सह कर इतिहास के सत का रक्षण करती हैं।

इस राह में इतनी सुनसान है
कि कोई पत्ता भी नहीं हिलता।

कहार जब तेजी से कदम उठाते हैं
तो मेरा मन काँप उठता है।
हाय, इस अन्धेरे में मैं
वह वस्तु ढूँढ़ रही हूँ
जो फेरों के समय मेरे हाथ में थी।
वे शब्द ढूँढ़ रही हूँ जो
आहुतियों के संग बोले गये थे।

पद्मा का जीवन दुःख से भींगा हुआ जीवन है। मृत्यु की सीमा पर वह तीन साल सोयी रही थी। जो दुःखी होता है, उसे गुजरे हुए सुखों की याद कुछ ज्यादा सताती है :—

सखि ! वे दिन कैसे थे ?
वह वक्त कैसा था ?
कड़वी बात जब किसी को न तो कही थी,
न किसी से सुनी थी।
वे दिन कितने मीठे थे,
जब सब कुछ सुन्दर दिखायी देता था।
जख्म कभी होता न था,
जो होता तो तुरन्त भर जाता था।
अब कैसे जख्म लगे हैं ?
इनकी मरहम नहीं मिलती,
इनका रिसना बन्द नहीं होता,
इनका दर्द खाये जाता है।

यह बीमारी केवल पद्माजी की नहीं है। हर आदमी जिसका बचपन बीत गया, जो बच्चे की तरह सीधी बात बोलने में शर्म महसूस करता है, उसका यही हाल है। मेरा ख्याल है, पूरी सभ्यता का ही बचपन समाप्त हो गया है और वह इसी वयस्कता की बीमारी से बीमार है।

डोगरी धन्य है। न जानें, इस भाषा के भीतर कैसे-कैसे रत्न छिपे हुए हैं। डोगरी के लोकगीतों के अनुवाद हिन्दी में अवश्य आने चाहिए और हिन्दी को उन सभी कवियों और लेखकों से परिचित कराना चाहिए जो इस पहाड़ की तरह खूबसूरत भाषा में लिख रहे हैं।

रामधारीसिंह दिनकर

[३४४]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
१९-९-६९

प्रिय पद्मा,

खुश रहो। हम कल दिल्ली पहुँच गये। गाड़ी ठीक समय पर आयी, मगर मेरा मिजाज बहुत ठीक नहीं रहा। आज अच्छा हूँ।

तुम्हारी कोई चिट्ठी डाक में नहीं मिली। शायद खो गयी हो।

मेरा मन उत्साहरहित है। बम्बई, जी बहलाने को ही गया था, मगर तबीयत बहल नहीं पायी।

अगर मनहर जिद करेगा तो २ नवम्बर को फिर बम्बई आना पड़ेगा।

तुम्हारा
दिनकर

[३४५]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली-११
अक्टूबर १३, १९६९

प्रिय पद्मा,

तुम्हारे दोनों पत्र मिल गये। इधर डाक्टर ने मुझे एक दवा दी थी, जिसका नाम DUVADILAN है। उसके पत्रक में लिखा है कि यह दवा माइग्रेन में भी लाभकारी है। तुम किसी डाक्टर से राय लेकर इस दवा का प्रयोग कर सकती हो।

मेरी छोटी बेटी विभा अपने पति के साथ १९ को यहाँ आ रही है। उन लोगों के साथ मैं बम्बई के लिए २७ अक्टूबर को ट्रेन से रवाना होऊँगा। २८ अक्टूबर से २ नवम्बर तक बम्बई रहूँगा। ३ को बम्बई से मैं हैदराबाद जाऊँगा और बच्चे यहाँ दिल्ली लौट आयेंगे।

भगवान करें कि उन दिनों तुम स्वस्थ रहो जिससे बच्चे तुम्हारी संगति से लाभ उठा सकें। शेष कुशल है।

तुम्हारा
दिनकर

[३४६]

नई दिल्ली
३१-१२-६९

प्रिय पद्मा,

तुम्हारा २७/१२ का पत्र कल मिला। इधर फिर ग्वालियर चला गया था। कल ही वापस हुआ हूँ।

तुम्हारा लेख धर्मयुग में देखा। तुम्हारे दो फोटो छपे थे। बड़ा सम्मान है तुम्हारा।

मेरा शरीर अभी तो ठीक चल रहा है। शान्ता मुझे पत्र नहीं भेजती है, यह बड़ा अन्याय है। उसका पता भी मेरे पास नहीं है।

अब तो मार्च-अप्रैल के पूर्व बम्बई आना नहीं है। खुश रहो।

तुम्हारा
दिनकर

[३४७]

नई दिल्ली
सितम्बर २, १९७०

प्रिय पद्मा,

मैंने भारतीजी को कविताएँ भेजी थीं और एक पत्र भेजा था। जब उत्तर नहीं आया, तब मैंने एक कार्ड भेजा। लेकिन उत्तर फिर भी नहीं आया। पता नहीं क्या बात है। तुम फोन पर पत्र का यह हिस्सा उन्हें सुना दो और वे जो बतायें वह मुझे लिख भेजो।

मैं १५ सितम्बर को बड़ौदा जाऊँगा। बड़ौदा से १८ सितम्बर की शाम को बम्बई पहुँचूँगा। १९ को श्रीरामावतार चेतन द्वारा आयोजित किसी समारोह में भाग लेना है।

आशा है, तुम दिन-दिन चंगी होती जा रही हो।

सचदेव को आशीर्वाद !

तुम्हारा
दिनकर

[३४८]

पटना-१६
४-८-७२

प्रिय पद्मा,

मैं आज ही शाम को दिल्ली से लौटा हूँ। मुझे फिर दिल्ली जाना ही होगा। १२ के भोर वहाँ पहुँच जाऊँगा और १९ तक रहूँगा। पता होगा, २२ कर्जन रोड। वहाँ का फोन नम्बर ४७६०५ है।

इधर मैंने दो लम्बी और अच्छी कविताएँ लिखी हैं बहुत दिनों के बाद। एक तो धर्मयुग के विशेषांक में आ रही है, दूसरी दिल्ली में सुन लेना। आज तो थका लौटा हूँ, वैसे मिजाज ठीक है।

तुम्हारा
दिनकर

[३४९]

३१, सरदार पटेल रोड, नई दिल्ली
२१-४-७४

प्रिय पद्मा,

मैं आज तिरुपति जा रहा हूँ। २५ को लौटूँगा। तब तक तुम्हारा पत्र आ जाना चाहिए कि यह लिफाफा तुम्हें मिल गया। अगर पत्र डाक में खो गया तब भी छड़ी तुम पर ही बरसेगी।

तुम्हारा
दिनकर

दिनकरजी के जीवन का यह अंतिम पत्र है।—सं०

श्री विश्वनाथ मुखर्जी

[३५०]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
१०-११-६७

प्रिय मुखर्जी,

यह जानकर घबराहट हुई कि श्रद्धेय रायकृष्णदासजी तथा बाबू रामचन्द्र वर्मा का अभिनन्दन ठलुआ-क्लब की ओर से किया जा रहा है। जो निठल्ला नहीं है, ठलुआ-क्लब का अभिनन्दन उसके अयोग्य पड़ता है।

फिर सोचता हूँ कि रायकृष्णदासजी किसी कदर इस अभिनन्दन के अधिकारी हो सकते हैं, क्योंकि जितना लिखने की उनमें सामर्थ्य थी, उतना लिखने से उन्होंने परहेज किया है। अवश्य ही, यह परहेज निठल्लेपन की आराधना में किया गया होगा। और निठल्ले वे रहे भी हैं, कुछ तो भगवान की कृपा से और कुछ अपने चाव से।

मगर वर्माजी को काशी के ठलुओं ने कैसे फाँस लिया? वे तो सारी जिन्दगी बैल की तरह खटते रहे हैं। वैसे हम कांग्रेसियों के आराध्य-देवता बैल ही हैं, लेकिन वर्मा जी को इस वृषभ बनने में आपत्ति हो, तो फिर वे मधुमक्खी की कोटि में गिने जायेंगे। अब यह उनकी पसन्द पर छोड़ता हूँ कि वे पुष्ट जानवर बनेंगे या छोटा-सा कीड़ा।

मेरा ख्याल है, वर्माजी को इस अभिनन्दन का सुयोग इसलिए मिला है कि वे रायकृष्णदासजी के मित्र हैं।

चढ़इ गगन रज पवन प्रसंगा।
जैसे बना जिला दरभंगा।।

इस मौज देनेवाले मौके पर मैं इन दोनों महारथियों को बधाई देता हूँ और सबसे बड़ी बधाई के हकदार आप लोग हैं क्योंकि आपकी गिनती, सामान्य नहीं, बड़े मूर्खों में की जायगी :—

प्रत्येक मूर्ख को उससे भी
कुछ बड़ा मूर्ख मिल ही जाता,
जो उसे समझता है पंडित,
जो उसका आदर करता है।
'ढोल गंवार शूद्र पशु नारी' की छठी कड़ी।

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

[३५१]

नई दिल्ली
१६-९-७०

प्रिय मुखर्जी

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि काशी-ठलुआ-क्लब की ओर से महादेवीजी का सम्मान किया जा रहा है। मैं चाहता था कि इस अवसर पर उनके साथ कोई मजाक करूँ। मगर मेरी भावना पर महादेवीजी का जिस तरह का राज है, उसमें मजाक कोई सूझता ही नहीं है।

महादेवीजी हँसती बहुत हैं और हँसने पर उनकी बत्तीसी पहले जेब भी देती थी। ठलुआ-क्लब को चाहिए कि मोरछल हिलाने के पूर्व वह महादेवीजी के मुख में चार-जोड़ी नये दाँत लगवा दें।

आपका
रामधारी सिंह दिनकर

[३५२]

नई दिल्ली
२०-१०-७०

प्रिय मुखर्जी,

श्रीमुरारीलाल केडिया ने जीवन-भर सबका मुण्डन किया। अब ठलुआ-क्लब उनका मुण्डन करने की तैयारी में है। आशा है, केडियाजी का माथा चपतियाने लायक हो जायगा। इति शुभम्।

आपका
दिनकर

[३५३]

नई दिल्ली
२८-२-७२

प्रिय मुखर्जी,

बलिहारी हो ठलुआ वीर की। ठलुआ-क्लब से अभिनन्दित होने का जितना अधिकार बनारसीदासजी को है, उतना किसी को नहीं। वे खुद ही अगड़धत्त ठलुआ नहीं हैं, अपने चेलों को भी शुद्ध ठलुआ बना कर रखना चाहते हैं। मुझ पर उन्होंने अपने मन्त्र का पूरा प्रयोग किया। सन् १९३३ ई० से उन्होंने यह आन्दोलन शुरू किया कि नौकरी छोड़कर मुझे शुद्ध ठलुआ बन जाना चाहिए। सो सन् १९५२ में आकर मैंने नौकरी छोड़ दी और राज्य-सभा का सदस्य बन गया। वह एक प्रकार की ठलुआ-गिरी ही थी, मगर सम्भावना यह हो गयी कि मैं मन्त्री बन जाऊँगा। सो बनारसीदासजी मुझे राज्य-सभा में भाग लेने से रोकने लगे। बोले—

राज्य-सभा में शोर मचाकर समय नहीं खोओ रे !
जैसे मैं सोया रहता, तुम भी सुख से सोओ रे !

मैं उनकी बातों में आ गया और काम करने के समय सोने लगा। इस प्रकार नौकरी खोने और मन्त्री न होने की जिम्मेदारी मैं बनारसीदासजी पर डालता हूँ।

उनके मस्तक पर एक मोरछल मेरी ओर से डुला दीजिये।

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

[३५४]

पटना
२२ मार्च ७२

प्रिय मुखर्जी,

श्री रामेश्वरजी टाँटिया लेखकों में लेखक, राजनीतिज्ञों में राजनीतिज्ञ, धनियों में धनी, गरीबों में गरीब, ज्ञानियों में ज्ञानी और मूर्खों में मूर्ख हैं। ठलुआ-क्लब की निगाह उन पर सही पड़ी है। ठलुआ-क्लब द्वारा अभिनन्दित होने की उनकी योग्यता अपार है। एक बात और कह दूँ कि टाँटियाजी कंजूसों के बीच भी कंजूस हैं। पिछली बार जब मैं दिल्ली से विदा ले रहा था टाँटियाजी ने गंगाबाबू से कहा—चलिये आज दिनकरजी को कहीं चाय पिलायी जाय। मैंने कहा, गेलार्ड से कम में काम नहीं चलेगा। टाँटियाजी की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी और आखिर चाय पिलाने का कार्यक्रम उन्होंने रद्द कर दिया।

उनके शरीर की बनावट में हाथी और ऊँट का संघर्ष है। हाथी ने उन्हें पूरा ऊँट बनने से रोक लिया, तो ऊँट ने भी उन्हें हाथी बनने नहीं दिया। वैसे टाँटियाजी हाथी और ऊँट, दोनों बनना चाहते थे।

टाँटियाजी थर्ड-क्लास में यात्रा करके इस आम राय का खण्डन करते हैं कि रेल का तीसरा-वर्ग नरक का वर्ग है। टाँटियाजी का ख्याल है कि थर्ड-क्लास करोड़पतियों का क्लास है। उसमें नींद ज्यादा आसानी से आती है। खादी-भण्डार में जो कपड़े सबसे खराब होते हैं उन्हें टाँटियाजी व्यवहार में लाते हैं और जूते भी वे, वही पसन्द करते हैं जिन्हें और लोग पसन्द नहीं करेंगे। सुना है, वे संन्यास लेनेवाले हैं, इसलिए नहीं कि संन्यास मुक्ति का मार्ग है, बल्कि इसलिए कि संन्यासी होने पर वे कम्बल पहन सकेंगे। टाँटियाजी को मृगछाला ही पसन्द है।

भगवान करें कि टाँटियाजी की मूर्खता और कंजूसी, दोनों की वृद्धि हो।

आपका
दिनकर

डॉ० लक्ष्मीनारायण दुबे

[३५५]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
१६-११-६७

प्रिय दुबेजी,

आपका १३ नवम्बर का कृपा-कार्ड मिला। हिन्दी-साहित्य का विशेषांक मैंने देख लिया है। लेकिन मुझे अब तक किसी ने भी यह खबर नहीं दी है कि अगले वर्ष (यानी २३ सितम्बर १९६८ को) कोई मेरी षष्ठिपूर्ति मना रहा है। स्वास्थ्य और सुयोग रहा तो अपनी कलम से कविता लिख कर अपनी जयन्ती आप ही मना लूँगा। यह धर्म लोकाचार से श्रेष्ठ है।

आशा है, आप प्रसन्न हैं।

आपका
दिनकर

डॉ० वचनदेव कुमार

[३५६]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
मई १४, १९६८

प्रिय वचनदेव,

तुम्हारे द्वारा सम्पादित 'उर्वशी : विचार और विश्लेषण' नामक पुस्तक की प्रति मिली। घोड़ा तो अच्छा है पर अस्तबल बहुत खराब।

तुम्हारा
दिनकर

[३५७]

सरदार पटेल मार्ग, नई दिल्ली
अप्रैल १८, १९७४

प्रिय वचनदेव,

तुम से बातें करने के लिए नम्बर घुमाते-घुमाते उँगलियाँ दुख गईं पर टेलीफोन नहीं लग सका। इसीलिए पत्र लिख रहा हूँ। तुम २८ अप्रैल के लिए मेरे वास्ते कलकत्ते का टिकट ले लेना। जिनके लिए मैंने सब कुछ किया वे तो काम के नहीं हो सके। तुम्हारे लिए मैंने कुछ भी तो नहीं किया, फिर भी बार-बार कष्ट देता रहता हूँ।

तुम्हारा
रामधारी

डॉ० कृष्णबिहारी मिश्र

[३५८]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
१-८-१९६८

प्रियवर,

स्वर्गीय पण्डित नन्ददुलारे वाजपेयी बड़े ही समर्थ आलोचक और साहित्य के गम्भीर विद्वान थे। छायावाद के अनुकूल आलोचकों में उनका अन्यतम स्थान था। निराला-काव्य के वे विशेषज्ञ थे। निरालाजी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर उन्होंने एक पुस्तक भी लिखी थी जो निराला-काव्य के विद्यार्थियों द्वारा विशेष रूप से पढ़ने योग्य है।

वाजपेयीजी जब विश्वविद्यालय के छात्र भी थे, तभी वे साहित्य-संसार में आलोचक के रूप में प्रसिद्ध हो गये थे।

उनका स्वभाव मृदुल था। उनका व्यक्तित्व सुगंभीर था और वे मितभाषी थे।

उनके पढ़ाए हुए असंख्य नौजवान आज हिन्दी-साहित्य की सेवा में लगे हुए हैं।

मैं उनकी स्मृति को श्रद्धा-समेत प्रणाम करता हूँ।

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

श्री धर्मदेव राय

[३५९]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
३-१०-६८

प्रिय धर्मदेवजी,

आपका २३ सितम्बर का पत्र आज मिला। शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद देता हूँ।

रोग निकर तनु, जरठपनु, तुलसी संग कुलोग।
रामकृपा लै पालिये, दीन पालिबे जोग॥

आपका
दिनकर

[३६०]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
२३-४-७०

प्रिय धर्मदेव बाबू,

आपका १८-४ का पत्र मिला। धन्यवाद। बड़ी आपने कृपा की कि गृह-प्रवेश के अवसर पर याद किया। भगवान से प्रार्थना है कि आपका नया घर सुख, सौभाग्य और समृद्धि देनेवाला हो और उसमें आप परिजनों और मित्रों के साथ लम्बे अरसे तक निवास करें।

रामखेलावन बाबू का कोई पत्र नहीं आया, वैसे जब मैं उनके घर गया था, उन्होंने अनुरोध अवश्य किया था।

अब मैं एम० पी० नहीं हूँ, इसलिए मनमाना समय भी नहीं निकाल सकता। फिर शरीर से भी थोड़ा असमर्थ रहता हूँ। आशा है, कभी यह संयोग मिल जायगा कि आपके घर जाने का सौभाग्य प्राप्त कर सकूँ।

आपका
दिनकर

प्रो० सत्येन्द्र अरुण

[३६१]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
१५-६-६९

प्रिय अरुण,

तुम्हारा पत्र मिला, दिल्ली से बाहर रहने के कारण समय पर उत्तर न दे सका। यह जानकर मुझे परम प्रसन्नता हुई कि तुम लाला बाबू के सम्मान में एक अभिनन्दन-ग्रन्थ तैयार कर रहे हो। बहुत वर्षों के बाद मुंगेर के लोगों को यह बात सूझी है। ध्यान रहे, अभिनन्दन-ग्रन्थ के प्रकाशन में जल्दबाजी नहीं होने पावे।

जिस समय बरबीघा के एक स्कूल में मैं काम कर रहा था, उस समय लाला बाबू की ख्याति सुदूर गाँवों तक फैली हुई थी। जब कभी वे बरबीघा आते, किसानों और साधारण कार्यकर्त्ताओं की भीड़ उन्हें घेर लेती थी। उन पर एक रचना भेज दूँगा।

'श्रीकृष्ण-अभिनन्दन-ग्रन्थ' को भी देख लेना। रामनन्दनजी के बारे में लिखना। एक पवित्र व्यक्ति होते हुए भी वे शारीरिक कष्ट को झेल रहे हैं इस गूढ़ रहस्य को कौन जाने। मैं भी थकावट में चल रहा हूँ।

तुम्हारा
दिनकर

स्व० डॉ० कन्हैयालाल सहल

[३६२]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
२२-१-७०

प्रिय सहल जी,

सकुशल दिल्ली पहुँच गया। आपने मेरे आराम की उतनी चिन्ता की और हर जगह आप साथ रहे, यह याद करके मन कृतज्ञता से भर जाता है।

एक लेखक के रूप में आप पर बराबर मेरी श्रद्धा थी, किन्तु, मैं यह नहीं जानता था कि इतना विशाल कार्य आप कर चुके हैं। बस यही कह सकता हूँ कि आप धन्य हैं। श्री खद्दर जी को मेरा धन्यवाद निवेदित करें।

बिरला जी ने धन कमाया तो उसका सदुपयोग भी किया। विद्या-विहार को देखकर उन लोगों पर श्रद्धा बढ़ती है।

कृष्णविहारी की कविताएँ बहुत अच्छी हैं। कविता के क्षेत्र में उसका भविष्य उज्ज्वल है। आशा है, आप सकुशल और सानन्द हैं।

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

डॉ० कृष्णबिहारी सहल

[३६३]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
२२-१-७०

प्रिय कृष्णविहारी जी,

'अहं और आत्मबोध' की कविताएँ एक बार पढ़ गया। कविता वह, जिसे खत्म करके जी करे कि फिर पढ़ूँ और कहानी वह, जिसे खत्म करके जिज्ञासा हो कि आगे क्या हुआ। आपकी कविताएँ पढ़ कर जी चाहता है कि उन्हें फिर से पढ़ूँ, यह आपकी सफलता है।

आप उस दिन नीम का थाना से दौड़े हुए मुझसे मिलने आये इससे मेरे प्रति आदर भी व्यक्त हुआ और उससे यह भी पता चला कि आप जिज्ञासा, जीवट और लगन के आदमी हैं। आप साहित्य में गहरी रेखाएँ बनायेंगे, ऐसा मुझे लगता है। भगवान आपके मनोरथों को पूर्ण करें।

'तटस्थ' बड़ा ही संतुलित पत्र है। अगर इसका यही स्टैंडर्ड कायम रहा तो यह पत्र हिन्दी में उल्लेखनीय कार्य करेगा। मैं आपको और होतीलालजी को बधाई देता हूँ।

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

प्रो० रामखेलावन राय

[३६४]

५, सफदरजंग लेन, दिल्ली
३१-१-७०

प्रिय रामखेलावन,

तुम्हारा कल का पत्र मिला। हाल जाना। पता लगाता हूँ कि हाथ डालने का कोई रास्ता है या नहीं। सब कुछ भगवान की कृपा से होता है।

तुम्हारा
दिनकर

[३६५]

३१, सरदार पटेल रोड, नई दिल्ली
४-३-७४

प्रियवर,

तुम्हारी याद रोज आती है। तुम, रजनीकान्त और योगेन्द्र गाढ़े वक्त मेरे काम आये। भगवान तुम्हें सपरिवार सुखी रखें। तुम्हारे घर में जो टेलीफोन है उसका नम्बर भेज दो। आते-जाते कभी अरविन्द, रीता आदि से मिल लिया करो।

तुम्हारा
दिनकर

डॉ० निजामउद्दीन

[३६६]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
१०-४-७०

प्रिय निजामउद्दीन साहब,

आपका ३ अप्रैल का पत्र मिला। धन्यवाद। जहूरबख्शजी से मेरा कोई परिचय नहीं था, अतएव उनके बारे में संस्मरण लिखना बड़ा ही मुश्किल काम है। वे लेखक उच्च कोटि के थे और हिन्दी-भाषा की उन्होंने अद्भुत सेवा की। आशा है, उनके परिचित और मित्र आपकी सहायता करेंगे।

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

सुश्री श्रीबाला

[३६७]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
२४-७-७०

प्रिय श्रीबाला,

तुम्हारा १-७-७० का पत्र आज मिला। यह जानकार सचमुच भारी प्रसन्नता हुई कि तुम्हें पी-एच० डी० की उपाधि मिल गयी है। बधाई। यहाँ दिल्ली में होती तो घंटाघर की दूकान पर ले जाकर तुम्हें जलेबी खिलाता। मेरा बहुत-बहुत आशीर्वाद।

१५ अगस्त के आस-पास मैं मद्रास आने की बात सोच रहा हूँ। आ गया तो तुम लोगों से मिलने आऊँगा ही।

शेष कुशल है।

तुम्हारा
दिनकर

श्री राजेश्वर सिंह

[३६८]

५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
२३-३-७१

प्रियवर,

बुढ़ापे की मुसीबत को जानते हो ?
उस दर्द को पहचानते हो
जो बुढ़ापे के सीने में उठता है ?
बुढ़ापे की मुसीबत बुढ़ापा नहीं,
जवानी है।
यह भी एक अबूझ कहानी है
कि शरीर बूढ़ा होने पर भी
मन नहीं मरता है।
जिन रंगीनियों में जवानी गुजरी है,
बुढ़ापा ऊँघता-ऊँघता भी
उन्हें याद करता है।

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

[३६९] राजेन्द्रनगर, पटना-१६
२९-११-७२

प्रियवर,

बहराइच मैं कभी नहीं गया हूँ, न यही जानता हूँ कि पटने से वहराइच जाना और आना कैसे हो सकता है। ट्रेनें कौन-कौन सी हैं, मोटर से भी जाना होगा या ट्रेन ही पहुँचेगी ? फरवरी अभी बहुत दूर है। आने की सम्भावना मुझे कम दीखती है।

आपका
दिनकर

वीर राजेन्द्र ऋषि (लन्दन)

[३७०] ५, सफदरजंग लेन, नई दिल्ली
१८-६-७१

प्रिय भाई ऋषि जी,

आने के बाद तुरन्त पत्र नहीं लिख सका। कृपया क्षमा करेंगे।

अन्य समाचार यह है कि १३ जून को मेरा टर्म समाप्त हो गया और अब मैं दिल्ली छोड़ कर पटना जा रहा हूँ। यदि भगवान की कृपा हुई, तो अब बाकी जीवन केवल साहित्य में लगाऊँगा।

आपने लन्दन में मेरी बड़ी देख-भाल की, मुझे घुमाया और काफी समय तक मेरे साथ रहे। इसके लिए हृदय से आपको धन्यवाद देता हूँ। आप भारत के रत्न हैं, जिसे एक दिन सभी विद्वान पहचानेंगे।

भगवान आपको सपरिवार सुखी और सानन्द रखें।

मेरा पटने का पता, राजेन्द्रनगर, पटना-१६

आपका
दिनकर

श्री शंकरदयाल सिंह

[३७१] पटना-१६
२५-७-७२

प्रियवर,

तुम्हारा पत्र मिला। १३ के भोर से ही मुझे दिल्ली रहना है। पोती के लिए वर खोजते-खोजते वर्ष बीत गया। कोई बात ही नहीं करता है। ८ से ११ अगस्त के बीच इसी काम से जमुई जाना है। अगर प्रोग्राम अनुकूल बैठा तो तुम्हारी बात मान लूँगा, नहीं तो क्षमा करना। ११ को पटना तुम मुझे कब पहुँचा सकोगे ? १२ के भोर मुझे गाड़ी पकड़नी ही होगी। मेरे स्वास्थ्य का भी ठिकाना नहीं कि कब कैसा रहेगा। मुझे छोड़ ही दो तो उपकार मानूँ।

तुम्हारा
दिनकर

श्री सुधाकर पाण्डेय

[३७२]

राजेन्द्रनगर, पटना-१६
३१-८-७२

प्रिय सुधाकर जी,

विहार के श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा 'मुकुर' ने पण्डित किशोरीदास जी वाजपेयी की व्याकरण-सम्वन्धी स्थापनाओं की आलोचनाएँ करते हुए हिन्दी-व्याकरण पर लगभग दो-सौ पृष्ठों का एक ग्रन्थ लिखा है। रूस में एक हिन्दी-विद्वान हैं श्री दीमशित्स। हिन्दी-व्याकरण पर उनके भी कई लेख हिन्दी में छपे थे। श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा 'मुकुर' ने श्री दीमशित्स की भी अनेक भ्रान्तियों का निवारण किया है। 'मुकुर' जी के लेख मैंने देखे हैं।

मैं चाहता हूँ कि यह ग्रन्थ 'नागरी-प्रचारिणी-सभा' अथवा 'सम्मेलन' द्वारा प्रकाशित कर दिया जाय। आप दोनों संस्थाओं के मन्त्री हैं। अतएव आपको लिख देने के वाद मैं निश्चिंत हो गया कि यह ग्रन्थ छप जायगा।

मैंने सुझाया है कि 'मुकुर' जी अपने ग्रन्थ का नाम 'हिन्दी-व्याकरण पर नया प्रकाश' रखें।

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

सम्पादक : धर्मयुग

[३७३]

नवम्बर, १९७२

धर्मयुग के २२ अक्तूवर, १९७२ वाले अंक में अपने वारे में आदरणीय पंडित पद्मकांतजी का कठोर पत्र मैंने पढ़ा। 'रिसि अति बड़ि लघु चूक हमारी।' सरकारी कृपा चाहनेवाले व्यक्ति पद्मकांतजी ही थे, यह मंतव्य मेरा नहीं था, लेकिन डायरी में मैंने काट-कूट तो की है, जोड़ा कुछ भी नहीं है। मैं मानता हूँ कि डायरी के उस अंश से जो ध्वनि निकलती है, उससे पद्मकान्तजी का रुष्ट होना अस्वाभाविक नहीं है। मैं उनसे क्षमा माँगता हूँ। मेरा अभिप्राय उन लोगों से था, जो दिल्ली में ही रहते थे।

इससे भी अधिक ग्लानि मुझे इस बात की है कि पद्मकान्त जी मेरे दरवाजे से अप्रसन्न लौटे। उस समय की परिस्थिति का स्मरण मुझे नहीं

है, न मैं यही याद कर पाता हूँ -कि उस दिन मैं किस उजलत में था। यह तो मुझे याद है कि पद्मकांतजी ने मुझे कोई कविता भेजी थी, लेकिन स्वर्गीय श्री गंगाप्रसाद पांडेय से मेरी क्या बात हुई थी, इसका भी स्मरण मुझे बिल्कुल नहीं है।

(शेक्सपियर ने तीन तरह के बड़ों का उल्लेख किया है। एक वह जो बड़ा पैदा होता है, दूसरा वह जो बड़प्पन हासिल करता है और तीसरा वह जिस पर बड़प्पन थोप दिया जाता है। एक चौथा व्यक्ति भी हो सकता है जो बड़े वंश का होने के कारण या साधन-सम्पन्न होने के कारण बड़प्पन को दबोच लेता है।) अपने जानते मैं इनमें से किसी भी कोटि में नहीं आता हूँ। असल में मैं महान्-टहान हूँ ही नहीं। मैं तो मामूली गृहस्थ हूँ, जो नौकरियाँ कर के अपना और अपने परिवार का पेट पालता रहा है और वंश में जनमी कन्याओं का विवाह रचवाता रहा है। 'कुरुक्षेत्र' और 'उर्वशी' की रचना मेरी असली उपलब्धि नहीं है। मेरी वास्तविक उपलब्धि यह है कि परिवार के शंकट को हाँफ-हाँफ कर खींचते हुए मैंने ९ लड़कियों के ब्याह रचवाये हैं। अगर यह मेरी महत्ता है तो उसे मैं स्वीकार करता हूँ।

मगर ये सब फालतू बातें हैं। मुख्य विषय यह है कि हिन्दी को संस्कृतनिष्ठ होना चाहिए या नहीं। पूज्य पं० मदनमोहन मालवीय जी के चरणों तक पहुँचने का सुयोग मुझे नहीं मिला था। किन्तु पूजनीय टंडन जी की संगति थोड़ी मुझे भी मिली थी। टंडन जी आसान हिन्दी के पक्षपाती थे। मैं भी आसान हिन्दी चाहता हूँ और मानता हूँ कि यह आदर्श हिन्दी अमृतलाल नागर लिख रहे हैं, कमलेश्वर लिख रहे हैं, हरिशंकर परसाई लिख रहे हैं और सबसे बढ़ कर अमृतराय लिख रहे हैं।

किन्तु हुआ क्या? संसदीय कार्यों के लिए जब हिन्दी-शब्दों की जरूरत पड़ी, स्पीकर महोदय ने विद्वानों की एक बड़ी समिति का निर्माण किया और पूज्य टंडन जी को उसका अध्यक्ष बना दिया। इस समिति में भारत की सभी भाषाओं के विद्वान रखे गये थे और समिति की कोशिश यह थी कि शब्द जहाँ तक संभव हो, आसान रखे जायें। किन्तु हिन्दी के प्रतिनिधियों की उस समिति में चली नहीं। अहिन्दी-भाषी विद्वान, कदम-कदम पर अड़ते रहे कि शब्द, संस्कृत के ही होने चाहिए नहीं तो उन्हें सार्वदेशिक स्वीकृति नहीं मिलेगी और अन्ततः समिति ने जो शब्द-कोश तैयार किया, उसमें बहुलता संस्कृत-शब्दों की ही रही।

जब कानून की शब्दावली बनने लगी तब भी यही हाल हुआ। 'मुद्दई' और 'मुद्दालेह' शब्द हिन्दी से इसलिए निकाल दिये गये कि अहिन्दी-भाषी विद्वान वादी और 'प्रतिवादी' रखना चाहते थे। 'चोट' शब्द इसलिए निकाल दिया

गया कि मराठी में उसका अर्थ अश्लील होता है। और 'चूक' शब्द इसलिए हटा दिया गया कि ओड़िया में उसका अर्थ अश्लील होता है।

एक पुनरीक्षण समिति का अध्यक्ष मैं भी था। समिति की बैठकों में मैं हिन्दी के प्रतिनिधियों को राजी कर लेता था कि वे फारसी या अरबी के शब्द स्वीकार कर लें। लेकिन तब कोई कन्नड़ या मलयालमभाषी विद्वान, कोश लेकर खड़ा हो जाता था और कहता था कि संस्कृत-शब्द ही उसे स्वीकार्य है।

इतने दिनों का मेरा अनुभव यह बतलाता है कि या तो हिन्दी राजभाषा के रूप में सफल ही नहीं होगी या होगी तो संस्कृतनिष्ठ होकर ही होगी। कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि यदि १४ सितम्बर १९४९ तक गांधी जी जीवित रहते तो कांग्रेस पार्टी में बहुमत हिन्दुस्तानी को ही मिलता। लेकिन जब उसे सार्वदेशिक बनाने की कोशिश की जाती तब हिन्दुस्तानी को भी उसी रास्ते पर जाना पड़ता जिस पर हिन्दी को जाना पड़ रहा है। गांधी जी के समय में हमारी कल्पना यह थी कि हिन्दी और उर्दू की समस्या निबट जाये तो भाषा की सारी समस्याएँ खत्म हो जायेंगी। मगर स्वराज्य के बाद से देश की प्रत्येक भाषा हिन्दी पर प्रभाव डालने लगी है। उर्दू, जो हिन्दी की असली सहेली थी, वह उसकी पन्द्रह बहनों में से एक रह गयी है। इतिहास के इस प्रवाह को रोकना वांछनीय है या नहीं, इस विषय में मतभेद हो सकता है, लेकिन यह कार्य कठिन है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता।

सन् १९६२ में हम लोगों ने जिस भाषा का विरोध किया था, वह हिन्दी और उर्दू, दोनों का विकृत रूप थी। उर्दू, उर्दू रखी जा रही थी, मगर हिन्दी को बिगाड़ा जा रहा था। वह हिन्दी की प्रकृति के साथ मनमाना अत्याचार था।

सन् १९६२ ई० में बुलेटिनों की विकृत भाषा की मैंने जो समीक्षा तैयार की थी, उसकी एक प्रति मैं आपको भेज रहा हूँ। आप अगर उसे छाप दें तो मैं भी पद्मकन्तजी को वही शेर सुना दूँगा, जो शेर उन्होंने मुझे सुनाया है—

यारब, न वो समझे हैं, न समझेंगे मेरी बात,
दे और दिल उनको जो न दे मुझको जुबाँ और।

रामधारीसिंह दिनकर

धर्मयुग से साभार। —सम्पादक

डॉ० शेखरचन्द्र जैन

[३७४]

पटना-१६
५-१-७३

प्रियवर,

आपने "राष्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी काव्यकला" नाम से मेरे साहित्य के एक पक्ष पर जो थीसिस लिखी है, उसे मैंने देखा है। आपके परिश्रम की मैं प्रशंसा करता हूँ। इस ग्रन्थ के विषय में मुझे इससे अधिक कुछ नहीं कहना चाहिए।

प्राचीन काल में जो शास्त्र वने, उनमें कहा गया था कि जब तक कवि जीवित है, उसके आशय का वर्णन मत करो। किन्तु अब तो शास्त्र की इस आज्ञा का पालन कहीं नहीं हो रहा है।

फिर भी यही बात सच है कि जब तक कवि जीवित है, तब तक उसकी सही समीक्षा नहीं हो सकती। काल जब कवि के शरीर को मंच पर से नेपथ्य में खींच लेता है, तब जनता के सामने कवि नहीं रहता, केवल उसकी कविता बच जाती है। उस समय कविता की जो समालोचना होती है, कवि का जो मूल्यांकन होता है, वही इतिहास का अंग बनता है।

मैं आशीर्वाद देता हूँ कि आप खूब फूलें-फलें और साहित्य-सेवा के क्षेत्र में डटे रहें।

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

श्री जनार्दनराय नागर

[३७५]

पटना-१६
३-२-७३

प्रिय नागर जी,

कल आपके पत्र का नकारात्मक उत्तर भेज चुका हूँ, किन्तु बात रात-भर हृदय में कसकती रही। आज यह भाव जगा कि आपकी आज्ञा का पालन करने के लिए मुझे यात्रा पर निकलना चाहिए। लेकिन इतनी लम्बी यात्रा मैं विश्रामपूर्वक ही कर सकता हूँ। अतएव दिल्ली, मैं कुछ पहले ही पहुँच जाऊँगा।

मैं नहीं जानता कि दिल्ली से उदयपुर के लिए जहाज कितने बजे छूटता है, न यही जानता हूँ कि उदयपुर से कब चलना होगा।

पटने से दिल्ली का A. C. C. I. किराया आमद-रफ्त ४२२ रु० है। लोग टेक्सी का किराया देना भूल जाते हैं। वह आप न कीजियेगा।

क्या भाषण और काव्य-पाठ निःशुल्क करना होगा ? मेरा एक सप्ताह का समय बर्बाद होगा, इसका ध्यान रखियेगा।

मैं १६ फरवरी के भोर दिल्ली से पटने के लिए प्रस्थान करूँगा। उसी हिसाब से आप मुझे उदयपुर से दिल्ली हवाई-जहाज से पहुँचायें।

दिल्ली से जहाज ३ को जाता हो, तो निश्चय ही मैं नहीं आ सकूँगा।

यह पत्र आपको मिल गया है, इस आशय का तार या रजिस्टर्ड-पत्र आपको निम्नलिखित पते पर भेजना चाहिए :—

C/o. श्री शिवसागर मिश्र

डी II ३४७, पंडारा रोड, नई दिल्ली।

दिल्ली पहुँचने पर अगर आपका तार या पत्र नहीं मिला, तब भी मैं उदयपुर नहीं आऊँगा।

और रास्ते में मिजाज खराब हो गया तब तो आना ही नहीं होगा।

आपका

दिनकर

श्री रामेश्वरप्रसाद तिवारी

[३७६]

राजेन्द्रनगर, पटना-१६

१६-३-७३

प्रिय तिवारीजी,

आपका १०/३ का पत्र मिला। मैं दिल्ली तो गया था, लेकिन रामनाथजी वहाँ थे नहीं। लिखने का असर नहीं होगा। मिल कर ही बात करनी होगी। आपकी दोनों फाइलें महफूज हैं। आपकी यह चिट्ठी भी मजेदार है। इसे भी जुगाना चाहिए।

श्री हरिशंकर पारसाई को मैं अच्छा लेखक मानता हूँ, मगर उनसे मेरी कभी मुलाकात नहीं हुई है। दिल्ली जाने पर सुना कि कुछ साम्यवादी लेखक और पत्रकार मेरे विरुद्ध लेख लिख रहे हैं। कसूर मेरा यह है कि २९-१२-७२ को यहाँ पटने में अखिल भारतीय विद्यार्थी-परिषद् का वार्षिक अधिवेशन हुआ था। लड़कों के आग्रह से मैं उस सभा में स्वागताध्यक्ष

श्री जगदीश जी

[३७९]　　　　　　　　　　　　　　　　२९-ए, कारमाइकेल रोड, बम्बई-२६
८-९-७३

प्रिय जगदीश जी,

आपका ४ का पत्र आज मिला। पत्र तो मैंने ३१ को ही लिख दिया था, किन्तु किताबें हनोज नहीं मिली हैं। कल दूसरा पत्र लिखा है कि समय पर भेज सको तो यहाँ भेजो। नहीं तो नई दिल्ली भेज दो।

पटना में एक फोन है 52431, इस पर फोन कीजिये और कहिये कि केदार बाबू को बुला दीजिये। केदार मिल जाय तो अब किताबें ३१, सरदार पटेल रोड पर भेज देने को कहिए।

मैं २५ को नई दिल्ली पहुँच जाऊँगा।

इस बार यहाँ तबीयत नहीं लग रही है। बेकार ही आया।

आपका
दिनकर

श्री कन्हैयालाल फूलफगर

[३८०]　　　　　　　　　　　　　　　　३१, सरदार पटेल रोड, नई दिल्ली
४-१२-७३

प्रियवर,

आपके १६ दिसम्बर वाले समारोह में आने का प्रोग्राम मैंने बना लिया है। मैं १५ दिसम्बर के प्रातः काल 11 UP दिल्ली-हावड़ा-एक्सप्रेस से कलकत्ता पहुँचूँगा। आप अपना आदमी स्टेशन भेजें और श्री शान्तिप्रसादजी जैन के घर पर खबर कर दें कि वे अपनी गाड़ी स्टेशन भेजें।

मैं १७ दिसम्बर को लौटूँगा। १७ दिसम्बर की रात में 12 Down दिल्ली हावड़ा एक्सप्रेस से मैं चलूँगा। १८ को पटना उतर जाऊँगा। फिर १९ दिसम्बर को पटना में 12 Down दिल्ली-हावड़ा एक्सप्रेस में चढ़ूँगा और २० के भोर दिल्ली पहुँचूँगा। आप कृपा कर के सावधानता के साथ मेरे लिए हावड़ा से दिल्ली तक का Through टिकट ACCI का कटा लें और दो रिजरवेशन टिकट खरीद लें। एक १७ की रात के लिए दूसरा १९ के दिन और रात के लिए।

टिकट खरीद लेने के बाद मुझे निम्नलिखित पते पर तार या पत्र भेजें :—

दिनकर
राजेन्द्रनगर, पटना-१६

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

[३८१]

३१, सरदार पटेल रोड, नई दिल्ली
६-१२-७३

प्रियवर,

मैं १५ दिसम्बर के भोर 12 Down दिल्ली एक्सप्रेस से पटना होकर कलकत्ता पहुँचूँगा। आप यह सूचना श्री शान्तिप्रसादजी जैन के यहाँ दे दें कि वहाँ से गाड़ी स्टेशन आ जाय।

मेरे लौटने का टिकट आप 11 UP दिल्ली एक्सप्रेस से ACCI में कलकत्ता से सीधे दिल्ली का तुरन्त कटा लें। मैं १६ को कलकत्ते से चल सकूँ तो और अच्छा है। १७ और १८ मुझे पटना रुकना है। १९ को फिर 11 UP में ही पटने से चढ़ूँगा। इसलिए दो Reservation कराना होगा। सीट मुझे Lower berth की चाहिए।

अगर १२ तारीख तक पटने में मुझे तार से यह सूचना नहीं मिली कि लौटने का इन्तजाम पक्का हो गया तो मैं कलकत्ते की यात्रा स्थगित कर दूँगा।

आज आपके यहाँ ट्रंक किया था। मगर कोई भी होशियार आदमी नहीं मिला जिसे अपनी बात समझा सकूँ।

एक पत्र परसों भी भेज चुका हूँ।

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

[३८२]

राजेन्द्रनगर, पटना-१६
११-१२-७३

प्रियवर,

आपका ८ का पत्र आज मिला। मैं १५ के भोर 12 Down से पहुँच रहा हूँ। शान्तिप्रसादजी के यहाँ ठहरूँगा। आप वहाँ तुरन्त खबर दे दें कि गाड़ी आवे। आप का आदमी भी मौजूद रहे।

१६ तारीख का टिकट करवा लिया सो ठीक है। लेकिन पटने से मैं १९ के भोर ही चलूँगा, २० के भोर मुझे दिल्ली पहुँच जाना है। इस गलती को हर कोशिश करके सुधारिये।

मैंने दिल्ली से आपको दो पत्र भेजे हैं। क्या आपको वे मिले नहीं? लगता है, इस बार मैं विपद में फँसा हूँ। प्रभुदयालजी को 'हाँ' कह देने का यह दण्ड है।

१७ और १८ पटना रह कर मुझे १९ के भोर 11 UP से चल देना है, इसका प्रबन्ध जैसे भी हो, करें। नहीं तो कलकत्ता पहुँच कर भी मैं सभा में नहीं आऊँगा।

आज Mitraparisad के पते पर आपको एक्सप्रेस तार भी भेजा है।

Please be quick.

आपका
दिनकर

[३८३]

ए-बी २, पंडारा रोड, नई दिल्ली
१ जनवरी १९८०

प्रिय भाई,

पत्र तुम्हारा मिला।

मेरी पोती पूर्णिमा का विवाह आगामी २८ जनवरी बसन्त-पंचमी के दिन दिल्ली में होना तय हुआ है। उक्त अवसर पर तुम दो दिन पहले जरूर आ जाना। आने की सूचना शीघ्र भेजो।

मुनि बुद्धमलजी की पुस्तक 'मन्थन' की तुमने भूमिका चाही हैं, वह तो उक्त पुस्तक में छपी हुई ही है, फिर भी टंकित प्रति तुम्हें भेज रहा हूँ।

आशा है, तुम स्वस्थ हो।

तुम्हारा
दिनकर

भूमिका :—

मुनि बुद्धमलजी से मिलने का सौभाग्य मुझे एक बार प्राप्त हुआ है। उस दिन उनके मुख से दो रचनाएँ सुनने का भी सुयोग मुझे अनायास मिल गया और उनकी कविताएँ सुन कर मैं प्रभावित भी हुआ। विशेषत: भाषा की असमर्थता पर कही गई उनकी उक्तियाँ मुझे गम्भीर लगीं—

भाषा क्या है? भावों का लंगड़ाता-सा अनुवाद।
भौतिक हैं ये शब्द कि जिनसे बनती है यह भाषा,
भावों के फिर प्रातिनिध्य की क्या कर सकते आशा?
चेतन की जड़ के हाथों में है नकेल, अवसाद!
भाषा क्या है? भावों का लंगड़ाता-सा अनुवाद।

x x x

भावों का भाषा से होता जब नूतन अभिसार,
नव भावों का बसता है तब एक नया संसार,
किन्तु, खड़ा हो दूर तत्त्व कहता—यह सब उन्माद,
भाषा क्या है? भावों का लंगड़ाता-सा अनुवाद।

इस कविता को सुनकर मैंने यह अनुमान लगाया कि बुद्धमलजी सस्ती भावुकता के प्रवाह में बहकर काव्य-क्षेत्र में नहीं आ रहे हैं, वरन् उनके भीतर विचारों का तेज है जो कविता की पंक्तियों में बाहर आ रहा है। वैसे तो भावुक हुए बिना कोई व्यक्ति कवि नहीं हो सकता, किन्तु कविता ज्यों-ज्यों आगे बढ़ती है, भावुकता विचारों के धरातल के अधिक पास आती-जाती है। इस प्रकार बुद्धमलजी बहुत कुछ उसी क्षितिज से उतर कर आ रहे हैं

जो काव्याकाश का नवीनतम क्षितिज है। बुद्धमलजी चिन्तक कवि हैं तथा उनकी अधिकांश रचनाओं के भीतर विचारों की रीढ़ स्पष्ट दिखाई देती है। उनकी कविताएँ केवल वाचन और श्रवण करने की ही वस्तु नहीं हैं, वे चिन्तन और मनन की भी सामग्री प्रस्तुत करती हैं।

बौद्ध-मत्त के असमय पतन और जैन-धर्म के अपेक्षाकृत सीमित प्रसार के अनेक कारण बताये जाते हैं, इनमें से एक अतिरिक्त कारण मैं यह भी मानता हूँ कि इन धर्मों ने, मनुष्य के मन में आलोड़न मचाने वाले कवि उत्पन्न नहीं किये। बुद्ध-देव ने अदृश्य वास्तविकता को अव्याकृत बता कर तत्सम्बन्धी प्रश्नों को भी अव्याकृत कोटि में डाल दिया था। स्पष्ट ही ऐसे नियन्त्रण में कवि-कल्पना ऊँची उड़ान नहीं ले सकती, ठीक उसी प्रकार जैसे साम्यवादी नियन्त्रण से ग्रस्त देशों की कविताएँ कल्पना से हीन होती जा रही हैं। इसी प्रकार जैन-धर्म में कृच्छ्र-साधना पर जो अत्यधिक जोर दिया गया, उससे कविता केवल दर्शन की व्याख्या अथवा स्तुति और प्रार्थना बनकर रह गई।

जहाँ तक अव्याकृत-विषयक बाधा का प्रश्न है, बुद्धमलजी ने उसका अतिक्रमण करके यह स्पष्ट संकेत दिया है कि 'अदृश्य' और 'अज्ञेय' की ओर भी कल्पना की गति बनी रहनी चाहिए—

जीवन तो हैं गम्य, किन्तु ये छोर अगम्य अपार,
कूल कहाँ है दृश्य ? यहाँ तो दृश्य बनी है धार।
किन्तु धार के आर-पार भी कुछ तो होगा ज्ञेय,
छोड़ दिया है जिसको भ्रमवश कहकर के अज्ञेय।

आशा है, बुद्धमलजी आगे कुछ वैसी कविताएँ भी लिखेंगे जिनसे गार्हस्थ और वैराग्य के बीच समन्वय की भावना को बल मिलेगा।

—रामधारीसिंह दिनकर

संगीत-निदेशक श्री जयदेव

[२८४]

३१, सरदार पटेल रोड, नई दिल्ली
४-३-७४

प्रिय जयदेव जी,

श्री बालकवि बैरागी ने पत्र लिखा है कि आपने मेरी उर्वशी कविता को स्वर दिया है और आप उसे रेकार्ड करवाना चाहते हैं। यह सुख का विषय है। रेकार्ड करने वाली कम्पनी मेरे पास अपना प्रस्ताव भेजे। आप

जिस शर्त पर अनुमति देने को कहेंगे, मैं अनुमति दे दूँगा। केवल कैसेट सुन कर यह समझना चाहता हूँ कि चीज उतरी कैसी है। बम्बई में मेरे एक मित्र हैं :—

श्री सुरेन्द्रसिंह, टेलीफोन 369583
I-B-1, गिरिराज, अल्टा माउन्ट रोड
बम्बई-२६

सुरेन्द्र खुद गवैया भी हैं। मैं उन्हें लिख रहा हूँ। वे आप से सम्पर्क करेंगे। शेष कुशल है।

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

डॉ० हरिवंशराय बच्चन

[३८५]

११४, मालचामार्ग,
चाणक्य पुरी, नई दिल्ली
२४-३-७४

प्रिय भाई,

आनन्ददायी कार्ड मिला। तुम्हें बाबा बनने पर बधाई, तैजी जी को दादी बनने पर बधाई। बच्ची को आशीर्वाद। उसके माता पिता को आशीर्वाद।

मेरी पोती का विवाह २८ जनवरी को हो गया। आशीर्वाद दो कि वर और वधू सुखी रहें। मेरा छोटा बेटा मुझसे बेतरह नाराज है। विवाह के बाद जब मैं पटना गया, मैंने रामसेवक (स्वर्गीय पुत्र) के परिवार को तथा अपने पुस्तकालय को उसी आर्यकुमार रोड वाले घर में पहुँचा दिया। मैं तो मई १९७३ से अनिकेतन घूम रहा हूँ। देखें, पिता श्री रामचन्द्र कहीं स्थापित भी करेंगे या यों ही घुमाते रहेंगे। लॉजिक गलत। पुरुषार्थ झूठा। केवल राम की इच्छा ठीक।

तुम्हारा
दिनकर

दिनकर जी का मृत्यु के एक मास पूर्व बच्चनजी के नाम लिखा हुआ यह अन्तिम पत्र है।

'धर्मयुग' से साभार। —सम्पादक

परिशिष्ट

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी

[३८६]

P.O. बरबीघा (मुंगेर)
१६-४-३४

परम श्रद्धास्पद चतुर्वेदीजी !

"कस्मै देवाय ?" पढ़ा। आपका दृष्टिकोण सदैव जनता के लिए कल्याणकारी रहा है। प्रियतमा के छन्द गानेवाले या सरस्वती के प्राङ्गण में कलंक की कालिमा पोतनेवाले चाहे जो कह लें पर, जनता विज्ञान-वार्त्ता के इस संघर्ष-युग में भी अपने कल्याण-चिन्तक को पहचानती है। और पत्र-पत्रिकाओं के बीच विशाल भारत के लिए एक खास इज्जत दिखाने की पद्धति इस बात को प्रमाणित करती है। कम-से-कम बिहार के लिए यह सत्य समझें। हम कलाबाजियों के नहीं, सादगी के प्रेमी हैं। जनता-जनार्दन का आप पर जो Impression है, इस "कस्मै देवाय" ने उस पर मुहर लगा दी। उच्छृंखल गल्प-लेखकों, कामशास्त्र के टीकाकारों, "महापुरुषों के दूसरे पहलू" के बहाने उद्दीपक निबन्धों के प्रकाशकों के घमासान में भी विशाल भारत हमारे गांवों को नहीं भूलता, यह गौरव की बात है। It is a poetry in itself आशा है इस "धूसर गवन स्वर्ग" की ओर अधिकाधिक कलाकार अपनी तूलिका के साथ अग्रसर होंगे।

कहना व्यर्थ है कि "कविता की पुकार" "कस्मै देवाय" के महाप्रश्न का उत्तर है। निबन्ध पढ़ते समय मुझे ऐसा लगा कि वैदिक युग में शैल-तरी में बहनेवाले निर्झर के पुलिन पर, ऊषा के आलोक में कोई युवक चिल्ला उठा हो :—"कस्मै देवाय हाविषाविधेम ?" मेरी कविता अपनी असहाय एवं अस्पष्ट वाणी में इसका उत्तर लेकर, कला के प्रांगण में आना चाहती है। भगवान् का आशीर्वाद।

मेरा वर्त्तमान पता :—
श्री रामधारीसिंह 'दिनकर' बी० ए० (आनर्स)
Headmaster, H. E. School
P. O. Barbigha (Distt. Monghyr)

भवदीय
रामधारी

[३८७]

P. O. Belsand
9-9-35

My dear Chaturvedijee,

Pranam. I have already applied for leave for 16th inst. as have asked for the permission for 15th too, to leave my station. Hope you are coming on the 15th unfailingly. If you have decided otherwise please wire me and oblige.

The roads are overflooded and the journey is cumbersome and expensive. If you do not come to Patna, my going there shall be all useless. So it is only necessary to stop me if you are not coming. If you despatch your reply by letter on the 11th, I may get it on the 13th or 14th alright. My book is expected to be out by the first week of Oct. I shall do all that you wish me to do.

अभी बेनीपुरी की चिट्ठी मिली है कि आप २२ को पटने जा रहे हैं। वात क्या है ? लिखें।

Sincerely yours,
Dinkar

[३८८]

लालगंज
१२-२-३६

प्रिय चतुर्वेदी जी,

प्रणाम।

आपका पत्र मिला। कोई व्यक्ति या कोई पत्र अभी बिहार की साहित्यिक भावनाओं का प्रतिनिधि नहीं है। आप व्यर्थ ही चिन्ता करते हैं। मुझे चार पाँच दिनों के बाद संस्मरण लिखने का समय मिल सकेगा।

इसके साथ पंडित धनराज शर्मा का एक पत्र जा रहा है। शर्मा जी कम-या-अधिक मेरे गार्जियन हैं। उन्होंने जो वातें मुझसे कही, वे ही वातें पत्र में भेजी जा रही हैं। पत्र मेरे आग्रह पर लिखा गया है। लेकिन मुझे प्रसन्नता होगी अगर आप दोनों दिग्गजों में पत्र-व्यवहार का सिलसिला जारी हो जाय। शर्माजी भूतपूर्व M. L. C. और वर्त्तमान D. B. सदस्य हैं। अभी वे सामने बैठे हैं इसलिए परिचय में प्रशंसा करने की हिम्मत नहीं। आशा है आप प्रसन्न हैं।

आप लखनऊ–कांग्रेस में जाते हैं या नहीं ? अगर 'हाँ' तो द्विवेदीजी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त करने का प्रयत्न किया जा सकेगा। अ० भा० साहित्य–सम्मेलन की तिथियाँ क्या हैं ?

आपका उत्तर मिले तो मैं अपना Programme निश्चित करूँ। मुंगेर तो मैं भी न जा सका।

आपका
दिनकर

[३८९]

मुंगेर
१२-३-३६

श्रद्धेय चतुर्वेदी जी,

प्रणाम।

आपका कृपा-पत्र मिला। मैं लालगंज से बदल कर यहाँ आ गया हूँ। पता नहीं यहाँ कितने दिन रहना पड़ेगा। आपका पत्र शर्मा जी को यथा समय मिल गया था।

मिथिला-मिहिर वाली कविता जबरदस्ती पुस्तक-भंडार वालों ने भिजवा दी थी। मैं भी चाहता था कि उचित संशोधन के बाद उसे वि० भा० में भेजूँ।

शर्मा जी वाला पत्र मैंने भी पढ़ा था। आपने जो कुछ लिखा है उसके साथ मैं बिलकुल agree करता हूँ। आपने जिस प्रकार के crisis की चर्चा की है वह तीव्र वेग से आ रहा है। अफसोस, मेरे लिए कोई Andrews नहीं। लाचारी है। You know I come of a poor family with 15 members. I have my wife, mother and two children. Then I have two own brothers and their family as well. Over & above this the family claims a moral loan of Rs. 3000/- which it spent over my nonsense education.

इन बन्धनों में मुझे क्या करना पड़ेगा, मैं खुद नहीं जानता। और इस वर्त्तमान नौकरी में भी कोई फायदा नहीं। यहाँ तो खर्चे का मुंह ही बड़ा है। प्रो० मनोरंजन को मैंने पत्र लिखा है। क्या करता, छुट्टी की मंजूरी २६ को आई और सम्मेलन २२-२३ को था।

आपका
दिनकर

[३९०]

P. O. Bettiah (Champaran)
20-4-36

My dear Chaturvedijee,

Pranam.

Since you have been silent for long I am inclined to presume that you have been keeping very busy. I have not also received the current number of the "Vishal Bharat" as yet.

On the 14th last, I have joined here and shall be working here as Sub-Registrar for 4 months. I feel all deserted. Of course, this town claims the privilege of being called the birth-place of a poet, I mean Nepali. But, all the same I do not feel as yet if there is any literary activity here. It shall be very kind of you, if you please keep me informed of what is going on in the Hindi World as you did when I was at Lalganj.

I have to talk to you many things. I also want to write a detailed account of my life to you in my next letter. But please reply very soon.

मैंने राजा-रानी कविता पद्मकान्तजी को भेज दी थी। उन्होंने शिवपूजनजी को मेरी कविता के लिए पत्र लिखा था। शायद अभ्युदय का वसन्तांक निकलने वाला था। तब से शायद अभ्युदय बन्द है। मैं देर नहीं कर सकता। कृपया इसे प्रकाशित करें। I think no consideration can delay its publication on this score.

Sincerely yours
DINKAR
Sub-Registrar

[३९१]

Mithayur Road, Patna
17-9-45

My dear Chaubeyjee,

Your fascinating letter reached me just now. I had planned to write the stories of my other troubles to you. But your reply deals with a more serious aspect of my life

and I feel now to consult you more closely about my future programme.

The post I hold now is very degrading and now that I have risen above it, I wonder, how could I tolerate it for 2 years. The result has been a non-co-operation with the office where I do not go these days except in case of urgent necessity. I sit at my house and deal a few files and devote my rest of the time in reading and writing literature. This has begun about 2 months ago and since the authorities have come to know of my intention, they do not take much notice of my negligence. I am full of wrath against myself and if there is suppression from above on any point I cannot put up with it and may break without much consideration for the future. On the 1st of September. I have written to the Govt. that I want to proceed on 3 months' leave at once and that permanent arrangement may be made in my place when I proceed on leave. They are sleeping over that letter and no decision has been taken so far.

I am getting Rs. 450/- here plus the usual war allowance. But I feel I must forego it. I also think that this is a temporary job. All the same, when the Congress Govt. comes in, they may like to keep me engaged in some job of Rs. 200-300. But for all this, I shall have to continue in serfdom. I realise what you mean about Yogi. Benipuri holds the same view. Even Murli Babu thinks like that. But Brij Shankarji has been most kind to me during these two years, the period of my difficulties and shame His offer has stood before me all the while. We had also some correspondence on the point and he has agreed to assure me 3 years' employment. There was a counter offer (informally) from Nava Shakti with higher salary. But I have refused it thinking Yogi to be more congenial. Friends also doubt if it would be better to associate my name with cheap journalism or if I shall not suffer a loss of creative vitality.

I do not exactly know what should I do. I have got Rasvanti and Hunkar back from the clutches of Bhandar and propose to begin my own publication side by side. It will not be on a wide business-scale but just with a view to get some money out of my books. I think with employment in Yogi and publication of a few books I shall continue to get 4-5 hundred per month which is a necessity for me. If I accept your suggestion, I cannot take to journalism. Then what should I do ? Shall I die a wretch on the present job ? In fact, I feel, I must go mad with this discouraging situations and with a large no. of girls in my family whose marriages take place every alternate year. Please tell me what should I do. There seems to be so many openings before me under the Govt. including lecturership in a College perhaps. But I detest them all. During the last 3 months I have outgrown the allurements of Govt service. I must make a big departure. I cannot put up with it. I simply hate the idea and fail to understand how have I continued in Govt. service so far. Please give me light; please help me or I perish in despair. Please write more concretely, citing instances of deceit in the Yogi Mondal. I wait to stand on more solid grounds before I jump.

With Pranams,

Sincerely yours

P. S. Dinkar

Yes, I heard of some incidence between you and "Bharat Mata" and was lost in a number of surmises. But I dismissed them all. I gave my mind to Yogi people also and chastised Ramdhan who pleaded as having done no mischief to you. But take it from me that this is not the topic of talk at Patna. Nobody knows it and I do not understand why do you give so much of importance to it.

I return your letter in original herewith without copying.

Dinkar

[३९२]

सीतामढ़ी (कोर्ट)
४-१०-३९

मान्यवर,

प्रणाम ।

कार्यक्रम तो अभी नहीं पहुँचा है, लेकिन परों के संवाद से ज्ञात हुआ है कि सम्मेलन १५ से १८ तक बैठेगा। यह मेरे लिए बुरा हुआ, क्योंकि मेरा आफिस १६ होकर १७ से बन्द होता है। अगर मैं पहली ट्रेन भी पकड़ूँ तो भी १७ के १ बजे दिन से पूर्व तो बनारस पहुँच नहीं सकता। कहीं वह ट्रेन छूट गई तो खुदा पनाह। मैं सोच रहा हूँ कि सम्मेलन का उत्सव मैं नहीं देख सकूँगा। कृपया कार्यक्रम भिजवा दें कि मुझे सभी अधिवेशनों का समय मालूम हो जाय।

रसवन्ती अभी पुस्तक-भण्डार की खटाई में भींग रही है।

विनीत
रामधारीसिंह दिनकर

[३९३]

नरकटियागंज (चम्पारण)
१५-८-४३

मान्यवर राय साहब,

प्रणाम ।

पत्र-वाहक श्री भरत मिश्र हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्र थे और वहीं से इन्होंने आई० ए० की परीक्षा पास की। घरेलू झंझटों के कारण थर्ड इयर में अब तक नाम नहीं लिखा सके। अब नाम लिखाने को इच्छुक हैं। काफी देर हो चुकी है और जब तक आप इस मामले में नहीं पड़ेंगे तब तक शायद इनका नाम नहीं लिखा जा सकेगा। अतएव मेरा साग्रह अनुरोध है कि आपसे जिस प्रकार भी हो सके इनकी समुचित सहायता करने का कष्ट उठावें। इतना और कह दूँ कि यह मेरे एक घनिष्ठ मित्र के सम्बन्धी हैं और इनके प्रति किया गया उपकार मेरे लिए कृतज्ञता का कारण होगा। शेष कुशल है।

विनीत
दिनकर

[३९४]

कनूलाल रोड, मीठापुर, पटना
२-८-४५

मान्यवर,

श्री मैथिलीशरण-हीरक जयन्ती के लिए निमन्त्रण मिल चुका है। मैं भरपूर कोशिश करूँगा कि उसमें सम्मिलित होऊँ। क्या आपके यहाँ उस समय बहुत भीड़ रहेगी।

प्रणाम।

आपका
रामधारीसिंह दिनकर

[३९५]

२४ए, हार्डिंग रोड, पटना
१८-५-५०

मान्यवर,

दुःसंवाद मिला। प्रभु की इच्छा।

चेक तो रजिस्ट्री लिफाफे में भेज दिया था। मिला होगा।

अपने पास अगर गुप्तजी, देवीजी का और अपना चित्र मौजूद हो तो एक-एक प्रति मेरे पास भिजवा दें। संसद के बारे में थोड़ा प्रचार इलस्ट्रेटेड वीकली में करवाना है। देवीजी का तो पता ही मेरे पास नहीं है।

मुझे ये चित्र फौरन ही चाहिए।

आपका
दिनकर

[३९६]

१२-ई, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली
१४-१२

मान्यवर,

पत्र मिला। मैं बीस ता० को आ रहा हूँ। हवाई जहाज से आया तो अड्डे पर अन्यथा मोगलसराय स्टेशन पर गाड़ी भेजनी होगी। तार दे दूँगा। २१ को वापस हो जाऊँगा अन्यथा तीन दिनों का भत्ता मारा जायगा। फिर लौटती बार कृष्णानन्दजी के कालेज के लिए २९-३० तक उतरना है। तब भरपेट "गप्प" करेंगे।

प्रणाम।

आपका
दिनकर

श्री मन्मथनाथ गुप्त

[३९७]

४५, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली
१२-१२-५३

प्रियवर,

आर्टिस्ट महोदय ने डिजाइन अब तक नहीं दिया। मैं तो बड़ी झंझट में फँस गया हूँ। पटने वालों को लिख दिया कि आप निश्चिन्त हो जायें और यहाँ मित्रवर कलाकार ही निश्चिन्त हो गये। १४ तारीख को डिजाइन मुझे अवश्य-अवश्य मिल जाना चाहिए।

आपका
दिनकर

[३९८]

चौधरी टोला, पटना
२-१-५५

प्रिय मन्मथ बाबू,

आपके दोनों पत्र मिले। बातें नोट कर ली हैं। सरिता मेरे पास नहीं आई है। एक प्रति भिजवा दीजिये। योगी में उस लेख को उद्धृत करवा सकता हूँ। सरिता वालों से अनुमति भिजवा देंगे।

पांडुलिपियों के खो जाने से मैं तो गहरे शोक में पड़ गया हूँ।

कलकत्ता वाले भाषण की एक प्रति भिजवा दी है। मिली होगी।

शेष कुशल है।

आपका
दिनकर

[३९९]

चौधरी टोला, पटना-६
१५-१-५५

प्रिय मन्मथ बाबू,

पत्र मिला। सरिता भी मिली। योगी, शायद, छापेगा। आपका अकादमी वाला विवरण कृपलानी को भेज दिया। उन्हें मिल भी गया है। नीलकुसुम की प्रति शीघ्र भिजवा रहा हूँ। आशा है, मायाजी आ गई हैं और आप लोग सानन्द हैं।

आपका
दिनकर

[४००]

जिनेवा-रोम के वीच का आकाश-मार्ग
२२-१२-५५ (सायं काल)

प्रिय मन्मथ वाबू,

रोम की यात्रा स्थगित कर दी। लन्दन, जिनेवा और पेरिस देख कर अब सीधे कैरो जा रहा हूँ। मेरा मिजाज यात्रा से ऊब गया है। कुछ इसलिए भी जल्दी कर रहा हूँ कि भाषा-आयोग के काम में हाथ बटा सकूँ।

मैं २६ की रात में कैरो से उड़ कर २७ के दो वजे दिन में वम्वई पहुँचूँगा। २८ वम्वई रुकूँगा और २९ को हवाई जहाज से ही दिल्ली पहुँचूँगा। आप एक पत्र मेरे नाम :—

C/o. श्री एस० पी० जैन, २९, कारमाइकेल रोड, वम्वई

के पते पर लिख दें जो वहाँ पहुँचते ही मिल जाय। वम्वई से भरसक शिवसागर को तार दूँगा।

मायाजी को नमस्कार कहिये।

आपका
दिनकर

[४०१]

आर्यकुमार रोड, पटना-४
८-१२-६०

प्रिय मन्मथ वाबू,

आपका ६-१२ का पत्र अभी मिला। मैं १ अक्तूवर से वीमार हूँ। अब उपसर्ग सभी शमित हो गये हैं, किन्तु, कमजोरी अभी है। डाक्टर घोषाल ने विचित्र diet पर डाल दिया है। वही चल रहा है। दिल्ली आना तो चाहता हूँ, लेकिन, कव आऊँगा, कह नहीं सकता। जल्दी भी आ सकता हूँ और देर से भी।

जो काम आपके जिम्मे गया है वह तभी कीजिये जब मैं दिल्ली आ जाऊँ।

१९३९ में हंस का एक रेखा-चरितांक निकला था। उसमें मेरा चरित श्री कामेश्वर शर्मा 'कमल' ने लिखा था। उसे खोज कर अवश्य देख लीजिये।

मेरे सम्वन्ध में जितनी पुस्तकें निकली हैं, उनमें से छह मेरे पास हैं, उनके लेखक हैं (१) प्रिंसिपल कपिल, (२) प्रिंसिपल शिववालक राय,

(३) प्रि० मुरलीधर श्रीवास्तव, (४) श्रीशिवचन्द्र शर्मा, (५) श्रीकामेश्वर शर्मा और (६) श्रीप्रताप साहित्यालंकार। किताबें इनके सिवा और निकली हैं, किन्तु, मेरे पास नहीं हैं। एक लखनऊ से और एक दिल्ली से जरूर निकली है। एक M. A. की थीसिस है। आप ये किताबें राजपाल के द्वारा और अपने बल से ऊपर कर रखिये। बल्कि इसे आप शर्त ही समझिये। जब आप बाकी पुस्तकों का संग्रह कर लेंगे, मैं अपने पास की छह किताबें ले आऊँगा।

शेष कुशल है। आते ही आप को खबर दूँगा। दो महीने की अवधि मत रखिये। कुछ देर हो सकती है।

आपका
दिनकर

[४०२]

पटना
१०-२-६१

प्रिय मन्मथ बाबू,

मैं १२ की शाम को पहुँचूँगा। १३ को ज्योति बाबू वाली चीज दिखला दीजिये। यहाँ कुछ भी काम नहीं हो सका। सारा समय रोने-धोने में समाप्त।

आपका
दिनकर

[४०३]

९, अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता
७-७-६१

प्रिय मन्मथ बाबू,

सप्रेम वन्दे।

आपका पत्र मिला। पुस्तक की तीन प्रतियाँ मेरे लिखने पर प्रकाशक जी ने भेजी थीं। सो, आपका पत्र पुस्तक देख लेने के बाद मिला।

बच्चन जी ने आपको जो बधाई भेजी उससे मुझे प्रसन्नता हुई। उनकी (यानी हमारी) पीढ़ी में अब कितने लोग हैं जो चीज पसन्द आवे तो अपनी प्रतिक्रिया लिख भेजने का कष्ट करेंगे। गनीमत है कि हमसूरत यहाँ दो चार बैठे हैं। बच्चन ईमानदार और साथ-साथ जानदार आदमी हैं।

पुस्तक के दोष जो मैंने देखे हैं, नीचे लिख रहा हूँ।

जीवनी-भाग के पृष्ठ ३३ का दूसरा पैरा देखिये। आपका ध्येय कुरुक्षेत्र से पूर्व की कविताओं का उद्धरण देना था, किन्तु, एक को छोड़ कर सभी उद्धरण कुरुक्षेत्र के बाद के हैं।

यतीनदास ६२वें दिन मरे थे या तिरसठवें दिन ? शायद, आपकी ही बात ठीक होगी। परिशिष्ट १ अत्यन्त संक्षिप्त है।

परिशिष्ट २ के १४२ पृष्ठ पर ऊपर ही—क्रम-संख्या गलत है। ३५ के बाद ३६ और तब ३७ होना चाहिए था।

प्रकाशक जी की एक कंजूसी मुझे रुची नहीं। फोटो ग्लेज्ड कागज पर लेकर ब्लाक बनवाना था। मेरा सुझाव उन्होंने महज १०-१२ रुपये बचाने के लिए टाल दिया। मगर, अपने चेहरे में जितनी दिलचस्पी मुझे है, उतनी विश्वनाथ जी को क्यों होगी ?

मैं यहाँ से १२ जुलाई की रात को पटने प्रस्थान करूँगा। उस दिन उर्वशी की प्रतियाँ आपको और चन्द्रगुप्त जी को, शायद, भेज कर ही जाऊँगा। दिल्ली २० के बाद पहुँचना चाहता हूँ। ज्योति बाबू से स्टाम्प्ड रसीद लिखवा कर पटने के पते पर भेज दीजिये।

आपका

दिनकर

[४०४]

कलकत्ता

८-७-६१

प्रिय मन्मथ बाबू,

आजकल में रिव्यू चन्द्रगुप्तजी की छपनी चाहिए। यदि उन्हें समय न मिले तो डॉक्टर नगेन्द्र, नरेन्द्र शर्मा, नन्ददुलारेजी, हजारीप्रसादजी, डॉ० सम्पूर्णानन्दजी, डाक्टर देवराज (काशी) में से एक, दो या तीन व्यक्तियों से तुरंत अनुरोध कर दें। मैं पुस्तक सब को भिजवा रहा हूँ। सरितावाले रिव्यू छापने को तैयार हों तो मुझे पटने लिखें कि कितनी प्रतियाँ कहाँ भेजूँ।

आपका

दिनकर

[४०५]

आर्यकुमार रोड, पटना-४
१७-७-६१

प्रिय मन्मथ बाबू,

सुना, प्रतियाँ आपके पास गलती नामों की पहुँची हैं। अब उन्हीं को रख लीजिये। एक आप स्वयं रखें, एक चन्द्रगुप्तजी को दें, एक ज्योतीश को और एक सरिता को। पत्रों के लिए अतिरिक्त प्रतियों की जरूरत हो तो मुझे लिख दीजिये, साथ लाऊँगा। लेकिन, रिव्यू की तैयारी इससे रुकनी नहीं चाहिए। मैं अच्छा हूँ।

आपका
दिनकर

[४०६]

१६, केनिंग लेन, नई दिल्ली
१-२-६३

प्रिय मन्मथ बाबू,

नये दर्शन की आवश्यकता पर आपका निबन्ध पढ़ गया। सुचिन्तित और सुलिखित है। यह वही दर्शन है जिसका समर्थन लोकमान्य ने किया था अथवा जो स्वामी विवेकानन्द के उद्गारों से उद्भूत होता है। यह दर्शन परम धर्म का खण्डन नहीं करता, उलटे, परम धर्म की रक्षा के लिए ही वह आपद्धर्म का समर्थन करता है। जिस जाति में आपद्धर्म के निर्वाह की क्षमता नहीं होती, उसका परम धर्म आप से आप नष्ट हो जाता है। लेख मुझे बहुत पसन्द आया। बधाई।

कल नहीं आ सका, इस दोष के लिए क्षमा करेंगे।

आपका
दिनकर

[४०७]

कलकत्ता
९-१-६३

प्रिय मन्मथ बाबू,

पत्र आपका यहीं घूम कर मिला। मैं २९ दिसम्बर से यहीं हूँ। एक नयी कविता कोई ५०० पंक्तियों की लिखी है जिसका नाम "परशुराम की प्रतीक्षा" है। उसी नाम से गर्म कविताओं का एक संग्रह छप रहा है। गणतंत्र-दिवस तक कापियाँ दिल्ली पहुँच जायेंगी। परशुराम की प्रतीक्षा आपको बहुत-बहुत पसन्द आयेगी, इसका मुझे विश्वास है।

आपका
दिनकर

[४०८]

पटना–४

६-४-६३

प्रिय मन्मथ बाबू,

कृपा-कार्ड मिला। धन्यवाद ! मैं पारिवारिक झंझटों में मुब्तिला हूँ। २० से पहले आने की उम्मीद नहीं है।

आपका

दिनकर

[४०९]

आर्यकुमार रोड, पटना-४

१५-६-६३

प्रिय मन्मथ बाबू,

आजकल का जूनवाला अंक पहुँचा। यह अंक पहले के अंकों से भिन्न है, इसलिए, ध्यान खींचता है। मेरी तो राय है कि इस अंक का व्यक्तित्व जैसा है, आगे उसी व्यक्तित्व का विकास होना चाहिए। बधाई।

आपका

दिनकर

[४१०]

उदयाचल, राजेन्द्रनगर, पटना-४

५-३-६५

प्रिय मन्मथ बाबू,

आपका २५/२ का पत्र मिला। बीमारी में मैं भी बहुत लिखता हूँ और बीमार हूँ भी। मगर वाइसचान्सेलरी के पद पर से केवल यूनिवर्सिटी का ही काम हो सकता है। १५ महीनों में मैंने कविता की एक पंक्ति भी नहीं लिखी है। इस्तीफा दिये एक युग हो गया। अखबार में खबर भी छपी है कि इस्तीफा मंजूर हो गया है। मगर, मुझे कोई सूचना नहीं मिली है, न कोई आदमी रिलीव करने को आता है। यहाँ से छूटने के पहले कविता की खैरियत मत पूछिये।

स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। रक्तचाप शरीर में घर कर गया है। बड़ा ही अप्रसन्न रहता हूँ

आपका

दिनकर

श्री शम्भुप्रसाद श्रीवास्तव

[४११]

अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता
२९-१०-५६

प्रियवर,

तुमसे अचानक भेंट हो गई और दो-तीन दिनों तक तुम्हारे मुख से कविताएँ सुनने का अवसर मुझे अकस्मात् मिल गया। हिन्दी का क्षेत्र बहुत विस्तृत है इसलिये उसके एक छोरपर उगनेवाले नक्षत्र दूसरी सीमा पर से जल्दी दिखाई नहीं देते। किन्तु तुम तो काशी के हो। बड़ा पश्चाताप हुआ कि तुम्हें मैं पहले से क्यों नहीं जानता था।

तुम गीतकार के रूप में आगे आ रहे हो। तुम्हारे गीतों की टेकों में ध्यान आकृष्ट करने की शक्ति है और अन्तराओं में भी मार्मिकता है। तुम्हारे मुख से सुनने पर तो ये गीत और आकर्षक लगते हैं।

दो-तीन दिनों तक तुम्हारी कविताओं की संगति में रहकर मुझे ऐसा लगा कि एक अच्छा कवि हिन्दी में उदय ले रहा है। मैं तुम्हारे विकास को बड़े ही ध्यान से देखूँगा।

तुम्हारा
रामधारीसिंह दिनकर

ये पत्र हमें अति विलम्ब से प्राप्त हुए, इस कारण इन पत्रों को परिशिष्ट में देना पड़ा है। चतुर्वेदीजी द्वारा प्रेषित १६-४-३४ का पत्र हमें यदि समय पर प्राप्त हो जाता तो तिथि-क्रम के अनुसार 'दिनकर के पत्र' पुस्तक में उक्त पत्र प्रथम होता और उसी पत्र से यह पुस्तक प्रारम्भ होती।

पृष्ठ-संख्या ३७, पत्र-संख्या ५८ के श्री बनारसीदासजी चतुर्वेदी वाले पत्र में, बच्चनजी-सम्बन्धी-विवरण हेतु कुछ अंग्रेजी-पंक्तियाँ छपी हैं जो अधूरी हैं। पूर्ण पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :—

He seems to be the harbinger of still better sentiments in our literature. May he live long for he will do miracles.

—सम्पादक

राष्ट्रकवि रामधारीसिंह 'दिनकर'

जन्म : २३ सितम्बर १९०८, सिमरिया, जिला वेगूसराय (बिहार)

पिता : बाबू रविसिंह, स्वर्गवास १९१०, सिमरिया

माता : श्रीमती मनरूप देवी, स्वर्गवास १४ मार्च १९७९, सिमरिया

श्वसुर : स्व० रक्षा ठाकुर, पो० टमका, जि० समस्तीपुर

विवाह : श्यामादेवी के साथ १९२१ में
पत्नी का स्वर्गवास, २० नवम्बर १९८०, सिमरिया

पुत्र : रामसेवकसिंह, स्वर्गवास १२ अप्रैल १९६७, दिल्ली
श्री केदारनाथसिंह, राजेन्द्रनगर, पटना-१६

पुत्री : विनतादेवी, पति विशेश्वरनारायण शर्मा (एडवोकेट)
पो० काझा (पूर्णियाँ)
विभादेवी, पति प्रो० ब्रजभूषण शर्मा, पो० रहुआ (दरभंगा)

भाई : स्व० बसन्तसिंह (अग्रज), श्री सत्यनारायणसिंह (अनुज)

शिक्षा : १९२८ में पूरे प्रान्त में मैट्रिक प्रथम श्रेणी में पास करने पर 'भूदेव-स्वर्णपदक'; १९३२ में पटना कॉलेज से बी० ए०

जीवन-चक्र : प्रधानाध्यापक एच० ई० स्कूल, बरबीघा (१९३३ से ३४ तक)
सब-रजिस्ट्रार १९३४ से १९४२ तक
युद्ध-प्रचार-विभाग १९४३ से १९४५ तक
डिपुटी डायरेक्टर, जन-सम्पर्क-विभाग, बिहार १९४७ से १९५०
हिन्दी-प्रोफेसर, बिहार-विश्वविद्यालय १९५२ तक

यात्राएँ : यूरोप १९५५, चीन १९५७, रूस १९६१, मारीशस १९६७, पश्चिम जर्मनी १९६८, इंगलैंड १९७१

प्रकाशन : १९२८ में प्रथम पुस्तक. 'बारदोली-विजय' उसके बाद ३२ काव्य-पुस्तकें तथा २७ गद्य-पुस्तकें प्रकाशित

१९४८ ई० : 'कुरुक्षेत्र' पर साहित्यकार-संसद, काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभा, उत्तरप्रदेश-सरकार तथा भारत-सरकार द्वारा पुरस्कार

१९५२ ई० : राज्यसभा के सदस्य मनोनीत, १२ वर्ष तक रहे

१९५६ ई० : 'संस्कृति के चार अध्याय' पुस्तक पर केन्द्रीय-साहित्य-अकादमी-पुरस्कार ६ नवम्बर १९५६ को

१९५९ ई० : 'पद्मभूषण' उपाधि से सम्मानित
प्रथम राष्ट्रपति श्रीराजेन्द्रप्रसाद द्वारा ८ अप्रैल १९५९ को

१९६२ ई० : 'डॉक्टर ऑफ लिटरेचर' की उपाधि भागलपुर-विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ० जाकिर हुसेन द्वारा ३ मार्च १९६२ को

१९६२ ई० : मानपत्र, सरस्वती-पत्रिका की हीरक-जयन्ती पर राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा १२ जनवरी को

१९६४ ई० : कुलपति, भागलपुर-विश्वविद्यालय

१९६५ ई० : 'विद्यावाचस्पति' की उपाधि से गुरुकुल-महाविद्यालय द्वारा सम्मानित

१९६५ ई० : हिन्दी-सलाहकार, भारत-सरकार

१९६८ ई० : 'साहित्य-चूड़ामणि', की उपाधि से राजस्थान-विद्यापीठ, उदयपुर द्वारा ८ नवम्बर १९६८ को सम्मानित

१९७३ ई० : ज्ञानपीठ-पुरस्कार, प्रसिद्ध काव्य-पुस्तक 'उर्वशी' पर भारतीय-ज्ञानपीठ का एक लाख रुपये का पुरस्कार १ दिसम्बर १९७३ को विज्ञान-भवन, नई दिल्ली में प्रदत्त

१९७४ ई० : स्वर्गवास :
२४ अप्रैल, आधीरात को मद्रास में हृदयगति रुक जाने पर हुआ। पार्थिव शरीर वायुयान से पटना लाकर पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ बाँसघाट, पटनामें २५ अप्रैल को दाह-संस्कार।

—: ० :—

दिनकरजी द्वारा रचित साहित्य

पुस्तक				प्रथम-प्रकाशन
१. बारदोली-विजय	—	पद्य	—	१९२८
२. प्रणभंग	—	"	—	१९२९
३. रेणुका	—	"	—	१९३५
४. हुंकार	—	"	—	१९३९
५. रसवन्ती	—	"	—	१९४०
६. द्वन्द्वगीत	—	"	—	१९४०
७. कुरुक्षेत्र	—	"	—	१९४६
८. धूप-छाँह	—	"	—	१९४६
९. मिट्टी की ओर	—	गद्य	—	१९४६
१०. सामधेनी	—	पद्य	—	१९४७
११. बापू	—	"	—	१९४७
१२. चित्तौड़ का साका	—	गद्य	—	१९४९
१३. इतिहास के आँसू	—	पद्य	—	१९५१
१४. धूप और धुआँ	—	"	—	१९५१
१५. मिर्च का मजा	—	"	—	१९५१
१६. रश्मिरथी	—	"	—	१९५२
१७. अर्धनारीश्वर	—	गद्य	—	१९५२
१८. दिल्ली	—	पद्य	—	१९५४
१९. नीम के पत्ते	—	"	—	१९५४
२०. नील कुसुम	—	"	—	१९५४
२१. रेती के फूल	—	गद्य	—	१९५४
२२. हमारी सांस्कृतिक एकता	—	"	—	१९५४
२३. भारत की सांस्कृतिक कहानी	—	"	—	१९५५
२४. सूरज का ब्याह	—	पद्य	—	१९५५
२५. संस्कृति के चार अध्याय	—	गद्य	—	१९५६
२६. चक्रवाल	—	पद्य	—	१९५६
२७. उजली आग	—	गद्य	—	१९५६
२८. कवि-श्री	—	पद्य	—	१९५७
२९. सीपी और शंख	—	"	—	१९५७
३०. नये सुभाषित	—	"	—	१९५७

पुस्तक				प्रथम-प्रकाशन
३१. देश-विदेश	—	गद्य	—	१९५७
३२. राष्ट्र-भाषा और राष्ट्रीय एकता	—	,,	—	१९५८
३३. काव्य की भूमिका	—	,,	—	१९५८
३४. पन्त-प्रसाद-मैथिलीशरण	—	,,	—	१९५८
३५. वेणुवन	—	,,	—	१९५८
३६. धर्म, नैतिकता और विज्ञान	—	,,	—	१९५९
३७. वट-पीपल	—	,,	—	१९६१
३८. उर्वशी	—	पद्य	—	१९६१
३९. परशुराम की प्रतीक्षा	—	,,	—	१९६३
४०. आत्मा की आँखें	—	,,	—	१९६४
४१. कोयला और कवित्व	—	,,	—	१९६४
४२. मृत्ति-तिलक	—	,,	—	१९६४
४३. दिनकर की सूक्तियाँ	—	,,	—	१९६५
४४. लोकदेव नेहरू	—	गद्य	—	१९६५
४५. शुद्ध कविता की खोज	—	,,	—	१९६६
४६. साहित्य-मुखी	—	,,	—	१९६८
४७. राष्ट्र-भाषा-आन्दोलन और गांधीजी	—	,,	—	१९६८
४८. हे राम !	—	,,	—	१९६९
४९. संस्मरण और श्रद्धाञ्जलियाँ	—	,,	—	१९६९
५०. भारतीय एकता	—	,,	—	१९७०
५१. मेरी यात्राएँ	—	,,	—	१९७०
५२. हारे को हरिनाम	—	पद्य	—	१९७०
५३. संचयिता	—	,,	—	१९७३
५४. दिनकर के गीत	—	,,	—	१९७३
५५. दिनकर की डायरी	—	गद्य	—	१९७३
५६. चेतना की शिखा	—	,,	—	१९७३
५७. आधुनिक बोध	—	,,	—	१९७३
५८. रश्मिलोक	—	पद्य	—	१९७४
५९. विवाह की मुसीबतें	—	गद्य	—	१९७४
६०. उर्वशी तथा अन्य शृंगारिक कविताएँ		पद्य	—	१९७४

—: ० :—

दिनकर-साहित्य पर शोध-प्रबन्ध

१. दिनकर और उनकी साहित्यिक प्रवृत्तियाँ
शोधकर्त्ता : सुनीतिकुमार सिन्हा, पटना-विश्वविद्यालय १९६०

२. हिन्दी की स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्रीय कविता और दिनकर के काव्य का अनुशीलन
शोधकर्त्ता : वीरेन्द्रप्रसाद मिश्र, सागर-विश्वविद्यालय १९६७

३. राष्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी काव्य-कला
शोधकर्त्ता : शेखरचन्द्र जैन गुजरात-विश्वविद्यालय १९६९

४. कवि दिनकर की शब्दावली : एक सांस्कृतिक अनुशीलन
शोधकर्त्ता : श्याम मालवीय, जबलपुर-विश्वविद्यालय १९६९

५. आजाद तथा दिनकर के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन
शोधकर्त्ता : अमरनाथ, काश्मीर-विश्वविद्यालय १९७०

६. कवि के रूप में दिनकर
शोधकर्त्ता : मुन्नालाल शर्मा 'वत्स', आगरा-विश्वविद्यालय १९७०

७. दिनकर और उनका काव्य
शोधकर्त्ता : जयलक्ष्मी अम्माल, श्रीवेंकटेश्वर-विश्वविद्यालय १९७१

८. दिनकर : काव्य-कला और दर्शन
शोधकर्त्ता : प्रतिभा जैन, विक्रम-विश्वविद्यालय १९७१

९. उर्वशी : स्रोत और मौलिक उद्भावना
शोधकर्त्ता : श्रीमती सुनीति, उस्मानिया-विश्वविद्यालय १९७२

१०. दिनकर-काव्य में युग-चेतना
शोधकर्त्ता : पन्ना द्विवेदी, लखनऊ-विश्वविद्यालय १९७२

११. दिनकर की कविता में विचार-तत्त्व
शोधकर्त्ता : एस० शेष० रत्नम्, आन्ध्र-विश्वविद्यालय १९७३

१२. दिनकर का काव्य-शिल्प और चेतना
शोधकर्त्ता : स्नेह चौधरी, दिल्ली-विश्वविद्यालय १९७४

१३. दिनकर की प्रवन्ध-योजना : आधुनिक सन्दर्भ
शोधकर्त्ता : रामराजसिंह, काशी-विद्यापीठ १९७४

१४ दिनकर की काव्य-भाषा
शोधकर्त्ता : यतीन्द्र तिवारी, कानपुर-विश्वविद्यालय १९७४

१५. समकालीन प्रगतिशील प्रवृत्तियों के सन्दर्भ में दिनकर के काव्यका मूल्यांकन
शोधकर्त्ता : कमला शर्मा, राजस्थान-विश्वविद्यालय १९७४

१६. दिनकरकृत उर्वशी के स्रोतों का अध्ययन
शोधकर्त्ता : मनोहरलाल शर्मा, मेरठ-विश्वविद्यालय १९७५

१७. दिनकर का गद्य-साहित्य
शोधकर्त्ता : देवव्रत जोशी विक्रम-विश्वविद्यालय १९७५

१८. दिनकर के काव्य में नारी
शोधकर्त्ता : नीलमसिंह, काशी-विद्यापीठ १९७५

१९. दिनकर के काव्य में अभिव्यक्ति-विधान
शोधकर्त्ता : श्रीमती शारदा, आगरा-विद्यापीठ १९७६

२०. दिनकर और उमाशंकर जोशी के काव्य में राष्ट्रीय भावना
शोधकर्त्ता : कमलेश जैन, दिल्ली-विश्वविद्यालय १९७६

२१. दिनकरकृत उर्वशी : परम्परा और प्रभाव
शोधकर्त्ता : विजयलक्ष्मी भजरी, जोधपुर-विश्वविद्यालय १९७६

२२. दिनकर के काव्य का शास्त्रीय अध्ययन
शोधकर्त्ता : श्रीमती नरेशकुमारी, लखनऊ-विश्वविद्यालय १९७६

२३. उर्वशी : काव्य, चिन्तन और शिल्प
शोधकर्त्ता : राजनारायण, वैशाली १९७७

२४. दिनकर की कृतियों में शिक्षाएँ : एक अध्ययन
शोधकर्त्ता : देवचन्द्र झा, बिहार-विश्वविद्यालय १९७७

२५. दिनकर का काव्य-शिल्प
शोधकर्त्ता : राजीव अवस्थी, आगरा-विश्वविद्यालय १९७८

२६. गीति-नाट्य के परिप्रेक्ष्य में दिनकरकृत उर्वशी का अनुशीलन
शोधकर्त्ता : कमलाप्रसाद मिश्र, अवध-विश्वविद्यालय १९७८

२७. दिनकर-काव्य में व्यंजित प्रेम-दर्शन
शोधकर्त्ता : मधुबाला, आगरा-विश्वविद्यालय १९७८

२८. रामधारीसिंह का जीवन-दर्शन
शोधकर्त्ता : विनोदबाला शर्मा, मेरठ-विश्वविद्यालय १९७८

२९. दिनकर की काव्य-चेतना का विकास-क्रम और उर्वशी
शोधकर्त्ता : बच्चनप्रसाद गुप्त, काशी-विद्यापीठ १९७८

३०. दिनकर के काव्य में नारी का स्वरूप : एक आलोचनात्मक अध्ययन
शोधकर्त्ता : चन्द्रपाल रावत, अलीगढ़-विश्वविद्यालय १९७८

३१. दिनकर के काव्य में बिम्बयोजना
शोधकर्त्ता : निर्मला श्रीवास्तव, अलीगढ़-विश्वविद्यालय १९७८

३२. दिनकर-काव्य का वक्रोक्ति-सिद्धांत के निकष पर अध्ययन
शोधकर्त्ता : महेन्द्रसिंह सिन्धु, मेरठ-विश्वविद्यालय १९७९

३३. दिनकर की उर्वशी का समग्र अध्ययन
शोधकर्त्ता : दयाकृष्ण जोशी, कुमाऊँ १९७९

३४. दिनकर के काव्य में व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति
शोधकर्त्ता : रमारानी सिंह, मेरठ-विश्वविद्यालय १९७९

३५. दिनकर के गद्य-साहित्य का शैलीतात्त्विक अध्ययन
शोधकर्त्ता : श्रीमती सरोज पाण्डेय, आगरा-विश्वविद्यालय १९७९

३६. दिनकर की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना
शोधकर्त्ता : रामनिवास, गढ़वाल १९७९

३७. दिनकर की साहित्य-दृष्टि
शोधकर्त्ता : सुशीला मिश्रा, रांची-विश्वविद्यालय १९७९

३८. दिनकर के काव्य में रचना-प्रक्रिया
शोधकर्त्ता : मंजरी शर्मा, राजस्थान-विश्वविद्यालय १९७९

३९. दिनकर-साहित्य में दिनकर के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति
शोधकर्त्ता : राजकुमारी गौड़, मेरठ-विश्वविद्यालय १९७९

४०. समसामयिक परिप्रेक्ष्य में दिनकर के प्रवन्ध-काव्यों का मूल्यांकन
शोधकर्त्ता : जटाशंकर पाण्डेय, वम्बई-विश्वविद्यालय १९८०

४१. सौन्दर्यशास्त्र की दृष्टि से दिनकर के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन
शोधकर्त्ता : उषा गुप्ता, मेरठ-विश्वविद्यालय १९८०

४२. दिनकर की उर्वशी का दार्शनिक और सौन्दर्यशास्त्रीय अध्ययन
शोधकर्त्ता : के० इन्दुमती, वेंकटेश्वर-विश्वविद्यालय १९८०

४३. दिनकर की काव्य-चेतना
शोधकर्त्ता : श्रीयुगलकिशोर, पंजाब-विश्वविद्यालय १९८०

४४. दिनकर : व्यक्तित्व और कृतित्व
शोधकर्त्ता : उमरसाव राजेसाव मसूटी, कर्नाटक-विश्वविद्यालय १९८०

४५. श्रीमती स्वेतलाना ने रूसी भाषा में लेनिनग्राड-विश्वविद्यालय से दिनकरजी पर डाक्टरेट की है।

४६. डॉ० प्रेमप्रकाश रस्तोगी वरेली-कॉलेज, उ० प्र०
दिनकर जी पर D. Lit. कर रहे हैं।

—:०:—

दिनकर-साहित्य पर स्वतन्त्र ग्रन्थ

पुस्तक	प्रथम प्रकाशन
१. दिनकर और उनकी काव्य-कृतियाँ सं० : प्रो० कपिल, ईभा-प्रकाशन, मुंगेर	१९५१
२. दिनकर की काव्य-साधना ले० : डॉ० मुरलीधर श्रीवास्तव, अजन्ता-प्रेस, पटना	१९५१
३. दिनकर और उनकी काव्य-प्रवृत्तियाँ ले० : शिवचन्द्र शर्मा, जनवाणी, कलकत्ता	१९५१
४. दिनकर ले० : शिवबालकराय, युनिवर्सल-प्रेस, प्रयाग	१९५१
५. दिग्भ्रमित राष्ट्र-कवि ले० : कामेश्वर शर्मा, राष्ट्रीय प्रकाशन-मण्डल, पटना	१९५२
६. दिनकर के काव्य ले० : लालधर त्रिपाठी 'प्रवासी', आनन्द-पुस्तक-भवन, वाराणसी	१९५७
७. कुरुक्षेत्र की मीमांसा ले० : कान्तिमोहन, साहित्य-प्रकाशन, नई दिल्ली	१९५८
८. रामधारीसिंह 'दिनकर' सं० : मन्मथनाथ गुप्त, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	१९६०
९. दिनकर की उर्वशी ले० : रमाशंकर तिवारी, चौखम्बा-विद्याभवन, वाराणसी	१९६२
१०. दिनकर : सृष्टि और दृष्टि सं० : गोपालकृष्ण कौल, वातायन-प्रकाशन, गाजियाबाद	१९६२
११. दिनकर और उनकी उर्वशी ले० : देशराजसिंह भाटी, अशोक-प्रकाशन, दिल्ली	१९६३
१२. युग-चारण दिनकर ले० : डॉ० सावित्री सिन्हा, नेशनल-पब्लिशिंग-हाउस, दिल्ली	१९६३
१३. युग-कवि दिनकर ले० : डॉ० मुरलीधर श्रीवास्तव, बिहार-ग्रन्थ-कुटीर, पटना	१९६४

पुस्तक	प्रथम प्रकाशन
१४. जनकवि दिनकर ले० : डॉ० सत्यकाम वर्मा, भारतीय प्रकाशन, नई दिल्ली	१९६४
१५. उर्वशी : उपलब्धि और सीमा ले० : विजेन्द्रनारायण सिंह, ज्ञानलोक, पटना	१९६५
१६. दिनकर : एक पुनर्मूल्यांकन ले० : विजेन्द्रनारायण सिंह, परिमल-प्रकाशन, इलाहाबाद	१९६५
१७. महाकवि दिनकर : उर्वशी तथा अन्य कृतियाँ ले० : डॉ० विमलकुमार जैन, भारतीय साहित्य-मन्दिर, दिल्ली	१९६५
१८ दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय भावना ले० : सुनीति, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा	१९६७
१९. दिनकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ले० : श्रीमती एस० के० पद्मावती, जवाहर-पुस्तकालय, मथुरा	१९६७
२०. दिनकर और उनकी कृतियाँ ले० : प्रो० देवेन्द्र शर्मा	१९६७
२१. दिनकर ले० : डॉ० सावित्री सिन्हा, राधाकृष्ण-प्रकाशन, दिल्ली	१९६७
२२. दिनकर की काव्य-साधना ले० : नेमीचन्द्र भावुक, अन्तर्प्रान्तीय कुमार-सभा, जोधपुर	
२३. उर्वशी : विचार और विश्लेषण ले० : डॉ० वचनदेवकुमार, विहार-ग्रन्थ-कुटीर, पटना	१९६८
२४. युगचेता दिनकर और उनकी उर्वशी ले० : डॉ० राजपाल शर्मा, हिन्दी-साहित्य-संसार, दिल्ली	१९७२
२५. कुरुक्षेत्र : एक पारदर्श-दिग्दर्शन ले० : डॉ० सियारामसिंह, रेखा-प्रकाशन, मुजफ्फरपुर	१९७२
२६. राष्ट्र-कवि दिनकर सं० : डॉ० गोपालराय, ग्रन्थ-निकेतन, पटना	१९७५
२७. दिनकर का वीर-काव्य ले० : धर्मपालसिंह, अभिनव-प्रकाशन, दिल्ली	१९७५
२८. राष्ट्र-कवि दिनकर और उनकी साहित्य-साधना सं० : प्रतापचन्द जैसवाल, समीक्षा-लोक-कार्यालय, आगरा	१९७६

पुस्तक	प्रथम-प्रकाशन
२९. दिनकर : कुछ पुनर्विचार ले० : शम्भुनाथ, जनचेतना-प्रकाशन, हावड़ा	१९७६
३०. दिनकर : वैचारिक क्रान्ति के परिवेश में ले० : डॉ० पी० आदेश्वर राय, वाणी-प्रकाशन, दिल्ली	१९७६
३१. उर्वशी : संवेदना और शिल्प सं० : डॉ० टीकाराम, वाणी-प्रकाशन, दिल्ली	१९७६
३२. आधुनिकता के हाशिये में उर्वशी ले० : जयसिंह 'नीरद', साहित्य-भारती, दिल्ली	१९७७
३३. : दिनकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व सं० : जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी, प्रवीण-प्रकाशन, दिल्ली	१९७७
३४. दिनकर का रचना-संसार ले० : डॉ० छोटेलाल दीक्षित, अभिलाषा-प्रकाशन, कानपुर	१९७८
३५. दिनकर का काव्य ले० : द्वारिकाप्रसाद सक्सेना, मैकमिलन, नई दिल्ली	१९७९
३६. दिनकर के काव्य में क्रान्तिमन्त चेतना ले० : निधि भार्गव, कविता-प्रकाशन, बीकानेर	१९७९
३७. दिनकर-स्मृति-ग्रन्थ सं० : कन्हैयालाल फूलफगर, मित्र-परिषद कलकत्ता,	१९७९
३८. दिनकर के पत्र सं० कन्हैयालाल फूलफगर, दिनकर-शोध-संस्थान, कलकत्ता	१९८१
३९. अपने समय का सूर्य ले० : मन्मथनाथ गुप्त, आलेख प्रकाशन, शाहादरा	१९८१
४०. हुंकार : एक समीक्षा ले० : शिवचन्द्र शर्मा, राष्ट्रीय-प्रकाशन-मण्डल, पटना	
४१. द्वन्द्व-गीत की टीका ले० : जगदीश मिश्र मैथिल	
४२. कवि दिनकर और कुरुक्षेत्र सं० : लक्ष्मीनारायण टण्डन, विद्यामन्दिर, लखनऊ	
४३. दिनकर और उनका कुरुक्षेत्र ले० : डॉ० तारकनाथ बाली, विनोद-पुस्तक-मन्दिर, आगरा	

पुस्तक

४४. साहित्य के सिद्धान्त और कुरुक्षेत्र
लें० : शिवबालक राय, ज्ञान-प्रकाशन, पटना

४५. कुरुक्षेत्र-अध्ययन
ले० : लालधर त्रिपाठी, हिन्दी-प्रचारक-पुस्तकालय, वाराणसी

४६. कुरुक्षेत्र : एक अध्ययन
ले० : नेमीचन्द्र जैन 'भावुक', कुमार-सभा, जोधपुर

४७. दिनकर और उनका कुरुक्षेत्र
ले० : देशराजसिंह भाटी, अशोक-प्रकाशन, दिल्ली

४८. कुरुक्षेत्र-समीक्षा
ले० : लक्ष्मणदत्त गौत्तम, हिन्दी-साहित्य-संसार, दिल्ली

४९. कुरुक्षेत्र : सरल अध्ययन
ले० : गंगाचरण त्रिपाठी, रस्तोगी एण्ड कम्पनी, मेरठ

५०. कुरुक्षेत्र : सौन्दर्य और समीक्षा
ले० : रामकृष्ण मिश्र, बुक-लैण्ड, कलकत्ता

५१. दिनकर और कुरुक्षेत्र
ले० : रामचन्द्र श्रीवास्तव, साहित्य-प्रकाशन-मन्दिर, ग्वालियर

५२. रश्मिरथी-समीक्षा
ले० : प्रताप साहित्यालंकार विद्युत-प्रकाशन, बिहारीगंज

५३. दिनकर और उनकी रश्मिरथी
ले० : करुणेश शुक्ल, हरीश पब्लिशर्स, अहमदाबाद

५४. रश्मिरथी-अनुशीलन
ले० : रमण, वैशाली प्रकाशन, मुजफ्फरपुर

५५. रश्मिरथी-विवेचन : टीका तथा प्रश्नोत्तर
ले० : दुर्गाशंकर मिश्र, हिन्दी-साहित्य-भण्डार, लखनऊ

५६. दिनकर की उर्वशी
ले० : रमाशंकर त्रिपाठी, चौखम्बा-विद्याभवन, वाराणसी

—:०:—

पत्र-पत्रिकाओं के दिनकर-विशेषाङ्क

१. हिन्दी–साहित्य 'दिनकर अंक'
सम्पादक : हरिवंश तरुण
प्रकाशक : साहित्यकार संसद, देवघर, विहार १९६७

२. अध्येय 'दिनकर अंक'
सम्पादक : दादेप्रसाद
प्रकाशक : आन्ध्र हिन्दी प्रदेश, हिन्दी प्रचार सभा, सिकन्द्रावाद, १९७१

३. राका 'दिनकर अंक',
सम्पादक : लक्ष्मीनारायण शर्मा मुकुर
प्रकाशक : राका प्रेस, वरौनी (विहार) १९७२

४. 'उर्वशी' पुरस्कार पत्रिका
प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली १९७३

५. दिनकर अभिनन्दन 'स्मारिका'
प्रकाशक : राष्ट्रकवि रामधारीसिंह दिनकर अभिनन्दन समारोह समिति, वम्वई १९७३

६. वेगूसराय टाइम्स 'दिनकर स्मृति अंक'
सम्पादक : राधाकृष्ण चौधरी, वेगूसराय, विहार १९७४

७. ज्योत्स्ना 'दिनकर स्मृति अंक'
सम्पादक : शिवेन्द्रनारायण
प्रकाशक : ज्योत्सना कार्यालय, राजेन्द्रनगर, पटना १९७४

८. समीक्षा 'दिनकर स्मृति अंक'
सम्पादक : गोपालराय
प्रकाशक : समीक्षा कार्यालय, राजेन्द्रनगर, पटना १९७५

९. ग्राम्या 'दिनकर अंक'
सम्पादक : मार्कण्डे राय
प्रकाशक : कोचस उच्च विद्यालय, रोहतास (सासाराम) १९७६

१०. ज्ञान–तरंगिणी 'श्रद्धांजलि अंक'
सम्पादक : अनिलकुमार आञ्जनेय
प्रकाशक : भूमिहार ब्राह्मण उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, वक्सर १९७६

११. मुक्त कथन 'दिनकर स्मृति अंक'
सम्पादक : जनार्दन प्रसाद सिंह
प्रकाशक : रूपछाया आर्ट, वेगूसराय (बिहार) १९७६

१२. 'स्मारिका' दिनकर स्मृति पर्व
सम्पादक : प्रो० निशान्तकेतु
प्रकाशक : राष्ट्रकवि दिनकर स्मृति पर्व समारोह समिति, पटना, १९७८

TRANSLATIONS OF DINKAR'S POEMS AND PROSE IN OTHER LANGUAGES

1. Voice of the Himalaya (English)
   Collection of 35 Poems
   Publisher : Asia Publishing House, Bombay.

2. Reflections On Men And Things (English)
   Translator : R. K. Kapur.
   Publisher : Krishna Brothers, Ajmer.

3. Sinij Lotos (Blue Lotus) (Russian)
   Collection of About 50 Poems.
   Publisher : Progress Moscow (USSR).

4. Himalayasy Otras Poemas (Spanish)
   Collection of 30 Poems,
   Publisher : University of Concepcion Chile (South America)

5. Kurukshetra (Kannar)
   Translator : Shri Kumudpriya,
   Publisher : Subrahmaneshwar Book Depot Bangalore-2

6. Kurukshetra (Telugu)
   Translator : Shri Ramchandra Rao,
   Publisher : Vishal Andhra Prakatalayam, Vijaywada-2.

7. Rashmi Rathi (Oriya)
   Translator : Shri Sadanand Mahapatra,
   Publisher : Rashtra Bhasha Pustak Bhandar, Cuttock.

'दिनकर के पत्र' जिनके नाम लिखे प्रकाशित हुए हैं :

१. स्व० शिवपूजन सहाय
पुत्र डॉ० मंगलमूर्ति, कोड़ा मैदान, पो० मुंगेर (बिहार)

२. श्री कपिलदेवनारायणसिंह 'सुहृद'
पो० सुहृदनगर (बिहार)

३. पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी
पो० फीरोजाबाद (आगरा) उ० प्र०

४. श्री आरसीप्रसाद सिंह.
ग्रा० पो० एरौत, जि० समस्तीपुर (बिहार)

५. डॉ० रघुवीर सिंह
पो० सीतामऊ, मालवा (म० प्र०)

६. श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा 'मुकुर'
निपनिया, पो० बरौनी, जि० बेगूसराय (बिहार)

७. स्व० डॉ० लक्ष्मीनारायण सुधांशु
पुत्र, प्रो० पद्मनारायण सिंह, कंकड़ बाग कालोनी, पटना (बिहार)

८. श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर'
स्वागत सदन पो० बलिया (उ० प्र०)

९. स्व० रायकृष्ण दास
पुत्र, डॉ० आनन्दकृष्ण, भारत कला भवन, वाराणसी (उ० प्र०)

१०. डॉ० आनन्दकृष्ण
भारत कला भवन, वाराणसी (उ० प्र०)

११. डॉ० रामकुमार वर्मा
४, प्रयाग स्ट्रीट, इलाहाबाद-२ (उ० प्र०)

१२. स्व० मैथिलीशरण गुप्त
पुत्र, उर्मिलाचरण गुप्त, पो० चिरगाँव (झाँसी)

१३. आचार्य कपिल
शास्त्री नगर, पो० मुंगेर (बिहार)

१४. डॉ० शिवमंगलसिंह 'सुमन'
३१, आजाद नगर, पो० उज्जैन (म० प्र०)

१५. श्री कामेश्वर शर्मा 'कमल'
प्रेस नटराज, पो० मोकामा (बिहार)

१६. श्रीमती उमादेवी भुवालका
२९, आर्य बिशप रोड, मद्रास-२८

१७. श्री उर्मिलाचरण गुप्त
राष्ट्रकवि निवास, पो० चिरगाँव (झाँसी)

१८. स्व० व्रजकिशोरनारायण
पटना (बिहार)

१९. पोद्दार रामावतार अरुण
२२, गार्डिनर रोड फ्लैट, पो० पटना (बिहार)

२०. चित्रकार इन्द्र दुगड़
२२, मोट लेन, कलकत्ता-१३

२१. श्री रामानुजप्रसाद सिंह
समाचार-दर्शन, आकशवाणी, नयी दिल्ली

२२. श्री मथुराप्रसाद मिश्र (वर्तमान नाम स्वामी आनन्द मैत्रे)
रजनीश आश्रम, पो० पूना (महाराष्ट्र)

२३. डॉ० महेशनारायण
पो० मधुबनी, जि० पूर्णियाँ (बिहार)

२४. चित्रकार उपेन्द्र महारथी
९, गार्डिनर रोड, पटना-१ (बिहार)

२५. श्री रघुनाथ विकल
किदवईपुरी, पो० पटना (बिहार)

२६. श्री राजेन्द्रप्रसाद सिंह
खवड़ा रोड, पो० मुजफ्फरपुर (बिहार)

२७. स्व० रामसेवक सिंह
पुत्र, अरविन्दकुमार, आर्यकुमार रोड पो० पटना-४ (बिहार)

२८. प्रोफेसर, के० दोइ
६-३, सकूरा गाओंका, शिवूयाकू, टोकियो (जापान)

२९. श्रीमती विभा शर्मा
द्वारा श्री व्रजभूषण शर्मा, पो० रहुआ (दरभंगा)

३०. स्व० डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी
पुत्र, जगदीशनारायण द्विवेदी, ए-३३, रवीन्द्रपुरी, वाराणसी-५

३१. डॉ० विवेकीराय
बड़ीवाग, पो० गाजीपुर (उ० प्र०)

३२. स्व० जयप्रकाशनारायण
कदमकुआँ, पटना (बिहार)

३३. श्री श्रेयांसप्रसाद जैन
निर्मल, नेरीमनपोइन्ट, वम्बई-२१

३४. श्री वीरेन्द्रकुमार जैन
गोविन्द निवास, सरोजनी रोड, विलेपारले पश्चिम, वम्बई-५६

३५. श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन'
दिलशाद कालोनी, शाहादरा, दिल्ली-३२

३६. स्व० भारतभूषण अग्रवाल

३७. श्री प्रफुल्लचन्द्र दास
प्रफुल्ल प्रेस, चाँदनी चौक, पो० कटक (उड़ीसा)

३८. श्री रामसागर चौधरी
पो० गनीपुर (मुजफ्फरपुर)

३९. डॉ० चन्द्रदेव सिंह
७-एफ. गोपीमण्डल लेन, कलकत्ता-२

४०. स्व० अशोकजी
लखनऊ (उ० प्र०)

४१. आचार्य किशोरीदास वाजपेयी
पो० कनखल (हरिद्वार) उ० प्र०

४२. डॉ० गोपालराय
८७/२४, राजेन्द्र नगर, पो० पटना-१६ (विहार)

४३. श्री उदयराजसिंह
सं० नईधारा, पो० पटना (विहार)

४४. डॉ० लक्ष्मीचन्द्र जैन
बी/४५-४७, भारतीय ज्ञानपीठ, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-१

४५. श्री मन्मथनाथ गुप्त
डी-१४, निजामुद्दीन ईस्ट, नई दिल्ली-१३

४६. डॉ० शिवप्रसाद सिंह
गुरुधाम कालोनी, पो० वाराणसी (उ० प्र०)

४७. श्रीमती पद्मा सचदेव
फ्लैट नं० १, कारमाइकल रोड, वम्बई-२६

४८. श्री विश्वनाथ मुखर्जी
६१/१९, सिद्ध गिरिबाग, वाराणसी-१ (उ० प्र०)

४९. डॉ० लक्ष्मीनारायण दुवे
स/४४, सागर विश्वविद्यालय, पो० सागर (मध्य० प्र०)

५०. डॉ० वचनदेव कुमार
राँची विश्वविद्यालय, पो० राँची (विहार)

५१. डॉ० कृष्णविहारी मिश्र
७-बी, हरिमोहन राय लेन, कलकत्ता-१५

५२. श्री धर्मदेवराय
नारेपुर, पो० बछवारा, जि० बेगूसराय (विहार)

५३. प्रो० सत्येन्द्र अरुण
बी० एन० एम० कालेज, पो० बरहिया, जि० मुंगेर (विहार)

५४. स्व० डॉ० कन्हैयालाल सहल
पुत्र. डॉ० कृष्णबिहारी सहल, पो० पिलानी (राजस्थान)

५५. डॉ० कृष्णबिहारी सहल
स्टेशन रोड, पो० सीकर (राजस्थान)

५६. प्रो० रामखेलावन राय
राजेन्द्रनगर, पथ-३, पटना-१६ (विहार)

५७. डॉ० निजामउद्दीन
इस्लामिया कालेज, श्रीनगर (काश्मीर)

५८. श्रीवाला
त्यागराज नगर, मद्रास-१७

५९. श्री राजेश्वर सिंह
पो० बहराइच (उ० प्र०)

६०. वीर राजेन्द्र ऋषि
३२९०/१५डी, चण्डीगढ़ (पंजाव)

६१. श्री शंकरदयाल सिंह
बोरिंग रोड, पो० पटना (विहार)

६२. श्री सुधाकर पाण्डेय
नागरी प्रचारिणी सभा, पो० काशी (उ० प्र०)

६३. सम्पादक धर्मयुग
टाइम्स आफ इण्डिया प्रेस, वम्वई-१

६४. डॉ० शेखरचन्द्र जैन
तलजा रोड, पो० भावनगर (गुजरात)

६५. श्री जनार्दनराय नगर
राजस्थान विद्यापीठ, पो० उदयपुर (राजस्थान)

६६. श्रीरामेश्वरप्रसाद तिवारी
२७, एल० आई० जी० राजातालाब, पो० रायपुर (म० प्र०)

६७. पौत्री रीता
दिनकर भवन, आर्यकुमार रोड, पो० पटना-४ (विहार)

६८. श्री जगदीशजी
बी/४५-४७, भारतीय ज्ञान पीठ, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-१

६९. श्री कन्हैयालाल फूलफगर
८२/२ई, विधान सरणी, कलकत्ता-४

७०. संगीत निर्देशक जयदेव
चर्चगेट, वम्वई-१

७१. डॉ० हरिवंशराय वच्चन
१४, उत्तर-दक्षिण रास्ता दसवाँ, वम्वई-४९

७२. श्री शम्भुप्रसाद श्रीवास्तव
१०१, काउसघाट रोड, हवड़ा-७१११०२

—:०:—

विस्तृततर आयाम में पेश करता है, यही इसकी सब से बड़ी विशेषता है। दिनकर आधुनिक युग के सबसे सार्थक कवि थे, साथ ही वह एक चिन्तक भी थे। पर इन दो क्षेत्रों के अलावा और क्या थे यह इन पत्रों से स्पष्ट होता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो इन पत्रों में समग्र दिनकर सामने आता है। पत्रों में एक बात और भी साफ होती है कि उन्हें कितने संग्रामों और संघर्षों के बीच से गुजरना पड़ा। कविवर बायरन की तरह दिनकर को यह सुविधा नहीं रही कि वह एक दिन नींद से जागे और अपने को प्रसिद्ध पाया, उनको हर इंच जमीन के लिए कई-कई मोर्चे लेने पड़े।

दिनकर ब्रिटिश सरकार के नौकर थे। इस पर उनके विरुद्ध तूफान बरपा किया गया। 'वन्दे-मातरम्' के कवि बंकिमचन्द्र सरकारी नौकर थे, पर इस कारण मेरी जानकारी में कभी किसी निन्दक को यह जुर्रत नहीं हुई कि उन्हें ऋषि के अलावा कुछ कहे। राष्ट्रीय उपन्यासकार रमेशचन्द्र दत्त आई० सी० एस० रहे, नाटककार डी० एल० राय भी सरकारी नौकर रहे। आशुतोष मुखर्जी जज थे। समाज-सुधारक रानाडे भी जज थे, इत्यादि-इत्यादि। मैंने इसी कारण यह उपसंहार निकाला कि हिन्दी वालों ने दिनकर की नौकरी पर इस कारण बावेला मचाया कि वह छोटे नौकर थे। कहना न होगा कि यह कोई प्रशंसा की बात नहीं है।

दिनकर को अपने परिवार से भी संघर्ष करना पड़ा, जिसका परिचय कामेश्वर शर्मा को लिखे पत्रों से मिलता है। प्रकाशकों के साथ उनका जो संघर्ष रहा, उस पर यही सोचकर तसल्ली की जा सकती है कि यह तो साधारण बात है। पूंजीवाद में लेखक-मात्र कलम का मजदूर है। इसी से मजबूर होकर यशपाल से लेकर दिनकर तक को प्रकाशक बनना पड़ा। यह भी एक दुःखजनक बात है क्योंकि सर्जनात्मक प्रयास के समय से काटकर तभी इस क्षेत्र में पैर रखा जा सकता है।

फूलफगरजी ने जिस निष्ठा या लगन से काम किया, वह अतुलनीय है। यों तो दिनकर पर कई कृतियाँ हैं, पर इस ग्रन्थ का स्थान सब से निराला है।

—मन्मथनाथ गुप्त

रामधारीसिंह दिनकर

~~५, सफदर जंग लेन
नई दिल्ली~~

३१ सरदार पटेल रोड
नई दिल्ली
२१. ४. ७४

प्रिय पद्मा,

मैं आज तिरुपति जा रहा हूं। २५ को लौटूंगा। तब तक तुम्हारा पत्र आ जाना चाहिए कि यह लिफाफा तुम्हें मिल गया। अगर पत्र डाक में खो गया तब आफत तुम पर ही बरसेगी।

तुम्हारा
दिनकर.

दिनकरजी के जीवन का अंतिम पत्र। सम्पादक